

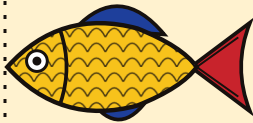
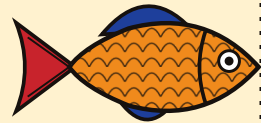
विदेह • मैथिली साहित्य



नित नवल

आशीष अनचिन्हार

चौदह पोथीक समेकित
साहित्यिक आलोचना



गजेन्द्र ठाकुर

सम्पादक : विदेह • २०२६

विदेह • मैथिली साहित्य

नित नवल
आशीष अनचिन्हार

चौदह पोथीक समेकित साहित्यिक आलोचना

लेखक
गजेन्द्र ठाकुर

सम्पादक
विदेह — प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका

२०२६

प्रकाशन-विवरण

नित नवल आशीष अनचिन्हार

लेखक : गजेन्द्र ठाकुर

सम्पादक : विदेह — प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका

प्रकाशकीय परिचय : www.videha.co.in

© गजेन्द्र ठाकुर / प्रीति ठाकुर, २०२६

सर्वाधिकार सुरक्षित। लेखकक लिखित अनुमतिक बिना एहि पुस्तकक कोनो अंशक पुनर्मुद्रण वा व्यावसायिक पुनर्प्रकाशन नहि कएल जाए। उद्धरण आ शैक्षिक उपयोग प्रचलित सन्दर्भ-परम्पराक अनुसार कएल जा सकैत अछि।

समेकित संस्करण • १४ समीक्षा • ४ विषयगत खण्ड

अनुक्रम

समीक्षा क्रमाङ्कक अनुसार

खण्ड १ • सम्पादन, साहित्यिक स्मृति आ बहुविध इतिहास

- १ नबोनारायण मिश्र समग्र
- २ स्वतंत्रचेता : अरविन्द ठाकुर
- ३ गजेन्द्र ठाकुरक ८२ टा चयनित कथा
- ४ गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय
- ५ प्रीति कारण सेतु बान्हल
- ६ सेतुषाम : Vibrant Maithili

खण्ड २ • गजल-सृजन : शिल्प, समाज आ काव्यभाषा

- ७ अनचिन्हार आखर
- ८ जंघाजोड़ी
- ९ कुमारि इच्छा

खण्ड ३ • गजलशास्त्र : व्याकरण, विमर्श आ समालोचना

- १० मैथिली गजलक रेडी रेकोनर
- ११ मैथिली गजलक व्याकरण ओ इतिहास
- १२ सन्दर्भ सहित
- १३ शब्द-अर्थ-शक्ति

खण्ड ४ • डिजिटल अभिलेख आ मैथिली सार्वजनिकता

- १४ मैथिली वेब पत्रकारिताक इतिहास

खण्ड १

सम्पादन, साहित्यिक स्मृति आ बहुविध इतिहास

मैथिली साहित्यक पुनर्पाठ

समीक्षा १

नबोनारायण मिश्र समग्र

साहित्य, आन्दोलन आ स्मृतिक संगम

सन्दर्भ-पोथी : नबोनारायण मिश्र समग्र • सम्पादक : आशीष अनचिन्हार • २०२६

सारांश

नबोनारायण मिश्रक साहित्यकें एकटा विधाक सीमामे राखि कऽ बुझब सम्भव नहि अछि। हुनक रचना-संसारमे साक्षात्कार, संस्थागत इतिहास, व्यक्तिचित्र, संस्मरण, कथा, व्यङ्ग्य, उत्सवगीत, शोककविता आ भाषिक अधिकारक पक्षधर कविता एक-दोसराक सङ्ग संवाद करैत अछि। आशीष अनचिन्हार सम्पादित «नबोनारायण मिश्र समग्र» एहि बिखरल रचनाकें एक ठाम आनैत अछि आ आधुनिक मैथिली साहित्यक ओहि श्रमशील आधारकें दृश्य बनबैत अछि जे केवल नामी रचनाकार, पुरस्कार आ प्रकाशित स्वतंत्र पोथीक गणनासँ पकड़मे नहि अबैत अछि। संकलनक विशेष महत्त्व कोलकाताक मैथिली आन्दोलन, पत्र-पत्रिका, सांस्कृतिक संस्था आ कोकिल मञ्चक रङ्गकर्मक अभिलेखीकरणमे अछि।

एहि शोधमे समग्रक साक्षात्कार, आलेख, कथा आ पद्यकें अलग-अलग परखल गेल अछि। साक्षात्कारसभमे भाषिक अधिकारक आन्दोलनक जीवन्त साक्ष्य, आलेखसभमे संस्थागत स्मृतिक संरक्षण, कथामे पारिवारिक सम्बन्ध, दहेज, परोपकार, प्रवास आ नैतिक विडम्बना, आ कवितामे सामुदायिक चेतना आ निजी चोटक स्वर भेटैत अछि। एकर साहित्यिक उपलब्धि सङ्गहि सीमा सेहो अछि: कतहु आदर्शोन्मुख समाधान कथाक बहुस्तरीयता घटबैत अछि; कतहु प्रशंसात्मक व्यक्तिचित्र आलोचनात्मक दूरी कम करैत अछि; कतहु कविता प्रत्यक्ष वक्तव्यक अधीन भऽ जाइत अछि। तथापि ई समग्र साहित्यक

सामाजिक आधार, मज्जीय श्रम आ ऐतिहासिक स्मृतिपर विचार करबाक लेल एक महत्त्वपूर्ण प्राथमिक ग्रन्थ अछि।

बीजशब्द : नबोनारायण मिश्र; आशीष अनचिन्हार; मैथिली गद्य; कोलकाता; कोकिल मञ्च; साक्षात्कार; मैथिली आन्दोलन; लोकस्मृति; मैथिली कथा; साहित्येतिहास।

प्रस्तावना : साहित्यक इतिहासमे अदृश्य श्रमक प्रश्न

साहित्यक इतिहास प्रायः रचनाकारक नाम, प्रकाशित कृतिक सूची, साहित्यिक प्रवृत्ति आ पुरस्कारक क्रममे लिखल जाइत अछि। मुदा भाषा-साहित्यक जीवन केवल रचनाक पाठमे नहि, रचनाकें सम्भव बनबयवला समाजमे सेहो विद्यमान रहैत अछि। जे गोटे सभागार बुक करैत अछि, मंच बनबैत अछि, कलाकार जुटबैत अछि, निमन्त्रण पहुँचबैत अछि, हस्तलिखित सामग्री बचबैत अछि, पत्रिकाक ग्राहक बनबैत अछि आ आन्दोलनेर रस्ता धरैत अछि, ओकर योगदान बिनु साहित्यक प्रसारक कथा अपूर्ण रहैत अछि। नबोनारायण मिश्रक साहित्य एहने अदृश्य श्रमक ऐतिहासिक उपस्थिति थिक।

नबोनारायण मिश्र केवल कथाकार वा कवि नहि, बल्कि मैथिली सार्वजनिक जीवनक सहभागी, अनुभव-लेखक आ सांस्कृतिक साक्षी छथि। सम्पादकक भूमिकामे स्पष्ट कएल गेल अछि जे हुनक पहिल प्रकाशित रचना १९७७ मे आएल आ दशकसभक अन्तरालपर हुनकर रचनासभ २०२६ मे एकत्र भेल। ई दीर्घ अन्तराल हुनकर साहित्यिक उपेक्षाक अकेल प्रमाण नहि, मुदा एहि प्रश्नकें अनिवार्य बनबैत अछि जे प्रकाशनक संस्थागत साधन आ मान्यताक वितरण कोन-कोन रचनाकारकें दृश्य बनबैत रहल।

एहि पोथीक ‘समग्र’ पदकें आक्षरिक पूर्णताक दावाक रूपमे नहि, प्राप्त सामग्रीक एक ऐतिहासिक संरक्षण-यत्नक रूपमे देखब उचित अछि। सम्पादक स्वयं संकेत करैत छथि जे रचनासभक क्रम, प्रकाशन-विवरण आ उपलब्धतामे अन्तर अछि आ आगू सामग्री जुड़ि सकैत अछि। एहि ईमानदार स्वीकारसँ पोथीक महत्त्व घटैत नहि; उलटे एकर पाठ-इतिहासक जटिलता स्पष्ट होइत अछि।

रचना-संरचना आ आलोचनात्मक दृष्टि

समग्रमे तीनटा साक्षात्कार, पन्द्रहटा आलेख, एगारहटा कथा आ उन्नैसटा पद्य-रचना संकलित अछि। एहि चतुष्पदी संरचनामे साक्षात्कार ऐतिहासिक आवाजकेँ, आलेख संस्मरणात्मक आ संस्थागत व्याख्याकेँ, कथा सामाजिक प्रसङ्गकेँ, आ कविता भावात्मक तथा प्रतिवादी अभिव्यक्तिकेँ उपस्थित करैत अछि। भिन्न-भिन्न विधा होयबो पर सबहक आन्तरिक सूत्र अछि—मैथिली भाषाप्रति निष्ठा, लोकक आपसी जिम्मेवारी आ मानवीय व्यवहारक नैतिक परीक्षा।

आलोचनाक लेल तीन स्तर उपयोगी अछि। पहिल, प्रत्येक रचनाक भीतर कथ्य, दृश्य, पात्र आ शिल्पक सम्बन्ध; दोसर, समान विषयक भिन्न विधामे अभिव्यक्ति; तेसर, मैथिली साहित्येतिहासक ओहि प्रचलित रूपसँ तुलना जाहिमे महान रचनाकार प्रधान आ संगठनक कार्यकर्ता गौण रहैत छथि। एहि तीनू स्तरक भेद बनौने रहने समग्रक साहित्यिक आ ऐतिहासिक मूल्य एक-दोसरामे बिलीन नहि होइत अछि।

साक्षात्कार : मौखिक इतिहास आ भाषिक सार्वजनिकता

तीनू साक्षात्कारक विषय क्रमशः किशोरीकान्त मिश्र, रामलोचन ठाकुर आ डॉ. वीरेन्द्र मल्लिक छथि। प्रश्नोत्तरक रूपक कारणे ई सामग्री लेखकक एकाकी विचार नहि, संवादमे उभरैत बहु-स्वरक दस्तावेज अछि। प्रश्नकर्ताक चयनित प्रश्न सेहो महत्त्वपूर्ण अछि: कोलकाता आगमन, संस्था, सम्पादन, रङ्गमञ्च, आन्दोलन, पत्रिका, युवा पीढ़ी, भाषाक अधिकार आ व्यक्तिगत अनुभव। एहिसँ नबोनारायण मिश्रक सांस्कृतिक प्राथमिकता स्पष्ट होइत अछि।

किशोरीकान्त मिश्रसँ बातचीत : भाषा, शिक्षा आ मुद्रण-संस्कृति

किशोरीकान्त मिश्रक स्मृतिमे मातृभाषाप्रति आकर्षण विद्यालयी वाद-विवादक अनुभवसँ सम्बद्ध अछि। कोलकातामे मिथिला सांस्कृतिक परिषद्सँ जुड़नाइ व्यक्तिगत

रुचिकें संस्थागत अभियानमे बदलैत अछि। विशेष महत्त्वक बात अछि पत्रिका-प्रकाशनक व्यावहारिक श्रम आ वर्तनीक एकरूपताक चिन्ता। ओहि अनुभवमे मिथिला मिहिर आ मुद्रण-व्यवस्था मात्र तकनीकी प्रसङ्ग नहि, भाषिक मानकीकरणक प्रश्न बनैत अछि।

विद्यापतिक स्मारक-छविक निर्माण, डाक-टिकटक अभियान आ जनगणनामे मैथिली लिखबाक आग्रहसँ स्पष्ट होइत अछि जे भाषा-आन्दोलन साहित्यिक प्रतिष्ठा, प्रतीक-निर्माण आ जनसांख्यिक उपस्थिति—तीनू स्तरपर चलैत रहल। तथापि साक्षात्कारमे व्यक्त ऐतिहासिक दावासभकेँ अन्तिम निर्णीत तथ्य मानि लेब उचित नहि; ओ सहभागी व्यक्तिक स्मृति छथि, जिनक समीक्षा अन्य स्वतंत्र दस्तावेजसँ होएबाक चाही।

रामलोचन ठाकुरसँ बातचीत : आन्दोलन, सम्पादन आ रङ्गमञ्चक त्रिकोण

रामलोचन ठाकुरक उत्तरसभ मैथिली सार्वजनिक जीवनक संस्थागत जाल उद्घाटित करैत अछि। मैथिली मुक्तिमोर्चा, पत्रिका सम्पादन, नाटकक अनुवाद, कविता, आन्दोलनक आयोजन आ नव रचनाकारक प्रोत्साहन—ई सभ अलग-अलग गतिविधि नहि, भाषा-संस्कृतिक एक संयुक्त रणनीति जकाँ उभरैत अछि। प्रकाशनक अभावमे सामूहिक रचनापाठ आ बैसारक महत्त्वक चर्चा साहित्यिक लोकतन्त्रक मूल प्रश्न उठबैत अछि।

एहि साक्षात्कारक सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण पक्ष ई अछि जे साहित्यक इतिहास रचनाक मुद्रित सूची मात्र नहि रहैत; ‘सम्पर्क’ सन बैसार, पत्रिकाक अल्पजीविता, छद्मनामसँ लिखब आ सहयोगी सम्पादन सेहो रचनात्मक संस्कृतिक आधार मानल जाइत अछि। एहि संग अन्तर्विरोध सेहो देखाइत अछि: व्यक्तिगत स्मृति कतेक स्पष्ट, आ संस्थागत तिथि-कथा कतेक विशिष्ट, ताहि लेल शोधमे समकालीन पत्रिका आ आयोजन-विवरणक तुलनात्मक परीक्षण आवश्यक अछि।

डॉ. वीरेन्द्र मल्लिकसँ बातचीत : आलोचना, संचार आ पीढ़ीगत संक्रमण

वीरेन्द्र मल्लिकसँ संवाद साहित्यकारक बौद्धिक आत्मस्थितिक प्रश्न उठबैत अछि। साहित्यक विकास, रङ्गमञ्चक क्षेत्र, रचनाशील समुदाय आ बदलैत परिवेशपर हुनक

विचारकें नबोनारायण मिश्र व्यापक ऐतिहासिक प्रसङ्गमे रखैत छथि। ई सामग्री विशिष्ट लेखकक आत्मवृत्तान्तसँ आगाँ बढ़ि मैथिली साहित्यिक जगतक परस्पर सम्बन्ध स्पष्ट करैत अछि।

तीनू साक्षात्कारमे प्रश्नकर्ता कतहु आलोचकसँ अधिक सांस्कृतिक आयोजक जकाँ देखाइत छथि। ई कमजोरी आ शक्ति दुनू अछि: निकटताक कारणे भरोसा आ दुर्लभ सूचना भेटैत अछि, मुदा प्रतिप्रश्नक कठोरता सदा समान नहि रहैत अछि। शोधार्थीकें एहि द्वैध स्थितिक ध्यान रखनाइ चाही।

आलेख : कोलकाताक जीवित सांस्कृतिक अभिलेख

आलेखखण्ड समग्रक ऐतिहासिक मेरुदण्ड अछि। पन्द्रहटा रचनामे स्मृतिचित्र, व्यक्तित्व-परिचय, संस्थागत लेखाजोखा, पत्रिका-इतिहास, लोककथापर विचार, आत्मस्मरण आ नाट्य-दस्तावेज सभ उपस्थित अछि। नबोनारायण मिश्रक गद्यक मूल प्रवृत्ति बिखरल अनुभवकें सामाजिक उपयोगक योग्य स्मृतिमे बदलनाइ अछि। एहि सन्दर्भमे लेखकक ‘हम’ आत्मप्रदर्शनक प्रतीक नहि, बहुतो ठाम सामूहिक अनुभवक प्रवेशद्वार बनैत अछि।

रामलोचन ठाकुर : व्यक्तित्वसँ सामाजिक परम्परा धरि

‘हमरा नजरिमे : श्री रामलोचन ठाकुर’ आ ‘हरि अनन्त हरि कथा अनन्ता’ कें संग पढ़लासँ व्यक्तिचित्रक दू रूप देखाइत अछि। पहिलमे साहित्यकार, सम्पादक आ आन्दोलनकारी रामलोचनक सार्वजनिक उपलब्धिपर बल अछि; दोसरमे दीर्घ संस्मरणक माध्यमसँ मित्रता, संवाद, संगठन आ वियोगक निजी आयाम प्रमुख भऽ उठैत अछि। एकही व्यक्तिक चारूकात विद्यमान संस्थासभक कथा धीरे-धीरे व्यक्तिनिष्ठ शोकक कथा बनैत अछि।

एहिमे आलोचनात्मक प्रश्न अछि जे रामलोचनक साहित्यिक रचनाक औपचारिक विवेचन अपेक्षाकृत कम, हुनक अभियानक प्रशंसात्मक विवरण अधिक अछि। मुदा एहि प्रवृत्तिक पूर्णतः असाहित्यिक नहि कहि सकैत छी, कारण मैथिली आन्दोलनीय लेखनमे व्यक्तित्व-निर्माण स्वयं एक सांस्कृतिक क्रिया रहल अछि। आवश्यकता एतबे अछि जे श्रद्धा आ ऐतिहासिक परीक्षणकें पृथक राखल जाय।

राजनन्दन लाल दास : पत्रिका, संस्थागत नेतृत्व आ श्रेयक राजनीति

‘युगपुरुष श्री राजनन्दन लाल दास’ आ ‘युगप्रवर्तक राजनन्दन लाल दास’ व्यक्तित्वकें साहित्यिक पत्रकारिताक इतिहाससँ जोड़ैत अछि। ‘आखर’, ‘कर्णामृत’, कर्णगोष्ठी आ मैथिली सांस्कृतिक गतिविधिक उल्लेखसँ प्रकाशन-श्रमक निरन्तरता उद्घाटित होइत अछि। एतय लेखकक प्रमुख आग्रह साहित्यक विकासमे पत्रिकाक आयोजन, सम्पादकीय निर्भीकता आ सामुदायिक संरक्षणकें उचित स्थान देबाक अछि।

दूनु आलेखक पुनरावृत्तिमे आलोचक लेल एक प्रश्न सेहो अछि—संक्षिप्त श्रद्धाञ्जलि आ विस्तृत परिचयक बीच तथ्यक अन्तर, समान दावाक दोहरान आ स्मृतिजन्य मूल्याङ्कनक मानदण्ड कतेक स्पष्ट अछि? एहि प्रश्नकें नकारलासँ लेखकक ऐतिहासिक प्रयत्न बुझब कठिन भऽ जाएत।

प्रबोध बाबू आ लक्ष्मण झा ‘सागर’ : बौद्धिक स्नेहक स्मृतिशास्त्र

‘मिथिला-मैथिलीक प्रबल पक्षधर : प्रो. प्रबोध बाबू’ मे सार्वजनिक योगदान आ व्यक्तिगत सान्निध्यक मेल अछि। लेखक केवल प्राप्त उपलब्धि नहि गनबैत छथि; भेट, अधूर इच्छा, निधन आ अपूरित सांस्कृतिक सम्भावनाक मार्मिक स्थितिक स्मरण करैत छथि। यस्मिन्न बौद्धिक जीवनक मूल्यक एक पक्ष भावनात्मक आ नैतिक बनि उठैत अछि।

‘सर्वगुण सम्पन्न सागरजी’ व्यक्तित्व-चित्रणमे संवादी स्नेह आ मध्यस्थताक प्रसङ्ग विशेष उल्लेखनीय अछि। प्रसिद्ध व्यक्तिक गुणगान करैत लेखक अपन विनम्र उपस्थितिकें

सेहो दर्ज करैत छथि। एहि शैलीक मूल्य एहि बातमे अछि जे साहित्यिक समुदाय केवल विचारक एकमततासँ नहि, मनमुटाव सुलझेबाक दैनिक प्रयत्नसँ बनैत अछि।

मिथिला विकास परिषद् : संस्थागत सहकार आ प्रतिस्पर्धा

‘मिथिला विकास परिषद्, कोलकाता : जेना हम देखल’ मे संस्थागत एकता आ पारस्परिक अविश्वासक कथा भेटैत अछि। लेखक संस्था-विशेषक उपलब्धि स्वीकार करैत छथि, मुदा विभिन्न संस्थाक बीच उत्पन्न दूरीक आलोचनासँ नहि बचैत छथि। ई आलेख आन्दोलनक इतिहासकें केवल गौरवकथासँ बचबैत अछि: संस्था बनब तऽ उपलब्धि अछि, मुदा व्यक्तिक अहं, गुटबन्दी आ कार्यक्रमक बहिष्कार ओकर सामुदायिक लाभ कम कऽ सकैत अछि।

एहि प्रसङ्गक विशेषता ई अछि जे लेखक अपन सम्बद्ध कोकिल मञ्चक स्थितिकें सेहो सामने आनैत छथि। तँ ई रचना ऐतिहासिक तथ्यक संग आत्मस्थितिक दस्तावेज अछि, जाहिमे पक्षधरता स्पष्ट रहितो आत्मालोचनाक अवसर बनैत अछि।

पीताम्बर पाठक आ बाबू साहेब चौधरी : भाषा-आन्दोलनक मानवीय चेहरा

‘मैथिली आन्दोलनक नायक : पीताम्बर पाठक’ संस्थागत गतिविधिक पछाँ निरन्तर काज करनिहार व्यक्तिक चरित्रक स्मरण करैत अछि। लेखक नवतुरिया लोककें जोड़ब, उत्तराधिकारी तैयार करब आ सामूहिक कार्य-संस्कृतिक चर्चा करैत छथि। स्मृतिमे अचानक निधनक प्रसङ्ग एकर भावात्मक अन्त बनैत अछि, जाहिसँ सार्वजनिक इतिहास निजी क्षतिक अनुभव धरि पहुँचैत अछि।

‘प्रसङ्ग : बाबू साहेब चौधरीक’ भाषिक आन्दोलनक सांस्कृतिक मनोविज्ञानकें खोलैत अछि। मैथिली गीत, डहकन, स्त्रीकण्ठ, रंगमञ्च आ मातृभाषाक घरेलू जीवनसँ सम्बन्धक चर्चा भाषाक संरक्षणकें केवल सरकारी मान्यतापर निर्भर नहि रखैत। यद्यपि लोकस्त्रीकें परम्पराक एकमात्र रक्षक बुझनाइ प्रश्नातीत नहि, तथापि मौखिक संस्कृतिक चिन्ता एहि गद्यक मूल्यवान पक्ष अछि।

कलकत्ताक मैथिली आन्दोलन आ मिथिला दर्शन : पत्रिकाक जनपथ

‘कलकत्ताक मैथिली आन्दोलन आ मिथिला दर्शन’ प्रवासी नगरमे भाषा-संघर्षक जीवित इतिहास चित्रित करैत अछि। पत्रिकाक माध्यमसँ साहित्यकार, कार्यकर्ता, शिक्षक आ प्रवासी समुदाय जुड़ैत छथि। प्रकाशित सामग्रीक विधागत वैविध्य—भाषाविज्ञान, कथा, कविता, एकाङ्की, नाटक—एकटा पत्रिकाकेँ सामूहिक बौद्धिक मंचक रूपमे देखबयवला महत्त्वपूर्ण साक्ष्य अछि।

एहि लेखमे अनेक नाम आ प्रकाशनक प्रसङ्ग एकत्र अछि। ई सूचना-सघनता उपयोगी रहलो पर प्रसङ्गक्रम सदिखन व्यवस्थित नहि; शोधमे सूचीकेँ समकालीन अंकक अनुक्रमसँ मिला देखबाक प्रयोजन बचैत अछि। साहित्यिक पत्रकारिताक इतिहास लेल एहि रचनाक महत्त्व ‘दावा’ मात्र नहि, जाँचल जा सकय योग्य शोधसूत्र प्रदान करब अछि।

‘स्मृति आखर’ : आत्मवृत्तान्तक भीतर रङ्गमञ्च

‘स्मृति आखर’ मे गामक अभिनय-प्रयाससँ महानगरीय मंच धरि जएबाक सांस्कृतिक यात्रा अछि। संस्था कोना बनल, कलाकार कोना जुड़ल, महिलाक मंचीय सहभागिता केना विकसित भेल, प्रशिक्षण आ निर्देशनक श्रम कोना बँटल—एहन प्रसङ्गसँ रङ्गकर्मक सामाजिक आधार प्रत्यक्ष होइत अछि। गङ्गा झाक निर्देशन आ किरण झा तथा अन्य कलाकारक सक्रियताक उल्लेख सामूहिक रंगमञ्चक प्रश्नकेँ केन्द्रमे आनैत अछि।

रचनामे स्वयं लेखकक संस्थागत जिम्मेदारीक विवरण सेहो अछि। एतय आत्मस्मरणक आलोचनात्मक महत्त्व एहि कारण अछि जे लेखक रंगमञ्चक केवल दर्शक नहि, संस्थाक संचालनक सहभागी छथि। मुदा एहि निकटताक कारणे उपलब्धिक विवरणक संग असफलता, दर्शक-वर्ग, रंगभाषा आ मञ्च-प्रयोगपर अतिरिक्त विवेचन अपेक्षित रहि जाइत अछि।

‘मैथिली लोककथा’ : लोकसाहित्यक संरक्षण आ सीमा

‘मैथिली लोककथा’ मे लेखक मौखिक परम्पराक व्यापकता आ प्रकाशित संकलनक अल्पताक बीच दूरी रेखांकित करैत छथि। मौखिक कथा सामाजिक आ पीढ़ीगत स्मृति संचरित करैत अछि, मुदा लिखित संग्रह बिनु ओकर प्रसार सीमित भऽ सकैत अछि। मैथिलीमे लोककथा-संकलनक उपलब्ध उदाहरणक चर्चा संग्रहणक संस्थागत प्रश्न बनैत अछि।

तथापि लोककथा केवल सुरक्षित करबाक वस्तु नहि; कथनक परिस्थिति, कथावाचकक सामाजिक स्थिति, बोलीभेद, स्त्री-पुरुष दृष्टि आ कथाक परिवर्तित रूप सेहो अध्ययनक विषय अछि। समग्रक ई आलेख संग्रहणक आवश्यकता ठीक प्रकारें चिन्हैत अछि, मुदा लोककथाक शक्ति-सम्बन्ध आ रूपभेदपर आगू शोधक प्रचुर सम्भावना छोड़ैत अछि।

‘मिथिला मिहिर आ सम्पादकजी’ : मुद्रित सार्वजनिकताक सौन्दर्य

‘मिथिला मिहिर आ सम्पादकजी’ मे साहित्यिक पत्रकारिता, सम्पादकक व्यक्ति-प्रभाव आ भाषाक मानकीकरणक इतिहास एकत्र होइत अछि। लेखकक ध्यान पत्रिकामे विकसित कथा, उपन्यास, नाटक आ विचारक व्यापक लोकपर अछि। सुबोध गद्यक भीतर इतिहासक अभावक पीड़ा सेहो अछि—नियमित पत्रिकाक छूटल अङ्क, बिखरल योगदान आ सम्पादकीय अनुशासनक प्रश्न।

एहि लेखकें किशोरीकान्त मिश्रक साक्षात्कारसँ संग पढ़लासँ स्पष्ट होइत अछि जे वर्तनीक एकरूपता मात्र भाषाशास्त्रीय निर्णय नहि, मुद्रणक श्रम आ सम्पादकीय व्यवहारसँ निर्मित सार्वजनिक अनुबन्ध अछि। एहि दिशामे समग्रक योगदान मौलिक अछि।

‘अनन्य मैथिली हितैषी अजय सिंह’ : स्नेह, शोक आ सार्वजनिकता

अजय सिंहपर केन्द्रित लेखमे व्यक्तिगत परिचयकें सामुदायिक कर्मक मूल्याङ्कनसँ जोड़ल गेल अछि। कोविडकालीन मृत्यु आ सांस्कृतिक संस्थाक हासक प्रसङ्ग एक

पीढ़ीक अवसानक बोध करबैत अछि। एहने श्रद्धाज्जलि-पाठ भविष्यक शोधार्थीक लेल सांस्कृतिक सम्बन्धक धागा बचा सकैत अछि, यद्यपि घटना, तिथि आ योगदानक स्वतंत्र पुष्टि ऐतिहासिक अध्ययनक लेल अलग जरूरी रहैत अछि।

‘मैथिली रङ्गमञ्च आ कोलकाता’ : प्रदर्शनक सूचीसँ रंग-इतिहास धरि

ई आलेख समग्रक एकटा आधारभूत दस्तावेजी उपलब्धि अछि। रंगकर्मी, नाटककार, अनुवाद, प्रस्तुति, सभागार आ निर्देशनक क्रम एकत्र करबाक प्रयास मैथिली नाट्यसाहित्यकेँ केवल लिखित नाटकक इतिहाससँ बाहर निकालैत अछि। कोकिल मञ्चसँ जुड़ल प्रस्तुति-विवरणसँ रङ्गमञ्चक सामाजिक जीवन, आयोजनक्षमता आ प्रवासी नगरक सांस्कृतिक भूगोलक अध्ययन सम्भव भऽ सकैत अछि।

एहि सूचीमे विवरणसँ उपलब्ध तारीख आ नाम शोध-सूत्रक रूपमे बहुमूल्य छथि; मुदा एकरा स्वतः सत्यापित कालक्रमक पूर्ण विकल्प नहि बनाओल जाय। नाटकक प्रस्तुति केहन छल, स्त्री-पात्रक अभिनयमे की परिवर्तन भेल, दर्शक कोन वर्गसँ छल, टिकट-व्यवस्था आ नाट्याभ्यासक स्वरूप की छल—एहि प्रश्नक व्यवस्थित उत्तर एहि आलेखसँ पूर्णतः नहि भेटैत अछि। तइयो सूचीकरणक एहि कार्यकेँ साहित्येतिहासमे योग्य स्थान देबाक आवश्यकता अछि।

कथा-खण्डक पृथक पाठविश्लेषण

समग्रक कथा-लेखनमे ग्रामीण जीवन, प्रवासक कठिनाई, परिवारक हित-अहित, विवाहक सामाजिक बन्धन, धन आ श्रमक नैतिकता, सार्वजनिक भाषिक चेतना आ व्यङ्ग्य उपस्थित अछि। बहुतो कथाक अन्तमे नैतिक निष्कर्ष स्पष्ट रहैत अछि; कतहु अन्तिम दृश्य पाठककेँ स्वयं अर्थनिर्माणक अवसर दैत अछि। कथासभक आन्तरिक भिन्नताकेँ सुरक्षित राखि पढ़ल जाए, नहि तँ पूरा कथा-जगत ‘उपदेशात्मक’ कहि कऽ सरल बना देल जाएत।

‘एहनो होइत छै’ : हास्यक दृश्य-रचना

मोहनजीक पहिल सिनेमाघर-यात्रा एहि लघुकथाक विषय अछि। अन्हारमे कुर्सीक आसन नहि खसाएलाक कारणे ओ कुर्सीक बाँहिपर झूलल रहैत छथि; इन्टरवलक उजासमे भ्रमक कारण उद्धाटित होइत अछि। हास्य मुख्यतः शब्दचमत्कारसँ नहि, दृश्यगत विलम्ब आ पाठकक अपूर्ण सूचनासँ पैदा होइत अछि। शीर्षकक अर्थ अन्तमे उलटि जाइत अछि।

एहि कथामे आधुनिक मनोरञ्जनक स्थल आ ग्रामीण अनुभवक अन्तर हलुक व्यङ्ग्यमे उपस्थित अछि। कथाकार पात्रकेँ अपमानित करबाक बजाय ओकर अज्ञानकेँ सामाजिक अनुभवमे बदलैत छथि। संक्षिप्तता, समयबद्ध उद्धाटन आ विनोदी संवाद एकर सफलता अछि।

‘एकटा पाकल आम’ : नेनाक नैतिक दृष्टि

एकटा पाँच वर्षक बालक अपन हिस्सा भेटल आमकेँ पितियौत भाइसँ बाँटबाक आग्रह करैत अछि, जखन पिता अलग गृहस्थी आ अधिक सुविधा पएबाक तर्क दैत छथि। बालकक सहज सहानुभूति बड़काक विभाजनपरक यथार्थवादकेँ प्रश्नांकित करैत अछि। आम एतय केवल खाद्य वस्तु नहि, संयुक्त परिवारक भीतर न्याय आ सहभागिताक प्रतीक अछि।

कथाक विशेष गुण ई अछि जे नैतिक विवादक केन्द्र बच्चाक अनुभव बनैत अछि, न कि कथाकारक उपदेश। तथापि पिताक पक्षकेँ बड़ सहज स्वार्थक रूपमे देखाओल गेल अछि; आर्थिक विवशताक जटिलता कथामे कम खुलैत अछि। लघुकथा रूपमे ई संकुचन एकर प्रभाव बढ़बैत सेहो अछि।

‘यात्राक फेरी’ : प्रवासी जीवनक विनोदी संकट

नोकरीक दबाव, बंगाल बन्दसँ बनल छुट्टीक संयोग, घरक स्मृति, रात्रिक यात्रा, बरसात, असुरक्षा, गामक सामाजिक अपेक्षा आ कार्यालयमे अनुपस्थितिक भय—ई सभ यात्रा-वृत्तान्तक कथामे एकसाथ चलैत अछि। कथा एकटा सीमित छुट्टीकेँ अनन्त दायित्वमे

बदलैत अछि। परिवारक आह्वान पात्रकें खींचैत अछि, मुदा संस्थागत रोजगार ओकरा बान्हने रहैत अछि।

एहि रचनाक औपचारिक समस्या विस्तार अछि; अनेक प्रसङ्ग रोचक रहितो कथाक तनावकें कखनो-कखनो बिखेरैत अछि। फेरो घटनाक क्रम, पत्नी-संवादक पूर्वानुमान, रास्ताक बाधा आ बरियातीमे अटकब, प्रवासक मानसिक विभाजनक प्रामाणिक बोध उत्पन्न करैत अछि। एतय हास्य जीविका आ सम्बन्धक बीच असम्भव चयनसँ उपजैत अछि।

‘कालचक्र’ : उत्तराधिकार, सम्पत्ति आ परिश्रम

पिता-विहीन बालक उपेन्द्रक जीवनमे दायादक सम्पत्ति-लोलुपता, परिवारक संकट, अध्ययन आ कठिन परिश्रमक माध्यमसँ आगाँ बढ़बाक कथा अछि। बालकक निर्बल सामाजिक अवस्थाकें आत्मनिर्माणक प्रसङ्गमे बदलल गेल अछि। दायादक चरित्र आ सम्पत्तिपर अधिकारक विवाद मिथिलाक ग्रामीण सामाजिक इतिहासक महत्वपूर्ण सूत्र अछि।

कथाक अन्तमे पात्रक आर्थिक-सामाजिक प्रतिष्ठा दृढ़ बनैत अछि। एहि संरचनामे नैतिक प्रतिपूर्ति स्पष्ट अछि; संघर्षक बहुस्तरीय सत्ता-समीक्षा अपेक्षाकृत सीमित रहैत अछि। मुदा श्रम आ शिक्षाकें वंशगत सम्पत्तिसँ बेसी महत्व देबाक आग्रह समकालीन सामाजिक परिवर्तनक संवेदनशील संकेत अछि।

‘आदर्श विवाह’ : दहेजक बाजार आ युवा प्रतिरोध

धनाढ्य नारायण बाबू अपन बेटीक विवाहमे कएल खर्चक ‘वसूली’ पुत्रक विवाहसँ करबाक मानसिकता राखैत छथि। कन्यागतसँ सहमतिक बाद बाँचल धन नहि भेटलापर विवाह रोकबाक निर्णय लैत छथि। एही निर्णायक क्षणमे बेटा राजन पिता-सत्ताक विरोध करैत अछि, लेन-देनक धन लौटबैत अछि आ दहेज-विहीन विवाहक आग्रह करैत अछि।

ई कथा सामाजिक कुप्रथाक विरोधमे नाटकीय सार्वजनिक वक्तव्यक उपयोग करैत अछि। ताकत एहि बातमे अछि जे प्रतिरोध घरक भीतरसँ उठैत अछि; सीमा एहि बातमे जे दहेजक जटिल सामाजिक संरचनाकेँ एक सजग युवकक नैतिक साहससँ तुरन्त निराकृत देखाओल गेल अछि। परन्तु कथाक समयसन्दर्भमे दहेजक सामान्यीकरणक विरुद्ध एहन दृश्यक सार्वजनिक महत्त्व अस्वीकार नहि कएल जा सकैत अछि।

‘परोपकारक फल’ : विडम्बना आ नैतिक दृढ़ता

हरीबाबूक परोपकारक लाभ लैनिहार लोक हुनके विरुद्ध षड्यन्त्र रचैत अछि; हिंसक डकैतीक परिणाममे हुनक बेटा विनयक मृत्यु भऽ जाइत अछि। परिवार सहयोग बन्द करबाक सलाह दैत अछि, मुदा हरीबाबू परोपकारक प्रतिज्ञासँ नहि हटैत छथि। शीर्षक उपकारक सामान्य फलप्राप्तिक अपेक्षाकेँ दुःखद विडम्बनामे बदलैत अछि।

एहि कथाक गूढ़ प्रश्न ई अछि जे न्यायविहीन समाजमे सद्गुणक अभ्यास केना सम्भव अछि। कथाकार हरीबाबूक नैतिक जिदकेँ मानवताक सर्वोच्च मूल्यक रूपमे प्रस्तुत करैत छथि। आलोचनात्मक दृष्टिँ हिंसा आ परोपकारक बीच सम्बन्धक राजनीतिक-आर्थिक विवेचन कम अछि; दुष्ट पात्रसभ सामाजिक प्रकारमे सिमटि जाइत छथि। तथापि दुःखान्त निष्कर्ष कथाकेँ मात्र सुगम उपदेशक स्तरसँ ऊपर उठबैत अछि।

‘करोड़पतिक कर्मठता’ : उपहासक उलट अर्थ

दिल्लीक मैथिलबहुल क्षेत्रमे जलक लाइनपर उठल विवादसँ एक दम्पतीक नामपर उपहास जुड़ैत अछि। उपहासमे कहल गेल ‘करोड़पति’ बादमे पात्रक परिश्रमसँ वास्तविक उपलब्धिक संकेत बनैत अछि। कथा नगरजीवनक संसाधन-अभाव, सार्वजनिक अनुशासन आ सामाजिक नामकरणक विनोदक उपयोग करैत अछि।

एकर कमजोरी ई अछि जे पत्नीक व्यवहारकेँ लिंगगत सामान्यीकरणक सहारे व्याख्यायित कएल गेल अछि आ श्रमसँ आर्थिक चमत्कार धरि पहुँचबाक अन्तिम वक्र

अपेक्षाकृत सरलीकृत अछि। किन्तु सामाजिक खिल्लीकें आर्थिक उन्नतिक प्रतीक बनाबयवला रूपान्तरण मनोरञ्जक अछि।

‘मैथिलीक मर्यादा’ : गाँवक सार्वजनिक पठन-संस्कृति

टेलिफोन-संवादपर आधारित ई लघु रचना ग्रामीण सार्वजनिक स्थल—सैलून, चाय-दोकान, पुस्तकालय—कें भाषा-साहित्यक प्रचारक केन्द्रक रूपमे कल्पित करैत अछि। पात्र बतबैत अछि जे मैथिली पत्रिका नगरमे मात्र नहि, गामक सामुदायिक बैसारमे सेहो उपस्थित रहि सकैत अछि। एहि कथाक सार सरकारी मान्यता नहि, पाठकक निर्माण अछि।

कथात्मक तनाव बहुत कम अछि; ई लगभग भाषिक संकल्पक दृश्य बनि जाइत अछि। मुदा एहि संक्षिप्त संवादमे मैथिली आधुनिक सार्वजनिकताक एक लोकतान्त्रिक सपना निहित अछि—साहित्य केवल शिक्षित विशिष्ट वर्गक सम्पत्ति नहि रहय।

‘सुन्दर-संयोग’ : विवाह-आयोजन, सहयोग आ संयोग

लम्बा कथात्मक विन्यासमे परिवारक विवाह-संयोजन, नौकरीसँ छुट्टीक संकट, गाम-अनुभव, रिश्तेदारीक आग्रह, आर्थिक व्यवस्था आ बरियातीक अनिश्चितता एक-दोसराकें घेरैत अछि। अप्रत्याशित परिस्थिति अन्तमे नव रिश्ताक सम्भावना खोलैत अछि। कथा पारिवारिक जीवनक अदृश्य संगठनात्मक श्रमक विस्तृत चित्र अछि।

एहि लेखनमे छोट-छोट व्यवहारक जीवित विवरण अमूल्य अछि—ककरा सूचित करब, ककरा आग्रह करब, काज कोन सम्हारत, समधी पक्षक अपेक्षा केना पूरा करब। जखन ई सभ बहुत विस्तार पाबैत अछि, कथानकक केन्द्र शिथिल भऽ सकैत अछि। कथा आ आत्मसंस्मरणक सीमा एहि रचनामे जानि-बुझि धुँधला होइत बुझाइत अछि।

‘युगधर्म’ : घूरक आगि आ रिश्ताक शीतलता

प्रचण्ड जाड़, गाँवक घूर, सामूहिक बातचीत आ लालबिहारीक पारिवारिक उपेक्षा—एहि कथाक रचनात्मक विन्यास विशेष सफल अछि। बाहर आगिक ताप अछि, मुदा परिवारक भीतर कृतघ्नताक शीतलता। जेठ भाइक द्वारा भाइसभक शिक्षा-व्यवस्था आ जीवननिर्माणमे देल त्यागक बदला उपेक्षा भेटैत अछि।

बड़का दलानक सामूहिक दृश्य कथाक नैतिक संघर्षकेँ स्थानीय संवेदनमे मूर्त करैत अछि। अन्तिम मौन कथामे अनेक व्याख्याक अवसर छोड़ैत अछि; ई खुलापन लेखकक अपेक्षाकृत परिपक्व कथाशिल्पक उदाहरण अछि। सामाजिक हितक भाषा एतय कथाकारक टिप्पणीसँ बेसी दृश्य आ मौनक माध्यमसँ निर्मित होइत अछि।

‘घमण्डक फल’ : स्थानीय शक्ति आ सामाजिक प्रतिशोध

बच्चीबाबूक आर्थिक प्रभुत्व आ अपमानजनक व्यवहार हुनका सामाजिक रूपे अलग करैत अछि। मामूली विवाद न्यायालयी संघर्षमे बदलैत अछि आ समाजसँ समर्थन नहि भेटलापर हुनकर शक्ति क्षीण होइत अछि। कथाक नामहि अन्तक नैतिक दिशा सूचित करैत अछि।

ई रचना संक्षिप्त दृष्टान्तक निकट अछि: घमण्डक दण्ड। समाजक सामूहिक प्रतिशोध स्वयं केतबा न्यायसंगत अछि, एकर परीक्षण कथामे अधिक नहि अछि। तइयो धनबल आ सामाजिक प्रतिष्ठाक अन्तर स्पष्ट करबाक शक्ति एहि लघु कथामे अछि।

पद्यक पृथक विवेचन : गीत, शोक आ प्रतिरोध

समग्रक पद्यरचना बहुविध अछि। कतहु मुक्त-लयक सार्वजनिक वक्तव्य, कतहु दोहराइत टेकवला गीत, कतहु स्मृतिगीत, कतहु भगवती-आराधना, कतहु होलीक हास्य-विनोद भेटैत अछि। एखनक समीक्षात्मक कसौटीपर एकर समग्रकेँ ‘श्रेष्ठ काव्य’ वा ‘केवल

प्रचारगीत’—कोनो एक नाम देब ठीक नहि। रचनाक उपलब्धि ओकर विषय, लय, भाषिक ऊर्जा आ सामुदायिक प्रयोजनक अलग-अलग परीक्षणसँ खुलैत अछि।

‘नव वर्षक सन्दर्भमे’ आ ‘अनन्त यात्राक यात्री’ : वियोगक सार्वजनिक मुद्रा

प्रथम प्रकाशित रचनाक रूपमे चिह्नित ‘नव वर्षक सन्दर्भमे’ मे नववर्षक सामूहिक उल्लासक पृष्ठभूमिपर दिवङ्गत ललितबाबूक स्मरण अछि। समयक नव आरम्भ आ व्यक्तिक अनुपस्थितिक टकराहट कविताक मूल भाव-तनाव बनबैत अछि। ‘अनन्त यात्राक यात्री’ मे यात्री-नागार्जुनक सृजन-स्मृति आ सामाजिक प्रतिष्ठाक प्रश्न एकत्र होइत अछि।

दूनु कवितामे निधन मात्र निजी शोक नहि, सांस्कृतिक ह्रासक अनुभूति अछि। तथापि कतिपय स्थलपर गुणगानक प्रत्यक्ष कथन काव्यात्मक रूपकक विकासकें सीमित करैत अछि। एहि सीमा बीच ऐतिहासिक संवेदना महत्वपूर्ण रहैत अछि।

‘पृथ्वीक भार’, ‘ई कीर्तिमान बनल’ आ ‘विडम्बना’ : आलोचनात्मक लोकस्वर

‘पृथ्वीक भार’ साहित्यिक संस्थाक अल्पायु, स्वार्थपरता आ कृतघ्नताक विरुद्ध आक्रोश दर्ज करैत अछि। ‘ई कीर्तिमान बनल’ सार्वजनिक सफलता आ श्रेय-लोलुपताक विचित्र सहअस्तित्वकें उजागर करैत अछि। ‘विडम्बना’ सामाजिक-राजनीतिक प्रसङ्गमे आलोचनात्मक भावकें तीव्र करैत अछि। एहि तीनू मे कविताक वक्ता समुदायसँ बाहरक निरीक्षक नहि; भीतरसँ आहत सहभागी छथि।

एहि रचनासभक काव्य-भाषा घोषणात्मक अछि। प्रत्यक्ष सम्बोधन आ प्रश्नवाचक लय वक्तव्यकें सार्वजनिक पाठक उपयुक्त बनबैत अछि, मुदा विशिष्ट बिम्बक सघनता हर ठाम नहि भेटैत अछि। लेखकक आक्रोशक ऐतिहासिक मूल्य आ एकर सौन्दर्यात्मक सीमा दुनू स्वीकार करब आवश्यक अछि।

‘नवगीत’ : भ्रष्टाचार-विरोधक टेक

‘नवगीत’ मे पुनरावृत्त टेक जन-उच्चारणक स्वर बनबैत अछि; नेता-अफसरक भ्रष्टाचार, महँगाई, असमान वितरण आ सामान्य लोकक विवशता विषय बनैत अछि। सम्पादकीय टिप्पणीमे एहि रचनाक गीतात्मक वर्गीकरणक प्रश्न सेहो उठल अछि। एहि प्रसङ्गसँ एक महत्त्वपूर्ण तथ्य स्पष्ट अछि: छन्दनाम आ विधानाम अपने-आप काव्य-रूपक प्रमाण नहि; रचनाक अन्तर्लय, टेक, आवृत्ति आ प्रस्तुति-क्षमता देखबाक चाही।

‘फगुआ’, ‘कनियाँ महारानीक आरती’ आ ‘फगुआक प्रेमोपहार’ : उत्सवक बहुवचन

‘फगुआ’ मे ऋतु, रङ्ग, भोजन, संगीत आ सामुदायिक मेलक दृश्य अछि। ‘कनियाँ महारानीक आरती’ मे धार्मिक आरतीक भंगिमा घरेलू प्रेम आ उत्सवी विनोदमे रूपान्तरित होइत अछि; धार्मिक शब्दावलीक लोक-हास्यात्मक प्रयोग ओकर प्रमुख कलात्मक युक्ति अछि। ‘फगुआक प्रेमोपहार’ विशिष्ट व्यक्तिसभ लेल लिखल लघु संबोधनक शृंखला अछि, जाहिमे उत्सवक अवसर सामाजिक सम्बन्धक दर्जाक माध्यम बनैत अछि।

एहि रचनासभक मूल्य केवल उच्च काव्यात्मक कसौटीपर नहि, मैथिली सार्वजनिक संस्कृतिक जीवित प्रयोगमे सेहो अछि। विशेषतः प्रेमोपहारक नामावली कोलकाताक सामाजिक जालक एक छोट अभिलेखक रूपमे देखल जा सकैत अछि।

‘एकटा साहित्यिक दीप’, ‘श्रद्धाञ्जलि’ आ ‘शोक गीत’ : स्मृति-संरक्षणक काव्य

एहि कवितासभमे श्रद्धाञ्जलि मात्र भावुकता नहि, दिवङ्गत साहित्यसेवीक काजक सूची आ समाजक ऋणस्वीकार अछि। ‘एकटा साहित्यिक दीप’ मे दीपकक परम्परागत प्रतीक साहित्यिक साधनाक निरन्तरता व्यक्त करैत अछि। ‘श्रद्धाञ्जलि’ मे नामक अक्षरानुसार विन्यास शोकक औपचारिक शिल्प बनैत अछि। ‘शोक गीत’ सांस्कृतिक प्रतीक, आयोजन आ मैथिलीकेँ मान्यता दिलेबाक अभियानक स्मृति जोड़ैत अछि।

एहि रचनासभमे संस्मरणात्मक जानकारी आ भावात्मक आवेगक मेल उपयोगी अछि, किन्तु काव्यक स्वायत्तता कतहु तथ्य-उल्लेखक भारसँ दबि जाइत अछि। एखनक पाठक लेल ई कवितासभ एकसाथ साहित्य आ स्मृतिलेख छथि।

‘भगवती-वन्दना’क दू रूप : लोकभक्ति आ आत्मपरीक्षण

दू अलग स्थानपर संकलित भगवती-वन्दनामे शरणागतिक विन्यास, पापक आत्मस्वीकार, दुःखक अभिव्यक्ति आ मातृदेवीक प्रति भरोसाक स्वर अछि। एहिमे परम्परागत भक्तिकाव्यक भाषा अपन आधुनिक सामाजिक आ निजी व्यग्रताकें स्थान दैत अछि। दोहराईत सम्बोधन श्रोता-केंद्रित लय बनबैत अछि।

एहि कविता-द्वयक साहित्यिक महत्त्व मौलिक दार्शनिक सिद्धान्तमे नहि, भावक स्थानीय अनुकूलनमे अछि। निजी कातरता आ देवीक सार्वजनिक छविक बीच कविता लोकधार्मिक संवेदनाक सेतु बनैत अछि।

‘किछु लोक’, ‘ई नजि उचित विचार’ आ ‘मैथिलीक उक्ति : सन्तानक प्रति’ : असहमतिक कविता

‘किछु लोक’ मे विश्वशान्ति आ हिंसाक प्रश्न उठैत अछि; ‘ई नजि उचित विचार’ मे साहित्यिक-वैचारिक मतभेदक प्रत्यक्ष सम्बोधन अछि; ‘मैथिलीक उक्ति : सन्तानक प्रति’ मे मातृभाषा स्वयं आवाज पाबि अपन सन्तानकें प्रश्न करैत अछि। अन्तिम रचनामे भाषा-मानवीकरण विशेष प्रभावी शिल्पक सम्भावना खोलैत अछि।

एहि तीनू रचनामे सामुदायिक विवेककें जगायबाक दृढ़ आग्रह अछि। तथापि समसामयिक राजनीतिक कथनकें कविता मानि लेबाक बदला कवितात्मक जटिलता, विडम्बना आ अन्तरस्वरक कसौटीपर परखब जरूरी अछि। लेखकक निष्ठा निर्विवाद, मुदा निष्ठा स्वयं शिल्पक विकल्प नहि।

‘स्वीकार करू प्रेमालिङ्गन’ आ ‘मैथिली-महोत्सव’ : अलग-अलग सार्वजनिक क्षण

‘स्वीकार करू प्रेमालिङ्गन’ वसन्तक सौन्दर्य, घरेलू प्रणय आ फगुआक अवसरकें मिलबैत अछि। एकर अन्तर्गत अलग शीर्षक-प्रयोगक सम्पादकीय संकेत पाठपरम्पराक रुचिकर समस्या अछि: एक रचना भिन्न नामसँ प्रसारित होइत रहल हो सकैत अछि। ‘मैथिली-महोत्सव’ संविधानमे मैथिलीकें स्थान भेटबाक सामुदायिक उत्साहकें गीतक रूप दैत अछि।

पहिल कविता निजी आकर्षणक लोकशैली अछि, दोसर सार्वजनिक उपलब्धिक अभिनन्दनगीत। दुनूमे सरल टेक-आधारित भाषाक कारणे सामूहिक पाठक सुविधा अछि। तुलना करैत स्पष्ट होइत अछि जे लेखकक कविता निजी आ सामुदायिक दुनू समारोहमे स्थान लैत अछि।

काव्यशास्त्रीय आ आख्यानशास्त्रीय समेकित परीक्षण

नबोनारायण मिश्रक कथामे कथानक प्रायः व्यक्ति-आचरणक नैतिक फलतक पहुँचैत अछि। ‘एकटा पाकल आम’ मे बालकक भावनात्मक प्रश्न, ‘आदर्श विवाह’ मे सार्वजनिक प्रतिरोध आ ‘घमण्डक फल’ मे दण्ड-सिद्धि एक तरहक नैतिक परिणतिक तीन अलग मॉडल छथि। एहि तुलनामे ‘युगधर्म’ अपेक्षाकृत गम्भीर काव्यात्मक उपलब्धि अछि, कारण प्रकृति-वर्णन, स्थान-रचना आ पात्रक मौन मिलि जे अर्थ बनबैत अछि, से सुस्पष्ट उपदेशसँ अधिक बहुअर्थी अछि।

रसक दृष्टिँ विनोद, करुणा, आक्रोश आ भक्ति उपस्थित अछि। ‘एहनो होइत छै’क हास्य उलटप्रकाशपर, ‘परोपकारक फल’क करुणा नैतिक दृढ़तापर, ‘कनियाँ महारानीक आरती’क हास्य परम्परागत आरतीक रूपान्तरणपर आ ‘युगधर्म’क करुणा विपरीत ताप-बिम्बपर आधारित अछि। ध्वनिक दृष्टिँ सर्वाधिक प्रभाव ताहि क्षणमे अछि जतय लेखक निष्कर्षकें कहब नहि, दृश्यकें कार्य करबाक अवसर दैत छथि।

कथा-भाषामे संवादक मैथिलीय सहजता, सामाजिक सम्बोधन आ घरेलू व्यवहारक विवरण प्रमाणिकता उत्पन्न करैत अछि। मुदा लेखकक व्याख्यात्मक वाक्य अनेक ठाम पात्रक स्वतन्त्रता सीमित करैत अछि। अन्तिम नैतिक टिप्पणी घटैत तँ ई कथासभमे रहल विडम्बना अधिक गाढ़ भऽ सकैत छल। कवितामे गीतक लय कएक ठाम अपेक्षाकृत स्वाभाविक अछि, मुक्तछन्दमे वक्तव्यक दबाव अधिक देखाइत अछि।

स्त्री-पात्रक दृष्टिसँ मूल्याङ्कन करैत द्वन्द्व अछि। एक दिस बालक द्वारा पितृक विभाजन-विरोध, दहेजक विरुद्ध युवकक प्रतिरोध आ मंचक महिलाक सक्रियताक उल्लेख प्रगतिशील सम्भावना खोलैत अछि; दोसर दिस कतिपय कथामे पत्नीकें झगड़ालू वा घरेलू दबावक प्रतीक रूपमे सीमित कएल गेल अछि। ई विरोधाभास लेखकक रचनाप्रक्रियामे परम्परा आ सुधारवादी नैतिकताक सहअस्तित्व स्पष्ट करैत अछि।

मैथिली साहित्यक इतिहाससँ तुलनात्मक विवेचन

मैथिली साहित्यक इतिहासक एक प्रबल प्रवाह विद्यापति, ज्योतिरीश्वर, आधुनिक गद्यक विकास, यात्री-नागार्जुन, हरिमोहन झा, राजकमल चौधरी आ नव साहित्यिक आन्दोलनसभक माध्यमसँ लिखल जाइत अछि। एहि इतिहासक केन्द्र रचनाक भाषा-शिल्प आ लेखकक वैचारिक नवान्वेषण रहैत अछि। नबोनारायण मिश्र एहि परम्परामे केवल एक नव रचनाकार नहि जोड़ैत छथि; ओ इतिहासक प्रश्न बदलि दैत छथि—साहित्यकें जीवित रखनिहार संस्था, प्रदर्शन, सम्पादक, पुस्तक-वितरण आ पाठकवर्गक भूमिका केतबा अछि?

कथाशिल्पक तुलनामे हरिमोहन झाक सामाजिक विनोद अधिक सतत मनोवैज्ञानिक व्यङ्ग्यक परिचय दैत अछि, जखन नबोनारायणक ‘एहनो होइत छै’ दृश्यगत भूलपर अवलम्बित लघु हास्य अछि। यात्री-नागार्जुनक जनधर्मी कवितामे भाषा आ व्यङ्ग्यक बहुअर्थकता तीव्र देखल जाइत अछि, जखन नबोनारायणक राजनीतिक कविता प्रायः

तात्कालिक सार्वजनिक घोषणाक नजदीक रहैत अछि। ई तुलना प्रभाव वा अनुकरणक दावा नहि, रूपविधानक अन्तर बुझबाक आलोचनात्मक उपक्रम अछि।

महेन्द्र मलंगिया आ मैथिली रंगपरम्परामे नाट्यलेखनक अर्थ स्वतन्त्र शिल्प-सृजन अछि; कोकिल मञ्चक प्रसङ्गमे नबोनारायणक महत्त्व लिखित नाटकसँ आगाँ मंचन, संगठन आ दर्शक-समाजक निर्माणमे अछि। एकरा कमतर योगदान कहब साहित्येतिहासक एकांगी दृष्टि होयत। ‘मंच पर की खेलल गेल’ आ ‘मंच सम्भव कोना भेल’—दूनों प्रश्न बराबर आवश्यक छथि।

मैथिली साहित्यक प्रवासी भूगोलमे कोलकाता विशिष्ट केन्द्रक रूपमे उभरैत अछि। एहि नगरमे रोजगार, मुद्रण, उच्चशिक्षा, संस्था, पुस्तक-वितरण, आन्दोलन आ रंगमञ्चक सम्बन्ध मैथिली साहित्यक सार्वजनिक आकार बनबैत अछि। नबोनारायणक गद्य शहरकें केवल प्रवासक पीड़ा नहि, सांस्कृतिक श्रमिक आ सृजनात्मक सम्भावनाक केन्द्रक रूपमे देखबैत अछि। एहि आधारपर हुनकर संग्रह ‘मैथिली साहित्य’ आ ‘मैथिली आन्दोलन’क कृत्रिम विभाजन प्रश्नांकित करैत अछि।

विदेहक समानान्तर साहित्येतिहासक उपक्रममे उपेक्षित रचनाकार, लघु पत्रिका, लोकसाहित्य, रङ्गमञ्च आ भाषिक विविधताक अध्ययनकें महत्व देल जाइत अछि। एहि आलोचनात्मक रूपरेखाक संग समग्रक प्राकृतिक संवाद अछि, किन्तु दूनोंकें तादात्म्य मानल जाय से उचित नहि। ऐतिहासिक साक्ष्य, पाठ-स्वरूप आ सामाजिक प्रतिनिधित्वक मानदण्डपर प्रत्येक दावाक पुनः परीक्षण आवश्यक अछि।

साहित्यिक पत्रकारिता, संस्था आ इतिहासलेखनक प्रमाण-संरचना

समग्रमे ‘मिथिला मिहिर’, ‘मिथिला दर्शन’, ‘आखर’, ‘कर्णामृत’ आ अन्य पत्रिका मात्र शीर्षक रूपमे नहि, सामुदायिक स्मृतिसंस्थाक रूपमे आओत अछि। पत्रिकाक प्रकाशनक निरन्तरता, सम्पादकक परिश्रम, अंकक सामग्री आ पाठक-निर्माण मिलि भाषा

आन्दोलनक अवयव बनैत अछि। जे साहित्यिक इतिहास छपल महान पोथी मात्र पढ़ैत अछि, ओ पत्रिकाक ई योगदान छीन लैत अछि।

तथापि ऐतिहासिक अनुशीलनमे विभिन्न प्रमाणकें एकसमान दर्जा नहि देब उचितः स्वयं लेखकक प्रत्यक्ष सहभागिता, साक्षात्कारदाताक स्मृति, संपादकक परिचय, कार्यक्रमक विवरण आ बादक स्मरण—सभक विश्वसनीयताक स्वरूप अलग अछि। एहि संग्रहक उपयोग करैत काल कालक्रम, वैकल्पिक स्मृति आ वास्तविक प्रकाशनक अस्तित्वक पृथक पुष्टि करबाक चाही। एहि सावधानीसँ संग्रहक महत्त्व कम नहि होइत; प्रमाणक श्रेणी अधिक स्पष्ट होइत अछि।

संस्थागत इतिहासक आलोचनात्मक पाठमे सामाजिक समावेशनक प्रश्न सेहो आवश्यक अछि। कोन कलाकारक नाम बार-बार आएल? स्त्री-अभिनेत्री, तकनीकी सहयोगी, स्वैच्छिक आयोजक, दलित-पिछड़ा समूह आ सामान्य दर्शकमे के कतेक दृश्य अछि? जे सामग्री नामोल्लेख करैत अछि, ओहि सामग्रीक मौन क्षेत्र सेहो इतिहासक विषय अछि। एहि दृष्टिँ समग्र भविष्यक सामाजिक-सांस्कृतिक शोध लेल प्रेरक काज करैत अछि।

सम्पादनक उपलब्धि आ पाठगत सावधानी

आशीष अनचिन्हारक सम्पादकीय श्रमक सर्वाधिक महत्त्व बिखरल सामग्रीक संरक्षण अछि। व्यक्तिगत लेख, स्मृतिग्रन्थ, पत्रिका, साक्षात्कार, पुरान प्रकाशन आ अप्रचुर उपलब्ध सामग्री एक संग भेटनाइ पाठक आ शोधार्थीक लेल बड़ी सुविधा अछि। सम्पादक भूमिकामे ई स्वीकार सेहो करैत छथि जे सामग्रीक मूल प्रकाशन-सूचना सर्वत्र समान रूपे उपलब्ध नहि आ भविष्यत् रचना जुड़ब सम्भव अछि।

समालोचनात्मक संस्करणक अगिला चरणमे रचनाक प्रथम प्रकाशन-वर्ष, पत्रिकाक अङ्क, मूल शीर्षकक पाठभेद, लेखन-तिथि आ पुनर्प्रकाशनक जानकारी एकरूप ढंगसँ जुटाओल जाय। भिन्न शीर्षक अन्तर्गत उपलब्ध समान कविताक सम्बन्ध, रचनाक क्रम,

एकहि प्रसङ्गक अनेक वृत्तान्त आ संस्थागत तिथिक भिन्न साक्ष्यक तुलनात्मक निबन्धन विशेष उपयोगी होयत।

एहि समीक्षामे शब्दशः उद्धरणक अपेक्षा पात्र, घटनाक्रम, साक्षात्कार-विषय आ विचारक सन्दर्भसिद्ध विवेचन अपनाओल गेल अछि। उपलब्ध रचनासभक पाठरूप सर्वत्र समान रूपे स्थिर नहि रहलासँ असन्दिग्ध मूल शब्दावलीक पूर्ण निश्चय बिना प्रत्यक्ष उद्धरण प्रस्तुत नहि कएल गेल अछि। एहि संयमक उद्देश्य इतिहासक विश्वसनीयता सुरक्षित रखब अछि।

समग्र मूल्याङ्कन : उपलब्धि, सीमा आ भविष्यक सम्भावना

नबोनारायण मिश्रक साहित्यिक उपलब्धिक तीन प्रमुख स्तर अछि। पहिल, मैथिली सांस्कृतिक संस्थाक श्रम आ कार्यक्रमक इतिहासकें शब्द देब; दोसर, लघु कथा आ सामाजिक प्रसङ्गमे नैतिक विरोधाभासक प्रभावी स्थितिसभ निर्माण करब; तेसर, कविता आ गीतक माध्यमसँ भाषिक आ सामुदायिक भावनाकें स्वर देब। एहि तीनूमे सबसँ विशिष्ट स्थान आलेख आ साक्षात्कारक अछि, कारण ओतय लेखकक प्रत्यक्ष सहभागिता ओहि संसारक उपेक्षित इतिहास खोलैत अछि।

कथा-खण्डमे ‘एकटा पाकल आम’क संक्षिप्त नैतिक प्रश्न, ‘एहनो होइत छै’क हँसी, ‘आदर्श विवाह’क प्रतिरोध, ‘परोपकारक फल’क दुःखान्त जिद आ ‘युगधर्म’क मौन विशेष ध्यान खींचैत अछि। ‘यात्राक फेरी’ आ ‘सुन्दर-संयोग’ मे जीवनानुभवक विस्तार रोचक अछि, मुदा कथाशिल्पक कसाव कम पड़ैत अछि। पद्यक तीव्र सार्वजनिकता ऐतिहासिक साक्ष्यक रूपमे प्रभावी अछि; काव्यरूपक जटिलता सभ ठाम समान नहि।

समग्रक वैचारिक सीमा मुख्यतः नीतिपरक सहज समाधान, श्रद्धाभावक अतिक्रमण आ सामाजिक सम्बन्धक कतिपय पारम्परिक रूढ़ रूपरेखामे देखाइत अछि। लेखकक विचारमे प्रबल मातृभाषा-निष्ठा अछि, मुदा साहित्यिक असहमति, वैकल्पिक दृष्टि आ हाशियाक

अनुभूतिक लेल अधिक स्थान होइत तँ चित्र आरो व्यापक बनित। एहि आलोचनाक उद्देश्य अवमूल्यन नहि, योगदानक सही रूपरेखा बनायब अछि।

अन्ततः ‘नबोनारायण मिश्र समग्र’ एकटा लेखकक स्वतंत्र साहित्यिक मापकसँ बेशी मैथिली भाषिक सार्वजनिक जीवनक सामूहिक आत्मकथाक अंश अछि। मैथिली साहित्येतिहास जखन शहरक मंच, संस्थाक बैठक, पत्रिकाक सम्पादक, अधोषित श्रमिक, गाँवक पाठक, लोककथा आ भाषिक आन्दोलनक आपसी सम्बन्धमे लिखल जाएत, तखन एहि संग्रहक वास्तविक मूल्य स्पष्ट होयत। ई पोथी अतीतक स्थिर स्मारक नहि, भविष्यक शोधक प्रश्नावली सेहो अछि।

विस्तृत सन्दर्भसूची

- मिश्र, नबोनारायण। नबोनारायण मिश्र समग्र। सम्पादक : आशीष अनचिन्हार। मैथिली, २०२६। एहि शोधक मूल आधारग्रन्थ।
- अनचिन्हार, आशीष। ‘यात्रा : एक एहन लेखक केर जिनका लेखक बनबाक लोल नहि छन्हि’। नबोनारायण मिश्र समग्रमेक सम्पादकीय भूमिका, २०२६।
- मिश्र, नबोनारायण। ‘किशोरीकान्त मिश्रसँ साक्षात्कार’; ‘रामलोचन ठाकुरसँ साक्षात्कार’; ‘डॉ. वीरेन्द्र मल्लिकसँ साक्षात्कार’। नबोनारायण मिश्र समग्र, सम्पादक : आशीष अनचिन्हार, २०२६।
- मिश्र, नबोनारायण। ‘हमरा नजरिमे : श्री रामलोचन ठाकुर’; ‘युगपुरुष श्री राजनन्दन लाल दास’; ‘युगप्रवर्तक राजनन्दन लाल दास’; ‘मिथिला-मैथिलीक प्रबल पक्षधर : प्रो. प्रबोध बाबू’; ‘सर्वगुण सम्पन्न सागरजी’। नबोनारायण मिश्र समग्र, २०२६।
- मिश्र, नबोनारायण। ‘मिथिला विकास परिषद्, कोलकाता : जेना हम देखल’; ‘मैथिली आन्दोलनक नायक : पीताम्बर पाठक’; ‘कलकत्ताक मैथिली आन्दोलन आ मिथिला दर्शन’; ‘स्मृति आखर’; ‘प्रसङ्ग : बाबू साहेब चौधरीक’। नबोनारायण मिश्र समग्र, २०२६।
- मिश्र, नबोनारायण। ‘मैथिली लोककथा’; ‘मिथिला मिहिर आ सम्पादकजी’; ‘अनन्य मैथिली हितैषी अजय सिंह’; ‘हरि अनन्त हरि कथा अनन्ता’; ‘मैथिली रङ्गमञ्च आ कोलकाता’। नबोनारायण मिश्र समग्र, २०२६।

मिश्र, नबोनारायण। ‘एहनो होइत छै’; ‘एकटा पाकल आम’; ‘यात्राक फेरी’; ‘कालचक्र’; ‘आदर्श विवाह’; ‘परोपकारक फल’; ‘करोड़पतिक कर्मठता’; ‘मैथिलीक मर्यादा’; ‘सुन्दर-संयोग’; ‘युगधर्म’; ‘घमण्डक फल’। कथा-खण्ड, नबोनारायण मिश्र समग्र, २०२६।

मिश्र, नबोनारायण। ‘नव वर्षक सन्दर्भमे’; ‘पृथ्वीक भार’; ‘ई कीर्तिमान बनल’; ‘नवगीत’; ‘विडम्बना’; ‘अनन्त यात्राक यात्री’; ‘फगुआ’; ‘कनियाँ महारानीक आरती’; ‘एकटा साहित्यिक दीप’; ‘श्रद्धाञ्जलि’। पद्य-खण्ड, नबोनारायण मिश्र समग्र, २०२६।

मिश्र, नबोनारायण। ‘भगवती-वन्दना’ (दू रचना); ‘किछु लोक’; ‘स्वीकार करू प्रेमालिङ्गन’; ‘ई नजि उचित विचार’; ‘मैथिलीक उक्ति : सन्तानक प्रति’; ‘मैथिली-महोत्सव’; ‘शोक गीत’; ‘फगुआक प्रेमोपहार’। पद्य-खण्ड, नबोनारायण मिश्र समग्र, २०२६।

विदेह। ‘नबोनारायण मिश्र समग्र’क ग्रन्थ-सूची प्रविष्टि। विदेह मैथिली पोथीक अभिलेखागार। <https://videha-ejournal.github.io/videha/pothi.htm>

विदेह। ‘नबोनारायण मिश्र समग्र’क गद्य-सूची प्रविष्टि। विदेह, गद्य-संसाधन।

<https://videha-ejournal.github.io/videha/prose.htm>

विदेह। ‘नबोनारायण मिश्र’क लेखक-परिचय आ रङ्गमञ्च-संबन्धी जानकारी। विदेह रत्न-सूची। <https://videha-ejournal.github.io/videha/ratna.htm>

विदेह। मैथिली साहित्य, नाटक, लोकसाहित्य, भाषा आ आलोचनासम्बन्धी विदेह शोध-सूची। <https://videha-ejournal.github.io/videha/research/index.html>

विदेह। ‘विदेह शोध-लेख : अंक १ सँ ४५१ धरि’। शोध-संहति, आलोचनात्मक आ साहित्येतिहास-संबन्धी प्रविष्टिसभ।

<https://videha-ejournal.github.io/videha/research/videha-scholar-research-book.html>

मिश्र, नबोनारायण। ‘हमर संस्मरण रमणजीक संग’। विदेह, अङ्क ४४८, १५ अगस्त २०२६; विदेह शोध-सूचीमे दर्ज स्वतंत्र रचना।

<https://videha-ejournal.github.io/videha/research/index.html>

विदेह। ‘रामलोचन ठाकुर विशेषांक’। अङ्क ३१९, १ अप्रैल २०२१; समग्रमे पुनर्संकलित लेखकक आलेखक प्रकाशन-सूचनाक अनुसार। विदेहक अङ्क-अभिलेख।

विदेह। ‘राजनन्दन लाल दास विशेषांक’। अङ्क ३३३, १ नवम्बर २०२१; समग्रमे पुनर्संकलित आलेखक प्रकाशन-सूचनाक अनुसार। विदेहक अङ्क-अभिलेख।

विदेह। ‘लक्ष्मण झा सागर विशेषांक’। अङ्क ३८२, १५ नवम्बर २०२३; समग्रमे पुनर्संकलित आलेखक प्रकाशन-सूचनाक अनुसार। विदेहक अङ्क-अभिलेख।

विदेह। ‘मिथिला विकास परिषद् विशेषांक’। अङ्क ४०८, १५ दिसम्बर २०२४; समग्रमे पुनर्संकलित आलेखक प्रकाशन-सूचनाक अनुसार। विदेहक अङ्क-अभिलेख।

विदेह। मैथिली नाट्यमञ्चक आलोचनात्मक विवेचनासम्बन्धी लेख-शृंखला; विदेह शोध-सूचीमे निर्दिष्ट कुणाल-कृत नाटकपर अध्ययन। <https://videha-ejournal.github.io/videha/research/index.html>

समीक्षा २

स्वतंत्रचेता • अरविन्द ठाकुर

व्यक्तित्व-कृतित्वक बहुस्वरीय पाठ

समीक्ष्य पोथी स्वतंत्रचेता : अरविन्द ठाकुर—व्यक्तित्व-कृतित्व | सम्पादक : आशीष अनचिन्हार | शशि प्रकाशन, सुपौल | प्रथम संस्करण : २०२० | ISBN 978-81-948818-0-3

सार

आशीष अनचिन्हार-सम्पादित स्वतंत्रचेता साहित्यिक व्यक्तित्वक सामान्य प्रशस्ति-पोथी नहि, बल्कि अरविन्द ठाकुरक रचना, सामाजिक उपस्थिति, विचारगत असहमति आ समकालीन स्वीकार्यताक अनेक स्वरकेँ एकत्र करएवला आलोचनात्मक दस्तावेज अछि। विदेहक अरविन्द ठाकुर विशेषांकसँ विकसित एहि संकलनमे कथा, कविता आ गजलपर केन्द्रित समीक्षा; रचनाकारक साक्षात्कार; संस्मरण; आत्मकथ्य; आ संक्षिप्त जीवन-वृत्त एक-दोसराक संग संवाद करैत अछि। एतए साहित्यिक मूल्यक संग साहित्यिक व्यक्तित्वक निर्माण-प्रक्रिया सेहो विचारणीय होइत अछि। प्रस्तुत अध्ययन संकलनक सम्पादकीय अभिकल्पनाकेँ खोलैत, अन्हारक विरोध मे कथासंग्रहक राजनीतिक-सामाजिक आख्यान-शिल्प, परती टूटि रहल अछि केर लोकाभिमुख कविता-दृष्टि आ बहुरुपिया प्रदेश मे क गजल-स्वरूपसम्बन्धी बहसक पृथक पाठविश्लेषण करैत अछि। साहित्यिक इतिहासमे ग्राम्य जीवन, वैचारिक प्रतिरोध, शैलीगत प्रयोग आ समानान्तर प्रकाशन-संस्कृतिक पारस्परिक सम्बन्धक परीक्षण एहि निबन्धक प्रधान उद्देश्य अछि। समग्र मूल्याङ्कनक निष्कर्ष ई अछि जे संग्रहक सर्वाधिक महत्त्व एक गोटा लेखकक निर्विवाद प्रतिमा गढ़बामे नहि, अपितु अपन भीतर विद्यमान सहमति, असहमति आ आलोचनात्मक अपूर्णताकेँ सुरक्षित रखबामे अछि।

बीजशब्द : अरविन्द ठाकुर; स्वतंत्रचेता; आशीष अनचिन्हार; विदेह; कथा-समीक्षा; ग्राम्य चेतना; मैथिली गजल; साम्प्रदायिकता; प्रतिरोध; साहित्यिक इतिहास।

पोथीक स्वरूप आ समीक्षाक आधार

स्वतंत्रचेता केँ अरविन्द ठाकुरक मौलिक कविताक, कथाक अथवा गजलक नवा संग्रह मानि पढ़नाइ मूलभूत भूल हएत। ई हुनक रचनात्मक जीवनपर लिखल अनेक आलोचकक मूल्याङ्कन, रचनाकारक अपन बयान आ निकट सम्पर्कमे रहल लोकनिक स्मृति मिलाकए निर्मित एकटा सम्पादित पोथी थिक। एकरा पढ़ैत आलोचककेँ दुइ स्तरपर निरन्तर ध्यान राखए पड़ैत अछि—रचनाकारक कृतित्वक मूल्य आ ओहि कृतित्वक चारू दिस निर्मित आलोचनात्मक धारणाक मूल्य। पहिल स्तरपर प्रश्न उठैत अछि जे कथामे समाजक कोन द्वन्द्व, कवितामे केहन लोकभाषा आ गजलमे कोन रूपगत अनुशासन अछि। दोसर स्तरपर पूछल जाइत अछि जे आलोचक लोकनि एहि सभकेँ कोन सैद्धान्तिक पूर्वधारणासँ देखैत छथि, आ रचनाकारक प्रति निकटतासँ समीक्षा कतए समर्थ आ कतए शिथिल बनैत अछि।

पोथीक मूल सम्पादकीय तथ्य साहित्यिक इतिहास लेल निर्णायक अछि। विदेहक पहिने प्रकाशित अरविन्द ठाकुर विशेषांक, जे २०१५ मे निकलल छल, ओकर आधारपर २०२० मे ई रूप विकसित भेल। सम्पादकीय भूमिकामे किछु मूल रचना हटाकए तकर स्थानपर परवर्ती समीक्षा आ संस्मरण जोड़बाक बात स्पष्ट कएल गेल अछि। अर्थात् पत्रिकाक मूल विशेषांक आ पोथी पूर्णतः एक समान पाठ-वस्तु नहि अछि। एकरा केवल पुनर्मुद्रण कहला सँ पाठ-चयनक सक्रिय सम्पादकीय भूमिका अदृश्य भऽ जायत। साहित्यक दस्तावेजीकरणमे ई भेद महत्वपूर्ण अछि, किएक तँ संकलनक स्वरूप स्वयं समयक संग लेखकक स्वागत, पुनर्पाठ आ मूल्याङ्कनक बदलैत प्रक्रिया देखबैत अछि।

एहि अध्ययनमे संकलनक विषयक्रम आ विदेहमे प्रकाशित मूल आलोचनात्मक आलेखकेँ पारस्परिक सन्दर्भमे राखल गेल अछि। जतय संकलित आलेख कोनो मूल कृतिक पक्षमे दाबी करैत अछि, ओतए दाबीकेँ प्रत्यक्ष रूपसँ प्रमाणित रचना-पाठक

विकल्प नहि मानल गेल अछि। ई सावधानी आवश्यक अछि; रचनाकारक महत्त्वक तर्क आलोचकक प्रभावशाली वाक्यसँ नहि, वर्णित कथा-विन्यास, पात्र-व्यवस्था, भाषिक बनावट आ आलोचकसभक पारस्परिक असहमति सँ पुष्ट होइत अछि।

सम्पादकीय संरचना : जीवनीक स्थानपर बहुस्वरीय आलोचनात्मक अभिलेख

सम्पादक संग्रहकें आलोचना, साक्षात्कार, संस्मरण, आत्मकथ्य आ संक्षिप्त जीवन-वृत्तक क्रममे राखैत छथि। आलोचनाक भीतर कथा-विषयक विवेचन, कविताक सामाजिक प्रयोजन, गजल-चिन्तन आ व्यक्तित्व-कृतित्व विषयक लेख संग-संग रहैत अछि। तकर बाद मुन्नाजी द्वारा लेल गेल साक्षात्कार, बिनय भूषण, शैलेन्द्र आनन्द, अजित आजाद आ आन संस्मरणकारक स्मृति, फेर रचनाकारक आत्मकथ्य आ जीवन-वृत्त अबैत अछि। एहि क्रमसँ रचनाकारक बाहरी मूल्याङ्कनसँ भीतरी आत्मविवेचन धरि एकटा पाठकीय यात्रा तैयार होइत अछि।

ई योजना रचनात्मक लेखककें इतिहासक सामग्री बनबैत अछि, मुदा अपन संग किछु जोखिम सेहो अनैत अछि। संस्मरणमे निकटता, श्रद्धा आ चयनित स्मृति प्रधान रहैत अछि; आलोचनामे मूल्यांकनक कसौटी प्रमुख होएबाक चाही। दुनूकें एकहि भावमे पढ़ला सँ समालोचनाक कठोरता कम पड़ि सकैत अछि। मुदा संस्मरणक माध्यमसँ समाज, सम्पादन, पत्रिका-प्रकाशन, कृषि-संस्कार आ कोसी क्षेत्रक साहित्यिक सम्बन्धक जे अंश प्रकट होइत अछि, से रचना-इतिहासक शुष्क कालक्रमसँ नहि भेटि सकैत अछि। ग्रन्थक सबलता एहि विधागत भिन्नताकें एक जिल्दमे बचा रखब अछि।

सम्पादकीय भूमिका रचनाकारक आलोचक-चिन्तक रूपकें पर्याप्त प्रतिनिधित्व नहि भेटबाक अभाव सेहो स्वीकार करैत अछि। ई स्वीकारोक्ति पोथीक सीमाकें छिपबैत नहि, बल्कि शोधक अगिला प्रश्न तय करैत अछि। जाहि लेखकक कथा आ गजलपर अनेक टिप्पणी सुरक्षित हो, मुदा हुनक स्वतन्त्र समालोचनात्मक चिन्तन अपेक्षाकृत कम

उपस्थित हो, ताहि लेखकक विचार-संसारक चित्र अधूर रहब स्वाभाविक अछि। एतए पोथीक आत्म-सीमा साहित्यिक इतिहासकार लेल नवा अनुसन्धानक आधार बनैत अछि।

प्रतिरोधक व्याकरण : अन्हार एकटा घटना नहि, व्यवस्था थिक

अरविन्द ठाकुरक कथासंसारक आलोचनात्मक पाठमे अन्हार शब्दकेँ सामान्य निराशा अथवा प्राकृतिक रातिक प्रतीक मानल नहि जा सकैत अछि। ई सत्ता, सामाजिक पूर्वग्रह, जाति-सम्प्रदाय आधारित विभाजन, न्यायिक असमानता आ व्यक्तिगत अकर्मण्यताक सम्मिलित रूप लैत अछि। ओहि अर्थमे कथासंग्रह अन्हारक विरोध मे एकटा रूपकात्मक शीर्षक मात्र नहि; विभिन्न सामाजिक अवस्थाकेँ बुनएवला वैचारिक सूत्र अछि। डा. योगानन्द झा, गजेन्द्र ठाकुर आ आशीष चमनक मूल्याङ्कन अलग-अलग रीतिसँ एहि सूत्रकेँ चिन्हैत अछि, मुदा लेखसभ एकहि निर्णयपर नहि पहुँचैत अछि।

अन्हारक विरोधक एक दिशा सार्वजनिक जीवनक नैतिक अधःपतन अछि; दोसर दिशा ओ अधःपतनक कारणे व्यक्तिक भीतर जगैत संशय, भय आ असहायता। एतए प्रतिरोधक अर्थ केवल घोषणात्मक आक्रोश नहि होइछ। कथाक पात्र जे परिस्थिति बुझैत छथि, ओहि परिस्थिति सँ निकलबाक हुनक सामर्थ्य कतेक अछि—ई भेद महत्त्वपूर्ण अछि। साहित्यिक उपलब्धि तखने उत्पन्न होइत अछि जखन लेखक एक पक्षकेँ सज्जन आ दोसरकेँ दुष्ट चिन्हित कय दैत नहि, बल्कि सामाजिक तन्त्र एहन विभाजन कोना उत्पन्न करैत अछि से सेहो देखबैत अछि।

संकलनमे एहन अवसर सेहो भेटैत अछि जतए आलोचक कथाक विचार-निष्ठाकेँ अधिक महत्त्व दैत छथि आ जटिल चरित्र अथवा कलात्मक अनिर्णयक सम्भावनाकेँ कम स्थान दैत छथि। प्रस्तुत निबन्धक मूल्यांकन ई अछि जे प्रतिरोध-केन्द्रित कथा सामाजिक रूपसँ आवश्यक तखन होइत अछि, जखन ओकर कारण-सम्बन्ध आ कलात्मक प्रमाण विश्वसनीय रहए। नीतिपरक उत्तर पहिनेसँ तय करब कथा केँ विचारक उदाहरणमे सीमित कऽ सकैत अछि।

पृथक पाठविश्लेषण : खिस्सा सियार यार आ राजनीतिक व्यंग्य

खिस्सा सियार यार शीर्षकहि सँ सत्ता-राजनीतिक मानवीय चरित्रकेँ पशु-रूपकक माध्यमसँ देखबाक संकेत दैत अछि। डा. योगानन्द झा कथामे पार्टी-आधारित स्वार्थ, टिकट-प्राप्तिक आकांक्षा, चाटुकारिता आ राजनीतिक अवसरवादक अनेक चरित्रक उल्लेख करैत छथि। आशीष चमन ई राजनीतिक समयकेँ लालटेन-युगक पूर्वपीठिकासँ जोड़ैत छथि; गजेन्द्र ठाकुरक विवेचनमे सार्वजनिक नैतिकता आ दलगत व्यवहारक अन्तर उभरैत अछि। एहि त्रिसंवादी पाठसँ कथा केवल दल विशेषक व्यंग्य नहि, राजनीतिक संस्कृतिक विस्तृत संकट बनैत अछि।

कथाक मुख्य व्यंग्य-यन्त्र पात्रक कहनामे आ करनामे दूरी बनब अछि। सिद्धान्तक बचन देनिहार नेता निजी पद, अपन संतानक रोजगार, सिफारिश अथवा समर्थन-समीकरणक समय अलग व्यवहार करैत छथि। एहि द्वैधकेँ सहज विडम्बनामे बदलि देबाक कारणे कथा सार्वजनिक भाषाक अविश्वसनीयता उजागर करैत अछि। मुदा पात्रक संख्या आ रूपकक स्पष्टता कथाकेँ कखनो-कखनो सामाजिक प्रकारचित्र बनएबाक खतरा दैत अछि। जँ प्रत्येक पात्र केवल राजनीतिक दुर्गुणक प्रतिनिधि बनि रहि जाए, तखन ओकर स्वतन्त्र मनोविज्ञान ओझराए सकैत अछि।

मैथिली व्यंग्य परम्परामे हरिमोहन झाक विनोदक संग एकर तुलना उपयोगी भऽ सकैत अछि, मुदा दुनूकेँ एक किसिमक हास्य कहि देब अनुचित हएत। हरिमोहन झाक व्यंग्यमे सामाजिक संस्कार, शास्त्रीय उपहास आ व्यक्तित्वक घरेलू विडम्बना प्रमुख रूपसँ चिन्हल जाइत अछि; एहि कथाक समीक्षासँ उभरैत राजनीतिक विनोद अधिक प्रत्यक्ष, अवसरवाद-विरोधी आ सार्वजनिक सत्ता-केन्द्रित अछि। एतए हँसी सुधरल समाजक विश्वासघातकेँ चिन्हबाक माध्यम बनैत अछि।

पृथक पाठविश्लेषण : पियासल पानि आ स्त्रीक विरुद्ध नैतिक कसौटी

पियासल पानि संग्रहक सभसँ निर्णायक कथामे सँ एक बुझाईत अछि। नारायणपुरवालीक जीवनक सामाजिक निर्णय पति-सत्ता, यौन-संयमक दोहरा मानदण्ड, आर्थिक निर्भरता आ अफवाहक सहायतासँ आकार पबैत अछि। डा. योगानन्द झा कथामे स्त्रीक मानसिक पीड़ा आ सामूहिक अत्याचारक प्रक्रिया केन्द्रमे रखैत छथि; आशीष चमन एहि चरित्रकेँ देखैत समाजक पाखण्डपर तीखा प्रश्न उठबैत छथि। पुरुषक अक्षमता छिपाएल जाइत अछि आ स्त्रीक व्यवहार सार्वजनिक आरोपक वस्तु बनैत अछि—ई कथा-विन्यासक नैतिक केन्द्र अछि।

विश्लेषणक दृष्टिसँ ई कहानी केवल करुणा जगएबाक प्रयत्न नहि। कथाक ज्ञान-संरचना अहम अछि : पाठक आ पात्र आरम्भमे नारायणपुरवाली विषयमे जे मानि लैत छथि, बादक जानकारी ओकरा उलटि दैत अछि। ई उलटफेर स्त्री-विरोधी समाजक निर्णय-प्रक्रिया स्वयं संदिग्ध बना दैत अछि। कथा सत्यकेँ देरिसँ प्रकट कय पाठकक पूर्वनिर्मित निष्कर्षपर प्रश्नचिह्न लगबैत अछि। एहि अर्थमे ओकर शिल्प ओहि सामाजिक आलोचनाक अङ्ग बनि जाइत अछि, जे बात ओ कहए चाहैत अछि।

मुदा प्रश्न एतहि समाप्त नहि होइत अछि। स्त्रीक निर्दोषता यदि अन्ततः पुरुषक जैविक असमर्थतासँ सिद्ध होइत अछि तँ स्त्रीक स्वतन्त्र इच्छा अथवा स्वाधीन अस्तित्वक अपन बलपर स्थापना कतेक दूर धरि भेल? सामाजिक आरोपक खण्डन प्रभावशाली अछि, मुदा नारीक अपने स्वर आ निर्णय-क्षमताक पूरा विस्तार एखन आलोचनात्मक जाँचक विषय बनल रहैत अछि। एहन दोहरा मूल्यांकन कथाकेँ स्त्री-विमर्शक सरलीकृत विजय-कथा होएबाक अपेक्षा अधिक अर्थवान बनबैत अछि।

पृथक पाठविश्लेषण : शीर्षक कथा आ साम्प्रदायिक सद्भावक कठिन राजनीति

अन्हारक विरोध मे शीर्षक कथा हिन्दू-मुसलमानक बीच स्थापित रोजमर्राक सामाजिक सम्बन्धकेँ राजनीतिक उत्तेजनाक विरुद्ध रखैत अछि। डा. योगानन्द झाक विवेचनमे रंजनक

मुस्लिम बस्तीमे प्रवेश, अलीमुद्दीनक अपराधपर क्षोभ आ साम्प्रदायिक विभाजन करएवला तत्वक मंशा एकहि घटनाक परस्पर विरोधी अर्थ बनैत अछि। एतए सामाजिक सम्बन्ध धार्मिक पहिचानक पूर्ववर्ती, जीवित संरचना रूपमे उपस्थित अछि; हिंसा ओहि संरचनाकें भंग करबाक राजनीतिक प्रयास बनि जाइत अछि।

कथा-संरचनाक मुख्य तनाव ई अछि जे अपराधक जिम्मेदारी व्यक्तिक आ समुदायपर आरोपित सामूहिक कलंक दुनू एक नहि अछि। अपराधीकें बचाएब अथवा दोष समुदायपर टाँगब—दुनू व्यवस्था अन्यायक रूप अछि। साहित्यिक रूपसँ एहन स्थिति सफल तखन होइत अछि जखन पात्र सभक भय, क्रोध, आत्मीयता आ नैतिक निर्णय समकालिक रूपसँ स्पष्ट हो। आलोचकसभक पाठ एहि तनावकें सामाजिक समरसताक आधार मानैत अछि।

फेरो साम्प्रदायिकता-विरोधक पाठमे करुण अन्त अथवा उदात्त कथन मात्रे पर्याप्त नहि। ई देखब आवश्यक अछि जे स्थानीय सत्ता, बाजार, अफवाह आ जनमत कोना हिंसाक सम्भावना तैयार करैत अछि। कथा जे आपसी भाइचाराकें केन्द्रमे रखैत अछि, ओकर राजनैतिक सबलता एही जटिल यथार्थक समावेशमे अछि; अन्यथा सद्भावक संदेश ओकर कथात्मक अन्तर्दृष्टिपर भारी पड़ि सकैत अछि।

पृथक पाठविश्लेषण : ढाँचा-१९९२ आ प्रजातंत्र परिकथाक विरोधी युक्ति

ढाँचा-१९९२ मे भारतीय सार्वजनिक जीवनक एक ऐतिहासिक विदारक क्षणक प्रसंग आएल अछि। आशीष चमन एहि कथाक पत्र-शैलीकें विशेष महत्त्व दैत छथि; डा. योगानन्द झा ओहि घटनाक सामाजिक-मानसिक प्रभाव आ साम्प्रदायिक विश्वासक क्षतिपर बल दैत छथि। पत्ररूपकें कथात्मक माध्यम बनाओलासँ एकटा पैघ राजनैतिक घटना व्यक्तिक चिन्ता, अपराधबोध आ निजी दृष्टिकोणसँ देखल जा सकैत अछि। एहि विधामे पत्र लिखनिहारक सीमित ज्ञान स्वयं अर्थक साधन बनैत अछि।

प्रजातंत्र परिकथा मे सार्वजनिक आन्दोलन, चिकित्सकक हत्या, प्रशासनिक प्रतिक्रिया आ आन्दोलनक नैतिक अपहरणक चक्र केन्द्रमे अछि। समीक्षकसभक वर्णनसँ ई स्पष्ट

होइत अछि जे मूल अपराध, तकर विरोधमे उठल भीड़, आ भीड़क भीतर अवसरसँ लाभ उठाबएवला समूहक क्रिया एक-दोसरसँ अलग अछि। ई कहानी सामूहिक क्रियाशीलताक नैतिक अस्पष्टता देखबैत अछि; हर जुलूस न्यायोचित नहि होइत अछि, आ प्रशासनक हर दमन सर्वजनहितक रक्षाक नामपर सही नहि ठहराएल जा सकैत अछि।

दुनू कथाकें साथ पढ़ला पर लोकतन्त्रक एक महत्त्वपूर्ण प्रश्न निकलैत अछि—जनताक सामूहिक स्वर कखन न्यायपूर्ण प्रतिरोध अछि आ कखन राजनीतिक स्वार्थक उपकरण? पहिल कथामे साम्प्रदायिक हिंसाक स्मृति निजी वाणीमे प्रवेश करैत अछि, दोसरमे निजी अपराध सार्वजनिक क्रियाक अवसर बनैत अछि। ई उलट सम्बन्ध कथादुनियामें वैचारिक रूपसँ गहीर बनबैत अछि। अन्यथा अलग-अलग प्रसंगमे पढ़ल कथासभ परस्पर असम्बद्ध राजनैतिक टिप्पणीक रूपमे बुझाए सकैत छल।

पृथक पाठविश्लेषण : मूस आ अय्यासी—श्रम, लज्जा आ आत्मप्रवंचना

मूस आ अय्यासी कथापर आशीष चमनक व्याख्या रोचक अछि, किएक तँ ओ दुनूकें अलग-अलग नीतिक उदाहरण मानि नहि, एक-दोसरक सम्भावित पूरक आख्यान मानैत छथि। एक कथामे मध्यवर्गीय उपभोगक इच्छा घरक आवश्यकतासँ टकराइत अछि; दोसरमे ऋण, पैतृक सम्पत्ति, रोजगारक असमर्थता आ उत्पादनक प्रश्न उभरैत अछि। एहि क्रममे सुखक तात्कालिक उपभोग आ श्रमक दीर्घकालिक सार्थकता बीच संघर्ष स्पष्ट होइत अछि।

मूसक प्रतीक-रचना एतए विशेष महत्त्वक अछि। आलोचनात्मक लेखसभ एहि जीवकें उद्योगशील जीवनक बिम्ब आ सर्पकें श्रमफलपर आधिपत्य जमएवला बलक बिम्ब मानैत अछि। मुदा रूपक एक अर्थमे सीमित नहि : मूसक जीवत व्यक्ति कें कर्महीनताक आत्म-बोध धरि पहुँचबैत अछि। एतए राजनीतिक अर्थ आ आत्मनैतिक अर्थ साथ-साथ उपस्थित अछि। जे पात्र शोषक संरचनाकें देखैत अछि, ओकरा अपन आचरणक उत्तरदायित्वसँ मुक्त नहि कएल जा सकैत अछि।

एहि कथायुग्मक बल दृष्टान्तात्मक अन्तिम शिक्षामे नहि, अपितु ओहि मनोवैज्ञानिक अन्तरमे अछि जतए पात्र अपन विफलता लेल परिस्थितिकेँ जिम्मेदार ठहरबैत-ठहरबैत अपनही निर्णयक आलोचक बनि उठैत अछि। तथापि श्रमकेँ नैतिक समाधान घोषित करैत सामाजिक पूँजी, संसाधनक असमान उपलब्धता आ बेरोजगारीक संरचनात्मक बाधाकेँ ओझराए देबाक खतरा अछि। एकर सजग विवेचन उपदेशात्मक कथा आ सामाजिक यथार्थवादक बीच आवश्यक दूरी बचा सकैत अछि।

पृथक पाठविश्लेषण : जातिगत अवसरवाद, गिरगिट आ न्यायिक विष

बैकबा-फोड़बा आ अथ गिरगिट गाथा मे राजनीतिक पहिचानक अस्थिरता आ संगठित स्वार्थक खेल प्रमुख अछि। बैकबा-फोड़बामे व्यक्तिगत उधारीक विवाद जातीय सामूहिक संघर्षक रूप लैत अछि; अथ गिरगिट गाथामे आपसी शत्रुता निर्वाचनी गणितक समय गठजोड़मे बदलि जाइत अछि। ई दुनू स्थिति संकेत करैत अछि जे संगठनक नामपर उद्धोषित विचारधारा भिन्ने-भिन्न निज लाभक हिसाबसँ संचालित होइत अछि। गिरगिटक रूपक अपन रङ्ग बदलैत राजनीतिक देहकेँ दृश्य बनबैत अछि।

एहि कथा-श्रेणीक विशेषता अछि जे जातिक उल्लेख सामाजिक अन्यायक पहचान लेल आवश्यक रहितो, ओकर प्रयोग सदिखन सद्भावनापूर्ण नहि होइत अछि। आलोच्य प्रसंगमे जातिगत अपमानक भाषा आर्थिक हितक संघर्षकेँ दू समूहक झगड़ामे रूपान्तरित करबाक हथियार बनैत अछि। मुदा एकर आलोचनामे इहो सावधानी चाही जे जातिगत उत्पीड़नक वास्तविक इतिहासकेँ केवल अवसरवादी नेताक चाल कहि अस्वीकार नहि कएल जाए। कथा तखने अधिक सम्यक् होइत अछि जखन वास्तविक असमानता आ ओकर राजनीतिक दुरुपयोगक दू अलग स्तर दर्शाओल जाए।

विष-पानमे न्यायप्रणालीक दीर्घ प्रक्रिया, अर्थबल, गवाहीक अस्थिरता आ पराजित न्याय-याचीक दशा महत्त्वपूर्ण बनैत अछि। डा. योगानन्द झाक विवरणमे गोपालजी आ चतुराननक सम्बन्ध न्यायालयमे प्रवेश कए अलग शक्तिसन्तुलन पबैत अछि। एहि प्रकार

कथा-संसार एकहि व्यक्ति-नैतिकतापर नहि, संस्था सभक क्रियाविधिपर सेहो प्रश्न उठबैत अछि। सामाजिक अन्यायक प्रतिनिधि कखनो दुष्ट पात्र, कखनो विधिक प्रक्रिया स्वयं बनि सकैत अछि—एहि परिवर्तनमे कथाक यथार्थदृष्टि विस्तार पबैत अछि।

कविताक धरातल : परती टूटि रहल अछि आ भूमिक प्रतिरोधी स्मृति

परती टूटि रहल अछि शीर्षक स्वयं सामाजिक रूपान्तरणक कृषि-प्रतीक अछि। परती भूमि स्थिर, अनुपजाऊ अथवा सम्भावनाहीन अवस्था होइत अछि; ओकर टूटब नवा श्रम, बीज आ भविष्यक विश्वासक प्रस्ताव करैत अछि। मुन्नाजीक आलेखमे एहि कृषि-रूपककें काव्यक विकास आ लेखकक ग्राम्य संवेदनासँ जोड़ल गेल अछि। अरविन्द श्रीवास्तव कविताक सत्ता-विरोधी साहस आ सामन्ती वातावरणसँ बाहर निकलि जनपक्षमे ठाढ़ होएबाक प्रवृत्तिपर बल दैत छथि।

काव्यक उपलब्धिक माप केवल उच्चारित विरोध नहि। लोकजीवनक वस्तु, भाषाक ठेठ मुहावरा आ कृषकक अनुभव जखन कविताक भीतर अपन उपयोगिता सँ आगू बढि प्रतीक बनैत अछि, तखन कविता सामाजिक दस्तावेजसँ कलाकृति बनैत अछि। परती, खेतिहर, बीज, श्रम आ मौसमी चक्र एक-दोसरक संग सक्रिय अर्थसम्बन्ध बनबैत अछि। कविताक रूपक परती भूमि कें नव आशामे बदलैत अछि; तथापि एहि आशाक नैतिक विश्वसनीयता तखन बनैत अछि जखन किसानक वास्तविक असुरक्षा आ असमानताकें छिपाओल नहि जाए।

रचनाकारक पारिवारिक समाजवादी विरासत आ हुनक अपन सामाजिक अनुभवक सम्बन्धक चर्चा अनेक आलोचक करैत छथि। किन्तु पारिवारिक विचारधारासँ सृजनक गुणवत्ता स्वतः सिद्ध नहि होइत अछि। साहित्यिक इतिहास लेल वंश-परिचय एकटा सन्दर्भ अछि, मूल्यनिर्णयक प्रमाण नहि। कविता अपन शब्द, बिम्ब, लय आ अन्तर्विरोधक आधारपर मूल्यवान होइत अछि। स्वच्छ आलोचनाकें लेखकक जनपक्षीय घोषणाक संग ओकर कलात्मक सम्पादन सेहो परखबाक चाही।

ग्राम्य शब्दावली, कोसी अंचल आ आधुनिकताक वैकल्पिक रूप

अरविन्द ठाकुरक भाषा-विन्यासपर मुन्नाजी, अरविन्द मिश्र नीरज आ आन आलोचकक विचारसँ ग्राम्य शब्दावलीक महत्त्व स्पष्ट होइत अछि। गामक उच्चरित शब्दकेँ साहित्यक भीतर प्रतिष्ठा देब मात्र रङ्ग-रोगन अथवा लोकजीवनक सजावट नहि होइत अछि। ई निर्णायक प्रश्न थिक जे कथाक वक्ता के, ओकर अनुभव सामाजिक रूपसँ कतेक मान्यता पबैत अछि, आ कोन भाषा साहित्यिक सार्वजनिकतामे प्रवेश पबैत अछि। गमैया शब्दक स्वाभाविक प्रयोग साहित्यक अभिजात मानदण्डपर प्रश्न उठा सकैत अछि।

ग्राम्यताकेँ पुरातनता मानब सेहो भूल हएत। कोसीक कृषि, नदी, आवागमन, बजार, राजनीतिक प्रतिस्पर्धा, छपाई आ शहरी सम्पर्क समकालीन इतिहासक अङ्ग अछि। लेखकक ग्रामीण परिवेशमे आधुनिकताक संकट अनिवार्य रूपसँ पहुंचल अछि। एहि दृष्टिसँ अरविन्द ठाकुरक कथामे गाम आ नगरक विभाजन अचल नहि, बल्कि निरन्तर चलैत सामाजिक-सांस्कृतिक विनिमयक रूपमे प्रकट होइत अछि।

जगदीश प्रसाद मण्डलक ग्राम्य भाषा-संसारसँ तुलना करब उचित अछि, मुदा एकर सीमा निर्धारित रहबाक चाही। दुनू क्षेत्रीय वाणीकेँ साहित्यिक चर्चामे स्थान दैत छथि, एतबा सामान्य समानता सँ हुनक सौन्दर्यदृष्टि एक कहि नहि सकैत छी। अरविन्दक समीक्षासँ जे चित्र बनैत अछि ताहिमे ग्राम्य-भाषिक जीवट राजनीतिक असहमतिक संग जोड़ल अछि; तुलना लेल मूल रचनासभक ध्वनि, पद-क्रम आ चरित्र-वाणीपर स्वतन्त्र, विस्तृत अध्ययन अपेक्षित रहत।

मैथिली गजल : विषयगत आजादी आ विधागत अनुशासनक द्वन्द्व

बहुरूपिया प्रदेश मे पर केन्द्रित बहस सम्पूर्ण संकलनक सभसँ मूल्यवान असहमति-स्रोत अछि। जगदीश चन्द्र ठाकुर अनिल रचनाकारक निर्बाध कथन-प्रवृत्तिक पक्षमे आजाद गजलक अवधारणाकेँ स्वीकार करैत छथि। हुनक विवेचन अनुसार संग्रहमे छयसठि गजल अछि; ताहिमे किछु रचनामे रदीफ-काफियाक परम्परागत संतुलन नहि रहितो सामाजिक

कथन आ तखल्लुसक प्रयोग महत्त्वपूर्ण अछि। दोसर दिस ओमप्रकाश झा प्रश्न उठबैत छथि जे जखन गजल नाम ग्रहण कएल गेल अछि तखन बहर आ काफियाक अनिवार्य नियमसँ अलग हटबाक कलात्मक न्यायसंगत आधार स्पष्ट किछक नहि कएल जाए।

एहि विवादक समाधान सरलीकृत पक्ष-चयनमे नहि। विधा अपन इतिहासमे रूपगत अनुशासनसँ चिन्हल जाइत अछि, मुदा नवानुभव ओकर अभिव्यक्तिक सीमा बदलैत रहैत अछि। जँ काफियाक स्थिर व्यवस्था अथवा बहरक अनुशासन नितान्त हटि जाए तखन रचनाकेँ गजल कहल जाए वा नव शेर-आधारित कविता—एहि प्रश्नक उत्तर मात्र लेखकक घोषित स्वातन्त्र्यसँ नहि निकलत। फेर जँ काव्यक मूल्य केवल स्थापित मापपर नापल जाए तँ नव सामाजिक भाषा आ अभिव्यक्ति पद्धतिक ऐतिहासिक सम्भावना दबि जाएत।

अनिलक लेख संग्रहक सर्जनात्मक आवेग आ सामाजिक विवेककेँ केन्द्रमे अनैत अछि; ओमप्रकाश झाक लेख काव्य-विधाक आन्तरिक निर्माण-विधानकेँ। दुनू लेख परस्पर आवश्यक सुधारक थिक। पहिल दृष्टि मात्र स्वीकार कएलासँ रूपगत लापरवाहीकेँ सृजनात्मक स्वतन्त्रता कहि देबाक खतरा अछि; दोसर दृष्टि मात्र स्वीकार कएलासँ कविता शब्दार्थक सामाजिक आवेगसँ कटि सकैत अछि। एहि बहसकेँ संग्रहमे सुरक्षित रखनाइ सम्पादकीय रूपसँ महत्त्वपूर्ण योगदान अछि।

बहुरूपिया प्रदेश मे : रूपक, बाजार आ नागरिक विडम्बनाक पाठ

बहुरूपिया प्रदेश मे शीर्षक आधुनिक राजनीतिक आ सामाजिक जगतकेँ रूप बदलैत, अपन वास्तविक चेहरा नुकबैत प्रदेशक रूपमे समझएबाक संकेत दैत अछि। अरविन्द मिश्र नीरज, राम चैतन्य धीरज आ जगदीश चन्द्र ठाकुर अनिल एहि संग्रहमे खेतिहर, बाजार, संसदीय संस्कृति आ सामाजिक विषमताक चिन्ता चिन्हैत छथि। ई विषय-चयन मैथिली गजलकेँ केवल प्रणय, विरह अथवा आत्मालाप धरि सीमित नहि रहने दैत अछि।

गजलक शेर रूपगत संक्षिप्तता आ अर्थक तीव्र उलटफेरक विशेष अवकाश दैत अछि। राजनीतिक व्यंग्यमे ओ छोट आयाम प्रभावी भऽ सकैत अछि, किएक तँ पाठक परिचित

घोषणाक उलटा अर्थ सहसा देखैत अछि। मुदा प्रत्येक व्यंग्यात्मक द्विपदी गजल नहि भऽ जाइत अछि। वैचारिक तीक्ष्णता, लयात्मक अनुशासन आ शेरक अर्थ-स्वायत्तताक अनुपातकेँ अलग-अलग परखब आवश्यक अछि। तँ एहि संग्रहक परीक्षणमे सामाजिक उद्देश्य आ छन्द-रूप दुनू समान रूपसँ विचारणीय छथि।

राम चैतन्य धीरज अपन आलोचनामे दार्शनिक एकात्मता आ भोगबादी बाजारक विरोधी प्रश्न उठबैत छथि। हुनक विवेचन कविक राजनीतिक प्रश्नकेँ आध्यात्मिक-सामाजिक विमर्शमे स्थानान्तरित करैत अछि। ई रूपान्तरण विचारोत्तेजक अछि, मुदा कविक प्रत्यक्ष वर्ग-अनुभव आ आलोचकक दार्शनिक एकता-आग्रह एक नहि अछि। एतए अलग-अलग वैचारिक पाठक सह-अस्तित्व संग्रहक बौद्धिक विस्तार बढ़बैत अछि।

साहित्यिक इतिहासमे स्थान : मैथिली कथा आ गजलक समानान्तर विकास

मैथिली आधुनिक साहित्यक चर्चा प्रायः कथात्मक नवजागरण, सामाजिक विनोद, ग्रामीण जीवनक प्रत्यक्षता, नव कविता आ नवीना विधासभक विकासक क्रममे कएल जाइत अछि। अरविन्द ठाकुरक साहित्यपर केन्द्रित ई संकलन एहि इतिहासमे कोसी क्षेत्रक रचनाकारक भूमिका आ लघुकथात्मक राजनीतिक विषयकेँ स्पष्ट स्थान दैत अछि। हिन्दी अथवा आन भाषाक प्रभावक सामान्य प्रश्नसँ आगू बढ़ि एहि पोथीमे मैथिलीक अपन समाज-राजनीतिक शब्दसंसारक प्रतिनिधित्व खोजल जा सकैत अछि।

आशीष चमन ढाँचा-१९९२क पत्र-विन्यासक संदर्भमे हरिमोहन झा आ राजकमलक पत्ररचनाक उल्लेख करैत छथि। एहि तुलनाक ऐतिहासिक उपयोग ई अछि जे आधुनिक मैथिलीमे पत्ररूप एकटा स्थिर विनोदी विधा नहि, बल्कि करुण, सामाजिक आ राजनीतिक संवेदनाक वहन सेहो करि सकैत अछि। रूप समान रहलो पर ओकर भाव-प्रयोजन बदलि सकैत अछि। एहि बदलावकेँ मौलिकताक दावा बनबैत काल मूल रचनाक वास्तविक पाठान्तर आ कालक्रम स्वतंत्र रूपसँ जाँचल जाएबाक चाही।

प्रजातंत्र परिकथाक नाम आ सार्वजनिक यथार्थक कारणे फणीश्वरनाथ रेणुक परती परिकथा स्मृतिमे आबि सकैत अछि। तथापि शीर्षक-सादृश्यकें प्रभावक प्रमाण मानब असंगत हएत। रेणुक उपन्यासिक परती विशाल सामाजिक भूगोल आ सामूहिक गतिशीलताकें धरैत अछि, जबकि अरविन्दक कथापर संकलनमे भेल आलोचना राजनीतिक घटनाक अल्पविस्तारित रूपक आ तात्कालिक सार्वजनिक प्रतिक्रियापर केन्द्रित अछि। एहि भिन्नतासँ साहित्यिक इतिहासक समृद्धि कम नहि, बल्कि कथाशिल्पक आकार आ संवेगक अन्तर स्पष्ट होइत अछि।

गजलक क्षेत्रमे गजेन्द्र ठाकुर आ आशीष अनचिन्हारक व्याकरण-विषयक उपक्रमक उल्लेख अनिलक निबन्धमे भेटैत अछि। एहन पृष्ठभूमिमे बहुरूपिया प्रदेश मे रूपगत स्वातन्त्र्यक बहस आओर तीव्र बनैत अछि। साहित्यिक इतिहासमे नव विधाक प्रवेश मात्र लेखकक इच्छासँ नहि, पाठक, सम्पादक, व्याकरणकार आ आलोचकक सामूहिक विवादसँ रूप लैत अछि। एहि कारणे स्वतंत्रचेता रचना-इतिहासक संग विधा-इतिहासक दस्तावेज सेहो अछि।

चिन्तक अरविन्द ठाकुर : काव्यसँ बाहरक सांस्कृतिक प्रश्न

समीक्ष्य संकलनक अधिकतम आलोचनात्मक सामग्री कथा, कविता आ गजलपर केन्द्रित रहने हुनक चिन्तनधर्मिताक पर्याप्त विस्तार नहि देत—सम्पादकीय भूमिका एहि अभावक संकेत करैत अछि। मुदा विदेहक मूल विशेषांकमे उपलब्ध मिथिलामे सांस्कृतिक आन्दोलनक भविष्य तथा लक्ष्मीनाथ गोसांई : परम्परा, भाषा आ निर्गुण भाव सन आलेख देखबैत अछि जे रचनाकारक रुचि सामाजिक आन्दोलनक चरित्र, भाषा-सत्ता, सांस्कृतिक संरचना आ परम्पराक विचारपर सेहो रहैत छल।

मिथिलामे सांस्कृतिक आन्दोलनक भविष्य मे लेखक समाजक कथित आन्दोलनशीलताकें संस्थागत स्वार्थ आ सत्तापोषणक इतिहाससँ जाँचैत छथि। ई तर्क उग्र आ विवादास्पद अछि; एकरे सहारे समस्त मैथिल समाजक अतीतविषयक अन्तिम निष्कर्ष

निकालब अनुचित हएत। मुदा एहि लेखसँ ई स्पष्ट होइत अछि जे लेखकक राजनीति मात्र दलगत टिप्पणी नहि, सांस्कृतिक आत्मालोचनाक रूप सेहो ग्रहण करैत अछि। कविता आ कथामे निन्दित सार्वजनिक पाखण्ड एहि निबन्धमे वैचारिक विश्लेषणक विषय बनैत अछि।

लक्ष्मीनाथ गोसांई विषयक आलेखमे भक्ति-परम्परा, निर्गुण-सगुण वर्गीकरण आ क्षेत्रीय सांस्कृतिक प्रभाव जोड़बाक प्रयत्न अछि। तथापि सामाजिक इतिहासक दीर्घ काल-रेखाकेँ लिखैत कखनो व्यापक सामान्यीकरण आ स्रोत-विवेचनक कमी देखल जाए सकैत अछि। एहन आलेखक आलोचनामे रचनाकारक सांस्कृतिक दृष्टि आ ऐतिहासिक प्रमाणक स्तरकेँ अलग-अलग राखब उचित अछि। लेखकक गद्य-विचारक स्वतंत्र सम्पादन आ स्रोत-आधारित पुनर्पाठ हुनक समग्र कृतित्व बुझबाक अगिला अनिवार्य कार्य बनैत अछि।

साक्षात्कार, संस्मरण आ आत्मकथ्य : एक जीवनी नहि, अनेक स्मृति

साक्षात्कारक मूल्य केवल तथ्यात्मक प्रश्नोत्तरमे नहि रहैत अछि। साक्षात्कारमे लेखक अपन जीवनकेँ जे शब्द दैत छथि, ओ शब्द सार्वजनिक रूपसँ निर्मित आत्मछविक अंश बनैत अछि। मुन्नाजी द्वारा लेल गेल बातचीतकेँ समीक्षा आ संस्मरणक बीच राखब रचनाकारक अपन विचारक संग आलोचकक विचारक सामना करबएबला सम्पादकीय निर्णय अछि। मुदा मौखिक कथनकेँ बादक घटनाक सर्वथा निष्पक्ष तथ्य नहि मानल जाएबाक चाही; स्मृति, चयन आ आत्म-प्रतिरक्षाक भूमिका एहिमे रहि सकैत अछि।

संस्मरणसभ परिवार, साहित्यिक संगत, पत्रिका, सामाजिक उपस्थिति आ वैयक्तिक व्यवहारक बहुरंगी चित्र दैत अछि। साहित्यिक इतिहासकार लेल ई सामग्री अभावग्रस्त संस्थागत अभिलेखक पूरक भऽ सकैत अछि। मुदा जखन स्मृतिकार रचनाकारक श्रेष्ठताक दाबी करैत छथि, तखन वैयक्तिक स्नेह आ कलात्मक मूल्यांकनक भेद सुरक्षित राखब चाही। अनेक व्यक्ति अपन-अपन अनुभवक आधारपर लेखकक एकटा रूप स्मरण करैत छथि, मुदा कोनो एक संस्मरण सम्पूर्ण जीवनीक समतुल्य नहि अछि।

आत्मकथ्यक शीर्षकमे आत्म-परिचयक प्रश्न अछि। एहि आत्म-प्रश्नकेँ कथा आ कवितामे उपस्थित स्वतन्त्रता, मनुष्यक गरिमा आ सामाजिक अन्तर्विरोधसँ जोड़ला पर लेखकक व्यष्टि-सत्ता आ रचनात्मक सरोकारक संवाद दिखाइत अछि। आत्मकथ्यक साहित्यिक महत्त्व एहि खुला प्रश्नमे अधिक अछि, आत्मसमर्थनक निश्चित उत्तरमे कम। संकलनमे एहि विधाक उपस्थिति पाठककेँ अवसर दैत अछि जे लेखककेँ आलोचकसभक प्रशंसा अथवा असहमतिसँ स्वतंत्र रूपसँ सेहो विचारथि।

समालोचना आ प्रशस्तिक बीच : संग्रहक आन्तरिक आलोचनात्मक तनाव

संकलनमे किछु लेख रचनाकारक प्रति आत्मीय अभिनन्दनक स्वरमे लिखल गेल अछि; किछु लेख स्पष्ट मूल्यांकन अथवा आपत्तिक भाषा बरतैत अछि। जीवित लेखकक सम्मानमे प्रकाशित विशेषांकक सामग्रीमे ई द्वैध सामान्य अछि, मुदा शोधक दृष्टिसँ एकर विश्लेषण आवश्यक अछि। जे आलोचक कथाक नैतिक उद्देश्यक प्रशंसा करैत छथि, ओ सदैव कथा-रूपक सीमाकेँ समान कठोरतासँ नहि जाँचैत छथि। तकर विपरीत गजल-विवादमे विधागत नियमक गम्भीर चर्चा प्रशंसाक सहज प्रवाहकेँ रोकैत अछि।

अशुद्धि, कथाक क्रम, चरित्रक व्यवहार, रूपकक पर्याप्तता आ छन्द-नियम—ई सभ आलोचनाक असली प्रश्न थिक। आशीष चमनक लेखमे कथा-क्रम आ चरित्रक निर्णयपर आपत्ति, ओमप्रकाश झाक आलेखमे गजल-रूपक दोषपर प्रतिवाद, आ अनिलक लेखमे खुलल भाषिक प्रयोगक पक्ष—एकहि पोथीमे ई सभ रहब संकलनक बहुलताक प्रमाण अछि। शोध-पत्रिका लेल पोथीक उपयोग करैत समय केवल प्रशंसा-सूचक वाक्य चुनि लेब संग्रहक असली आलोचनात्मक सम्भावनाकेँ खण्डित करब हएत।

संस्मरणक गौरव-गाथा आ आलोचनाक विश्लेषणात्मक विधान अलग साहित्यिक क्रिया छथि। एहि अंतरकेँ सुरक्षित राखि ग्रन्थक मूल्यांकन करब आवश्यक अछि। अरविन्द ठाकुरक लेखकीय स्वतन्त्रताक अवधारणा सफल तखने होएत जखन पाठको हुनक रचनाक स्वतंत्र, असहमतिपूर्ण आ प्रमाणाधारित पाठ करबाक अधिकार पाबथि। एहि

अर्थमे स्वतंत्रचेता शीर्षकक सार्थकता सम्पादकक घोषित छविसँ बेसी पोथीमे संरक्षित आलोचनात्मक असहमतिमे निहित अछि।

समानान्तर साहित्यिक इतिहासक दृष्टिसँ पुनर्विचार

मुख्यधाराक साहित्यिक इतिहास प्रायः संस्थागत पुरस्कार, पाठ्यपुस्तक आ अधिक प्रचार पाओल कृतिसभकेँ केन्द्रमे रखैत अछि। क्षेत्रीय पत्रिका, पत्राचार, मौखिक साहित्यिक संगत, स्थानीय प्रकाशन आ अल्पचर्चित विधागत बहस इतिहासक किनारापर छुटि जाइत अछि। विदेहक विशेषांकसँ विकसित स्वतंत्रचेता एहि अभावक एकटा उपयोगी प्रतिरोध अछि। लेखकक रचनाक चर्चा मात्र नहि, ओकर चारू दिस बनैत छोट-पैघ आलोचनात्मक समुदाय सेहो अभिलेखित होइत अछि।

तथापि समानान्तर इतिहासक दाबी अपने आपमे प्रामाणिकता प्रदान नहि करैत अछि। एकरा विशिष्ट बनबैत अछि स्रोतक उल्लेख, असहमतियुक्त साक्ष्य, प्रकाशन-क्रमक स्पष्टता आ स्थानीय आवाजक तुलनात्मक मूल्यांकन। एहि कसौटीपर स्वतंत्रचेता महत्वपूर्ण आरम्भ होइत अछि, अन्तिम प्रामाणिक जीवनी नहि। पत्रिका सँ पुस्तक धरि पाठ-चयनक अन्तर, मूल रचनाक अनुपस्थिति, आलोचनाक असमान गहराई आ आत्मकथ्यक निजी दृष्टिक कारणे बादक शोधकेँ अलग पाठ-संग्रह आ प्रामाणिक प्रकाशन-वृत्त बनएबाक आवश्यकता रहत।

ग्रन्थ एहि बातक उदाहरण अछि जे साहित्यिक इतिहास केवल रचनासभक सूची नहि, बल्कि पाठ, पाठक, विवाद, सामाजिक स्मृति आ सम्पादनक गतिशील अन्तरसम्बन्ध थिक। जँ एहि दृष्टिक विकास हो, तखन मैथिली इतिहासमे कोसीक लोकभाषा, वंचित अनुभवक प्रतिनिधित्व, पत्रिका-आधारित विमर्श आ विधागत नवाचारक चर्चा अधिक संतुलित स्थान पाबि सकैत अछि।

समग्र निर्णय : उपलब्धि, सीमा आ उत्तरवर्ती अनुसन्धान

स्वतंत्रचेताक पहिल उपलब्धि रचनाकारक कथा, कविता, गजल, सामाजिक विचार आ व्यक्तित्वक सम्बन्धपर अनेक लेखकक मत एकत्र करब अछि। दोसर उपलब्धि ई जे वैचारिक सहमति आ शिल्पगत असहमतिक पाठ एक दोसरा केँ बाधित नहि, बल्कि परखैत अछि। तेसर उपलब्धि कोसी क्षेत्रक जनजीवन आ मैथिली साहित्यिक सार्वजनिकताक सम्बन्धकेँ दृश्य बनब अछि। चौथ उपलब्धि कथा-समीक्षा, संस्मरण आ आत्मकथ्यकेँ एक संग राखिकए जीवनी-विवेचनक बहुस्तरीय संरचना प्रस्तुत करब अछि।

ग्रन्थक सीमा सेहो विचारणीय अछि। संकलनमे आलोचकसभक पद्धति समान नहि, कतेको आलोचनामे मूल्यनिर्णय भावात्मक अछि, कथाक वैचारिक प्रयोजनक सामने रूपगत सूक्ष्मता कखनो पाछू छूटैत अछि, आ रचनाकारक स्वतंत्र चिन्तन अपेक्षाकृत कम प्रतिनिधित्व पबैत अछि। मूल रचनाक सम्पूर्ण पाठ संकलनमे नहियो रहलासँ साहित्यिक आलोचकक व्याख्याक निर्भरता बढ़ैत अछि। एहन परिस्थितिमे पोथीकेँ अन्तिम सत्य मानबाक अपेक्षा तर्कसंगत साक्ष्यसमूह मानब उचित अछि।

भविष्यक शोध लेल कथा-संग्रहसभक संस्करणान्तर, कविताक लोकशब्द-सूची, बहुरूपिया प्रदेश मे क गजलक छन्द-विश्लेषण, विदेह विशेषांक आ मुद्रित पोथीक पाठान्तर, तथा रचनाकारक आलोचनात्मक गद्यक स्वतंत्र सम्पादन अत्यावश्यक कार्य छथि। एहि सभ शोधमे स्त्रीक स्वायत्तता, जाति-राजनीतिक पहिचान, साम्प्रदायिक हिंसाक स्मृति, किसानक अर्थव्यवस्था आ क्षेत्रीय भाषिक अधिकार विषयक तुलनात्मक ढाँचा विकसित कएल जाए सकैत अछि।

अन्ततः स्वतंत्रचेता ओहि अर्थमे सार्थक अछि जे ई साहित्यिक व्यक्तित्वकेँ केवल संस्थागत प्रतिष्ठाक माध्यमसँ नहि, बल्कि संघर्षशील शब्द, आलोचनात्मक वाद-विवाद आ निकट स्मृतिक माध्यमसँ प्रस्तुत करैत अछि। संग्रहकेँ पढ़बाक उचित रीति लेखकक प्रति आदर आ आलोचनात्मक स्वतन्त्रता दुनू बचा कए राखब अछि। मैथिली साहित्यक

इतिहासमे ओकर स्थायी उपयोग एहि खुला, जाँचयोग्य आ बहुस्वरीय पाठ-सम्भावनामे निहित अछि।

सन्दर्भसूची

मूल संकलन, ताहिमे समाहित आलेख आ विदेहमे उपलब्ध समकालीन प्रकाशनकेँ आधार बनाकए सन्दर्भ व्यवस्थित कएल गेल अछि। समान पोथी अथवा आलेखक भिन्न रूपकेँ भिन्न पाठ-साक्ष्य बुझि पढ़ल जाएबाक चाही।

मूल संकलन

अनचिन्हार, आशीष (सम्पा.). स्वतंत्रचेता : अरविन्द ठाकुर—व्यक्तित्व-कृतित्व। प्रथम संस्करण। सुपौल : शशि प्रकाशन, २०२०। ISBN 978-81-948818-0-3।
विदेह। अरविन्द ठाकुर विशेषांक। विदेह, अङ्क १८९, १ नवम्बर २०१५। विशेषांकसँ विकसित पोथी : स्वतंत्रचेता।

अरविन्द ठाकुरक कृति आ विचार-सामग्री

ठाकुर, अरविन्द। परती टूटि रहल अछि। कविता-संग्रह। विदेह पोथी-सूचीमे उपलब्ध ग्रन्थ-प्रविष्टि।

ठाकुर, अरविन्द। अन्हारक विरोध मे। कथा-संग्रह। विदेह पोथी-सूचीमे उपलब्ध ग्रन्थ-प्रविष्टि।

ठाकुर, अरविन्द। बहुरुपिया प्रदेश मे। गजल-संग्रह। विदेह पोथी-सूचीमे उपलब्ध ग्रन्थ-प्रविष्टि।

ठाकुर, अरविन्द। मीन तुलसीपात पर। गजल-संग्रह। विदेह पोथी-सूचीमे उपलब्ध ग्रन्थ-प्रविष्टि।

ठाकुर, अरविन्द। सबद मितारथ धाय्या। कविता-संग्रह। विदेह पोथी-सूचीमे उपलब्ध ग्रन्थ-प्रविष्टि।

ठाकुर, अरविन्द। जड़ताक प्रतिवाद मे। दीर्घ कविता। विदेह पोथी-सूचीमे उपलब्ध ग्रन्थ-प्रविष्टि।

ठाकुर, अरविन्द। लघुत्तमसमापवर्त्य। कथा-संग्रह। विदेह पोथी-सूचीमे उपलब्ध ग्रन्थ-
प्रविष्टि।

ठाकुर, अरविन्द। क्षितिकणक क्षेत्रफल। आलोचना। विदेह पोथी-सूचीमे उपलब्ध ग्रन्थ-
प्रविष्टि।

ठाकुर, अरविन्द। तिजहरियाक तितीर्षा। कविता-संग्रह। विदेह पोथी-सूचीमे उपलब्ध ग्रन्थ-
प्रविष्टि।

ठाकुर, अरविन्द। रोशनाइक लोकपक्ष। कथेतर गद्य। विदेह पोथी-सूचीमे उपलब्ध ग्रन्थ-
प्रविष्टि।

ठाकुर, अरविन्द। मिथिलामे सांस्कृतिक आन्दोलनक भविष्य। विदेह, अङ्क १८९, २०१५।
[https://www.videha.co.in/research/2015/189/मिथिलामे-सांस्कृतिक-
आन्दोलनक-भविष्य.htm](https://www.videha.co.in/research/2015/189/मिथिलामे-सांस्कृतिक-आन्दोलनक-भविष्य.htm)

ठाकुर, अरविन्द। लक्ष्मीनाथ गोसाँई : परम्परा, भाषा आ निर्गुण भाव। विदेह, अङ्क १८९,
२०१५। [https://www.videha.co.in/research/2015/189/लक्ष्मीनाथ-गोसाँई-
परम्परा-भाषा-आ-निर्गुण-भाव.htm](https://www.videha.co.in/research/2015/189/लक्ष्मीनाथ-गोसाँई-परम्परा-भाषा-आ-निर्गुण-भाव.htm)

समकालीन आलोचनात्मक आलेख

ठाकुर, गजेन्द्र। अन्हारक विरोध मे—अरविन्द ठाकुर। स्वतंत्रचेता मे संकलित।

झा, डा. योगानन्द। अन्हारक विरोधमे : एक दृष्टि। विदेह, अङ्क १८९, २०१५।

<https://www.videha.co.in/research/2015/189/अन्हारक-विरोधमे-एक-दृष्टि.htm>

चमन, आशीष। अन्हारक विरोध मे अरविन्द ठाकुर। विदेह, अङ्क १८९, २०१५।

[https://www.videha.co.in/research/2015/189/अन्हारक-विरोध-मे-अरविन्द-
ठाकुर.htm](https://www.videha.co.in/research/2015/189/अन्हारक-विरोध-मे-अरविन्द-ठाकुर.htm)

अनचिन्हार, आशीष। लाल लंगौटी केर पहचान करैत कविता। स्वतंत्रचेता मे संकलित।

श्रीवास्तव, अरविन्द। सामंती सभहँक विरुद्ध तैयार कवि। विदेह, अङ्क १८९, २०१५।

[https://www.videha.co.in/research/2015/189/सामंती-सभहँक-विरुद्ध-तैयार-
कवि.htm](https://www.videha.co.in/research/2015/189/सामंती-सभहँक-विरुद्ध-तैयार-कवि.htm)

मुन्नाजी। परती टूटि गेलै। विदेह, अङ्क १८९, २०१५।

<https://www.videha.co.in/research/2015/189/परती-टूटि-गेलै.htm>

झा, ओमप्रकाश। बहुरुपिया रचनामे। विदेह, अङ्क १८९, २०१५।

<https://www.videha.co.in/research/2015/189/बहुरुपिया-रचनामे.htm>

धीरज, राम चैतन्य। बहुरुपिया प्रदेश मे : एक दृष्टि। विदेह, अङ्क १८९, २०१५।

<https://www.videha.co.in/research/2015/189/बहुरुपिया-प्रदेश-मे-एक-दृष्टि.htm>

ठाकुर, जगदीश चन्द्र ‘अनिल’। अरविन्दजीक आजाद गजल। विदेह, अङ्क १८९, २०१५।

<https://www.videha.co.in/research/2015/189/अरविन्दजीक-आजाद-गजल.htm>

मिश्र नीरज, अरविन्द। अरविन्द ठाकुर : व्यक्तित्व आ कृतित्व। विदेह, अङ्क १८९, २०१५।

<https://www.videha.co.in/research/2015/189/अरविन्द-ठाकुर-व्यक्तित्व-आ-कृतित्व.htm>

कानन, केदार। परती टूटि रहल अछि—यात्रा-कथा। स्वतंत्रचेता मे संकलित।

किसलय, सी. ए.। परती टूटि रहल अछि : कृषकक अन्नदायी चेतना आ अन्वेषण-वृत्तिक अध्ययन। स्वतंत्रचेता मे संकलित।

सम्पादकीय अभिलेख आ विदेहक पोथी-सूची

विदेह। पोथी-सूची : अरविन्द ठाकुरक रचनासभ आ आशीष अनचिन्हारक सम्पादन-संबद्ध

प्रविष्टि। <https://videha-ejournal.github.io/videha/pothi.htm>

विदेह। शोध-सूची : २०१५ केर अरविन्द ठाकुर विशेषांकसँ सम्बद्ध आलोचनात्मक आलेख।

<https://videha-ejournal.github.io/videha/research/index.htm>

विदेह। गद्य-सूची : अरविन्द ठाकुरक कृति-सन्दर्भ आ संकलन। <https://videha-ejournal.github.io/videha/prose.htm>

समीक्षा ३

गजेन्द्र ठाकुरक ८२ टा चयनित कथा

अभिलेख, अस्मिता आ लोकजीवनक कथात्मक पुनर्पाठ

आधार-कृति : गजेन्द्र ठाकुरक ८२ टा चयनित कथा

मूल कथाकार : गजेन्द्र ठाकुर | चयन आ सम्पादन : आशीष अनचिन्हार | विदेह, २०२६

सारांश

गजेन्द्र ठाकुरक बयासी चयनित कथाक अध्ययनसँ मैथिली कथालोकक एक विशिष्ट विस्तार उद्घाटित होइत अछि। एहिमे गामक परम्परागत जीवन, पारिवारिक सम्बन्ध आ जातिगत संरचनाक संगहि अभिलेखालय, न्यायालय, विद्यालय, अस्पताल, पंचायत, निर्माणस्थल, श्रम-पाँजि आ आधुनिक संचारक संस्थागत संसार एक-दोसरामे प्रवेश करैत अछि। लेखकक प्रमुख कथात्मक प्रश्न ई नहि जे ककर कथन अन्तिम सत्य अछि, बल्कि ई जे विभिन्न मनुष्य, कागज, स्मृति आ संस्थाक बीच सत्यक दावा कोना बनैत अछि। एहि अध्ययनमे दस स्रोत-पोथी अथवा खण्डसँ लेल गेल सभ बयासी कथाक स्वतंत्र संक्षिप्त पाठविवेचन, चुनल प्रतिनिधि कथाक विस्तृत निकट-पाठ, कथन-शिल्प आ भाषिक गठनक परीक्षण, चयन-पद्धतिक आलोचना तथा मैथिली कथापरम्परासँ तुलनात्मक सम्बन्ध निरूपित कएल गेल अछि। निष्कर्ष ई जे ई कथा-संकलनक विशिष्ट उपलब्धि अधिकार-विमर्शक केवल वैचारिक उद्घोष नहि बनाकऽ रोजमर्राक वस्तु, संख्या, देह, स्वर आ प्रमाणक सूक्ष्म नाट्यमे बदलि देब अछि; संगहि किछु आख्यानमे प्रक्रियागत विवरणक अधिकता आ समान प्रतीकक पुनरागमन आलोचनात्मक प्रश्न बनैत अछि।

बीज-शब्द : मैथिली कथा; गजेन्द्र ठाकुर; अभिलेख; स्मृति; जाति; श्रम; संस्थागत हिंसा;

स्त्री-अस्मिता; लोकभाषा; कथा-शिल्प; साहित्येतिहास।

अध्ययनक आधार आ आलोचनात्मक दृष्टि

एहि अध्ययनक मूलाधार गजेन्द्र ठाकुरक “८२ टा चयनित कथा”क उपलब्ध सम्पादित पाठ अछि। प्रकाशकीय अनुसार दस स्रोत-पोथी अथवा खण्डसँ चयन आशीष अनचिन्हार कएने छथि। पाँच कथा “पर्वत ऊपर भमरा जे सूतल”सँ, दस “स्मृतिक दोसर दिस”सँ, पाँच “इजोत — जनम-जनमक कथा”सँ, तीस “कथा-शतत्रयी”क तीन खण्डसँ, तीस “कथा-त्रिधारा”क तीन खण्डसँ आ दू “नव पाँखि”सँ अएल अछि। एहिसँ संग्रहक विन्यास अपनेमे एकटा आलोचनात्मक तर्क बनैत अछि : पुरनका सामाजिक व्यंग्यसँ स्मृतिक अपूर्णता, ताहिसँ संस्थागत जीवनक सूक्ष्म अनुभव धरि।

पाठविश्लेषणमे घटना आ पात्रक स्पष्ट कथनकेँ आलोचकक अनुमानसँ अलग राखल गेल अछि। जतय कथान्त निर्णय स्थगित करैत अछि, ओतय कृत्रिम समाधान नहि जोडल गेल अछि। उद्धृत पंक्ति सभकेँ एहि उपलब्ध चयनित देवनागरी पाठक शब्दसँ मिलान कऽ राखल गेल अछि; मूल स्रोत-पोथी सभक अलग-अलग संस्करणक पाठभेदक निर्णायक दावा नहि कएल गेल अछि। उद्धरणक परिचय कथा-शीर्षकसँ देल गेल अछि, जाहिसँ विचार आ मूल कथनक अन्तर स्पष्ट रहय।

पाठक भीतर “मूल”, “स्मृति” आ “सुधार”क अन्तर बारम्बार उपस्थित होइत अछि। आलोचनात्मक दृष्टि सेहो एहि अन्तरकेँ स्वीकार करैत अछि : साहित्यिक सत्य प्रायः न्यायिक निष्कर्ष नहि होइत; पात्रक शब्द लेखकक अन्तिम मत नहि होइत; संपादित चयन समग्र कृतित्वक पूर्ण पर्याय नहि होइत। एहि कारण मूल्यांकनमे कथाक नाटकीय निर्माण, वाचकक दूरी, विवरणक चयन, प्रतीकक क्रम-विकास आ मौनक काज अलग-अलग परखल गेल अछि।

समग्र साहित्यिक समीक्षा : दस स्रोतसमूहक सौन्दर्य-रचना

पर्वत ऊपर भमरा जे सूतल : व्यंग्य, जाति आ ज्ञानक सार्वजनिक कसौटी

“सिद्ध महावीर”मे अनमना दीदीक मन्दिरक निर्माण आ पारिवारिक जमीन-विवादक कथा धार्मिक प्रतिष्ठाक भीतर लुकायल अर्थलाभ आ विश्वासक संकटकेँ एक संग उजागर करैत अछि। कागजपर नाम चढ़लाक बाद धर्मक भूमि बचेनिहार स्त्रीए पहुँचहीन भऽ जाइत छथि। व्यंग्यक धारि खास एहि ठाम अछि जे चमत्कारक परवर्ती सामूहिक व्याख्या, अनमना दीदीक चिकित्सकीय तर्कसँ टकराइत अछि। कथा पाठककेँ एके घटना पर दुइ सामाजिक व्याख्याक तंत्र देखबैत अछि।

“डोमा, बुधन आ...” जातिगत रुढ़िक विरुद्ध केवल सदिच्छाक कथा नहि। चण्डीगढ़क प्रवासन, शिक्षा, भोजक छुआछूत आ अगिला पीढ़ीक उच्च पेशागत स्थिति एके परिवारक सामाजिक समयमे गुँथल अछि। कथा-वक्ताक स्मृतिदोष आ लम्बा वैचारिक संवाद मिलि सामाजिक प्रगतिक निश्चयात्मक चित्रकेँ जटिल बनबैत अछि। “शब्दशास्त्रम्”मे तालपत्र, पाठ-व्याख्या आ दार्शनिक विवादक माध्यमसँ अर्थपर स्वामित्वक प्रश्न उठैत अछि; अनेक शास्त्रीय सन्दर्भक समावेश कलात्मक सम्पन्नता सेहो दैत अछि आ पाठकसँ अतिरिक्त धैर्य सेहो माँगैत अछि।

“महिसबार ब्राह्मणक गाम” वर्णनप्रधान आख्यान अछि। पोखरि, धानक किसिम, जातिगत पहिचान आ स्थानीय व्यवहारक बहुलता एकर सामाजिक भूगोल बनबैत अछि। “जाति-पाति”क अत्यल्प आकारक प्रतिवाद एहि विस्तृत लोकवृत्तान्तक तीव्र संक्षेप जकाँ सामने अबैत अछि। एक तरफ सामाजिक पहचानक अनेक परत, दोसर तरफ सार्वजनिक रूपसँ अपन जाति कहबाक असमान साहस : एहि द्वन्द्वमे समूहक कथा-नैतिकता रचल अछि।

“यएह जे अंधविश्वास हमरा मोनसँ हटा दिअ” — ‘सिद्ध महावीर’

“जाति आ जाति-व्यवस्था दू चीज!” — ‘डोमा, बुधन आ...’

“की हम ई कहि सकैत छी छाती पीटि कऽ- जे हम डोम छी” — ‘जाति-पाति’

स्मृतिक दोसर दिस : स्मरण, अपूर्ण पाठ आ साक्ष्यक राजनीति

“प्रतिलिपिकार”क कथात्मक केन्द्रीयता एक खाली कोष्ठकमे अछि : सुन्दर, पठनीय प्रतिलिपि बना देबाक लोभ आ मूल पाठक अनिश्चितता सुरक्षित रखबाक जिम्मेवारीक बीच सुधीन्द्रक चुनाव। एहि कथामे मौन कमी नहि, ज्ञानक ईमानदारी अछि। “अन्तिम पाठक” आगिमे नष्ट जनवाचनालयसँ आरम्भ भऽ स्मृतिसँ पुस्तक पुनर्चनाक जोखिम-सम्भावना खोलैत अछि; लोकक स्मरण नष्ट संग्रहक पूर्ण विकल्प नहि बनैत, मुदा नव साहित्यक स्रोत बनि सकैत अछि।

“सीमाक गोली” घटना-विवरणक बहुस्तरीय संरचना प्रस्तुत करैत अछि। सीमापत्थर, जवानक चेतावनी, देखनिहारक स्थिति, वस्तुक पहचान आ अनुदित अनुभव सभ अलग-अलग साक्ष्य रूपेँ उपस्थित छथि; एकल सर्वज्ञ निर्णयक अनुपस्थिति कथा केँ एखनक दस्तावेजी कथा-शिल्पक महत्वपूर्ण नमूना बनबैत अछि। “राजमिस्त्रीक गिरावट”मे सुरक्षा-निर्देश आ कार्यस्थलक वास्तविक साधनक अन्तर संस्था बनाम श्रमिकक सम्बन्धपर कठोर प्रश्न अछि।

“काजर”, “बहिनसभ” आ “घर नम्बर पाँच” स्त्री-अनुभवक भिन्न रचना छथि : शृंगारक अर्थपर पीढ़ीक बातचीत, बहिनपनक स्मृतिक दूरी, आ घरक वास्तुशिल्पमे जमल समय। “सूखल कमला” आ “माटिक गन्ध”मे माटि-नदीक भूगोल निज स्मृति आ प्रवासनक अनिश्चित अनुभवमे रूपान्तरित होइत अछि। “संगीत शिक्षक”मे पाठशाला आ कौशलकेन्द्रक संस्थागत समानता-असमानता, आवाज आ मौनक माध्यमसँ परखी जाइत अछि।

“नहि लिखल चीजे सबसँ सटीक प्रतिलिपि छल” — ‘प्रतिलिपिकार’

“लेखक सेहो अन्ततः अपन पाठक बनि जाइत अछि” — ‘अन्तिम पाठक’

“हम सुनल नहि” केँ “ओ बोलल नहि” नहि कहल जाए” — ‘सीमाक गोली’

“ऊपर रस्सी बदलय कहने।” — ‘राजमिस्त्रीक गिरावट’

इजोत — जनम-जनमक कथा : वंश, राग आ निर्णयक खुलल आकाश

“मातृवंश” वंशावली आ उत्तराधिकारक जेठ बेटीपर आरोपित आदेशकेँ परिवर्तित कऽ “घर धरि पहुँच”क साधन बनबैत अछि। “राग”मे सांगीतिक परम्पराक एकल स्वामित्वक बदला सुनब, अनुमति लेब आ पुनर्गायनक सामूहिक प्रक्रिया महत्वपूर्ण अछि। “अदालत”मे गवाही प्रश्नोत्तरक अनुशासन अपन शिल्प बनैत अछि : समय, पानि, पुरान मानचित्र आ उपयोगक चिन्ह मिलि निर्णयक कठिनाई रचैत अछि।

“डूम”मे जल-आपदा, हेरायल व्यक्ति आ मृत्यु-तिथिक अनिश्चितता पात्रक गृहस्थ जीवनपर दीर्घ असर छोड़ैत अछि। “विदेह”मे वंशक सूची, सम्पत्ति-संबंधी प्रमाण आ स्मृति-संरक्षणक स्पष्ट अन्तर पर जोर अछि। एहि समूहक अन्तमे खाली सम्पादकीय पन्ना पाठकेँ आदेश नहि, अगिला लेखकक सम्भावना दैत अछि। “इजोत” एकरे कारण विजयक उन्मत्त रूपक नहि, अपूर्णताक बीच छोट आ साझा उजास अछि।

“मूलक घमण्ड नहि रहल” — ‘मातृवंश’

“सम्पत्ति, जाति, उत्तराधिकार वा विधिक प्रमाणक दावा नहि” — ‘विदेह’

कथा-शतत्रयी, पहिल खण्ड : देह, वस्तु आ अदृश्य पात्र

“दू अक्षर”क छोट सन्देश, “फोटो स्टूडियो”क वर्तमान चेहराक आग्रह, “एक जोड़ी जूता”क उपयोगक पुनर्वितरण आ “बाँटल छाँह”क साझा सार्वजनिक ठाम : एहि कथासभमे साधारण वस्तु आ छोट क्रिया कथानकक निर्णायक सूत्र छथि। “दोसर दर” अस्पतालक प्रवेश-विन्यासमे मनुष्यक योग्यताक सूक्ष्म विभाजन खोलैत अछि। “सात मिनटक आवाज” ध्वनिक मापमे सम्बन्धक दूरी सुनेबाक प्रयास करैत अछि।

“अधूर नाटक” मंचक अपूर्ण तैयारीकेँ जीवनक असमाप्त सम्बन्धसँ जोड़ैत अछि। “एकतीसम खाट” आश्रयक गणितमे फँसल अतिरिक्त मानवीय जरूरत; “ईटक निशान”

कारीगरक श्रमक पहिचान; आ “गिनतीक बाहर” क्षति-प्रपत्रमे अदृश्य निवासी—ई तीनू कथा गणनाक सीमा आ देहक अस्तित्वमे तनाव प्रकट करैत अछि। एहि खण्डक ताकत कर्तव्य आ सहानुभूतिक अमूर्त भाषणक बदला खाट, ईंट आ पाँजिक धरातलपर बहस उतारब अछि।

“पाँजि आब ओकर भीतर रहयवला लोकक रेखा सेहो छोड़ि रहल छल” —

‘गिनतीक बाहर’

कथा-शतत्रयी, दोसर खण्ड : खेत, भोजन, श्रम आ परस्परता

“बाँधक ओहि पार” विस्थापनक बाद देवस्थानक ठाम आ सामूहिक परिचयक प्रश्न उठबैत अछि। “जमीनक आवाज” बाट आ सीमा-निर्माणक स्थानीय राजनीति उजागर करैत अछि। “सिलाइ मशीन”क मोटर मात्र उपकरण नहि; ओ आत्मनिर्भर काज आ पारिवारिक समझौताक नव ताल सुनबैत अछि।

“दस किलो चाउर”मे तौल, पर्ची आ अधिकारक भाषाक सूक्ष्म सम्बन्ध देखबामे अबैत अछि। “अधूरा गीत” लोकगीत पर रचनाकारक व्यक्तिपरक दावा अस्वीकार करैत सामूहिक स्मृतिक पक्ष खोलैत अछि। “माटिक बाँसुरी” वस्तु बनेबाक धैर्य आ बालकक जिज्ञासाकेँ मिलबैत अछि। “खुलल दरवाजा” अवसरक संग भय देखबैत अछि, “मौन गवाही” न्यायमे बोलि नहि सकबाक अर्थपर विचार करैत अछि। “कुर्योकि दालि” खाद्य-श्रृंखला आ बाजारक असमान विनिमय; “एक बीघाक सपना” जमीनक माप आ श्रमिकक अपन खेती करबाक इच्छा रचैत अछि।

“गीत खेतक छल। जकर कंठमे पड़ल, ओकर भेल” — ‘अधूरा गीत’

कथा-शतत्रयी, तेसर खण्ड : सार्वजनिक स्थानक वर्ग-चरित्र

“खाली थैला” आ “नाव बान्हल रहल” आपदाक समय वस्तु, परिवहन आ सामूहिक निर्भरताक कथा बनैत अछि। “पोखरिक रखबार” सार्वजनिक पानिक रखवारीक प्रश्नसँ आरम्भ भऽ उपयोगक अलग-अलग दावासँ भिडैत अछि। “डोमक बाँसुरी” जातिगत

अवमूल्यनकेँ समारोहक भुगतान-पाँजि धरि आनैत अछि; कलाकारक सुर सुनब आ हुनका श्रमक उचित मान देब दुनू अलग चरण छथि।

“बरगदक नीचाँ रजिस्टर”क ग्राम्य छाँह आ कागजी गणना; “जातिक कुर्सी”क बैसबाक स्थान; “किरायेदार कन्या”क आवासीय असुरक्षा; “गुप्त बचत”क स्त्री-संचित आर्थिक विवेक; “स्टेशन जे नक्शामे नहि”क देखल-अदेखल मार्ग; आ “अपरिचित अपन घर”क स्मृतिगत विस्थापन—सभ कथा निजी जीवनक सीमा सार्वजनिक व्यवस्थासँ निरन्तर बदलैत देखबैत अछि।

“स्थानीय एकल कलाकार—चन्देश्वर डोम—बाँसुरी—पाँच सय रुपैया” —

‘डोमक बाँसुरी’

“कुर्सी अट्टाइस। स्थायी स्थान—कोनो नहि” — ‘जातिक कुर्सी’

कथा-त्रिधारा, पहिल खण्ड : ध्वनि, गलत शब्द आ दस्तावेजक असर

“आवाज नहि देनिहार घंटी”क निष्क्रिय उपकरण घरक मौन इतिहासक वाहक अछि। “उल्टा रास्ता” सीधी रेखा बनाम मनुष्यक चलबाक अनुभव देखबैत अछि। “खाली कॉपी” ज्ञानक बहुलता स्वीकारबाक अभ्यास अछि, “एक शब्द गलत” एकटा शब्दक सम्बन्ध-विघटनकारी प्रभाव उद्घाटित करैत अछि। “दीप मिझेबाक पहिने” साझा सीमाक भीतर अपन बाटक पुनर्निर्माण करैत अछि।

“रातिक नाव” आपदामे नैतिक चयनकेँ तीव्र बनबैत अछि; “नाम भूलनिहार नेता नहि, शिक्षक” शिक्षकीय उत्तरदायित्व आ स्मरणक दुर्बलताक बीच प्रश्न उठबैत अछि। “नदीक कागज” नक्शामे अदृश्य लोकक पुनर्गणना; “बालू घाट” प्राकृतिक संसाधनक उपभोगक माप; “हस्ताक्षरक शक्ति” स्त्री-मण्डलीक कागजी स्वीकृतिक वास्तविक अर्थ जाँचैत अछि। एहि खण्डमे कागज केवल बही नहि, निर्णयक प्रवेश-द्वार अछि।

“आइ सँ हम अपन उत्तर केँ नम्बर नहि देब” — ‘खाली कॉपी’

कथा-त्रिधारा, दोसर खण्ड : प्रपत्र, मोहर आ अदृश्य श्रम

“मचानक राति” रातिक रखवारीक अधूर लेखा प्रस्तुत करैत अछि। “घुरैत मोहर” आधा चिन्हसँ बनैत सत्यक कहानी अछि। “प्रतीक्षालयक कुर्सी नम्बर शून्य” संस्थागत नियममे बाहरी आवश्यकता प्रवेश करबाबैत अछि। “दिनांकक खाली खाँचा”मे सहायता लेल भरल सरकारी तिथि धीरे-धीरे व्यक्ति-क स्मृति बदलि दैत अछि—एहि कथा द्वारा दफ्तरी वाक्यक स्मृतिपर असर सूक्ष्म रूपेँ सामने अबैत अछि।

“सुधार-पाँजिक मूल पृष्ठ” मूल प्रविष्टिक त्रुटि मेटेबाक बदला ओकर इतिहास बचबैत अछि। “तीनटा खाली कुर्सी”क भोजन-क्रम अनुपस्थित व्यक्तिक स्थानकेँ दृश्यमान करैत अछि। “ओसाराक बल्ब” घरेलू छोट प्रकाशक वितरणमे सम्बन्धक राजनीति देखबैत अछि; “एक कप चाय कम” हिसाब आ स्नेहक बीच रहस्य-सम्बन्ध; “बाँसक पुल” काजक बीच टूटल संवादक पुनर्स्थापन; “उजड़ल मेड़” खेतीक व्यवहारसँ झगड़ाक बादक सहकारपर रोशनी दैत अछि।

“मुदा लोकक बोलीमे ओ एखनो कुर्सी नम्बर शून्य छल” — ‘प्रतीक्षालयक कुर्सी नम्बर शून्य’

“जे दिन कागजमे मानल जाए, ओ दिन कहूँ” — ‘दिनांकक खाली खाँचा’

“मूल इतिहास अछि, सुधार इतिहासक अगिला पाँति” — ‘सुधार-पाँजिक मूल पृष्ठ’

कथा-त्रिधारा, तेसर खण्ड : अनुत्तरित प्रश्नक नैतिक सम्पन्नता

“विद्यालयक जूता” अभावग्रस्त बच्चीक विद्यालय-यात्रा आ घरक बीया बचबाक दृढ़ता मिलबैत अछि। “पंचायतक नल” पानिक उपयोगपर टोलक असमान पहुँचक प्रश्न राखैत अछि। “मजदूरी” भट्ठाक हिसाबमे बचल पचासक न मिटायल जायबकेँ छोट मुदा ठोस श्रमिक-विजय बनबैत अछि। “छोट मास्टर” उत्तर देने बला गुरुक बदला प्रश्न सुननिहार

बच्चाक शिक्षकीय दायित्व रचैत अछि। “सात सीढ़ी” स्मृतिक गिनती आ मानसिक व्यवधानक कथा अछि।

“नस्तीक (संचिकाक) आत्मकथा” संचिकाकै कथावाचक बनाकऽ विभागीय विलम्बक नैतिक व्यंग्य गढ़ैत अछि। “सीमा” प्रशासनिक वर्गीकरणक सहजता आ खेत-पानिक निरन्तरता तुलबैत अछि। एहि खण्डक “ओसाराक बल्ब” पहिल खण्डक समान शीर्षकवाली कथासँ भिन्न अछि : एतय अनिमाक घरेलू ओसार श्रमक समयबद्ध ठाम बनैत अछि। “अनन्त पञ्जी” वंशक सूचीकै अजन्मल भविष्यपर शासन करबासँ रोकैत अछि। “मिथिलाक पुस्तकालय” दुर्लभ पोथीक मोहक कल्पनाक बदला जाँचयोग्य सीमित प्रमाण स्वीकार करबाक अनुशासन विकसित करैत अछि।

“पचास बहुत पैघ संख्या नहि छल। मुदा पहिल बेर ओ कतहु बिलायल नहि छल”

— ‘मजदूरी’

“कागज यात्रा करैत अछि जाहिसँ जिम्मेवारी नीचाँ उतरय” — ‘नस्तीक (संचिकाक) आत्मकथा’

“अगिला जीवन एखन लिखल नहि अछि” — ‘अनन्त पञ्जी’

“जहाँ स्रोत एक-दोसरसँ नहि मेल खाइत अछि” — ‘मिथिलाक पुस्तकालय’

नव पाँखि : किशोर दृष्टि, गरिमा आ साझी धरोहर

“बैसाखीपर जिनगी”मे देहगत असमर्थताकै दया-प्रदर्शनक कथा बनएब अस्वीकार कएल गेल अछि। जीवनसंगी चुनबाक अधिकार, प्रश्न पूछबाक मर्यादा आ आत्मनिर्भर भविष्यक कल्पना पाठकै नैतिकता सिखबैत अछि, मुदा सहज चरित्र-व्यवहारक भीतर। “बाढ़िमे बचल पोथी” पानिसँ बचाओल पुस्तकक माध्यमसँ सामूहिक स्मृतिक संरक्षणकै साहसिक घटनाक संग जोड़ैत अछि; आपदा पार कऽ पोथी मात्र वस्तु नहि, पीढ़ीसभक सेतु बनैत अछि।

दुनू किशोर कथा पैघ पाठक लेल सेहो महत्त्वपूर्ण अछि। पहिल व्यक्तिक गरिमाक सम्बन्धमे दृष्टिक कोण बदलैत अछि, दोसर ज्ञान-संरक्षणक उत्तरदायित्वकेँ सामुदायिक कर्म बनबैत अछि। संकलनक अन्तमे एकरा राखब मात्र आयुवर्गक भेद नहि, संग्रहक नैतिक सूत्रकेँ अग्रिम पीढ़ी धरि बढ़ाएब अछि।

“जिनगी बैसाखीपर हो सकैत अछि, सपना नहि” — ‘बैसाखीपर जिनगी’

“किछु दाग क्षति मात्र नहि होइत अछि; ओ स्मरण सेहो करबैत अछि” — ‘बाढ़िमे बचल पोथी’

पृथक निकट-पाठ : प्रतिनिधि कथाक रचनात्मक संरचना

‘सिद्ध महावीर’ : लोककथनक विडम्बना आ धर्मक अर्थव्यवस्था

एहि कथामे अनमना दीदीक कथित सरलता नैतिक कमजोरी नहि। मन्दिरक लेल अपन अन्न बेचि कऽ श्रमक सम्मान राखनिहार स्त्री कानूनी कागजक जटिलता नहि बुझि सकैत छथि; भातिज आ दासजीक भाषाक तीर्थ-व्यवहारपर विश्वास करैत छथि। कथानकक निर्णायक मोड़ जमीनक अंश हस्तान्तरण नहि, रास्ताक बन्द भेनाइ अछि। निहितार्थ— सम्पत्ति पर नाम आ सम्पत्तिक उपयोगक अधिकार अलग-अलग अछि।

अन्तमे भातिजक मृत्युक चमत्कारवादी आ चिकित्सकीय दू व्याख्या थिक। लेखक ओहि विपरीत अर्थसभ केँ सामना करबैत छथि; घटना पर अलौकिक निर्णय नहि थोपैत। “सिद्ध” पद एहि कारण अर्थक विडम्बित केन्द्र बनि जाइत अछि।

‘जाति-पाति’ : बीहनि संरचनामे एक प्रश्नक विस्फोट

एहि कथा केँ सामान्य क्षुद्र आकारक प्रसंग बुझब भूल होयत। छोट संवादमे दूटा उच्चाधिकारीक समान पद, समान सामाजिक माहौल आ आत्मपरिचय देबाक असमान सुविधा मुठ्ठी भरि वाक्यमे टकराइत अछि। “क्यो किछु नै बाजत” दम्भक वाक्य नहि रहि सामाजिक सुरक्षा हासिल करबाक एकतरफा क्षमता बनि जाइत अछि।

एहिमे कथा कियो “नीक” पात्र चुनि नहि दैत; भाषाक अनुमति आ निषेध स्वयं घटना बनैत अछि। ई मैथिली बीहनि-कथाक संक्षेपण-सम्भावनाक उपयोगी प्रमाण अछि।

‘प्रतिलिपिकार’ : न भरल कोष्ठकक गम्भीरता

सुधीन्द्रक व्यावसायिक कौशल अक्षर स्वच्छ करब अछि। कथा कौशलकें नकारैत नहि, मुदा ओकर सीमा देखबैत अछि : एकरे बाद कथा लिखिते चाहै जे पहिल पाठ अज्ञेय अछि। प्रदर्शनीक दबाव “पढ़य लायक” रूप बनाबऽ चाहैत अछि, जबकि फाटल अक्षरक अस्पष्टता ऐतिहासिक तथ्य अछि।

एतय खाली स्थान कलात्मक बिम्ब आ पाठालोचनाक नियम दुनू अछि। ओकरा नहि भरब निर्णयहीनता नहि, अनुमायक लोभक विरुद्ध सक्रिय जिम्मेदारी अछि।

‘सीमाक गोली’ : बहुसाक्ष्यक अधूर निर्णय

कथामे एक गोली चलैत अछि, मुदा कथक ओकरा अनन्त निर्णयमे बदलि नहि दैत। आवाज सुनब, वक्तव्य देब, दूरी नापब आ खतरा मानब सभ भिन्न स्तरक क्रिया अछि। तथ्य आ अर्थक एहन छानबीन न्यायिक साक्ष्यविचारक रूप ग्रहण करैत अछि।

कथाक रचना अलग देखनिहारक सीमित दृष्टिसँ बनेल गेलेना अन्तिम वाक्य “गोलीक आवाज एक क्षणक छल” दीर्घ सामाजिक स्मृतिक सामना करैत अछि। एहि संरचनामे संवेदना तथ्यक प्रतिस्थापन नहि बनैत।

‘सूखल कमला’ : अनुपस्थित श्रोता संग नदीक संवाद

कथक गोपीसँ बात करैत रहैत छथि; सम्बोधित व्यक्ति अनुपस्थित रहितो कथाक नैतिक केन्द्र बनल रहैत अछि। सूखल धार प्राकृतिक वर्णन नहि, स्मृतिसँ भिन्न-भिन्न लोकक सम्बन्धक नक्सा अछि।

“तोहर स्थान पर अपन आवाज रखि देब”क अस्वीकृति कथावाचकक सीमा-बोधक सर्वाधिक निर्णायक रूप अछि। अपन प्रियजनक स्मृतिसँ कथा बना सकब आ ओकरा अन्तिम सत्य कहब अलग बात अछि।

‘मातृवंश’ आ ‘अनन्त पञ्जी’ : उत्तराधिकारसँ स्वायत्त जीवन धरि

दुनू कथामे वंशक लेखा अनिवार्य सांस्कृतिक धरोहर होइतहुँ भविष्यक आदेश बनलापर प्रश्नाकुल अछि। “मातृवंश”मे जेठ बेटीमे सौंपल घर चाभीक अर्थ बदलि देबाक बाद आदेशसँ पहुँच बनैत अछि।

“अनन्त पञ्जी”क अन्तिम स्थगन—शिशुक नाम बादमे राखब—वंशक निरन्तरता नहि मेटैत; ओकरा एक नव व्यक्तिक अनलिखल जिनगीक अगाँ सीमित करैत अछि। दुनू कथा समाजक स्मृति आ व्यक्तिगत इच्छाक बीच निर्मित नैतिक सहमतिक नमूना छथि।

‘डोमक बाँसुरी’ आ ‘जातिक कुर्सी’ : समताक भौतिक भाषा

“डोमक बाँसुरी”मे सुरक प्रशंसा पर्याप्त नहि; कलाकारक नाम आ भुगतान कार्यक्रम-पाँजिमे दर्ज होइत अछि। ई आर्थिक स्वीकृति कला आ जाति दुनूक प्रश्नकेँ एक संग उद्घाटित करैत अछि।

“जातिक कुर्सी”मे लिखित जातिनियम नहि रहितो कुर्सीक पूर्वनिर्धारित स्थान व्यवस्था पुनरुत्पादित करैत अछि। खिसकल कुर्सी सामाजिक चिन्ह बदलि दैत अछि। दुनू कथा अधिकार-विमर्शकेँ वस्तुक स्तरपर सजीव बनबैत अछि।

‘दिनांकक खाली खाँचा’ आ ‘सुधार-पाँजिक मूल पृष्ठ’ : कागजक काल-सत्ता

बाढ़ि अलग-अलग दिन घरक अलग भाग नष्ट करैत अछि; सहायता-प्रपत्र एकटा अधिकृत तिथि माँगैत अछि। धीरे-धीरे उक्ति “जे दिन कागजमे मानल जाए” घरक घटनागत स्मृतिमे घुसि जाइत अछि। कथा सूक्ष्म रूपसँ देखबैत अछि जे सरकारी सुविधा लेल मानकीकरण आवश्यक होइतहुँ अनुभवक इतिहासकेँ संकुचित करि सकैत अछि।

“सुधार-पाँजिक मूल पृष्ठ” प्रतिलोम सम्भावना खोलैत अछि : चूक मिटाबय नहि, चूक-सुधारक क्रम देखबाक योग्य रखब। दुनू कथा प्रमाणक सामर्थ्य आ ओकर जोखिमक परस्पर आलोचना करैत अछि।

‘नस्तीक (संचिकाक) आत्मकथा’ : वस्तु स्वयं कथावाचक

संचिका स्वयं अपन जनम आ विभागीय यात्रा कहैत अछि। मनुष्यक अधिकारपर अधिकारिक कागजक पहरा जतय भासैत अछि, ओतय बोलनिहार संचिका पाठककें प्रशासनिक विलम्बक ऐतिहासिक तंत्र भीतर लऽ जाइत अछि। भंग पड़ल साँघक मरम्मत फेर नव संचिकाक आरम्भ बनि जाइत अछि।

इएह पुनरावर्तन आख्यानक व्यंग्य अछि : समस्या वास्तविक समयमे बहैत रहती, कागज पदक्रमक सीढ़ी चढ़ैत रहत। कथा-कथनक मानवीकरण अन्तिम नैतिक प्रभाव धरि शिल्पक बुनियादी साधन बनैत अछि।

‘मिथिलाक पुस्तकालय’ : सर्वग्राही संग्रहक मोहसँ प्रमाणक विनय धरि

ईशानक सोझाँ अकल्पनीय ज्ञान-संग्रहक सम्भावना अबैत अछि, मुदा रचनाक सार असीम साहित्यिक भण्डारक जयघोष नहि। अन्तमे ओ केवल तीन संचिका, चारि ध्वनि-टिप्पणी, दूनकाशा आ एक अधूर प्रश्नकें पर्याप्त मानैत अछि।

जे स्रोत एक-दोसरसँ नहि मेल खाइत अछि तकरा एके कथामे बाध्यतापूर्वक जोड़ि देबाक बदला मतान्तर स्वतंत्र राखब—ई कथाक विशेष उपलब्धि अछि। इतिहासलेखनक कल्पना स्वयं पर आलोचनात्मक अंकुश एतय प्राप्त करैत अछि।

‘बैसाखीपर जिनगी’ : करुणाक दया-विरुद्ध पुनर्स्थापन

शीर्षक आ दृश्य शारीरिक सहाराक चर्चा करैत अछि, मुदा पाठ भविष्यक आत्मनिर्णय पर केन्द्रित होइत अछि। विवाहक विषयमे दया-पात्र बनबाक विरोध स्वयं पात्रक सम्मानक विधान अछि।

कथान्तक वाक्य याद रहि जाइत अछि, कारण ओ देहक सीमाकेँ नकारैत नहि, बल्कि जीवनक सम्भावनाकेँ ताहि सीमामे कैद होयबासँ रोकेत अछि।

‘बाढ़िमे बचल पोथी’ : बचत वस्तुसँ सामुदायिक स्मृति धरि

किशोर पात्रक सक्रिय जोखिम-बोध आ पुस्तक बचेनिहार सामूहिक सहयोगक कथा सन्देश मात्र नहि। भीजल पोथीपर रहल दाग तकर भौतिक यात्रा आ आपदाक स्मृति बनि जाइत अछि।

पुस्तकालयक ऊँच ताकमे राखल पोथी संग गामक इतिहास नव पीढ़ीक हाथ पहुँचित अछि। ई उपसंहार सम्पूर्ण चयनक अभिलेख-स्मृति बहसकेँ पठनीय आ आशामय अंत दैत अछि।

बयासी कथाक स्वतंत्र संक्षिप्त पाठविश्लेषण

निम्नलिखित पाठ-टिप्पणी सभ प्रत्येक रचनाक कथात्मक क्रिया, प्रमुख प्रतीक आ ओकर आलोचनात्मक प्रश्नकेँ अलग पहिचान दैत अछि। एके शीर्षकक दू भिन्न रचनाकेँ अलग-अलग मूल समूहसँ चिन्हल गेल अछि।

पर्वत ऊपर भमरा जे सूतल

01. सिद्ध महावीर — अनमना दीदीक धार्मिक श्रम, भातिजक सम्पत्ति-चालि आ चमत्कारक दुहरी व्याख्या विश्वासकेँ प्रश्नसँ मुक्त नहि होमय दैत अछि।

02. डोमा, बुधन आ... — बुधनक प्रवासन-श्रम आ डोमाक शिक्षा जातिगत गतिशीलताक दीर्घ सामाजिक समय रचैत अछि; संवाद मूल प्रश्नक पुनरावृत्ति करैत अछि।

03. शब्दशास्त्रम् — तालपत्र आ शब्दार्थक दार्शनिक बहस ज्ञानक पाठ, दावे आ परम्परागत व्याख्याक सत्ताकेँ नाटक बनबैत अछि।

04. महिसबार ब्राह्मणक गाम — पोखरि, धान, जातिगत टोल आ कहबैका लोकक विस्तार गामकेँ एकरेखीय समुदाय नहि, परस्पर हितक बहुल भूगोल बनबैत अछि।

05. जाति-पाति — अत्यल्प संवाद पदसमानता आ जातिगत आत्मपरिचयक असमान सार्वजनिक अधिकारकें तीक्ष्ण बनबैत अछि।

स्मृतिक दोसर दिस

06. प्रतिलिपिकार — सुधीन्द्रक खाली कोष्ठक पाठ-सम्पादनक नैतिकता आ स्वच्छ प्रतिलिपिक संभावित छलना देखबैत अछि।

07. अन्तिम पाठक — जळल पुस्तकालय पुनर्संगठनक अवसर बनैत अछि, मुदा स्मृतिसँ मूल पुस्तक पुनः बना देबाक जोखिम बचले रहैत अछि।

08. सीमाक गोली — सीमा-पत्थर आ गोलीक घटनामे साक्ष्यक अंतर स्पष्ट कऽ कथा भय, इरादा आ क्रियाक भिन्नता बचबैत अछि।

09. राजमिस्त्रीक गिरावट — निर्माणस्थलक सुरक्षा-पट्टी आ कमजोर रस्सीक विरोधाभास दुर्घटनाकें व्यक्तिगत भूलक सरल कथासँ बाहर अनैत अछि।

10. काजर — दादीक काजर लगैनाइ पीढ़ीक संवादमे सजावटसँ अधिक आत्मप्रस्तुति आ स्त्रीक स्वीकृत रूपक प्रश्न खोलैत अछि।

11. सूखल कमला — अनुपस्थित गोपीकें सम्बोधन करैत कथक नदीक पुरनका धार आ निजी स्मृतिक बीच अपन कथनक सीमा स्वीकार करैत अछि।

12. माटिक गन्ध — पहिल बरखा आ माटिक गन्ध शहर-गामक दूरीकें स्मृतिपरक देहगत अनुभवमे बदलैत अछि।

13. बहिनसभ — मृदुला-नीराक दीर्घ अन्तरालक बहिनपन अधूर रेखा द्वारा असम्पूर्ण मेलमिलापक रूप लेइत अछि।

14. घर नम्बर पाँच — घरक पुरान खिड़की आ बदलैत निवासी स्थानक अनाम स्मृति आ पीढ़ीगत स्वामित्वपर प्रश्न उठबैत अछि।

15. संगीत शिक्षक — व्यावसायिक परीक्षा आ संगीत-स्मरणक समानान्तर प्रसंग कौशल, समान अवसर आ पुरान सुरक अवशेष जोड़ैत अछि।

इजोत — जनम-जनमक कथा

16. मातृवंश — जेठ बेटीकेँ सौंपल घर स्वायत्तताकेँ बाध्य करैत अछि; चाभी आदेशक बदला लौटबाक सम्भावना बनैत अछि।

17. राग — घाटक गीत आ रिकॉर्डिंगक प्रसंगमे लोकसुरक सामूहिक स्वामित्व, अनुमति आ पुनरुत्पादनक नैतिकता उपस्थित अछि।

18. अदालत — गवाहीक प्रश्नोत्तर नदी, सीमाचिन्ह आ मानव स्मृतिक विभिन्न स्तरकेँ खुलल रखैत अछि।

19. ड्रम — आपदामे हेरायल व्यक्तिक अनिश्चित कालक्रम दैनिक घर-व्यवहारमे अधूर शोकक उपस्थिति देखबैत अछि।

20. विदेह — वंशावलीक रिक्तिकेँ हकदारीक प्रमाण नहि बनबाक आग्रह आ खाली सम्पादकीय पन्ना साझा स्मृतिलाई खोलैत अछि।

कथा-शतत्रयी खण्ड-१

21. दू अक्षर — घरक तीन छाता आ छोट पत्र मनुष्यक बीच शब्दक अनकहल दूरीक नितान्त निजी रूप अछि।

22. फोटो स्टूडियो — वृद्धा अपन आजुक चश्मा आ चेहराक निशानसँ चित्र चाहैत छथि; छायाचित्र बनैत अछि आत्मनिर्धारणक स्थिर क्षण।

23. एक जोड़ी जूता — जूता दानक वस्तु नहि, उपयोगसँ अगिला जरूरतमन्द धरि घूमयवला व्यावहारिक सहकारक चिन्ह अछि।

24. बाँटल छाँह — पड़ोसी ठेलावालाक साझी छाँह सार्वजनिक स्थानक निजी प्रतिस्पर्धा आ सामूहिक व्यवहारकेँ मिलबैत अछि।

25. दोसर दर — आरोग्य केन्द्रक दू दरवाजा प्रशासनिक भेदक अदृश्य भाषा अछि; गलत प्रवेश अधिकारक ठोस परीक्षण बनैत अछि।

26. सात मिनटक आवाज — सात मिनटक समय-सीमा भीतर ध्वनि आ घरपर दूर रहल सम्बन्धक अलग लय निहित अछि।

27. अधूर नाटक — मंचक अटकल परदा आ अधूर प्रस्तुति सम्बन्धक अनिर्णीत प्रश्नक समान्तर रचना करैत अछि।

28. एकतीसम खाट — महिला आश्रयक निर्धारित तीस खाट एकतीसम मनुष्यक जरूरत देखिते अपूर्ण संख्या सिद्ध होइत अछि।

29. ईटक निशान — ईटक छोट निशान श्रमिक टोलीक श्रमक लेखा आ गुमनामी दुनूक वाहक अछि।

30. गिनतीक बाहर — बाढ़-क्षति गिनतीक प्रपत्र एक मकान-नाममे भीतरी निवासी सभकेँ समेटि नहि सकैत अछि।

कथा-शतत्रयी खण्ड-२

31. बाँधक ओहि पार — विस्थापित गामक देवस्थानक बहस भूगोल आ सामूहिक पवित्रताक टकराव पर टिकल अछि।

32. जमीनक आवाज — छओ हाथक बाट आ पुरान पाथर जमीनक कथित निःशब्दताकेँ अधिकारक विवाद बनबैत अछि।

33. सिलाइ मशीन — पुरान सिलाइ मशीनक नव मोटर श्रमिक स्त्रीक आय आ घरक भूमिका बदलैत अछि।

34. दस किलो चाउर — दस किलो चाउरक तौल सरकारी आश्वासनकेँ तराजू पर प्रत्यक्ष सत्यापनक माँग बनबैत अछि।

35. अधूरा गीत — अधूर लोकगीत कण्ठसँ कण्ठ धरि बहैत अछि; स्वत्व एकल नामक बदला सामूहिक श्रममे फैलैत अछि।

36. माटिक बाँसुरी — कुम्हारक चाक आ बालकक अधपाक माटि कौशल अर्जनक उचित समयक प्रतीक छथि।

37. खुलल दरवाजा — खुलल फाटक बाहर जेबाक अवसर भरि नहि; स्त्रीक संकोच आ घरक स्वीकृतिक कठिन लय उपस्थित अछि।

38. मौन गवाही — न्यायालयक मौन बोलबाक अक्षमता मात्र नहि, स्वतन्त्र गरिमा आ गवाहीक सीमा सेहो अछि।

39. कुर्थीक दालि — कुर्थी, मडुआ आ चाउरक घरैती भूख बाजार आ खेतीक बदलैत संबंधमे पिरोएल अछि।

40. एक बीघाक सपना — बीस हाथक रस्सी आ एक बीघाक खेती कामगारक सीमित, व्यवहारिक स्वप्नक माप बनैत अछि।

कथा-शतत्रयी खण्ड-३

41. खाली थैला — खूँटीपर लटकल खाली थैला अभाव आ अपूर्ण रोजीरोटी-संबंधक अवशेष अछि।

42. नाव बान्हल रहल — नावक गाँठ आपदा आ सम्बन्धक बीच रहि गेल निर्णयक ठोस प्रतीक अछि।

43. पोखरिक रखबार — पोखरिक रखबारक रोजक व्यवहार सामूहिक संसाधन पर मालिकाना बनाम देखभालक प्रश्न बनबैत अछि।

44. डोमक बाँसुरी — डोम कलाकारक नाम-सहित मेहनताना सांस्कृतिक समानताकें आर्थिक लेखामे पंजीकृत करैत अछि।

45. बरगदक नीचाँ रजिस्टर — बरगदक छाँहक कात रजिस्टर सार्वजनिक वितरित लाभक आधारक परीक्षण करैत अछि।

46. जातिक कुर्सी — कुर्सीक पुरान जातिगत क्रम टूटैत अछि; कोनो उद्धोष बिना स्थानक व्यवहार बदलैत अछि।

47. किरायेदार कन्या — किरायेदार युवतीक आवास घरेलू सीमा आ शहरक असुरक्षित सम्बन्धक बीच बनैत अछि।

48. गुप्त बचत — मालती देवीक गुप्त बचत पारिवारिक आर्थिक श्रमक अदृश्यता आ स्वतन्त्र विवेक देखबैत अछि।

49. स्टेशन जे नक्शामे नहि — नक्शामे अनुपस्थित स्टेशन दृष्टिकोण आ यात्राक यादक बीच तथ्यक अपूर्णता खोलैत अछि।

50. अपरिचित अपन घर — अपन घर लौटि अपरिचित लगबाक अनुभव स्मृति, घरक वस्तु आ बदलल सम्बन्धक असहज कथा अछि।

कथा-त्रिधारा खण्ड-१

51. आवाज नहि देनिहार घंटी — न बजबाक घंटी घरक मरम्मतिक संग अपूरित पुकारक ठोस, मौन अवशेष बनि रहैत अछि।

52. उल्टा रास्ता — सीधा नापल रस्ता आ मनुक्खक अनुभवक वक्रता आधुनिक नक्शाक सीमाकें उद्घाटित करैत अछि।

53. खाली कॉपी — खाली कॉपी शिक्षकीय उत्तरक निश्चितता छोड़ि प्रश्नक अनेक सम्भावना स्वीकार करैत अछि।

54. एक शब्द गलत — गलत उच्चरित एक शब्द उपकार, उधार आ पारिवारिक स्नेहक जटिल हिसाब उघारैत अछि।

55. दीप मिझेबाक पहिने — दीप बुझबासँ पहिने आँगनक रेखाक अतिक्रमण घरक भीतरक स्वायत्त बाट बनबैत अछि।

56. रातिक नाव — बाढ़िक राति नाव जकरा पहिने लऽ जाए, ओहि चयनमे संकट-नीति परीक्षण होइत अछि।

57. नाम भूलनिहार नेता नहि, शिक्षक — नाम बिसरनिहार शिक्षकक कथा स्मृति आ नैतिक दायित्वक बीच सरस किन्तु कठिन तनाव अछि।

58. नदीक कागज — नदीक कागज नामांकन आ पुरान नक्शामे नहि देखायल बसावटकेँ सर्वेक्षणमे दृश्य करबैत अछि।

59. बालू घाट — बालू घाटमे पानीक निर्मलता आ रस्सीक गाँठ प्राकृतिक संसाधनक हिसाबक दू पैमाना छथि।

60. हस्ताक्षरक शक्ति — महिला बचत-मण्डलीक हस्ताक्षर स्वीकृतिक औपचारिकता नहि, पूरा संचिका देखबाक अधिकार बनैत अछि।

कथा-त्रिधारा खण्ड-२

61. मचानक राति — मचानपर रातिक पहरा आ खाली पाँजि जोखिमक सामूहिक समयक असमान लेखा अछि।

62. घुरैत मोहर — आधा मोहर सम्पूर्ण प्रमाणक छाया नहि बनैत; विचारक आधा वृत्त मनुष्यकेँ पूरा करब पड़ैत अछि।

63. प्रतीक्षालयक कुर्सी नम्बर शून्य — अस्पतालक शून्य-नम्बर कुर्सी प्रपत्रक बाहरक आवश्यकता जगबैत संस्थाक नव प्राथमिक-जाँचक कारण बनैत अछि।

64. दिनांकक खाली खाँचा — बाढ़-सहायताक बाध्य तारीख घटना-स्मृतिपर फेर चढ़ि सरकारी दिनांककेँ निजी सत्य जकाँ स्थापित करैत अछि।

65. सुधार-पाँजिक मूल पृष्ठ — मूल खाता काटि नहि, सुधारक इतिहास बचा राखब कानून, समय आ भूलक जिम्मेदारीक संकेत अछि।

66. तीनटा खाली कुर्सी — भोजनक तीन खाली कुर्सी अनुपस्थित व्यक्तिक प्रतिष्ठा आ कागजी नामक रिक्ति द्वारा अर्थ ग्रहण करैत अछि।

67. ओसाराक बल्ब — पहिल ओसारा-कथामे बारह वाटक बत्ती घरेलू साझा स्थानक वितरणक लघु रूपक अछि।

68. एक कप चाय कम — एक कप चाय घटबाक घरेलू पाँजि हिसाब, प्रतीक्षा आ अनकहल दैनन्दिन सम्बन्धक ओर संकेत करैत अछि।

69. बाँसक पुल — बाँसक पुल पर पड़ोसीक मौन टूटैत अछि; सहकारक क्रिया संवादक पहिल शब्द बनैत अछि।

70. उजड़ल मेड़ — उजड़ल मेड़ संघर्षक इतिहास रखैतहुँ खेतीक व्यवहारमे साझा पानि-बाटक अवसर बनैत अछि।

कथा-त्रिधारा खण्ड-३

71. विद्यालयक जूता — सरिताक जूताक संग बाबूक घरक बीया बचल रहनाइ शिक्षा आ भविष्यक दू तरहक निवेश अछि।

72. पंचायतक नल — पंचायतक नल सार्वजनिक सुविधा पर किसक समय आ पहुँचक अधिकार अछि, तकर कठोर परीक्षा अछि।

73. मजदूरी — ईट-भट्ठाक “बाकी ५०” छोट संख्या भऽ कऽ श्रमिकक अदृश्य मजदूरीक लेखामे दृश्यमान करैत अछि।

74. छोट मास्टर — बाल गुरु प्रश्नपर तैयार उत्तर देबाक बदला सहपाठीक अलग उत्तर सुनय लगैत अछि।

75. सात सीढ़ी — छापाखानाक सात सीढ़ी याद आ शरीरक गिनतीक विसंगतिक कहानी बनैत अछि।

76. नस्तीक (संचिकाक) आत्मकथा — संचिका प्रथम पुरुषमे अपन चालि कहैत विभागीय देरी आ मरम्मतिक पुनर्निवेदनक विडम्बना खोलैत अछि।

77. सीमा — प्रशासनिक सीमा निर्धारण करैत अछि, पानि बिना रुकने बहैत अछि; वर्गीकरणक शर्तक भौतिक आलोचना अछि।

78. ओसाराक बल्ब — दोसर “ओसाराक बल्ब”मे अनिमाक सिलाइ-काजक ओसारा आय आ समयक सार्वजनिक घोषणा ग्रहण करैत अछि।

79. अनन्त पञ्जी — पञ्जीक नामकरणक दाबापर नवजातक अनलिखल जीवन नैतिक सीमा रचैत अछि।

80. मिथिलाक पुस्तकालय — अद्भुत संग्रहालयक सम्भावना छोड़ि सीमित अभिलेखक मतभेदक स्वीकार इतिहास-रचनाक अनुशासन अछि।

नव पाँखि

81. बैसाखीपर जिनगी — बैसाखीपर चलैत युवकक भविष्य पर दयाक नाममे अधिकार नहि जमाओल जाइत; स्वप्नक स्वाधीनता मुखर अछि।

82. बाढ़िमे बचल पोथी — पानीसँ बचल पोथीक दाग सामुदायिक स्मृतिक भौतिक चिह्न बनि नव पीढ़ी धरि हस्तान्तरित होइत अछि।

भाषा, शिल्प आ साक्ष्य-व्यवहारक तुलनात्मक विवेचन

वाचकक रूपान्तर आ समयक बहुस्तर

पहिल स्रोतसमूहक संवादप्रधान, कथकक हस्तक्षेप करैत लोकवाचक “सिद्ध महावीर” आ “डोमा, बुधन आ...”मे दृष्टिगोचर होइत अछि। “सूखल कमला”क पत्र-जेकाँ सम्बोधन,

“अदालत”क प्रश्नोत्तर, “नस्तीक (संचिकाक) आत्मकथा”क बोलैत वस्तु, “सात सीढ़ी”क निजी स्मृतिवाचक आ “मिथिलाक पुस्तकालय”क आलोचनात्मक अन्वेषी—सभ अलग कथन-भूमिका रचैत छथि। अतः एकटा “लेखकीय आवाज” मानि सभ कथाकें एकरूप करब पाठक संग अन्याय होयत।

समय कतेको ठाम घटनाक रेखा मात्र नहि। “दिनांकक खाली खाँचा”मे सरकारी तिथि बितल अनुभव बदलैत अछि; “बहिनसभ”मे चालीस बरखक दूरी रेखाक अर्थ बदलैत अछि; “अनन्त पञ्जी”मे लिखल पुरान नाम नवजातक भविष्य पर अधिकार नहि पबैत अछि। एहि कथासभमे समय स्मृति, दस्तावेज आ वर्तमान निर्णयक त्रिकोण बनि सक्रिय रहैत अछि।

वस्तु-संवेदना आ लघु रूपकक संरचना

जूता, कुर्सी, खाट, बल्ब, चाय, तैल, पाँजि, नकाशा, नाव, बाँसुरी आ चाभी कथाजगतक आवर्ती वस्तु छथि। ई महज प्रतीक सज्जा नहि, कारण वस्तुक उपयोगक कारण घटना आगाँ बढ़ैत अछि। “जातिक कुर्सी”मे कुर्सीक स्थान बदललासँ अभौतिक जातिभेदक असर बदलैत अछि; “मजदूरी”मे पचास नहि मेटायब अर्थ-संबंधक हस्तक्षेप अछि; “बाढ़िमे बचल पोथी”मे दाग बचलासँ सांस्कृतिक स्मृति बचैत अछि।

तथापि एहि वस्तु-केन्द्रित पद्धतिक पुनरावृत्ति कतहु पाठककें पहिने सँ कथान्त अनुमान करबा दैत अछि। किछु कथामे स्वल्प संकेतक बल अति प्रखर अछि, किछुमे एक वस्तुक प्रतीकात्मक अन्तिम वाक्य थोड़े बेसी स्पष्ट कऽ देल गेल अछि। एहि अन्तरकें गुणवत्ता-मूल्यांकनक वास्तविक कसौटी मानल चाही।

संस्थागत शब्दावली आ मैथिलीक गद्य-सम्भावना

“नियम”, “आदेश”, “हस्ताक्षर”, “मूल”, “सुधार”, “साक्ष्य”, “मद”, “प्रपत्र”, “तैल” आ “क्रम” सन शब्द कथा-भाषामे एना प्रयुक्त छथि जे श्रम आ अधिकारक अनुभव एतहि प्रकट होइत अछि। एहि कारण कार्यालयी जीवन मैथिली कथाक

अपरिकल्पनीय बाहरी भूगोल नहि रहैत। भाषा व्यवहारक सत्यापनीयता आ अधिकारक संरचनाकें कथानकक भीतर अनैत अछि।

आन दिश “महिसबार ब्राह्मणक गाम”क लोकवर्णन, “अधूरा गीत”क कण्ठाधारित संस्कृति, “सूखल कमला”क संस्मरणात्मक आन्तरिक स्वर आ “डोमक बाँसुरी”क कलाकारक गीतात्मक संसार भाषा केँ सूखा दफ्तरी मुहावरा बनेबासँ बचबैत अछि। आलोचनात्मक चुनौती—दुनू भाषिक प्रवाहक अनुपात पहिचानब।

सामाजिक न्याय : उद्धोषक बदला कार्यविधि

जातिगत अवहेलना “जाति-पाति”, “डोमक बाँसुरी”, “जातिक कुर्सी” आ “डोमा, बुधन आ...”मे चारि अलग रूप लेइत अछि—बाजबाक साहस, कलाकारक भुगतान, बैसबाक स्थान, आ शिक्षा-गतिशीलता। एकर कारण समता केवल विचारधारा नहि, रोजक व्यवहारमे बदलबाक उपाय सेहो अछि।

स्त्री-पात्र “काजर”, “मातृवंश”, “गुप्त बचत”, “हस्ताक्षरक शक्ति”, “दोसर दर” आ “ओसाराक बल्ब”मे दयाक निष्क्रिय पात्र नहि। ओ पहचान, आय, अनुमति आ निर्णयक कर्ता छथि। मुदा प्रायः एहि करुण सामाजिक अन्तसभमे जीत सीमित होइत अछि : एहि सीमा-बोधसँ कथा सरलीकृत विजयगाथा बनेबासँ बचैत अछि।

मैथिली साहित्येतिहासमे तुलनात्मक स्थान

मैथिली गद्यक पुरान वर्णनशीलता आ आधुनिक सामाजिक कथा एके सीधा विकासरेखाक दू छोर नहि। लोकजीवनक विस्तृत सूचनाक परम्परा, व्यंग्यक प्रश्न-भाव, ग्रामीण श्रमक यथार्थ, नगरक अस्थिर सामाजिकता आ बीहनि कथाक अर्थ-संकोचन अलग-अलग धाराक संग आजुक लेखनमे फेर सक्रिय होइत अछि। एहि संकलनक विशिष्टता ई जे ई सभ धारा अभिलेख, प्रपत्र आ सार्वजनिक साधनक संघर्षमे एक संग अनैत अछि।

यात्रीक “बलचनमा”क ग्रामीण श्रम आ सामाजिक असमानताक धरातलसँ “मजदूरी”, “कुर्यीक दालि” आ “डोमा, बुधन आ...”क विषयगत संवाद देखल जा सकैत अछि; मुदा तिनकर कृति आ एहि संकलनक ऐतिहासिक समय, कथा-विस्तार आ वाचक-विन्यास एक नहि। समान कथा-भूमि देखिते प्रभाव-सिद्धि मानि लेब उचित नहि। एहि तुलना केँ ग्रामीण वर्गानुभवक बदलल लेखनरूप बुझल जाए।

हरिमोहन झाक व्यंग्य-परम्परासँ “सिद्ध महावीर”क विश्वास-व्यापारपर प्रश्न आ “जाति-पाति”क शब्दगत उलटफेरक आलोचनात्मक निकटता अछि; तथापि एतुक्का व्यंग्य एकल चुटीला समाधानपर प्रायः समाप्त नहि होइत, बल्कि अनिर्णीत संस्थागत परिणति छोड़ैत अछि। राजकमल चौधरी जकाँ आधुनिक कथाक मानवीय विखण्डनक प्रसंगसँ “अपरिचित अपन घर”, “एक शब्द गलत” आ “सात सीढ़ी”क तुलना विचारोत्तेजक अछि, मुदा बिना स्वतंत्र समांतर पाठक विस्तृत जाँचक शिल्पगत समानता केँ ऐतिहासिक ऋण बताएब नहि चाही।

जगदीश प्रसाद मण्डलक ग्रामीण जीवनप्रधान कृतिसूचीसँ खेतीक वस्तु, श्रम-विभाजन आ सामाजिक व्यवहारक साझा क्षेत्र चिन्हित होइत अछि। मुदा गजेन्द्र ठाकुरक चयनमे विशिष्ट नव केन्द्र अधिकारीक संचिका, रजिस्टर, पंजीकरणक मोहर आ तकनीकी प्रमाण अछि। मुन्ना जीक बीहनि कथा-परम्पराक सन्दर्भमे “जाति-पाति”क लघु प्रहार आ “नस्तीक (संचिकाक) आत्मकथा”क वस्तुवाचक प्रयोगकेँ विधागत वैविध्यक दू छोर मानल जा सकैत अछि। एतय तुलना परम्परा आ संभावनापर केन्द्रित अछि, कृतिक अनुकरण-सम्बन्ध सिद्ध करबाक प्रयत्न नहि।

विदेहक साहित्यिक पोथी-सूची आ शोध-सूची निरन्तर प्रकाशित स्रोतसभकेँ खोजबाक मार्ग दैत अछि। किन्तु कोनो सूचीमे कृतिक उपस्थिति मात्र ओकर ऐतिहासिक स्थान वा सौन्दर्य-मूल्यक अन्तिम प्रमाण नहि। ताहि कारण एहि अध्ययनक मूल्यांकनक मुख्य आधार संकलनक कथापाठ स्वयं रहल अछि, आ विदेहक सूचनासभ साहित्येतिहासक परिप्रेक्ष्य भरि प्रदान करैत अछि।

सम्पादकीय चयनक आलोचना आ मूल्यांकन

दस स्रोतसमूहक सुस्पष्ट पृथक्करण पाठक लेल लाभकारी अछि। विशेषतः “ओसाराक बल्ब”क दू भिन्न कथा अलग समूहमे रहितो शीर्षक एक होयबाक कारण मौलिक घटनाक आधारपर पहिचानल जाएबाक चाही। चयनमे कथासंख्याक बहुलता पाठककेँ सामूहिक विषय-सूत्र खोजबाक पर्याप्त अवसर दैत अछि; संगहि तीस-तीस कथा एक शृंखलाक तीन खण्डसँ लेबाक कारण ताहि शृंखलाक रीतिगत समानता तुलनात्मक कुल मूल्यांकनपर अपेक्षाकृत अधिक प्रभाव डालि सकैत अछि।

शिल्पगत रूपेँ संकलनक प्रमुख शक्ति बहुस्तरीय प्रमाण-व्यवहार, स्वल्प वस्तुसँ पैघ सामाजिक अर्थ उपजाएब, पात्रक अधिकारक सीमा बनाइब, आ कथान्तमे गैरजरूरी निर्णय सँ परहेज अछि। कमजोर पड़निहार स्थल ओतय अछि जतय प्रक्रिया-लेखनक लम्बाइ भावगत तनावक गति धीमा करैत अछि—विशेषतः विस्तृत शास्त्रीय बहस अथवा दफ्तरी जाँचक क्रमक घनत्वमे। दोसर चुनौती एकर आवर्ती नैतिक रूपक : खाली पन्ना, अधूर हस्ताक्षर, बाँचल अङ्क आ मौन अन्त कएक बेर असाधारण प्रभाव छोड़ैत अछि, मुदा बहुत संख्यामे एकहि विन्यासक समीप पड़ला पर नबीनता कनेक क्षीण भऽ सकैत अछि।

एहि आलोचनात्मक आरक्षणकेँ रचनासभक सामाजिक प्रतिबद्धता-विरोध नहि बुझबाक चाही। साहित्यिक प्रश्न ई जे कोन कथा अपन नैतिक बोधकेँ पात्रक क्रियासँ उपजा सकैत अछि आ कोन ठाम अर्थक स्पष्टीकरण कने अग्रिम होइत अछि। “प्रतिलिपिकार”, “सीमाक गोली”, “मातृवंश”, “जातिक कुर्सी”, “दिनांकक खाली खाँचा”, “अनन्त पञ्जी” आ “बैसाखीपर जिनगी” अपन शिल्पक निर्णय आ पात्रक अनुभवक कारण तुलनात्मक रूपेँ विशिष्ट ठहरैत छथि। “महिसबार ब्राह्मणक गाम” आ “शब्दशास्त्रम्”क पठनीयता दोसर प्रकृतिक अछि : वर्णनात्मक आ दार्शनिक घनत्वक कारण एकर कसौटी संक्षिप्त कथासँ भिन्न राखब आवश्यक अछि।

निष्कर्ष

गजेन्द्र ठाकुरक चयनित बयासी कथा मैथिली साहित्यक सामाजिक विस्तारकेँ केवल नव विषय देबाक प्रयत्न नहि, भाषा आ कथाशिल्पक भीतर प्रमाण, असहमति आ न्यायबोधक नव परिस्थिति अनबाक प्रयत्न अछि। जाति-व्यवस्था, स्त्रीक स्वायत्तता, भूमिक अधिकार, विद्यालयक पहुँच, बाढ़ि, श्रमिकक बकाया, अस्पतालक प्राथमिकता, लोकगीतक स्वत्व आ वंश-पाँजिक उपयोग—सभ ठाम कथा पुछैत अछि : ककर अनुभव गनल गेल, ककर नाम छूटल, ककरा बाजबाक अधिकार भेटल, आ कोन कागज मानवीय जीवनक ऊपर अनावश्यक शासन करैत अछि?

कथासभक एकटा केन्द्रीय उपलब्धि ई अछि जे अनिर्णीत प्रश्नकेँ आन्तरिक दुर्बलता नहि, आलोचनात्मक ईमानदारी बनबैत छथि। अनमना दीदीक अन्धविश्वास-त्यागसँ प्रारम्भ भेल यात्रा स्मृति आ मूलक भेद बचाबैत, श्रमिकक पचास टाका लिखाबैत, कुर्सीक स्थान बदलैत, अगिला नामक आदेश स्थगित करैत, अन्ततः बाढ़िमे बचल पोथी नव पीढ़ीक हाथ सौंपैत अछि। ई यात्रा सीधा प्रगतिक जयघोष नहि; ई रोजमर्राक निर्णयमे न्याय-सम्भावना खोजबाक साहित्यिक साधना अछि।

सन्दर्भ-सूची

मूल कृति आ स्रोत-पोथी

- गजेन्द्र ठाकुर। गजेन्द्र ठाकुरक ८२ टा चयनित कथा। चयन आ सम्पादन : आशीष अनचिन्हार। विदेह, २०२६।
- गजेन्द्र ठाकुर। पर्वत ऊपर भमरा जे सूतल।
- गजेन्द्र ठाकुर। स्मृतिक दोसर दिस।
- गजेन्द्र ठाकुर। इजोत — जनम-जनमक कथा।
- गजेन्द्र ठाकुर। कथा-शतत्रयी, खण्ड-१।
- गजेन्द्र ठाकुर। कथा-शतत्रयी, खण्ड-२।
- गजेन्द्र ठाकुर। कथा-शतत्रयी, खण्ड-३।

- गजेन्द्र ठाकुर। कथा-त्रिधारा, खण्ड-१।
- गजेन्द्र ठाकुर। कथा-त्रिधारा, खण्ड-२।
- गजेन्द्र ठाकुर। कथा-त्रिधारा, खण्ड-३।
- गजेन्द्र ठाकुर। नव पाँखि।

साहित्येतिहासक तुलनात्मक परिप्रेक्ष्य

- यात्री। बलचनमा। विदेहक पोथी-सूचीमे सूचीबद्ध।
- जगदीश प्रसाद मण्डल। गामक जिनगी; जिनगीक जीत; मौलाइल गाछक फूल। विदेहक पोथी-सूचीमे सूचीबद्ध।
- मुन्ना जी। प्रतीक (विहनि कथा संग्रह)। विदेहक पोथी-सूचीमे सूचीबद्ध।
- अशोक। ओहि रातिक भोर; डैडीगाम। विदेहक पोथी-सूचीमे सूचीबद्ध।

विदेहक स्वीकृत अभिलेखीय आ शोध-सूची

- विदेह। “विदेह पोथी” : <https://videha-ejournal.github.io/videha/pothi.htm>
- विदेह। “विदेह गद्य” : <https://videha-ejournal.github.io/videha/prose.htm>
- विदेह। “विदेह शोध-सूची” :
<https://videha-ejournal.github.io/videha/research/index.html>
- विदेह। “विदेह शोध-लेख : अंक १ सँ ४५१ धरि” : <https://videha-ejournal.github.io/videha/research/videha-scholar-research-book.html>

सन्दर्भ-सूचीमे मूल स्रोत-पोथीक प्रकाशन-वर्ष अथवा प्रकाशकक विवरण नहि गढ़ल गेल अछि। तुलनात्मक परिप्रेक्ष्यक कृति-शीर्षक विदेहक उपलब्ध सूचीसँ ग्रहण कएल गेल छथि; प्रत्यक्ष पाठान्तर जाँचक अभावमे तिनका संग निश्चित प्रभाव-सम्बन्धक दावा नहि कएल गेल अछि।

समीक्षा ४

गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय

बहुविध रचनाशीलता, ज्ञानक प्रमाण आ समानान्तर साहित्येतिहास

सार

आशीष अनचिन्हारक ‘गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय’ मैथिलीमे लेखक-केन्द्रित समीक्षा-पुस्तकक प्रचलित सीमाकेँ विस्तृत करैत एकटा बहुविध बौद्धिक परियोजनाक रूप ग्रहण करैत अछि। एकर विवेच्य क्षेत्रमे उपन्यास आ कथा जकाँ सर्जनात्मक साहित्यक संग नाटक, पद्य, समालोचना, दर्शन, इतिहास, पञ्जी-प्रबन्ध, व्याकरण, शब्दार्थ-संसाधन, बाल-साहित्य आ द्विदिश अनुवाद सम्मिलित अछि। प्रस्तुत अध्ययनक प्रमुख प्रतिपाद्य ई अछि जे ई पुस्तक केवल कृतिसूची वा प्रशंसात्मक परिचय नहि, बल्कि ‘पाठक प्रमाण’ आ ‘प्रमाणक सामाजिक दायित्व’क बीच ठाढ़ एकटा सम्पादकीय प्रयास थिक। तथापि किछु स्थाने शीर्षकाधारित अर्थ-विस्तार, एकरूप समीक्षात्मक भाषा, विशाल सामग्रीक असमान आलोचनात्मक गहनता आ साहित्येतिहासक व्यापक दाबी लेल आवश्यक तुलनात्मक पुष्टिक अभाव एकर जाँचक विषय बनैत अछि। अध्ययनमे ग्रन्थक मूल सम्पादकीय विन्यास तथा प्रतिनिधि समीक्षाखण्डक निकट पठन, मूल मुद्रित अक्षर-संरचनासँ मिलाओल चयनित उद्धरण, मैथिलीक प्राचीन, मध्यकालीन आ आधुनिक साहित्यिक प्रवृत्तिक तुलनात्मक अनुशीलन, तथा विदेहक प्रकाशित शोध-अभिलेखक सन्दर्भक उपयोग कएल गेल अछि। निष्कर्षतः ई सम्पादकीय परियोजना मैथिली साहित्यिक संस्थाक आत्मावलोकनक महत्त्वपूर्ण उदाहरण अछि; एकर स्थायी आलोचनात्मक फल आगा स्रोत-पञ्जी, विरोधी पाठ आ विशिष्ट कृतिसाक्ष्यक क्रमबद्ध परीक्षणपर निर्भर रहत।

बीजशब्द : गजेन्द्र ठाकुर; आशीष अनचिन्हार; मैथिली समालोचना; सम्पादकीय इतिहास; प्रमाण-विवेक; समानान्तर साहित्येतिहास; पञ्जी; अनुवाद; बाल-साहित्य; विदेह।

प्रस्तावना : लेखक समग्रता आ सम्पादक दृष्टिक भेद

‘समग्र’ शब्द प्रायः पाठकमे पूर्णता आ निर्णायकताक अपेक्षा जगबैत अछि। मुदा कोनो लेखकक समग्र कृतित्वकें एकहि ग्रन्थमे राखब आ ओहि कृतित्वक अर्थगत समग्रता प्रमाणित करब दू भिन्न काम थिक। पहिल काम संकलन, वर्गीकरण आ अभिलेखक; दोसर आलोचनात्मक चयन, तुलनात्मक दृष्टि आ असहमतिक। आशीष अनचिन्हारक एहि पुस्तकक विशिष्टता एहि भेदकें पूर्णतः मेटाएब नहि, बल्कि दुनूक बीच आवागमन करब अछि। एक दिश लेखकक विराट रचनाविस्तार, दोसर दिश सम्पादकक वर्गीकरण आ मूल्याङ्कन-व्यवस्था। फलतः पुस्तकसँ प्रश्न केवल ‘की-की लिखल गेल’ नहि, ‘एहि विविध लेखनकें कोन ज्ञान-दृष्टि एक-दोसरासँ जोड़ैत अछि’ सेहो बनैत अछि।

भूमिकामे सम्पादक स्पष्ट करैत छथि : ‘लोक आ शास्त्र, स्मृति आ अभिलेख, मातृभाषा आ बहुभाषी संवाद निरन्तर एक-दोसराकें परखैत अछि।’ ई कथन एहि समग्रक मुख्य आलोचनात्मक बीज थिक। लोक आ शास्त्रक सम्बन्धकें एक दिशासँ ‘उच्च’ ज्ञानक प्रसार मानबाक बदला परस्पर परीक्षण मानल गेल अछि। स्मृति आ अभिलेखक सम्बन्ध सेहो एतय सरल मेल नहि : स्मृति संवेदना, विस्मरण आ समाजक मौन लऽ अबैत अछि; अभिलेख तारीख, नाँव, अनुक्रम आ दावीक परख करबाक साधन दैत अछि। एहि दुनू बीचक विरोध साहित्य, इतिहास आ दर्शन सभमे पुनरावृत्त होइत अछि।

एहि आधारपर कृतिक श्रेष्ठ सम्भावना एकटा ‘समानान्तर पाठकीय संस्था’क कल्पनामे अछि। लेखक कृति लिखैत छथि; सम्पादक कृतिसभकें विधा, प्रश्न आ प्रमाणक क्रममे रखैत छथि; पत्रिका ओहि क्रमकें सार्वजनिक बनबैत अछि; पाठक फेर ओकरा चुनौती दैत छथि। एहि क्रममे सम्पादकीय काम साहित्येतिहास-निर्माणक प्राथमिक कार्य भऽ उठैत अछि। तथापि निर्माण आ प्रामाणिक इतिहास-विधान एके नहि। सम्मिलित सामग्री कतेक व्यापक अछि, आलोचनात्मक निष्कर्ष कतेक स्वतंत्र अछि आ संकलनक बाहर छूटल स्वर कोन अछि—ई तीनू प्रश्न निरन्तर खुलल रहबाक चाही।

ग्रन्थक विन्यास आ अध्ययनक कसौटी

पुस्तकक आरम्भिक भागमे विधानुसार स्वतंत्र सम्पादकीय टिप्पणीक विस्तार अछि; तकर उपरान्त खण्डवार विषय-सूची, विस्तृत अनुक्रम, विशिष्ट कृतिसमीक्षा आ शोध-आधारक विशाल संचय प्रस्तुत अछि। प्रकट विन्यासमे उपन्यास, कथा-संग्रह, नाटक, पद्य, समालोचना, दर्शन, इतिहास, पञ्जी, व्याकरण, थिसॉरस, स्वयं सीखू सामग्री आ अनुवाद अलग-अलग परिच्छेदित अछि; मुदा ई विभाजन केवल पुस्तकालयी सुविधा नहि। ई पाठककें सिखबैत अछि जे एक लेखकक समाज-दृष्टि कतेक माध्यमसँ व्यक्त होइत अछि।

सम्पादकीय पद्धतिक परीक्षण लेल चारि कसौटी उपयोगी अछि : चयनित पाठक विशिष्टता; आलोचनात्मक निर्णयक तर्क; अन्य कृतिसँ तुलनाक प्रमाण; आ लेखकीय एवं सम्पादकीय स्वरक पार्थक्य। एहि कसौटी पर पुस्तकक किछु भाग अत्यन्त फलदायी देखाइत अछि—विशेषतः आर्थिक अपराधक उपन्यासक सीमापर स्पष्ट टिप्पणी, कथा-खण्डमे पुनरावृत्ति चिन्हबाक प्रयास, पञ्जी-प्रबन्धक अभिलेखीय सावधानी, आ शीर्षकक आधारपर मनगढ़न्त कथानक नहि रचबाक निर्देश। किछु आन भागमे सामान्य प्रशंसा, विधा-वर्णन आ सम्भाव्य प्रतीकार्थ बेसी प्रबल अछि। एहन असमानता विशाल समग्रक स्वाभाविक समस्या भऽ सकैत अछि, मुदा ओकरा आलोचनात्मक समस्या मानब जरूरी अछि।

एहि शोधक विशिष्ट पाठाधार सम्पादकीय पुस्तक स्वयं अछि। गजेन्द्र ठाकुरक मूल रचनाक उल्लेख आशीष अनचिन्हारक विवेचनक माध्यमसँ पढ़ल जा रहल अछि; जाहि कृतिक मूल स्वतंत्र संस्करणक पूर्ण पाठ एहि परीक्षणमे आमने-सामने नहि राखल गेल, ओहिमे सम्पादकीय मतकें मूल कृतिक प्रमाणित तथ्य घोषित नहि कएल गेल अछि। उद्धरण सेहो सम्पादकीय पोथीक रूपमे परिचित कराओल गेल अछि, मूल उपन्यास वा कथाक स्वतन्त्र प्रमाण रूपमे नहि। एहि विभेदसँ पुस्तकक आलोचना आ लेखकक सम्पूर्ण रचनासंसारक अन्तिम निर्णय बीचक आवश्यक दूरी बनल रहैत अछि।

पृथक पाठविश्लेषण : सम्पादकीय भाषाक निर्णायक पाठस्थल

भूमिकाक ‘लोक आ शास्त्र, स्मृति आ अभिलेख, मातृभाषा आ बहुभाषी संवाद निरन्तर एक-दोसराकेँ परखैत अछि’क भाषिक गठन देखल जाए। एहिमे तीन जोड़ी संज्ञा एके वाक्यविन्यासमे आबैत अछि। ‘लोक’क बाद ‘शास्त्र’, ‘स्मृति’क बाद ‘अभिलेख’ आ ‘मातृभाषा’क बाद ‘बहुभाषी संवाद’—ई क्रम बाहरसँ भीतर अथवा नीचाँसँ ऊपरक एकरेखीय गति नहि, द्वन्द्ववात्मक समकक्षताक छाप बनबैत अछि। अन्तिम क्रिया ‘परखैत अछि’ एही समकक्षताकेँ सक्रिय बनबैत अछि। सम्पादकीयक आरम्भमे एहन संक्षिप्त सूत्र राखब केवल अलंकार नहि; ई पूरा पुस्तकक तर्करचनाक पूर्वसंकेत अछि। तथापि सिद्धान्तक वाक्य जतेक सशक्त अछि, ओकर प्रत्येक खण्डमे समान रूपेँ निर्वाह कएल गेल अछि कि नहि, ई जाँच अलग सँ करब पड़ैत अछि।

‘समालोचना साहित्यक आत्मबोध अछि’ अत्यन्त संक्षिप्त स्थापना अछि। ‘आत्मबोध’ शब्द आत्मस्वीकृति आ आत्मविवेचन दुनूकेँ समाहित करैत अछि। आलोचना जँ केवल सर्जकक महत्त्वक घोषणा हो, तँ ओ आत्मबोधक आधा काम मात्र करैत अछि; यदि ओ अपन संस्थाक चयनक मापदण्डकेँ सेहो खोलैत अछि, तखन एकर अर्थ पूर्णतर होइत अछि। एहि सूत्रक तुरन्त बाद ‘आधुनिक अकादमिक आलोचना केवल मूल्य-निर्णय नहि, पठनक विधि बनबैत अछि’क विधान एहि परिवर्तनकेँ पुष्ट करैत अछि। ‘केवल’ शब्द निषेध नहि, विस्तारक सूचक अछि : मूल्याङ्कन छोड़ल नहि गेल, ओकर पाछाँक पद्धति सार्वजनिक करबाक आग्रह कएल गेल अछि।

पञ्जी-विवेचनक ‘दस्तावेज जे कहैत अछि, ओतबे महत्त्वपूर्ण अछि जे ओ की नहि कहैत’ वाक्यमे समानान्तर संरचना रहितहुँ गहिर असमानता अछि। पहिल अंश उपलब्ध अभिलेखक; दोसर अनुपस्थित तथाकथित तथ्यक। ‘ओतबे’ शब्द दुनूक ऐतिहासिक महत्त्व बराबर करैत अछि, मुदा प्रमाणक दर्जा बराबर नहि करैत। एही सूक्ष्म भेद पर सम्पूर्ण पञ्जी-अध्ययनक विश्वसनीयता निर्भर अछि। रिक्तता निष्कर्षक स्थानापन्न नहि; ओ अनुसंधानक अगिला प्रश्नक आरम्भ अछि।

गद्यक सामाजिक रूपक सम्बन्धी समीक्षामे ‘कथाक वास्तविक घटनाक सम्बन्ध नहि भेटला धरि शीर्षकसँ कथानक आविष्कार नहि कएल जा सकैत’ एकटा स्पष्ट निषेधात्मक नियम अछि। ई नियम एतय विशेष मूल्यवान अछि, कारण समग्रक प्रारम्भिक भागमे शीर्षकक बिम्बसँ बहुधा विस्तृत अर्थ-सम्भावना खोलल गेल अछि। एहि वाक्यक आलोकमे प्रारम्भिक बिम्ब-पठनकें अन्तिम निष्कर्ष नहि, अस्थायी पाठकीय प्रस्ताव मानब अधिक न्यायसंगत अछि। ग्रन्थक भीतर विद्यमान ई आत्मनियामक चेतना ओकर आलोचना करबाक साधन ग्रन्थ स्वयं उपलब्ध करबैत अछि।

अनुवाद-विवेचनमे ‘विश्व-साहित्यक दृष्टिसँ एहन अनुवाद मैथिलीकें ग्रहणशील भाषा नहि, प्रदाता भाषा बनबैत अछि’क विरोधात्मक वाक्य महत्त्वपूर्ण अछि। ‘नहि’क पछाति ‘प्रदाता’ राखि मातृभाषाक एकतरफा निर्भरता उलटबाक प्रयास अछि। एकर अन्तर्निहित राजनीतिक अर्थ भाषिक हीनताबोधक अस्वीकार अछि। तथापि वाक्यक उपयुक्त साहित्यिक परीक्षण लेल वास्तविक अनूदित पाठक तुलनात्मक उदाहरण, लक्ष्यपाठक उपलब्धता आ अभिव्यक्तिक रूपान्तरक निरीक्षण जरूरी अछि। वाक्य लक्ष्य निर्दिष्ट करैत अछि, स्वयं ओकर पूर्ण सिद्धि नहि।

एहि पाँच पाठस्थलसँ देखाइत अछि जे पुस्तकक सबसँ सशक्त सम्पादकीय भाषा घोषणाक संग प्रमाणक सीमा सेहो चिन्हैत अछि। तर्करचनाक निरन्तरता तखने सिद्ध होएत जखन सर्वत्र आन्तरिक स्वीकृति आ विशिष्ट साहित्यिक उदाहरण मिलिकय निर्णय तैयार करय। एहि कारण भाषिक निकट पठन, साहित्येतिहास आ सामाजिक आलोचना परस्पर पूरक साधन बनैत अछि, एक-दोसरक विकल्प नहि।

ज्ञानक कथा : उपन्यासक विस्तारित प्रतिमान

सम्पादकीय उपन्याससभ लेल ‘ज्ञानक कथा’क सूत्र प्रस्तावित करैत अछि। एहि सूत्रक अर्थ ई नहि जे कथाक स्थानपर दार्शनिक उपदेश आबि गेल अछि। अधिक सार्थक अर्थमे घटना-क्रम स्वयं एहन बनैत अछि जाहिमे पात्रकें ठोस सामग्री सँ प्रमाण जुटएबाक

पड़ैत अछि, स्मृतिक विश्वसनीयता परखबाक पड़ैत अछि, संस्थागत शक्ति सँ बहस करबाक पड़ैत अछि आ सत्यक अपूर्णतासँ जीबय पड़ैत अछि। उपन्यासक औपन्यासिकता एतय ज्ञानक सहज निष्कर्षमे नहि, ज्ञान-संघर्षक नाटकीय प्रक्रियामे अछि।

‘सहस्रबाढ़नि’क सम्पादकीय पठन जल, परिवार, स्मृति आ प्रशासनक परस्पर अवलम्बन पर टिकल अछि। बाढ़ि केवल मौसम वा विपदा नहि, पीढ़ीक अनुभवक विन्यास बनैत अछि। नदीक आवर्तन, बिसरल स्थानक स्मरण, पलायन आ सार्वजनिक संस्थाक असमर्थता—ई सभकेँ एकहि कथात्मक प्रश्नमे पढ़बाक प्रयास उपयोगी अछि। तुलनात्मक रूपेँ ‘सहस्रशीर्षा’क केन्द्र एकसँ अनेक स्वर दिस ससरैत अछि। ओतय सामाजिक अनुभवक बहुध्वनि, जाति आ पेशाक स्मृति, लोकगीत आ स्थानीय राजनीतिक जीवनक मिश्रण प्रमुख बनैत अछि। पहिल उपन्यासक आलोचनात्मक धुरी विपत्तिक अनुभवजन्य क्रम बुझाईत अछि; दोसरक धुरी असहमत आवाजक सह-अस्तित्व। दुनूकेँ केवल ‘मिथिलाक स्मृति’ कहि देब तऽ कृतिभेद अस्पष्ट भऽ जाएत।

‘पाँच प्रतिशत अन्हार’मे वित्तीय लेन-देन आ आर्थिक अपराधक अन्तरराष्ट्रीय संरचना मिथिलाक स्थानीय सामाजिक शरीर सँ जोड़ल गेल अछि। सम्पादकीय रानीक दोकान, अमरेशक कर्ज, अनजान भुगतान, जुआ आ संस्थागत जाँचक मार्गदर्शक प्रसंग दैत अछि। विशेष उल्लेखनीय ई जे सम्पादक मात्र उपलब्धि नहि गनैत छथि; अनेक पात्रक लगभग समान अनुशासित स्वर, विस्तृत अध्याय-विन्यासक कारण नाटकीय गतिमे शिथिलता आ विधिक-प्रशासनिक शब्दावलीक आधिक्यकेँ सीमा रूपमे चिन्हैत छथि। आलोचनाक विश्वसनीयता एहन प्रतिकूल मूल्याङ्कनसँ बढ़ैत अछि।

‘नव्य न्याय आ अपतटीय जुआ-जाल’ आ ‘अनुवादक’ संग तुलना करिते एकटा आन्तरिक त्रिकोण खुलैत अछि : धनक प्रवाह, प्रमाणक साधन आ भाषिक मध्यस्थता। पहिलमे अपराधक आर्थिक संसर्ग; दोसरमे न्यायशास्त्रीय प्रमाण-विवेक; तेसरमे भाषाक व्यावसायिक आ नैतिक जिम्मेदारी। मुदा तीनूकेँ एकटा विचारक उदाहरण मात्र बनाओल जाए तऽ पात्रक निजी भय, निजी इच्छा आ वातावरणक दृश्यात्मक बल दबि सकैत अछि।

सफल समीक्षामे तर्कक प्रविधि आ कथाक सौन्दर्यगत स्वातन्त्र्य दुनूकें बराबर ठाम देब जरूरी अछि।

जल, पाँजि, साक्षी आ नाँव : प्रतीकसँ कथात्मक प्रमाण धरि

‘जल-पाँजि’मे ‘जल’ आ ‘पाँजि’क विरोध स्वयं शीर्षकमे अछि—एक चलायमान, दोसर स्थिरीकरणक संस्था। ई विरोध मिथिलाक भूगोल आ सामाजिक अभिलेखक बीच प्रश्न खोलैत अछि : जे बहि गेल, ओकर नाम ककरा लग सुरक्षित रहत? स्मृतिक रक्षक परिवार, गाम, नदी, दस्तावेज वा कथा—ककरा सत्यक प्राथमिक अधिकार भेटत? सम्पादकीय एहि रूपकक सार्थक व्याख्या करैत अछि। मुदा विशिष्ट दृश्य, चरित्रक निर्णय आ घटना-क्रमक प्रमाण दऽ सकलासँ एहि व्याख्याक साहित्यिक शक्ति सचमुच पुष्ट होएत।

‘बिज्जी : गोहि सभक बीच’क व्याख्यामे छोट जीव आ भयंकर पर्यावरणक विपरीतता शक्तिसम्बन्धक प्रतीक बनैत अछि। ‘सातम साक्षी’क पाठमे बाहरी गवाही आ अन्तःकरणक बीच तनाव उभरैत अछि। ‘पातक भीतर लिखल नाँव’ शीर्षक पहचान, क्षणभंगुरता आ लेखनक नाजुकता सुझाबैत अछि। एहि सभ विश्लेषणक उपयुक्तता अस्वीकार करबाक कारण नहि, मुदा शीर्षकक अर्थसम्भावना आ पाठक कथात्मक सत्यक बीच भेद जरूरी अछि। सम्पादकीयक विस्तारित खण्डमे एतय महत्वपूर्ण आत्मनियमन भेटैत अछि : ‘कथाक वास्तविक घटनाक सम्बन्ध नहि भेटला धरि शीर्षकसँ कथानक आविष्कार नहि कएल जा सकैत।’ ई वाक्य एहि सम्पूर्ण परियोजनाक पद्धतिगत धरोहर मानल जाएबाक चाही।

‘गोहि सभक बीच जलसमाधि’क मूल, किशोर आ बाल रूपान्तरणक समवेत चर्चा दोसर प्रश्न खोलैत अछि : अलग-अलग पाठकवर्ग लेल रचनाक अर्थ बदललाक बाद मूल भाव, संरचना आ नैतिक टकराव कतेक बचैत अछि? बाल संस्करणकें संक्षेपक निम्नतर रूप मानब साहित्यिक भूल होएत। रूपान्तरणमे दृश्य, कथाक जोखिम, भाषा-सरलता आ सामाजिक जटिलताक पुनर्वितरण होइत अछि। तीनू संस्करणक तुलना लेल समान

પ્રસંગક કથાવાચક-સ્વર, સંવાદ, વર્ણન આ નિષ્કર્ષક પૃથક મિલાન ચાહી. સમ્પાદકીય એહિ દિશામે પ્રવેશ કરબૈત અછિ; એકર અનુપ્રયુક્ત પદ્ધતિમે એહન મિલાનક અધિક સુસ્પષ્ટ ઉદાહરણ એકર તર્કકે આર બલ દડ સકૈત અછિ।

કથાક વિસ્તાર : સંગ્રહ, અનુક્રમ આ સૂક્ષ્મ નૈતિકતા

‘પર્વત ઊપર ભમરા જે સૂતલ’, ‘સ્મૃતિક દોસર દિસ’ આ ‘ઇજોત જનમ-જનમક કથા’ક સમ્પાદકીય પરિચયમે શીર્ષકક કાવ્યાત્મક, સ્મૃતિપરક આ આલોક-સમ્બદ્ધ અર્થ ઉભરૈત અછિ। ‘પર્વત’ક સ્થાયિત્વ આ ‘ભમરા’ક ગતિશીલતા, સ્મૃતિક ‘દોસર દિસ’ આ અનેક જનમ ધરિ પસરૈત ‘ઇજોત’—ઈ સભ સંગ્રહ-પઠનક પ્રવેશ-દ્વાર બનૈત અછિ। મુદા કથાસંગ્રહક સમગ્ર પ્રભાવ પ્રાયઃ એકલ કથાક સમાપ્તિ, મૌન આ ક્રમ-વિન્યાસસં બનૈત અછિ। તેં શીર્ષકાધારિત વ્યંજના અગિલા પાઠીય પરીક્ષણક પ્રસ્તાવના હો, ઓકર વિકલ્પ નહિ।

‘કથા-શતત્રયી’ આ ‘કથા-ત્રિધારા’ક રચનાયોજનાક વિશાલતા સંખ્યા-પ્રધાન પ્રશંસા લેલ નિમન્ત્રણ દૈત અછિ। તથાપિ આલોચનાક સહી પ્રશ્ન ઈ જે બહુસંખ્ય કથામે કોન શિલ્પ અનવરત લૌટૈત અછિ, કોન પાત્રરૂપ આપસમે બદલૈત અછિ, કોન મુદ્દા નવનિર્મિત પ્રશ્ન બનૈત અછિ આ કોન કથા અપેક્ષાકૃત કમજોર રહિ જાડૈત અછિ। વિષય-સૂચીક વ્યાપકતા સાહિત્યિક ઉપલબ્ધિક પ્રારમ્ભિક સંકેત માત્ર હોડૈત અછિ; અન્તિમ કસૌટી ભાષા, સંરચના, અનિવાર્યતા આ પાઠકીય પ્રભાવ અછિ।

વિશિષ્ટ કથા-પુનર્પાઠમે ઘરેલૂ વસ્તુકેં સામાજિક દસ્તાવેજ બનએબાક પ્રવૃત્તિ વિશેષ ધ્યાનાકર્ષક અછિ। જૂતા, કાપી, ફોટો, મિઠાઈક ડિબ્બા, ચમ્પલ, રસીદ વા છોટી ગલતી સન સામગ્રી સામાજિક ગરિમા, શ્રમ, લજ્જા, દેખભાલ આ અધિકારક પ્રશ્ન ઉઠબૈત અછિ। વિશાલ કથાયોજનાક સમ્બન્ધ કેવલ મહાકાવ્યાત્મક ફૈલાવસં નહિ, દૈનિક જીવનક અદૃશ્ય ઇતિહાસસં સેહો અછિ। દૂ-ત્રીન નિર્ણાયક વસ્તુ, ઓકર પ્રસંગ આ ચરિત્રક બદલૈત દૃષ્ટિક જાંચ કએલાસં લઘુકથાક સામાજિક ગહનતા ખુલૈત અછિ।

एहि कथाक क्षेत्रक एक आलोच्य सीमा सेहो अछि : जँ कथा-संरचना बेर-बेर गलत बुझाइ, छोट खोज, प्रमाण-प्राप्ति, कागजी सुधार आ अन्तिम उलटबाँसीपर निर्भर रहैत अछि, तऽ पुनरावृत्ति एकटा परिचित नैतिक सूत्र बनि सकैत अछि। पाठक क्रमशः अन्तिम समाधान अनुमानि लैत अछि। एकर विरोधमे सामाजिक द्वन्द्वक असमाधेयता, अस्पष्ट आन्तरिक इच्छा, विषम भाषिक स्वर आ अनिर्णीत समाप्तिकेँ स्थान देब कथा-विधाक गहराइ बढ़ा सकैत अछि। सम्पादकीय किछु प्रतिनिधि कथाक परीक्षणमे एहि खतरा दिस संकेत करैत अछि; एहि संकेतक व्यापक अनुप्रयोग एकर गंभीर उपलब्धि भऽ सकैत अछि।

किशोर आ बाल-साहित्य : पाठकक स्वतन्त्र कर्तृत्व

‘नव पाँखि’ आ सैंतीस बाल-उपन्यासक चर्चा मैथिली साहित्येतिहासक एक जरूरी अभाव भरबाक दिशा खोलैत अछि : बालककेँ मातृभाषाक ज्ञान-निर्माता आ निर्णयकर्ता रूपमे देखब। बाल-साहित्यकेँ केवल संस्कारक पाठ अथवा मनोरञ्जनक हलुक परिशिष्ट मानबाक परम्परा एहि दृष्टि सँ चुनौती पबैत अछि। बालक केहन प्रश्न पुछैत अछि, कथामे ओकर जोखिम कोन अछि, वयस्क सत्ता ओकर निर्णयकेँ कतेक जगह दैत अछि आ लोकगाथाक नायक-नायिका कोना नव पीढ़ी धरि पहुँचैत छथि—ई सभ साहित्यिक प्रश्न छथि।

विदेहमे प्रकाशित ‘मैथिली बाल-उपन्यासक समीक्षाशास्त्र’ सैंतीस कृतिक समेकित परीक्षणमे भारतीय रस, औचित्य आ ध्वनिक संग बाल-कथाक रूप-विज्ञान, बाल-मनक भय आ बालकक कर्तृत्वक सम्बन्ध उठबैत अछि। एहि सन्दर्भसँ सम्पादकीय पुस्तकक संक्षिप्त बाल-साहित्य सम्बन्धी प्रस्तुति विस्तारित होइत अछि। लोकनायकक जातीय पृष्ठभूमि आ इतिहासमे उपेक्षित समुदायसँ जुड़ल आख्यानक पुनरागमन बाल-साहित्यकेँ सामाजिक प्रतिनिधित्वक प्रश्नसँ जोड़ैत अछि। तथापि बाल-पाठकक वास्तविक प्रतिसाद, शब्दार्थ-सुगमता, चित्र आ कथ्यक सामञ्जस्य तथा भिन्न आयु-वर्गक समझक पृथक परीक्षणक आवश्यकता रहैत अछि।

बाल-साहित्यक आलोचनामे ‘उपदेश देब’ आ ‘विवेक अवसर खोलब’ दूटा अलग क्रिया छथि। श्रेष्ठ कथा बालककेँ घोषित उत्तर नहि थमबैत; ओ ओकरा पात्रक काजक परिणाम देखबाक, भयकेँ भाषा देबाक आ अलग विकल्प चिन्हबाक स्वतंत्रता दैत अछि। एहि दृष्टिसँ मैथिली बाल-उपन्यासक वर्तमान विस्तार एकटा महत्त्वपूर्ण सम्भावना अछि, मुदा महत्त्वक अन्तिम निर्णय संख्या नहि, बालक-पाठकक साहित्यिक अनुभव तय करत।

नाट्य-संरचना आ गजलक आत्मस्वर : पाठ, उच्चारण आ प्रस्तुति

‘रंग-संगम’क सन्दर्भमे नाटककेँ केवल संवाद-प्रधान गद्य मानल जाए तऽ ओकर रंगकर्म नष्ट भऽ जाएत। नाटकक अर्थ मंचीय समय, प्रवेश-निर्गमन, विराम, दृश्य बदलबाक व्यावहारिकता, अभिनेता द्वारा उच्चारणीय भाषा आ दर्शकक सामूहिक अनुभवमे सँचित होइत अछि। सम्पादकीय नाटकक विषयसँ मंचीय सम्भावना दिस ध्यान खींचैत अछि; ई ओकर उचित मार्ग अछि। एहि संग अलग-अलग नाटकमे संघर्षक गठन, स्त्री-पुरुषक स्वायत्त स्वर, हास्यक सामाजिक लक्ष्य आ लोकनाट्यसँ आधुनिक मंचक सम्बन्धक निकट परीक्षण सेहो अपेक्षित अछि।

मैथिली नाट्यक साहित्येतिहासमे ज्योतिरीश्वरक ‘धूर्तसमागम’, मिथिलाक नाट्यपरम्परा आ आधुनिक रंगमंचक बीच सीधा, अविच्छिन्न वंशक्रम मानि लेब जोखिमपूर्ण होएत। भिन्न कालक पाठ, प्रस्तुति-प्रथा, श्रोता आ संस्था बदलैत गेल। तथापि हास्य, व्यंग्य, बहुभाषिक उच्चारण, सामाजिक छल आ मंचीय उपस्थिति सन प्रश्न तुलना लेल फलदायी छथि। ‘रंग-संगम’क प्रासंगिकता एहि ऐतिहासिक धुरीपर तखने स्पष्ट होएत जखन अलग नाटकक दृश्य-संरचना आ ऐतिहासिक सामग्रीक सम्बन्ध प्रमाणसहित देखाओल जाए।

‘दीवान-ए-विदेह’, ‘अकुलाइत सुर’ आ ‘स्वप्नमे मिज्झर होइत’क समालोचना मे एकहि प्रकारक भाव-प्रशंसा पर्याप्त नहि। गजलमे बहर, रदीफ, काफिया, स्वरक आवर्तन, शेरक स्वातन्त्र्य आ समग्र भावधारा; गीतमे उच्चारणीय लय; मुक्तछन्दमे पाँतिक साँस,

विराम आ बिम्बक सम्बन्ध—अलग कसौटी माँगैत अछि। गजलक सामाजिक विषय तीक्ष्ण होअय, मुदा छन्दक बाध्यता टूटल रहय, तँ विषयगत महत्त्व आ शिल्पगत सिद्धि अलग-अलग दर्ज करब समीक्षकक कर्तव्य थिक। एही प्रकार पद्यक रूपात्मक नवाचारकें केवल भावुकता अथवा विचारक प्रवक्ताक रूपमे सीमित नहि करबाक चाही।

पद्य आ नाटकसँ जुड़ल विस्तृत समीक्षामे अनुवादित तथा मूल रचनाक पार्थक्यक प्रश्न सेहो महत्त्वपूर्ण अछि। एक भाषाक कथ्य दोसर भाषामे समान रहितहुँ उच्चारण, हास्य, औचित्य आ सार्वजनिक अर्थ बदलि सकैत अछि। सम्पादकीय समग्रक विधागत फैलाव एहि तुलनाक संभावना खोलैत अछि; आलोचनाक परिपक्व रूपमे शब्द-संरचना आ प्रस्तुति-परिस्थितिक ठोस अन्तरकें प्रमाण बनाओल जाएबाक चाही।

समालोचनाशास्त्र : आत्मबोधक दाबी आ आत्मपरीक्षणक जिम्मेदारी

सम्पादकीयक एकटा सूत्र अछि : ‘समालोचना साहित्यक आत्मबोध अछि।’ एकर लगहि दोसर वाक्य भेटैत अछि : ‘आधुनिक अकादमिक आलोचना केवल मूल्य-निर्णय नहि, पठनक विधि बनबैत अछि।’ दुनू वाक्य मिलिकय एहि पुस्तकक आलोचनात्मक सिद्धान्त स्पष्ट करैत अछि। समालोचना जँ आत्मबोध अछि, तँ लेखकक मनसा, सम्पादकक आग्रह आ साहित्यिक संस्थाक अधिकार सेहो प्रश्नक दायरा भीतर अएबाक चाही। पठनक विधि जँ मुख्य अछि, तँ ओहि विधिक निष्फलता वा अपवादक उदाहरण सेहो प्रस्तुत होएबाक चाही।

प्रबन्ध-निबन्ध, लेखक-विशेष अध्ययन, विदेहक दीर्घ यात्रा, पत्रिका-सूचकांक आ ‘नित नवल’ श्रृंखला सभ एकटा सार्वजनिक आलोचनात्मक संस्कृतिक अङ्ग बनैत अछि। कृति-विशेषक मूल्यांकनक संग पाठक-समुदाय, प्रकाशनक क्रम, पत्रिकाक संवाद आ साहित्यक अभिलेख संचित होइत अछि। ई स्थिति मैथिलीक एक गहन प्रश्न उठबैत अछि : स्वतन्त्र साहित्यिक संस्था कियैक आवश्यक? कारण केवल पुस्तक छापब नहि; अलग-अलग

पठन, प्रतिवाद आ स्मृतिक स्थान उपलब्ध कराएब सेहो साहित्यिक स्वराजक अवयव थिक।

मुदा एहि संस्थागत सफलताक संगे समीक्षकक स्वतन्त्रता अनिवार्य अछि। एकहि साहित्यिक वृत्तमे लेखक, प्रकाशक, सम्पादक, समीक्षक आ अभिलेख-निर्माता परस्पर सम्बद्ध भेला पर समीक्षा अनजाने प्रशंसात्मक प्रतिध्वनि बनि सकैत अछि। ई आरोप नहि, संस्थागत संरचनासँ उठनिहार पद्धतिगत सावधानी थिक। एहि लेल रचनासंग्रहक अन्तर्गत स्वीकृत सीमासभ, मतभेद, ऐतिहासिक विवाद आ वैकल्पिक पाठक उल्लेख आलोचनाक विश्वसनीयता बढ़बैत अछि।

‘नित नवल’ नामक शृंखलाकेँ विशेषतः एक नओका मूल्यांकन-परिपाटी रूपमे पढ़ल जा सकैत अछि, जतय लेखक-विशेषक रचना, प्रसंग आ नव पठन नित परिवर्तनशील रूपमे विचारक विषय बनैत अछि। ई नाम निरन्तर नवीनताक आग्रह करैत अछि; आलोचनात्मक रूपमे प्रश्न उठैत अछि जे नवीनता कृतिक चयनमे अछि, पाठकीय विधिमे अछि अथवा साहित्येतिहासक उपेक्षित वस्तुकेँ सामने अनबामे? एहि तीनूकेँ अलग पहचानलासँ शृंखलाक उपलब्धि स्पष्ट होएत।

प्रमाण-विवेक, नव्य-न्याय आ कथाक नैतिकता

समग्रमे प्रमाण बारम्बार लौटैत अछि : अपराधक गवाही, पाँजिक नाम, इतिहासक स्रोत, अनुवादक सही अर्थ, व्याकरणक रूप, न्यायालयक दस्तावेज। एहि पुनरागमनकेँ लेखकक चिन्ताक एकटा वैचारिक केन्द्र मानल जा सकैत अछि। नव्य-न्यायक विश्लेषणपरम्परा एहि केन्द्रकेँ बौद्धिक पृष्ठभूमि दैत अछि। तथापि आधुनिक विधिक साक्ष्य, ऐतिहासिक दस्तावेज आ साहित्यिक प्रतीकक ‘प्रमाण’ एके प्रकार नहि होइत अछि। साहित्यक कथावाचक विश्वसनीय वा अविश्वसनीय भऽ सकैत अछि; इतिहासकारक साक्ष्य सत्यापनयोग्य होएबाक चाही; न्यायालयक निष्कर्ष प्रक्रिया-सापेक्ष होइत अछि।

समीक्षाक सबसँ महत्त्वपूर्ण अनुशासन अछि—दृष्टान्त, अनुमान, शंका आ निर्णयक सीमाक भेद। ‘पाँच प्रतिशत अन्हार’क विवेचनमे रानीक हस्ताक्षरकेँ स्वतन्त्र इच्छाक अचूक प्रमाण नहि मानब, तृषा द्वारा स्रोतक गोपनीयता सुरक्षित रखब आ संयोगपूर्ण संकेतसँ अपराधीक पहिचान निहित नहि करब : ई सभ कथनक नैतिक संयमक उदाहरण रूपेँ प्रस्तुत अछि। उपन्यासमे ई प्रक्रियागत सजगता सौन्दर्यगत उपकरण सेहो बनैत अछि, कारण तात्कालिक समाधानक स्थानपर अनिश्चितताक तनाव रचैत अछि।

एहि प्रवृत्तिक सीमा सेहो विचारणीय अछि। प्रमाणक सावधानी पात्रक भाषामे अत्यधिक समरूपता आनि दैत अछि तँ कथा विचारक दृष्टान्तक संग्रह बनि सकैत अछि। चरित्रक जीवित विरोध, अनैतिक आकांक्षा, असंगत प्रतिक्रिया आ अप्रत्याशित भाव—ई सभ सेहो साहित्यक सत्यक अङ्ग छथि। प्रमाणकेँ कथाक भीतर राखब आ कथा पर प्रमाणक अनुशासन थोपब, एहि दू प्रवृत्तिक बीच भेद राखलासँ समग्रक औपन्यासिकता अधिक सटीक रूपेँ बुझल जा सकैत अछि।

मिथिलाक अभिलेख आ पञ्जी : स्मृतिक समाजशास्त्र

पञ्जी सम्बन्धी परियोजनाक सम्पादकीय महत्त्व एहि बातमे अछि जे वंशावलीकेँ निष्प्राण नाँव-पञ्जी नहि मानि सामाजिक सम्बन्धक दीर्घकालीन अभिलेख मानल गेल अछि। मूल, गोत्र, ग्राम, वैवाहिक निकटता, प्रवास, स्त्री-रेखा आ उपाधि—ई सभ सामाजिक व्यवहारक निशान छथि। मुदा कोनो वंश-सूची आपसूक सम्पूर्ण समाजक इतिहास नहि। केकर नाँव लिखल गेल? के अनुपस्थित रहि गेल? स्त्रीक प्रवेश ककर सम्बन्धसँ भेल? वंशक बाहरो जाति, श्रम आ पारिवारिक व्यवस्था कोना दर्ज भेल? एहन प्रश्न पञ्जी-पठनकेँ सामाजिक इतिहास बनबैत अछि।

सम्पादकीयक पञ्जी-विवेचनमे एकटा अत्यन्त महत्त्वपूर्ण कथन अछि : ‘दस्तावेज जे कहैत अछि, ओतबे महत्त्वपूर्ण अछि जे ओ की नहि कहैत।’ एतय रिक्त स्थानकेँ काल्पनिक सूचना सँ भरबाक बदला ओकर ऐतिहासिक कारण पुछल गेल अछि।

इतिहासक मौन अभाव सेहो भऽ सकैत अछि, बहिष्कार सेहो, दस्तावेजक हानि सेहो, लेखन-पद्धतिक सीमा सेहो। ताहि कारणेँ मौनक व्याख्या समानार्थी नहि होइत; सम्भावनासभकेँ पृथक चिन्हब पड़ैत अछि।

विदेहक पञ्जी-प्रबन्ध सम्बन्धी शोध-लेख आ समग्रक छह खण्डक पञ्जी-विषयक विस्तारक बीच एही विधि-विवेकक एक निरन्तरता देखाइत अछि। पञ्जीकेँ केवल पुरान सामाजिक वर्गीकरणक गौरव रूपमे देखल जाए तँ जटिल समाजशास्त्रीय प्रश्न विलुप्त भऽ जाएत। एकर विपरीत प्रत्येक नाँवकेँ आधुनिक समानाधिकारक एकरूप साक्ष्य मानब सेहो अनुचित होएत। सामाजिक दस्तावेजक अध्ययन लेल कालगत परिवर्तन, प्रादेशिक भेद, वर्ग आ जातिक सत्तासम्बन्ध आ लोकजीवनक वैकल्पिक स्मृतिकेँ संग राखब आवश्यक अछि।

समानान्तर साहित्येतिहास : केन्द्र बदलबाक सम्भावना

साहित्येतिहास लिखबाक परम्परा बहुत बेर श्रेष्ठ लेखक, शास्त्रीय ग्रन्थ आ शहरी प्रतिष्ठानक इर्द-गिर्द केन्द्रित रहैत अछि। विदेहसँ सम्बद्ध ‘समानान्तर’ आग्रह एहि प्रश्नकेँ चुनौती दैत अछि जे साहित्यक इतिहास केकर रचनासँ बनत आ केकर अनुभव किनारपर छूटि जाएत। गजेन्द्र ठाकुरक समग्रक सम्पादकीयमे लोककथा, बाल-साहित्य, पञ्जी, अप्रचलित भाषा-रूप, अनुवाद आ आधुनिक विधिक-आर्थिक प्रसंगकेँ एकहि बौद्धिक परिसरमे रखबाक प्रयत्न एहि इतिहासबोधक एकटा ठोस संकेत अछि।

ज्योतिरीश्वरक ‘वर्णरत्नाकर’ आ ‘धूर्तसमागम’, विद्यापतिक पदावली आ मध्यकालीन काव्य, लोकनाट्य, मिथिलाक वंश-परम्परा, आधुनिक कथा-उपन्यास, सामाजिक व्यंग्य आ पत्रिका-संस्कृति—ई सभ मैथिली साहित्येतिहासक पृथक सामग्री छथि। परम्परागत क्रममे काव्यक गरिमा आ धार्मिक-सांस्कृतिक स्मृति जे स्थान पबैत अछि, आधुनिक समानान्तर पाठ ओहि क्रममे श्रम, स्त्री-अनुभव, बहिष्कृत समुदाय, प्रशासनिक दस्तावेज, लोकभाषा आ डिजिटल माध्यमक अनुभव जोड़बाक प्रस्ताव दैत अछि। एही विस्तारक कारण

समानान्तर पद्धति आवश्यक भऽ उठैत अछि। मुदा विस्तार केवल नओका सूची नहि; पुरान इतिहासक तर्कक परीक्षण सेहो होएबाक चाही।

‘समानान्तर’कें ‘पुरान सब गलत, नव सब सही’क घोषणामे बदलि देब एही पद्धतिक विरोध होएत। इतिहासमे केन्द्रीय ग्रन्थक भीतरो बहुवचनता भेटैत अछि आ किनारक सामग्रीमे सेहो सामाजिक बहिष्कारक उदाहरण रहि सकैत अछि। तें समानान्तर इतिहासक विश्वसनीय रूप तुलनात्मक, स्रोत-आधारित आ आत्मसमीक्षात्मक होएत। गजेन्द्र ठाकुरक इतिहासक परियोजनाक सम्पादकीय परिचय एहि सम्भावनाक घोषणा करैत अछि; ओकर विस्तृत औचित्य निश्चित करबाक लेल काल-निर्धारण, दस्तावेजी स्रोत, पाठभेद आ अन्य इतिहासकारक मतक तुलनात्मक अनुशीलनक अतिरिक्त आवश्यकता रहैत अछि।

मायानन्द मिश्रक ऐतिहासिक उपन्यास-संसार, हरिमोहन झाक सामाजिक व्यंग्यक परम्परा, मैथिली आधुनिक कथाक विविधताक संग ‘सहस्रबाढ़नि’ वा ‘पाँच प्रतिशत अन्हार’क तुलना करबासँ रूपान्तरक प्रवृत्ति देखल जा सकैत अछि : ग्रामीण जीवनक केन्द्र कमजोर नहि, बल्कि ओकर सम्बन्ध राज्य, बाढ़ि, प्रवासन, वित्त आ आधुनिक प्रमाण-संस्थासँ जटिल होइत अछि। तथापि एहन तुलना समान विषय देखबाक आधारपर समान शिल्पक दावा नहि करबाक चाही। अलग काल, कथावाचक, पाठकीय समाज आ रचना-भाषाक अन्तर स्पष्ट करब आवश्यक अछि।

भाषा-विज्ञान, थिसॉरस आ मानकीकरणक प्रश्न

व्याकरण आ कोश-साहित्यकें सर्जनात्मक साहित्यसँ बाहर मानल जाए तँ भाषाक बौद्धिक इतिहास अधूरा रहि जाइत अछि। ‘मैथिलीक एकटा समानान्तर व्याकरण, रचना आ भाषा-विज्ञान’, ‘मैथिली-अंग्रेजी थिसॉरस’ आ ‘अंग्रेजी-मैथिली थिसॉरस’ जकाँ परियोजनासभ भाषाकें विचार आ खोजक साधन मानैत अछि। आधुनिक मैथिलीमे मानकीकृत देवनागरी लेखन, बोलिगत विविधता, शब्दार्थक सूक्ष्म भेद आ प्रयोगानुकूल शब्द-चयन बीच तनाव एकर आलोचनात्मक विषय अछि।

विशेष रूपेँ ठेठी-अंगिका आ बज्जिकाक तुलनात्मक सम्बन्धक प्रश्न केवळ शब्दसूचीसँ तय नहि भऽ सकैत अछि। ध्वनि, रूप, वाक्य-रचना, ऐतिहासिक विकास, बोली-समुदायक आत्मपहिचान आ प्रशासनिक वर्गीकरण—ई सभकेँ अलग-अलग स्रोतक रूपमे देखबाक चाही। साहित्यिक समीक्षामे ककरो रूपकेँ स्वतः ‘अशुद्ध’ कहब न उचित अछि न भाषावैज्ञानिक दृष्टिसँ पर्याप्त। कोशमे प्रयोगक सन्दर्भ, मान्य रूपान्तर, सामाजिक रजिस्टर आ अर्थक फैलाव सुरक्षित रहलासँ ओ साहित्यक जीवित साधन बनैत अछि।

‘थिसॉरस’क आलोचना करते मात्र प्रविष्टि-संख्या गनलासँ काज नहि चलत। समानार्थक शब्दसँ ओहि अर्थक विनिमय-योग्यता सिद्ध नहि होइत; कोनो शब्द दैनन्दिन, दोसर विधिक, तेसर लोकगीतक, चारिम व्यंग्यक सन्दर्भमे अधिक उचित भऽ सकैत अछि। एहि कारण शब्दसंसाधनक प्रमुख कसौटी अर्थ-सापेक्षता, उदाहरणक विश्वसनीयता, भाषिक विविधता आ नियमित परिशोधन अछि। सम्पादकीय एहि दिशामे उपयोगिता आ प्रमाणक सम्बन्ध स्थापित करैत अछि, मुदा वास्तविक प्रविष्टि-आधारित आलोचनाक विस्तार एकर आवश्यकता रहैत अछि।

अनुवादक द्विदिशता : मातृभाषा ग्रहणकर्ता आ प्रदाता

समग्रमे आन भाषासँ मैथिली तथा मैथिलीसँ अंग्रेजी अनुवादक परियोजना साथ-साथ उपस्थित अछि। साहित्येतिहासक दृष्टिसँ एहि द्विदिशताक महत्त्व विशेष अछि। संस्कृतक दर्शन, नाटक, प्रहसन आ गद्यक मैथिली रूपान्तरण शास्त्रीय सामग्रीकेँ जीवित मातृभाषामे सुलभ करैत अछि; मैथिली कथा, उपन्यास आ पद्यक अंग्रेजी रूपान्तर मैथिली संसारकेँ विस्तृत पाठक-समाजमे प्रवेश करबैत अछि। ई आवागमन ‘परम्परा बनाम आधुनिकता’क सख्त विरोध कम करैत अछि।

सम्पादकीयमे उल्लिखित ‘भामती’, ‘आत्मतत्त्वविवेक’, ‘न्यायकुसुमाञ्जलि’ आ ‘तत्त्वचिन्तामणि’केँ एकहि अनुवादकीय विधा मानब उचित नहि; दर्शनक प्रमाण-शब्दावली, तर्कक सम्बन्ध आ सूत्र-व्याख्याक वाक्यगति खास परीक्षण माँगैत अछि। दोसर दिश

‘अभिज्ञानशाकुन्तलम्’, ‘मृच्छकटिकम्’, ‘मुद्राराक्षसम्’, ‘भगवदज्जुकम्’ तथा प्रहसन-साहित्यक रूपान्तरणमे नाटकीय संस्कार, सामाजिक व्यंग्य, अभिनयनीयता आ भाषिक स्तरान्तर मुख्य समस्या बनैत अछि। एक पद्धतिसँ सभ अनुवादक समीक्षा सम्भव नहि।

मैथिलीसँ अंग्रेजी सन्दर्भमे सम्पादकीय कहैत अछि : ‘विश्व-साहित्यक दृष्टिसँ एहन अनुवाद मैथिलीकेँ ग्रहणशील भाषा नहि, प्रदाता भाषा बनबैत अछि।’ एहि वाक्यक ऐतिहासिक महत्त्व अछि। मैथिलीकेँ केवल आन भाषाक साहित्य ग्रहण करनिहार सांस्कृतिक क्षेत्र नहि, अपन लोकानुभव, रूपक, नदी-स्मृति आ आधुनिक नागरिक प्रश्नक दाता भाषा रूपमे परिकल्पित कएल गेल अछि। तथापि ‘विश्व-साहित्य’मे प्रवेश मुद्रित अनुवादक उपलब्धतासँ सिद्ध होइत अछि, वैश्विक पाठकीय स्वीकृतिसँ नहि। भाषा-परिवर्तनक वास्तविक फल जाँचबाक लेल पाठ-विन्यास, रूपकक अर्थ, अनूदित संवादक स्वाभाविकता आ लक्षित पाठकक प्रतिक्रिया आवश्यक अछि।

‘अनुवादक’ नामक उपन्यास एहि सम्पूर्ण योजनाक आत्मप्रतिबिम्ब बनैत अछि। अनुवाद एतय पेशागत सेवा मात्र नहि, कथ्यक नैतिक निर्णयक केन्द्र अछि। कोनो वाक्यक गलत अर्थ वित्तीय वा विधिक परिणाम बदली सकैत अछि; मौन सेहो कखनो निर्णय होइत अछि। एहि तरह अनुवादक कर्म सर्जनात्मक, सामाजिक आ ज्ञानमीमांसात्मक तिनू धरातलपर एकसंग स्थापित होइत अछि।

सम्पादकीय शैली : उपलब्धि, पुनरावृत्ति आ निर्णयक असमानता

‘गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय’क शैलीक प्रमुख गुण व्यापक वर्गीकरणक क्षमता अछि। एकर सम्पादकीय वाक्य प्रायः शीर्षक, प्रतिपाद्य, सामाजिक प्रयोजन, तुलनात्मक संकेत आ निष्कर्षक क्रमानुसार आगू बढैत अछि। विशाल सामग्रीमे ई क्रम पाठककेँ दिशाबोध दैत अछि। उपन्यासक गहिर प्रसंगसँ कोश-विज्ञान आ पञ्जी धरि पहुँचैत काल विमर्श बिखरैत नहि, कारण अभिलेख, प्रमाण, भाषा आ स्मृतिक प्रश्न वारम्बार नओका रूपमे भेटैत अछि।

एही विन्यासक एकटा प्रतिकूल पक्ष अछि : जँ लगभग प्रत्येक कृतिक व्याख्या ‘शीर्षकमे फलाँ प्रतीक अछि’, ‘एहि कृतिक महत्त्व ई बातमे अछि’, ‘आधुनिक आलोचनाक दृष्टिसँ’ सन सूत्रपर निर्भर होइत अछि, तँ कृतिविशेषक शैलीगत विचित्रता कम देखाए लगैत अछि। एहि स्थितिमे समीक्षाक भाषिक सुविधा आलोचनाक अनावश्यक समरूपता बनि सकैत अछि। एहिसँ बचबाक उपाय अछि—चुनल मूल प्रसंगक सूक्ष्म व्याख्या, भिन्न निष्कर्षक साहस आ सामान्य संज्ञाक स्थानपर ठोस साहित्यिक क्रिया पर ध्यान।

कथासंग्रह, अनुवाद आ कविता-समीक्षामे किछु स्थाने एकहि पद्धतिक कथन दोहराएल देखाइत अछि; किछु दोसर ठाम विशिष्ट पात्र आ सामाजिक प्रसंगक सहायता सँ समीक्षा विशेषतः जीवन्त भऽ उठैत अछि। सम्पादकीयक गुणानुसार मूल्याङ्कन करते एहि असमानताकें अदृश्य नहि बनाओल जाए। ई कमी प्रकल्पक कुल महत्त्व घटबैत नहि, बल्कि अगिला परिशोधनक ठोस दिशा देखबैत अछि।

विशाल संख्या अपने-आप आलोचनात्मक गहराइक पर्याय नहि। कोनो एकटा कथा पर दू पाँतिक निर्णय तखन सार्थक होएत जखन ओ कथाक निर्णायक व्यंजना खोलैत अछि; आ बीस पातक विवेचन तखने उपयोगी जखन ओ पुनरुक्तिसँ मुक्त अछि। ‘समग्र’क गरिमा तकर आयतन नहि, ओकर आलोचनात्मक चयनक विवेक आ पाठक लेल विश्वसनीय प्रमाण-मार्गनिर्माणसँ निर्धारित होइत अछि।

स्त्री, जाति, श्रम आ प्रतिनिधित्व : समानान्तर दृष्टिक आन्तरिक कसौटी

समग्रमे उपस्थित लोक, पञ्जी, बालगाथा, घरेलू कथा आ आधुनिक संस्थाक विवेचन पढ़ैत काल समानान्तर इतिहासक सबसँ कठिन परीक्षा सामाजिक प्रतिनिधित्वक अछि। स्त्रीक नाँव पञ्जीमे केवल ककरो बेटी वा पत्नी रूपमे आएल अछि कि ओकर स्वतंत्र जीवन-वृत्तान्तक संभावना सुरक्षित अछि? श्रमजीवी समुदाय केवल लोकनायकक गौरवमय छवि बनि ठाढ़ अछि कि ओकर दैनिक आर्थिक संघर्ष, शिक्षा आ राजनीतिक असमानता सेहो कथामे स्पष्ट अछि? बालिका आ किशोरीक निर्णायक अधिकार कथाक वास्तविक

शक्ति बनैत अछि कि अन्तमे वयस्कक शिक्षामे समा जाइत अछि? ई प्रश्न कृतिविशेषसँ आगाँ सम्पादकीय दृष्टिक परीक्षण बनैत अछि।

लोकस्मृति सभ समय मुक्तिदायी होअय, से आवश्यक नहि; ओ सामाजिक बहिष्कार, जातीय पदानुक्रम आ लिंगगत असमानताक वाहक सेहो भऽ सकैत अछि। तँ लोककें शास्त्रक बराबरीमे राखबाक कथनक सही अर्थ आलोचनात्मक समकक्षता अछि, न कि लोकक प्रत्येक रुढ़िक बिना प्रश्न प्रतिष्ठा। एही दृष्टि सँ पञ्जी आ लोकगाथाक सामाजिक उपयोगिता तथा ओकर सीमाकें एकसाथ देखब समानान्तर इतिहासक विवेक होएत।

विदेहमे नारी-केन्द्रित आ दलित साहित्यक समीक्षाशास्त्र सम्बन्धी प्रकाशित शोध-विमर्श एहि सम्पादकीय परियोजनाकें आन्तरिक आलोचनात्मक प्रश्न दैत अछि। साहित्यिक विस्तार ककरा पाठक बनबैत अछि, आ ककरा चुप्पीमे छोड़ैत अछि? जे प्रश्न पुस्तकक भीतर खुलल अछि, ओकर उत्तर स्थिर घोषणासँ नहि, लगातार विशिष्ट पाठक परीक्षणसँ भेटत।

विदेह आ साहित्यिक सार्वजनिकता : पत्रिकासँ शोध-अभिलेख धरि

विदेहक ऐतिहासिक भूमिका एहि समग्रमे महत्त्वपूर्ण अछि, कारण पत्रिका केवल प्रसारण-माध्यम नहि, आलोचनात्मक लेखनक संग्रह-स्थान सेहो बनैत अछि। निरन्तर अङ्क, शोध-लेख, सम्पादकीय, अनुवाद, बाल-साहित्य, पञ्जी, भाषा-विज्ञान आ लेखक-विशेष समीक्षा—ई सभक उपलब्ध अनुक्रम साहित्यिक जनसंवादकें दीर्घकालीन स्मृति प्रदान करैत अछि। एक लेखकक समग्र पठन असलमे एहि सार्वजनिक संस्थासँ संवाद करबाक एकटा पद्धति बनि जाइत अछि।

पत्रिका आ पुस्तकक सम्बन्ध ऐतिहासिक रूपें भिन्न अछि। पत्रिका चलैत समयक बहस राखैत अछि; पुस्तक चयनित सामग्रीकें क्रम, स्थिरता आ तुलनात्मक सम्बन्ध दैत अछि। विदेहक शोध-सूची आ पोथी-संग्रहक उपस्थिति एहि दुई रूपक सन्धि देखबैत अछि। मुद्रित-परम्पराक आलोचना जखन डिजिटल अभिलेखसँ जुड़ैत अछि, तखन उपलब्धता

बढ़ैत अछि; मुदा स्रोतक स्थायित्व, संस्करणभेद, लेखकीय श्रेय आ संशोधित सामग्रीक पहचानक जिम्मेदारी सेहो बढ़ैत अछि।

एहि पुस्तकक एक उपलब्धि मैथिली आलोचनाक लेल शोध-विषयक संरचना तैयार करब अछि। अगिला शोधकर्ता एकहि खण्डसँ कोनो लेखकक साहित्यिक विकास, विशिष्ट कथा-समूह, पञ्जीक सामाजिक इतिहास अथवा अनुवादक शब्दावलीक प्रश्न चुनि सकैत छथि। मुदा पुस्तकक ओहि उपयोगक लेल स्वतंत्र कृति, आलोचकक टिप्पणी आ पत्रिकाक सम्पादकीय सूचना बीच भेद सदा स्पष्ट राखब आवश्यक अछि।

प्रमुख प्रतिपाद्यक समेकित पुनर्मूल्याङ्कन

समग्रक पहिल उपलब्धि विधासभक कृत्रिम दीवार हटा कऽ एकटा साझा बौद्धिक परिसर रचब अछि। गद्य, पद्य, शास्त्र, इतिहास, बाल-साहित्य, व्याकरण आ अनुवादक परस्पर संगति स्पष्ट करैत पुस्तक ज्ञानक स्थानीय भाषिक आधार देखबैत अछि। दोसर उपलब्धि प्रमाण-संवेदनशीलता अछि—प्रत्येक मौनकेँ तथ्य नहि मानब, संयोगकेँ निर्णय नहि मानब आ शीर्षककेँ कथानक नहि मानब। तेसर उपलब्धि समानान्तर साहित्येतिहासक सामाजिक आकांक्षा अछि, जाहिमे लोक, उपेक्षित अभिलेख आ आधुनिक नागरिक अनुभव पुरान प्रतिष्ठानक संग बहस करैत अछि।

मुख्य आलोच्य पक्ष तीन प्रकारक छथि। पहिल, सभ साहित्यिक विधाक आलोचनात्मक कसौटी एक नहि; अतः सैद्धान्तिक संज्ञाक साझा उपयोगक संग विशिष्ट छन्द, दृश्य, घटना, स्रोत वा प्रयोगक भीतरी परीक्षण चाही। दोसर, समग्रता आ मौलिक प्रमाणक बीच दूरी बुझबाक चाही; सम्पादकीय निरूपणक आधारपर प्रत्येक मूल कृतिक सौन्दर्यगत उत्कृष्टता स्वतः सिद्ध नहि। तेसर, विशाल अनुक्रमक बीच अनावश्यक पुनरावृत्ति आ सामान्यीकृत निर्णयक आवृत्ति पाठकक अनुभव कम तीक्ष्ण करि सकैत अछि।

एहि सभक बावजूद पुस्तक एकटा निर्णायक प्रश्न उठबैत अछि : मातृभाषामे आधुनिक ज्ञानक बहुविधता केना रचल जाए? उत्तर एतय एकटा निर्बाध विकासगाथा नहि;

सर्जनात्मकता, अनुवाद, स्मृति, सामाजिक जिम्मेदारी आ स्रोतक अनुशासनक संयुक्त प्रक्रिया अछि। एही कारण ई पुस्तक प्रशंसाक विषय मात्र नहि, तीक्ष्ण आलोचनाक विषय सेहो अछि। गम्भीर आलोचनाक अवसर दऽ सकब स्वयं एकर महत्त्वपूर्ण साहित्यिक उपलब्धि अछि।

निष्कर्ष

आशीष अनचिन्हारक ‘गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय’ मैथिलीमे लेखकक रचनात्मक विस्तारकेँ सम्पादकीय पठनक विस्तृत स्थापत्यमे रूपान्तरित करबाक उल्लेखनीय प्रयत्न थिक। एकर केन्द्रमे प्रमाणक भाषा, जल-भूगोल, पञ्जीक स्मृति, लोक आ शास्त्रक संवाद, न्याय-विवेक, बालकक कल्पनात्मक अधिकार आ अनुवादक द्विदिश सांस्कृतिक यात्रा अछि। पुस्तकक सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण आग्रह ई जे मातृभाषामे शास्त्रीय आ आधुनिक ज्ञानक प्रश्न पूछल जा सकैत अछि आ ओकर उत्तर लेल मैथिली स्वयं पर्याप्त विमर्श-भाषा बनि सकैत अछि।

एकर वास्तविक आलोचनात्मक सिद्धि ओहि ठाम अधिक उज्ज्वल अछि जतय सम्पादक कृतिक सीमा स्वीकार करैत छथि, कल्पना आ प्रमाणक बीच अन्तर राखैत छथि आ कृतिविशेषक स्वर पकड़ैत छथि। जतय सामान्य प्रतिमा, सूत्रबद्ध प्रशंसा अथवा शीर्षकक अनुमान अधिक जगह लैत अछि, ओतय ओही आत्मपरीक्षणक पद्धति फेर लागू कएल जाएबाक चाही। साहित्यिक इतिहासक समानान्तर लेखनसँ उपजल व्यापक सामाजिक वचनबद्धता तखने स्थायी रहत जखन पुरान आ नव सभ पक्षक साक्ष्य पर बराबर प्रश्न उठाओल जाएत।

अन्ततः एहि ग्रन्थक सार कोनो एक लेखकक समग्र महिमा निर्धारित करब नहि, मैथिली आलोचनाक समग्र सम्भावनाकेँ विवाद, प्रमाण, असहमति आ पुनर्पाठ लेल खोलब अछि। साहित्यिक इतिहास अभिलेखक जमा मात्र नहि; ओ एक निरन्तर आलोचनात्मक सार्वजनिक संवाद थिक। एहि संवादमे ‘गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय’केँ ओकर

व्यापकता, पद्धतिगत सम्भावना आ सुधारयोग्य सीमासहित पढ़ल जाए, तखन एकर सार्थक स्थान अधिक स्पष्ट होइत अछि।

सन्दर्भ-सूची

मूल सम्पादकीय ग्रन्थ आ तकर अन्तर्गत समीक्षा-खण्ड

अनचिन्हार, आशीष। गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय। विदेह, २०२६। मूल सम्पादकीय भाग, खण्डवार अनुक्रम आ विस्तारित समीक्षा-संचय।

अनचिन्हार, आशीष। गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय : इजोत, स्मृतिक दोसर दिस आ पर्वत ऊपर भमरा जे सूतल। विदेह, २०२६। समग्रक कथा-समीक्षा सम्बन्धी खण्ड।

अनचिन्हार, आशीष। गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय : कथा-शतत्रयी। विदेह, २०२६। कथा-समीक्षा सम्बन्धी तीन खण्ड।

अनचिन्हार, आशीष। गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय : कथा-त्रिधारा। विदेह, २०२६। कथा-समीक्षा सम्बन्धी तीन खण्ड।

अनचिन्हार, आशीष। गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय : नव पाँखि। विदेह, २०२६। किशोर कथा-सम्बन्धी समीक्षा-खण्ड।

अनचिन्हार, आशीष। गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय : सहस्रबाढ़नि। विदेह, २०२६। उपन्यासक आलोचनात्मक खण्ड।

अनचिन्हार, आशीष। गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय : सहस्रशीर्षा। विदेह, २०२६। उपन्यासक आलोचनात्मक खण्ड।

अनचिन्हार, आशीष। गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय : पाँच प्रतिशत अन्हार। विदेह, २०२६। आर्थिक अपराधक उपन्यास सम्बन्धी खण्ड।

अनचिन्हार, आशीष। गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय : नव्य न्याय आ अपतटीय जुआ-जाल। विदेह, २०२६। न्याय-विवेक आ अपराधक उपन्यास सम्बन्धी खण्ड।

अनचिन्हार, आशीष। गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय : अनुवादक। विदेह, २०२६। भाषा, जीविका आ उत्तरदायित्वक उपन्यास सम्बन्धी खण्ड।

अनचिन्हार, आशीष। गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय : जल-पाँजि। विदेह, २०२६। जल-स्मृति आ अभिलेख विषयक खण्ड।

अनचिन्हार, आशीष। गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय : बिज्जी : गोहि सभक बीच।

विदेह, २०२६। विस्तृत आलोचनात्मक खण्ड।

अनचिन्हार, आशीष। गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय : गोहि सभक बीच जलसमाधि।

विदेह, २०२६। मूल तथा किशोर-बाल रूपान्तरण सम्बन्धी खण्ड।

अनचिन्हार, आशीष। गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय : रङ्ग-संगम। विदेह, २०२६।

नाटक-समीक्षा सम्बन्धी खण्ड।

अनचिन्हार, आशीष। गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय : दीवान-ए-विदेह, अकुलाइत सुर

आ स्वप्नमे मिज्झर होइत। विदेह, २०२६। पद्य, गजल आ गीत सम्बन्धी पृथक समीक्षा-
खण्ड।

अनचिन्हार, आशीष। गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय : गजेन्द्र ठाकुरक समानान्तर

दर्शन। विदेह, २०२६। दार्शनिक विवेचन सम्बन्धी दू खण्ड।

अनचिन्हार, आशीष। गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय : मिथिला आ मैथिली साहित्यक

समानान्तर इतिहास। विदेह, २०२६। साहित्येतिहास सम्बन्धी समीक्षा-खण्ड।

अनचिन्हार, आशीष। गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय : मिथिला, वज्जी आ अंगक

इतिहास। विदेह, २०२६। इतिहास सम्बन्धी दू समीक्षा-खण्ड।

अनचिन्हार, आशीष। गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय : पञ्जी-प्रबन्ध, प्राचीन पञ्जी,

उटीप पञ्जी, नगराम पञ्जी, वंशावली मानचित्रण आ दूषण पञ्जी। विदेह, २०२६।

पृथक अभिलेखीय समीक्षा-खण्ड।

अनचिन्हार, आशीष। गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय : प्रबन्ध, निबन्ध, समालोचना।

विदेह, २०२६। सिद्धान्त आ अनुप्रयुक्त अध्ययन सम्बन्धी दू खण्ड।

अनचिन्हार, आशीष। गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय : मैथिली-अंग्रेजी आ अंग्रेजी-

मैथिली थिसॉरस। विदेह, २०२६। शब्दार्थ-संसाधन सम्बन्धी खण्ड।

विदेहमे प्रकाशित सन्दर्भ-पाठ आ शोध-अभिलेख

ठाकुर, गजेन्द्र। 'मैथिली बाल-उपन्यासक समीक्षाशास्त्र'। विदेह, अङ्क ४४७, १ अगस्त

२०२६।

ठाकुर, गजेन्द्र। 'मैथिलीक एकटा समानान्तर व्याकरण, रचना आ भाषा-विज्ञान (ठेठी-

अंगिका आ बज्जिकाकेँ संग लऽ कऽ)'। विदेह, अङ्क ४४७, १ अगस्त २०२६।

ठाकुर, गजेन्द्र। ‘भामती, आत्मतत्त्वविवेक, न्यायकुसुमाञ्जलि आ तत्त्वचिन्तामणि : ग्रन्थ-सार आ समालोचनात्मक मूल्याङ्कन’। विदेह, अङ्क ४४७, १ अगस्त २०२६।

ठाकुर, गजेन्द्र। ‘मिथिलाक पञ्जी-प्रबन्ध : वंश, विवाह, दूषण, सामाजिक स्मृति आ आधुनिक पुनर्पाठ’। विदेह, अङ्क ४४७, १ अगस्त २०२६।

ठाकुर, गजेन्द्र। ‘समग्र सिंहावलोकन : संस्कृतसँ मैथिली अनूदित साहित्यक तुलनात्मक अध्ययन’। विदेह, अङ्क ४४७, १ अगस्त २०२६।

ठाकुर, गजेन्द्र। ‘मैथिली लेल दलित साहित्य समीक्षाशास्त्र’। विदेह, अङ्क ४४०, १५ अप्रैल २०२६।

ठाकुर, गजेन्द्र। ‘मैथिली लेल एकटा नारी-केन्द्रित समीक्षाशास्त्र’। विदेह, अङ्क ४४२, १५ मई २०२६।

ठाकुर, गजेन्द्र। ‘सहस्रबाढ़नि’; ‘सहस्रशीर्षा’; ‘अनुवादक’; ‘रंग-संगम’ विषयक शोध-लेख। विदेह, अङ्क ४५०, १५ सितम्बर २०२६।

विदेह पोथी-संग्रह। विदेहक मौलिक, ऐतिहासिक आ आधुनिक मैथिली पोथीक

विषयानुसार सूची। <https://videha-ejournal.github.io/videha/pothi.htm>

विदेह शोध-सूची। शोध, साहित्येतिहास, भाषा-विज्ञान आ समालोचना सम्बन्धी शोध-लेखक समेकित अनुक्रम।

<https://videha-ejournal.github.io/videha/research/index.html>

विदेह शोध-लेख : अङ्क १ सँ ४५१ धरि। लेखक, शोध-विषय आ विधागत अनुक्रम।

<https://videha-ejournal.github.io/videha/research/videha-scholar-research-book.html>

विदेह प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका। साहित्यिक अभिलेख, सम्पादकीय, गद्य, पद्य, विदेह

सदेह आ समानान्तर इतिहासक प्रकाशन-परिसर। <https://videha-ejournal.github.io/videha/index.htm>

समीक्षा ५

प्रीति कारण सेतु बान्हल

सेतु, स्मृति आ डिजिटल जनक्षेत्र

मूल आलोच्य ग्रन्थ : आशीष अनचिन्हार सम्पादित ‘प्रीति कारण सेतु बान्हल—

Redefining Maithili’ (२०२४)

सार

‘प्रीति कारण सेतु बान्हल—Redefining Maithili’ (२०२४), आशीष अनचिन्हारक सम्पादनमे प्रकाशित, मैथिलीक समकालीन आलोचना-साहित्यक एकटा विशिष्ट सामूहिक उपक्रम अछि। एकर मूल विन्यास कृपानन्द ठाकुर, प्रीति ठाकुर आ गजेन्द्र ठाकुरसँ सम्बद्ध तीन खण्डमे अछि; मुदा विषय-विस्तार पारिवारिक जीवनवृत्तसँ आगू बढ़ि चित्रकथा, बालसाहित्य, वाचिक परम्परा, डिजिटल पत्रकारिता, पञ्जी-अनुसन्धान, लिपि, शब्दकोश, प्रकाशन-संस्कृति, उपन्यास, आलोचना आ वैकल्पिक साहित्यिक संस्थान धरि पहुँचैत अछि। प्रस्तुत अध्ययनमे ग्रन्थकेँ अभिनन्दनात्मक सामग्रीक संग्रह मात्र नहि, साहित्यिक प्रतिष्ठा आ सांस्कृतिक स्मृति गढ़बाक एकटा सक्रिय सम्पादकीय संरचनाक रूपमे पढ़ल गेल अछि। एक दिस प्रीति ठाकुरक चित्रकथा मिथिलाक बहुवर्णी लोकनायकसभकेँ दृश्य-भाषा द्वारा बालपाठक धरि पहुँचैबाक प्रयत्न करैत अछि; दोसर दिस गजेन्द्र ठाकुरसँ सम्बद्ध सामग्री मैथिलीक डिजिटल सार्वजनिक क्षेत्र आ ज्ञान-संसाधनक नव सम्भावना स्पष्ट करैत अछि। अध्ययन ईहो देखबैत अछि जे ‘पहिल’ होयबाक दावासभ, पञ्जीक सामाजिक सीमासभ, व्यक्तित्व-केन्द्रित प्रशंसा आ सम्पादकीय चयनक असमानता स्वतन्त्र परीक्षण माँगैत अछि। एकर महत्त्व एहि द्वन्द्वमे निहित अछि—ग्रन्थ इतिहास लेल सामग्री सेहो दैत अछि आ स्वयं इतिहास-निर्माणक प्रक्रिया सेहो बनैत अछि।

बीज-शब्द

मैथिली साहित्येतिहास; आशीष अनचिन्हार; प्रीति ठाकुर; गजेन्द्र ठाकुर; चित्रकथा; बालसाहित्य; विदेह; पञ्जी; डिजिटल सार्वजनिक क्षेत्र; समानान्तर साहित्यिक परम्परा; सम्पादकीय आलोचना।

ग्रन्थक स्वरूप आ आलोचनाक मूल प्रश्न

‘प्रीति कारण सेतु बान्हल’क प्रकाशन-वर्ष २०२४ अछि। प्रकाशन-विवरणमे एकरा गजेन्द्र ठाकुर आ प्रीति ठाकुरक कृतित्वक आलोचनात्मक आस्वादन कहल गेल अछि। पुस्तकक शीर्षक मिथिलाक लोकगीत-परम्परासँ ग्रहण कएल गेल अछि आ अंग्रेजी उपशीर्षक ‘Redefining Maithili’ एकर समकालीन आकांक्षाकें सूचित करैत अछि। एहि दुनू संकेतक बीच एकटा अर्थपूर्ण तनाव अछि: एक दिस लोककण्ठसँ आबि रहल सांस्कृतिक निरन्तरता, दोसर दिस भाषा आ साहित्यकें नव माध्यम, नव विधा आ नव पाठकक अनुरूप परिभाषित करबाक प्रयत्न। आलोचक लेल पहिल प्रश्न इएह अछि जे ग्रन्थ एहि दुनू लक्ष्यकें कोना जोड़ैत अछि आ कतए ई संयोजन सफल अथवा अपूर्ण रहैत अछि।

ग्रन्थक रचनात्मक वस्तु स्वयं सम्पादकक एकल प्रतिपादन नहि, अनेक लेखकक मूल्याङ्कन, असहमति, स्मृति, साक्षात्कार, सूचना-संग्रह आ पुस्तक-सूचीक सम्मिलित उपस्थिति अछि। एहि कारणेँ प्रत्येक कथनकें सम्पादकक अन्तिम मत मानि लेब अनुचित होयत। किछु आलेख प्रत्यक्ष साहित्यिक पाठविश्लेषण करैत अछि; किछु जीवनक संस्मरण दैत अछि; किछु शोधपरक जानकारी संग्रहीत करैत अछि; किछु लेखकक सामाजिक वा सांस्कृतिक महत्त्वक पक्षमे तर्क रखैत अछि। एहि भिन्नताकें विवेचनक बाधा नहि, बल्कि पुस्तकक संरचनागत तथ्य मानबाक चाही। उपयुक्त आलोचनात्मक पद्धति एहि ठाम ‘कृति’, ‘कृतिपर प्रतिक्रिया’ आ ‘सम्पादकीय संयोजन’क स्तरकें अलग-अलग पहिचानैत अछि।

कुल तीन मूल खण्डमे आरम्भिक खण्ड कृपानन्द ठाकुरक जीवन-स्मृतिपर केन्द्रित अछि; दोसर खण्डमे प्रीति ठाकुरक चित्रकथा, मिथिलाक लोकदेवता, चित्रकथाक प्रारम्भिक इतिहास आ साक्षात्कार सम्बद्ध सामग्री अछि; तेसर खण्डमे गजेन्द्र ठाकुरक डिजिटल, सांस्कृतिक, भाषिक आ साहित्यिक उद्यमसभक व्यापक परीक्षण प्रस्तुत भेल अछि। ई क्रम एकटा वंश-सम्बन्धी जानकारीसँ बालसाहित्य आ ओतयसँ जनसुलभ साहित्यिक संस्थान धरि बढ़ैत अछि। कालक्रमक अपेक्षा ई विषयगत अनुक्रम अछि, तँ ग्रन्थ पाठकसँ विषयान्तरक बीच अन्तःसम्बन्ध स्वयं खोजबाक सक्रियता माँगैत अछि।

सम्पादकीय दृष्टि: शीर्षक, लोकगीत आ ग्रन्थ-रचना

सम्पादकक अपन कथनक अनुसार शीर्षक एकटा बारहमासा-सम्बद्ध लोकपाँतिसँ लेल गेल अछि। लोकगीतक अलग-अलग पाँतिसँ अनुक्रम, भूमिका, कृपानन्द ठाकुरक खण्ड, प्रीति ठाकुरक खण्ड, गजेन्द्र ठाकुरक खण्ड, परिचय आ समापनकेँ चिह्नित करबाक योजना मात्र अलङ्कारिक सज्जा नहि अछि। ई लोकसंस्कृतिक भाषाकेँ गद्य-आलोचनाक संरचनामे प्रवेश देबाक प्रयास अछि। ‘सेतु’क प्रतीक सेहो एक ठाम मात्र पति-पत्नीक रचनात्मक सहकार नहि, पीढ़ीक बीच, पुरान आ नव माध्यमक बीच, मौखिक आ लिखित स्मृतिक बीच, तथा मुख्यधारा आ समानान्तर पाठक-समाजक बीच सम्बन्धक प्रस्ताव करैत अछि।

सम्पादकक भूमिका स्पष्ट रूपसँ सम्पादनकेँ बाहरी सज्जाक बदला विवेकपूर्ण बौद्धिक काज मानैत अछि। ओ लिखैत छथि—“संपादन मुख्यतः दृष्टि, भिजन एवं आलोचनात्मक विचार केर वस्तु छै।” ई कथन ग्रन्थक आत्मव्याख्या लेल केन्द्रीय अछि। आलेखक प्राप्ति, मतभेदक समावेश, पूर्वप्रकाशित सामग्रीक पुनर्संग्रह, भिन्न वर्तनीक स्वीकृति आ पाठकक लेल सन्दर्भ उपलब्ध करब—ई सभ ‘दृष्टि’क व्यावहारिक रूप अछि। सम्पादक स्वयं स्वीकार करैत छथि जे भिन्न लेखकक भाषा-स्वरूप समान नहि अछि, आ एकर सम्पूर्ण एकरूपीकरणक पक्षमे ओ नहि छथि। एहि सम्पादकीय उदारताक परिणाम भाषा-वैविध्यक

संरक्षण अछि, मुदा पाठकीय सुगमता आ पाठ-संगति किछु ठाम चुनौती सेहो बनि सकैत अछि।

लोकगीतक माध्यमे ग्रन्थसज्जा करब मैथिलीक वाचिक साहित्यकेँ उच्च आ निम्न साहित्यक स्थिर विभाजनसँ बाहर निकालैत अछि। तथापि लोकगीतकेँ मात्र सांकेतिक प्रतिष्ठा भेटब आ ओकर गायन-समुदाय, लिङ्ग, अवसर, परिवर्तनशील पाठ आ सामाजिक संदर्भक आलोचनात्मक अन्वेषण करब भिन्न उपलब्धि अछि। प्रस्तुत ग्रन्थ पहिल कार्य प्रभावी रूपसँ करैत अछि; दोसर कार्यक सम्भावना खोलैत अछि, किन्तु सभ सन्दर्भमे ओकर विस्तार नहि करैत अछि। एहि सीमाकेँ रेखाङ्कित केनाइ लोकसंस्कृतिक अवमूल्यन नहि, बल्कि लोकस्रोतक ऐतिहासिक परीक्षणक आवश्यकता स्वीकार करब अछि।

कृपानन्द ठाकुरः व्यक्ति-संस्मरणसँ सामाजिक इतिहास धरि

सियाराम झा ‘सरस’क ‘करोट फेरैत गामक निर्दर्शकः के.एन.टी.’ पहिल खण्डक मुख्य रचना अछि। एकर पठनमे जीवनीक पारम्परिक जन्म-मृत्यु-केन्द्रित रूपसँ बेसी गाम, विद्यालय, सार्वजनिक जीवन, समाजक सामूहिक काज आ प्रशासनिक-सांस्कृतिक परिवेश सामने अबैत अछि। लेखकक स्मृतिमे मधुबनीक पूर्वकालीन स्थिति, शैक्षिक संस्थान, शिक्षक-समुदाय आ ग्रामीण नाट्याभ्यासक उल्लेख व्यक्तिक जीवनकेँ सार्वजनिक युग-स्मृतिसँ जोड़ैत अछि। ‘व्यक्तित्व’ एहिठाम निजता नहि, सामुदायिक सहभागिताक माध्यममें अभिव्यक्त होइत अछि।

एहि रचनाक महत्त्व ई नहि जे ओ कृपानन्द ठाकुरपर अन्तिम ऐतिहासिक निर्णय देत; महत्त्व ई अछि जे सामाजिक स्मृतिक एकटा स्थानीय स्रोत सामने अनैत अछि। संस्मरणमे कही गेल घटना, तिथि, संवाद आ अनुभूतिक अनुसन्धानक दृष्टिसँ स्तर अलग अछि। अनुभूति साहित्यिक सत्यक वाहक भऽ सकैत अछि, मुदा प्रत्येक संस्मरणात्मक कथन स्वतः अभिलेखीय प्रमाण नहि बनैत। तँ आलोचनात्मक पाठ एहि रचनाकेँ ग्रामीण

मध्यवर्ग, शिक्षा, लोकसहयोग आ सार्वजनिक नैतिकताक परिवर्तनशील स्वरूपक साक्ष्य-सामग्रीक रूपमे ग्रहण करैत अछि, निश्चयात्मक इतिहासक विकल्पक रूपमे नहि। एहि प्रकारँ पहिल खण्ड समूचा पुस्तकमे पीढ़ीगत सांस्कृतिक उत्तराधिकारक प्रश्न रखैत अछि।

प्रीति ठाकुरक चित्रकथा: मौखिक आख्यानक दृश्य पुनर्निर्माण

प्रीति ठाकुरक रचनात्मक उपस्थिति ग्रन्थक सबसँ विशिष्ट साहित्यिक योगदानसभमे अछि। प्रो. वीणा ठाकुरक विवेचनमे ‘गोनू झा आ आन मैथिली चित्रकथा’ (२००८)क सोलह कथामे नौ गोनू झासँ सम्बद्ध आ शेष रेशमा-चूहड़मल, नैका-बनिजारा, भगता ज्योति पुँजियार, महुआ घटवारिन, राजा सलहेस, छेछन महाराज आ कालिदास सन लोक-ऐतिहासिक पात्रसभक कथा अछि। लेखिकाक कथन—“सभ पात्र मिथिलाक सांस्कृतिक प्रतिनिधित्व करैत।” —विधाक मूल आशय खोलैत अछि। पात्रक चुनाव लोकगाथा, लोकविश्वास, हास्य, युक्ति, प्रतिरोध आ वंचित समूहक स्मृतिक साझा भूगोल तैयार करैत अछि।

चित्रकथा लोककथाक लिखित प्रतिलिपि मात्र नहि होइत अछि। शब्दक क्रम जे पाठकँ एक दिशामे चलबैत अछि, चित्रक विन्यास पाठकक दृष्टिकँ एकहि बेर अनेक वस्तु, पात्र आ मुद्राक बीच घुमबैत अछि। मौन स्थान, मुखमुद्रा, दृश्य-क्रम, संवादक संक्षिप्तता आ दृश्य-स्मृति कथ्यकँ नव लय दैत अछि। एहि दृष्टिसँ प्रीति ठाकुरक कार्यकँ ‘बालमनोरञ्जन’ कहि सीमित करब तकर सौन्दर्यात्मक उपलब्धिकँ घटा देब होयत। मिथिलाक परिचित आख्यानसभ दृश्य-कथामे आबि नव पाठकीय माध्यम प्राप्त करैत अछि। ग्रन्थमे संकलित आलोचनासभ ई परिवर्तन पहिचानैत अछि, मुदा चित्रपट्टक संरचना, रङ्गक अनुक्रम, दृश्यदृष्टि आ पाठ-चित्र सम्बन्धक सूक्ष्म औपचारिक अध्ययन कम विस्तारसँ करैत अछि।

प्रो. वीणा ठाकुर, डॉ. रमण झा, शिव कुमार झा ‘टिल्लू’, धीरेन्द्र कुमार आ दुर्गानन्द मण्डलक आलेखसभक तुलना करैत स्पष्ट होइत अछि जे चित्रकथाक मुख्य विशेषता सभकँ एके ढंगसँ नहि देखल गेल अछि। केओ एकरा सांस्कृतिक संरक्षणक साधन मानैत

छथि, केओ बालसाहित्यक अभावक पूर्ति, केओ मिथिलाक बहुजन नायकसभक पुनर्परिचय, तँ केओ एकटा नव विधाक स्थापना। एहि मतसभक संयुक्त पठन बतबैत अछि जे ‘संरक्षण’ आ ‘सृजन’क कार्य भिन्न रहितहुँ परस्पर सम्बद्ध अछि। जखन लोकमुखक कथा दृश्य रूप पबैत अछि, तँ ओ पारम्परिक कथ्यकेँ जस्ताक तस्त नहि रखैत; नव पीढ़ीक संवेदना आ अन्वेषणक अनुरूप ओकर पुनर्संयोजन सेहो करैत अछि।

‘मैथिली चित्रकथा’ (२००९)मे राजा सलहेस, दीना-भदरी, नैका-बनिजारा, बोधि कायस्थ आ विद्यापतिक आयु-अवसान सन विषयक उल्लेख मिलैत अछि। एतय पात्रचयन केवल प्रसिद्धिक क्रम नहि अछि। मुसहर समाजसँ सम्बद्ध दीना-भदरी वा सलहेसक परम्परा अपन जातीय-सामाजिक आधार रखैत अछि; चित्रकथा एहि स्मृतिसभकेँ व्यापक बालपाठकीय संसारसँ जोड़बाक अवसर उत्पन्न करैत अछि। मुदा मूल मौखिक परम्परा आ चित्रकथाक रूपान्तरणक तुलनात्मक अध्ययन बिना ई निष्कर्ष निकालब जे प्रत्येक चित्रण समुदायविशेषक दृष्टिकेँ पूरा न्याय दैत अछि, जल्दबाजी होयत। प्रतिनिधित्वक अवसर आ प्रतिनिधित्वक पर्याप्तता अलग-अलग प्रश्न अछि।

बालसाहित्य, स्त्री-लेखन आ भाषा-अधिग्रहण

डॉ. शेफालिका वर्माक आलेख महिला लेखनकेँ साहित्यिक इतिहासमे हाशियापर राखबाक प्रवृत्तिपर प्रश्न उठबैत अछि। ई सन्दर्भ प्रीति ठाकुरक रचनाकेँ मात्र लेखक-पत्नीक परिशिष्ट बनि जेबाक सम्भावनासँ बचबैत अछि। पुस्तक स्वयं एहि भेदकेँ ध्यानमे रखैत अछि: प्रीति ठाकुरक अपन स्वतंत्र चित्रकथा, चित्रनिर्माण, अनुवाद आ बालपाठक सम्बन्धी चयन अछि। एकर समाजशास्त्रीय महत्त्व ई अछि जे स्त्री रचनाकारक उपस्थिति केवल काव्य वा घरेलू लेखनक विधागत अपेक्षामे नहि, दृश्य-प्रौद्योगिकी आ भाषा-प्रसारक क्षेत्रमे सेहो अंकित भऽ रहल अछि।

प्रीति ठाकुरक साक्षात्कार एहि विवेचनकेँ आत्मवृत्तात्मक आधार दैत अछि। चित्र बनएबाक आरम्भपर हुनक उत्तर अछि—“चित्र बच्चेसँ बनबै छलिये, २००० मे पुत्र जन्मक

बाद जखन ओ बाजब शुरु केलक तखन मोनमे आयल।” ई छोट उत्तर घरेलू अनुभूतिकेँ सृजनक स्रोत बनबैत अछि, मुदा रचनाकेँ घरेलू परिसरसँ बाँधि नहि दैत। नेनासभक पठन-अभिरुचि, चित्रक आवश्यकता, पुस्तक आ इलेक्ट्रॉनिक माध्यमक सहअस्तित्व तथा भाषा-सरलताक प्रश्न हुनक साक्षात्कारमे सामने अबैत अछि। रचनाकारक अनुभवक एहन प्रत्यक्ष साक्ष्य पाठक लेल बहुमूल्य अछि; तथापि आत्मवृत्तकेँ आलोचनात्मक व्याख्यासँ पृथक रखब जरूरी अछि।

एहि सन्दर्भमे मातृभाषा आ बालसाहित्यक सम्बन्ध निर्णायक अछि। भाषा केवल विद्यालयक पाठ्यक्रम वा सांविधानिक स्वीकृतिसँ जीवन्त नहि रहैत; घरक संवाद, खेल, कथा, दृश्यकला आ सहज पठनसँ बालक ओकरा अपन भाषिक संसार मानैत अछि। चित्रकथा एहन संक्रमण-बिन्दुपर प्रभावी माध्यम भऽ सकैत अछि, जतए मौखिक खिस्सा आ अक्षराधारित पठन एक-दोसरक संग जुड़ैत अछि। मुदा कोनो एकल पुस्तकद्वारा भाषा-संक्रमणक संकट दूर भऽ गेल—एहन दावा प्रमाणसँ आगू होयत। एकर आवश्यकता नियमित प्रकाशन, पुस्तकालय, पाठशाला, वितरण आ पाठकीय अनुसंधानसँ जुड़ल अछि।

‘पहिल’ होयबाक दावाक साहित्येतिहासीय परीक्षा

ग्रन्थक भूमिका आ चित्रकथाक प्रारम्भिक इतिहासपर लिखल सामग्री प्रीति ठाकुरकेँ मैथिलीक पहिल चित्रकथा-लेखिकाक रूपमे प्रस्तुत करैत अछि। संकलित विवरणमे २००२ क ‘छोट आ पैघ’क अनुवाद, २००३ क ‘माल-जाल आ जानवर दिस देखू’क अनुवाद, २००८ क ‘गोनू झा आ आन मैथिली चित्रकथा’क मूल प्रकाशन, २००९ क ‘मैथिली चित्रकथा’, २०१० क ‘मिथिलाक लोकदेवता’ आ २०१२ क ‘विद्यापतिक पुरुष परीक्षा’क क्रम देखबाक अवसर भेटैत अछि। एकर ऐतिहासिक मूल्य ई अछि जे ‘पहिल चित्रकथा’ आ ‘पहिल मौलिक चित्रकथा’क प्रश्न अलग कएल जा सकैत अछि; अनुवादक इतिहासकेँ मूल लेखनक इतिहाससँ अदृश्य नहि करबाक चाही।

मुदा 'सर्वप्रथम'क दावा सिद्ध करबाक लेल विधागत परिभाषा अत्यावश्यक अछि। एकपट्ट चित्र, समाचार-पत्रक व्यंग्यचित्र, धारावाहिक चित्र-शृंखला, अनूदित चित्रकथा, मौलिक चित्रकथा आ दीर्घ ग्राफिक आख्यान—ई सभ समान श्रेणी नहि अछि। आशीष अनचिन्हारक ऐतिहासिक आलेख पूर्ववर्ती उपलब्धिक खोज करैत अछि आ नवीन प्रमाण भेटलापर इतिहास संशोधित करबाक खुलापन राखैत अछि। संकलनक भीतर धीरेन्द्र कुमारक टिप्पणीमे पूर्ववर्ती चित्रकथासँ सम्बद्ध एकटा भिन्न संकेत सेहो अछि। एहि भिन्न आवाजकँ अन्तर्विरोध मानि दबेबाक बदला इतिहासलेखनक स्वस्थ चुनौती मानब उचित अछि। उपलब्ध दावाक स्तरपर प्रीति ठाकुरक उपलब्धि महत्वपूर्ण अछि; सम्पूर्ण पूर्ववर्ती पत्रिका-सामग्रीक क्रमबद्ध परीक्षण बिना अन्तिम सार्वकालिक निष्कर्ष सुरक्षित नहि अछि।

विदेहक पुस्तक-सूचीमे मूल आ अनूदित कृतिसभक पृथक वर्गीकरण एहि परीक्षणमे उपयोगी अछि। एकर अर्थ मात्र ई नहि जे सूची उपलब्ध अछि, बल्कि विधागत इतिहास लिखबाक समय रचनाक प्रकार, भाषा, माध्यम आ संशोधित संस्करणक क्रम अलग-अलग सूचित कएल जा सकैत अछि। आगामी साहित्येतिहासक लेल एहि ग्रन्थक प्रश्न सर्वाधिक फलप्रद होयत, जँ चित्रकथा मात्र प्रकाशन-तिथिक विवाद नहि, सौन्दर्य, पाठक, चित्र-भाषा आ सामाजिक प्रतिनिधित्वक इतिहास बनि सकय।

डिजिटल पत्रकारिता आ सार्वजनिक साहित्यिक क्षेत्र

गजेन्द्र ठाकुरसँ सम्बद्ध तेसर खण्डक आरम्भ डिजिटल पुस्तकालय आ पत्रकारितासँ होइत अछि। कल्पना झाक लेख सुलभ पठनक अनुभवक माध्यमे मुक्त पुस्तक-संसाधनक उपादेयता देखबैत अछि। कीर्तिनाथ झा प्रकाशनक दू ऐतिहासिक बाधा—धन आ सम्पादकीय स्वीकृति—पर विचार करैत डिजिटल माध्यममे वैकल्पिक प्रवेशद्वार देखैत छथि। लाल देव कामतक आलेख माध्यमक तकनीकी आ संचारगत परिवर्तन रेखाङ्कित करैत अछि। एहि तीन दृष्टिक संग सम्पादकीय भूमिका रखलापर बुझाईत अछि जे

वेबपत्रकारिता एतय समाचार प्रसारण मात्र नहि, साहित्यिक अवसरक पुनर्वितरणक प्रश्न अछि।

ग्रन्थमे विभिन्न लेखक वेब-उपस्थितिक आरम्भ, ‘भालसरिक गाछ’, ‘समदिया’ आ ‘विदेह’क विकास-क्रमक उल्लेख करैत छथि। एहि वर्षक्रमकें एकरूप सुनिश्चित इतिहास मानबाक बदला स्रोतक दावाक रूपमे पढ़ब विवेकपूर्ण अछि, कारण ब्लॉगक आरम्भ, ई-पत्रिकाक नामकरण, नियमित पाक्षिकता आ प्रकाशन-संरचनाक संस्थानीकरण अलग घटनासभ अछि। ‘विदेह’क २००८ सँ पाक्षिक प्रकाशनक उल्लेख आलोचनासभमे महत्त्वपूर्ण अछि, मुदा एकर पूर्ण कालक्रम बनएबाक लेल मूल अड़क, सम्पादकीय सूचना आ उपलब्ध अभिलेखसभक पारस्परिक मिलान अपेक्षित रहैत अछि।

प्रकाशनक लोकतन्त्रीकरणक चर्चा करैत किछु असुविधाजनक प्रश्न अनिवार्यतः उठैत अछि। डिजिटल संग्रहमे पुस्तक रहब आ ओकर वास्तवमे ग्रामीण विद्यार्थी, आर्थिक रूपसँ वञ्चित पाठक वा सीमित उपकरण रखनेवला व्यक्ति धरि पहुँचब एक बात नहि। निःशुल्क उपलब्धता प्रवेशक बाधा घटबैत अछि, किन्तु उपकरण, सम्पर्क-सुविधा, खोजयोग्यता, लिपि-समर्थन, दृश्य-अक्षमता, दीर्घकालिक संग्रहण आ सामग्रीक आलोचनात्मक गुणवत्ता सेहो पहुँचक शर्त अछि। संकलित सामग्रीक प्रमुख उपलब्धि डिजिटल माध्यमक आवश्यकता स्थापित करब अछि; अगिला आलोचनात्मक चरण एहि पहुँचक सामाजिक प्रमाण-संग्रह आ पाठकीय व्यवहारक अध्ययन होयबाक चाही।

‘मिथिला मिहिर’सँ ‘विदेह’ धरि: निरन्तरता आ विच्छेद

लक्ष्मण झा ‘सागर’क ‘मिथिला मिहिर आ विदेह वेब पत्रिका’ पारम्परिक पत्रिकाक सांस्कृतिक कार्य आ डिजिटल पाक्षिकक उपलब्धिक बीच तुलनात्मक अवसर दैत अछि। ‘मिथिला मिहिर’क ऐतिहासिक प्रतिष्ठामे रचनाकारसभक एकटा प्रकाशन-मंच, सम्पादकीय चयन आ मैथिलीक साहित्यिक संवादक साझा स्थल विकसित भेल छल। ‘विदेह’क सन्दर्भमे माध्यम बदलि जाइत अछि—भौतिक वितरणक स्थानपर अन्तरजाल, सीमित

मुद्रणक स्थानपर पुनरुत्पादनयोग्य सामग्री, आ केन्द्रीय प्रवेशद्वारक सम्मुख वैकल्पिक लेखक-समुदायक आग्रह। मुदा साहित्यिक पत्रिकाक मूल प्रश्न, अर्थात् ककर रचना स्थान पबैत अछि, कोन मानदण्डपर, आ पाठक ओकरा कोना ग्रहण करैत छथि, दुनू कालमे जीवन्त रहैत अछि।

एहि प्रकारक तुलना केवल ‘पुरान श्रेष्ठ छल’ वा ‘नव अधिक लोकतान्त्रिक अछि’क द्विधा नहि बनबाक चाही। पुरान पत्रिकाक संस्थागत स्मृति आ डिजिटल पत्रिकाक त्वरित उपलब्धता अलग शक्ति रखैत अछि। साहित्यक इतिहासमे दुनू माध्यमक सम्पादकीय अर्थव्यवस्था, भाषिक मानक, पाठक-विस्तार, मतभेदक स्थान आ संरक्षण-क्षमता तुलनीय आधार बनि सकैत अछि। प्रस्तुत ग्रन्थ एहि तुलनाक आरम्भ करैत अछि, मुदा निकास-संख्या, नियमित पाठक, सम्पादकीय नीति आ सहभागिताक दीर्घकालिक आँकड़ासभक एकरूप विवेचन नहि करैत। इएह एकर उपादेयता आ सीमा दुनू अछि।

पज्जी: विरासत, वंशज्ञान आ अभिलेखीय राजनीति

पज्जीपर विनयानन्द झा, जगदीशचन्द्र ठाकुर ‘अनिल’, डॉ. कैलाश कुमार मिश्र आ भवनाथ झाक लेखसभ एकटा महत्त्वपूर्ण विषय-समूह बनबैत अछि। पज्जी केवल विवाहक गोत्र-व्यवस्था बुझबाक दस्तावेज नहि, बल्कि मूलग्राम, कुल, व्यक्ति, कालक्रम, सामाजिक सम्बन्ध आ ऐतिहासिक विस्थापनक अभिलेख सेहो अछि। एहि स्रोतक प्रकाशन आ डिजिटल सुलभता पुरान पाण्डुलिपिक सामग्रीकेँ अनुसन्धाता आ सामान्य जिज्ञासु दुनूक लेल खोलबाक सम्भावना बनबैत अछि। ग्रन्थमे ‘जीनोम मैपिंग’ आ पज्जीसम्बद्ध सम्पादनक श्रेय गजेन्द्र ठाकुर, नागेन्द्र कुमार झा आ पज्जीकार विद्यानन्द झाक सामूहिक काजक रूपमे सेहो देल गेल अछि; व्यक्तिगत नायकत्वक बीच सहकारक ई बिन्दु विसरबाक नहि चाही।

पज्जीक ऐतिहासिक उपयोगिता स्वीकार करितहुँ सामाजिक चयनक प्रश्न छोड़ल नहि जा सकैत अछि। वंशावलि जे समुदायसभक नाम, श्रेणी आ वैवाहिक व्यवहार अभिलिखित

करैत अछि, ओकरा बाहर रहि गेल समूहक इतिहास ओहिमे कम दृश्यमान होयत। स्रोतक मौन स्वयं सामाजिक तथ्य बनि सकैत अछि। तँ पञ्जीक अध्ययनमे कोन समुदायक अभिलेखन भेल, कोन सामाजिक उद्देश्यसँ भेल, मूल लेखन आ बादक प्रतिलिपिक अन्तर कोना पहचानल जाए, तथा वंशसूचीसँ प्राप्त जानकारीकेँ आन ऐतिहासिक स्रोतक संग कोना मिलाओल जाए—ई प्रश्न आवश्यक अछि। ‘संरक्षण’क कामकेँ सामाजिक न्यायसँ काटि देलापर ऐतिहासिक स्रोत केवल कुल-प्रतिष्ठाक उपकरण बनबाक जोखिम रखैत अछि।

ग्रन्थक भीतर भवनाथ झा प्रस्तुतिकरण, शीर्षक-संगठन आ पाठकीय सुगमताक व्यावहारिक समस्या उठबैत छथि। एहि आलोचनाक ऐतिहासिक महत्त्व कम नहि अछि। सामग्रीक विशालता स्वयमेव उपयोगिता नहि बनैत; शोधक लेल पाठान्तरक नियन्त्रण, नामक अनुक्रमण, स्रोत-चिह्न, लिप्यन्तरणक स्पष्ट नीति आ पुनःजाँचक सुविधा आवश्यक अछि। एहि कारणेँ पञ्जीसम्बद्ध आलेखसभक संयुक्त संदेश प्रशंसासँ व्यापक अछि: उपलब्ध कराएल अभिलेखक वैज्ञानिक उपयोग करबाक पद्धति विकसित करब सेहो उतने आवश्यक अछि।

भाषा, लिपि आ शब्दकोश: आधारभूत काजक साहित्यिक महत्त्व

उदयनारायण सिंह ‘नचिकेता’क कोशसम्बद्ध अध्ययन मैथिली-अंग्रेजी, अंग्रेजी-मैथिली आ संगणकीय शब्दावलीक उद्यमकेँ शब्दकोश-परम्पराक विस्तृत क्षितिजमे रखैत अछि। सामान्यतः साहित्यिक इतिहास कविता, कथा आ नाटककेँ केन्द्रमे रखैत अछि, मुदा शब्दकोश, लिपि-प्रविधि, वर्तनीक मानकीकरण आ शब्दार्थक उपलब्धता बिना बहुविध साहित्यिक उत्पादनक आधार दुर्बल रहैत अछि। कोश-साधना रचना नहि अछि—एहन विभाजन सहज अछि; तथापि शब्दक अर्थ-क्षेत्र, प्रयोग-स्रोत, काल-भेद, बोली-वैविध्य आ तकनीकी शब्दनिर्माणक निर्णय भाषा-समुदायक बौद्धिक भविष्यकेँ आकार दैत अछि।

ग्रन्थमे तिरहुता सहित अनेक लिपिमे सामग्री उपलब्ध करएबाक चर्चा एहि बातकेँ उभारैत अछि जे लिपिक प्रश्न केवल गौरव-स्मृतिक नहि, व्यवहारिक पाठकीय अधिकारक सेहो अछि। समान भाषा भिन्न लिपिमे उपलब्ध रहला सँ विरासत आ समकालीन अभिगमक बीच दूरी घटि सकैत अछि। मुदा बहुलिपि प्रकाशनक टिकाउपनक लेल मानकीकृत अक्षर-संयोजन, खोजव्यवस्था, अनुवाद/लिप्यन्तरणक त्रुटि-जाँच आ नव पाठकक प्रशिक्षण आवश्यक अछि। एहि आधारपर कोश आ लिपिक कार्यकेँ साहित्येतिहासक परिशिष्ट नहि, साहित्यिक संचारक संरचनात्मक इतिहासमे राखबाक अपेक्षा अछि।

‘कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक’: विधा-संमिश्रण आ बौद्धिक विस्तार

ग्रन्थमे उदयनारायण सिंह ‘नचिकेता’ ‘कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक’क सात खण्डक विवेचन करैत छथि। एकर अन्तर्गत प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचना, उपन्यास, पद्य, कथा, नाटक, महाकाव्य आ बाल-किशोर साहित्यक उल्लेख अछि। ई सूची मात्र लेखकक उत्पादकता सिद्ध नहि करैत; समकालीन मैथिलीमे एक लेखकक बहुविध रचनात्मक कार्यक्रमक आकांक्षा सेहो सूचित करैत अछि। एकहि सृजन-जगतमे साहित्यिक परीक्षण, आख्यान, नाटक आ बालभाषिक प्रयोग होएबाक कारणेँ विधागत सीमा स्थिर नहि रहैत।

मुदा बहुविधता आ कलात्मक उपलब्धि पर्याय नहि। जे रचनामे विचारक विस्तार अछि, ओतहि कथानकक सघनता घटियो सकैत अछि; जतए भाषिक साहस अछि, ओतहि पाठकीय श्रम अधिक भऽ सकैत अछि। ‘कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक’पर अनेक समीक्षकक उपस्थिति एहि भिन्न मूल्याङ्कनकेँ सम्भव बनबैत अछि। राजदेव मण्डलक पत्रोत्तर शैली, शिव कुमार झा ‘टिल्लू’क पाठकीय प्रतिक्रिया आ अशोकक उपन्यास-सम्बद्ध अध्ययन आलोचनात्मक अभिव्यक्तिक अलग रूप सामने अनैत अछि। एहन बहुशैली मूल्याङ्कनकेँ एक निष्कर्षमे विलीन करबाक बदला परस्पर परीक्षणक अवसर मानब अधिक फलप्रद अछि।

‘सहस्त्रबाढनि’: परिवारक भीतर सामाजिक परिवर्तनक कथा

अरविन्द ठाकुरक ‘सहस्त्रबाढनि: हमर दृष्टि मे (किछु टिप्पणी)’ एहि संकलनक अपेक्षाकृत सघन पाठ-आधारित आलोचनासभमे गनल जा सकैत अछि। हुनक आरम्भिक स्थापनामे अछि—“‘सहस्त्रबाढनि’ मूलतः एक परिवारक चारि पीढ़ीक क्रमिक विकासक (इवोल्युशन) कथा कहैत अछि।” परिवारक बहुपीढ़ीय कथा समाजक परिवर्तनकेँ निराकार राजनीतिक घोषणाक रूपमे नहि, शिक्षा, पेशा, अवसर, अपमान, निर्णय आ पारिवारिक तनावक मूर्त रूपमे उपस्थित करैत अछि। समीक्षक पात्र आ पीढ़ीक सम्बन्धसँ नव शिक्षा, औपनिवेशिक-अनुवर्ती व्यवस्था आ आधुनिक व्यावसायिक संस्थाक प्रश्नक पठन आरम्भ करैत छथि।

एहि दृष्टिसँ ‘सहस्त्रबाढनि’क अध्ययन वंशक कहानीक आन्तरिक विघटनक अध्ययन सेहो भऽ सकैत अछि। एक पीढ़ी जेकरा प्रगति मानैत अछि, अगिला पीढ़ी ओकर सीमाकेँ पहिचानैत अछि। सार्वजनिक सत्ता आ निजी महत्वाकांक्षाक बीच जे तनाव बनैत अछि, ओ आख्यानक नैतिक धरातल रचैत अछि। ग्रन्थक एहिठाम उपलब्ध आलोचना पठनीय अछि, कारण ओ प्रशंसात्मक विशेषणसँ अधिक कथावस्तुक संरचना आ सामाजिक परिवर्तनक सम्बन्धपर ध्यान दैत अछि। तथापि सम्पूर्ण उपन्यासक प्रत्येक प्रसंगक स्वतन्त्र पाठ-परीक्षणक बिना एतय उद्धृत आलोचनाकेँ रचनाक अन्तिम मानक नहि मानल जा सकैत अछि।

सामाजिक विषमता, कथारूप आ समानान्तर परम्परा

आभा झाक ‘सामाजिक विषमताक तह धरि पैसैत कथा’ गजेन्द्र ठाकुरक कथासाहित्यमे जाति-पाँति, स्त्री-अनुभव, भुखमरी, प्रवास, शिक्षाक बाजार, पर्यावरण आ सत्तासम्बद्ध प्रश्नक उपस्थिति रेखाङ्कित करैत अछि। एहि आलेखक विशेष महत्त्व ई अछि जे साहित्यकेँ केवल विधागत यश वा भाषिक कौशलक आधारपर नहि, सामाजिक अनुभवक जटिलताक माध्यमे पढ़बाक आग्रह करैत अछि। कथाक नैतिक अर्थ ओकर

विषयसूची मात्रसँ सिद्ध नहि होइत; दृष्टिकोण, पात्रक अन्तर्विरोध, कथावाचकक दूरी आ अन्तिम कलात्मक प्रभाव सेहो निर्णायक अछि। ई सूक्ष्म भेद ध्यानमे राखि सामाजिक यथार्थक मूल्याङ्कन कएल जएबाक चाही।

आचार्य रामानन्द मण्डलक आलेख मैथिली साहित्यक मुख्यधारा आ समानान्तर धाराक सम्बन्धक प्रश्न स्पष्ट रूपसँ उठबैत अछि। एहिठाम साहित्यिक इतिहास मात्र प्रसिद्ध लेखकक क्रम नहि, प्रतिष्ठाक संस्थासभक इतिहास सेहो बनि जाइत अछि। किनका पाठ्यक्रममे स्थान भेटल, किनकर रचनाक पुनर्मुद्रण भेल, ककरा पुरस्कार वा समीक्षाक अवसर भेटल, कोन बोली आ वर्गक कथा ‘मानक साहित्य’ मानल गेल—ई सभ प्रश्न साहित्येतिहासक समीक्षात्मक निर्माणक केन्द्रमे रहबाक चाही। तथापि मुख्यधारा आ समानान्तरताकेँ पूर्णतः अभेद्य दू शिविर मानलापर भितरिक मतभेद, आन्तरिक असमानता आ परस्पर प्रभावक इतिहास अदृश्य भऽ सकैत अछि। ग्रन्थ ई जटिल प्रश्न उठबैत अछि, आ एकर सर्वोत्तम पाठ एहि प्रश्नकेँ खुलल रखैत अछि।

असहमतिक स्थानः प्रशंसात्मक संकलनक आन्तरिक आलोचना

व्यक्तित्व-केन्द्रित ग्रन्थक सामान्य जोखिम ई अछि जे आलोचनात्मक मत सम्मानसूचक भाषाक भीड़मे दबि जाए। प्रस्तुत संकलनमे धनाकर ठाकुरक ‘विदेह ओ गजेन्द्र’ एहन जोखिमक प्रतिरोधी पाठ अछि। ओकर आरम्भिक कथन—“गजेन्द्र ठाकुर विदेह नहि छथि नहि विदेह गजेन्द्र छलाह वा अछि।” —व्यक्ति आ संस्थाक बीच अन्तर राखबाक स्पष्ट आग्रह अछि। धनाकर ठाकुर सम्पादकीय निर्णय, पुरस्कार-व्यवस्था, प्रस्तुतीकरण आ संगठनक स्वरूपपर आपत्ति रखैत छथि। ई आपत्ति अनिवार्यतः सर्वमान्य निष्कर्ष नहि, मुदा ओकर उपस्थितिए संकलनक आलोचनात्मक क्षितिज विस्तृत करैत अछि।

व्यक्ति द्वारा आरम्भ कएल संस्थाक निरन्तरतामे सम्पादकक भूमिका निश्चित रूपेँ महत्वपूर्ण होइत अछि; तथापि पाठक, लेखक, तकनीकी सहकर्मि, सहयोगी सम्पादक,

मुद्रक आ सामाजिक समर्थन सेहो संस्थाक इतिहासक अङ्ग अछि। ग्रन्थक अनेक आलेखमे व्यक्तिगत श्रेयक मात्रा अधिक अछि, जबकि किछु आलेख सामूहिक परिश्रमक उल्लेख करैत अछि। एहि असमानताकेँ समझबाक लेल ‘नायकत्व’क भाषा आ ‘संस्थागत इतिहास’क भाषाक भेद उपयोगी अछि। ग्रन्थ जखन स्वयं मतभेदकेँ स्थान दैत अछि, तखन ओकर आलोचनात्मक सामर्थ्य बढ़ैत अछि; जखन तीव्र प्रशंसा तर्कक स्थान लैत अछि, तखन ओकर प्रमाणात्मक मूल्य सीमित भऽ जाइत अछि।

साक्षात्कार आ सम्पादकीय टिप्पणी: जीवित इतिहासक निर्माण

संकलनमे प्रीति ठाकुरक साक्षात्कारक संग गजेन्द्र ठाकुरक पुरान संवाद आ नव साक्षात्कार प्रस्तुत अछि। साक्षात्कार तत्कालीन विचार, असहमति आ आत्ममूल्याङ्कनक प्रत्यक्ष स्रोत अछि। पुरान आ नव कथनक साथ-साथ उपस्थिति समयान्तरमे दावाक परिवर्तन वा निरन्तरताक परीक्षण करबाक सुविधा दैत अछि। ई जीवनीपरक साहित्यक महत्त्वपूर्ण उपलब्धि अछि, कारण लेखकक कृति आ कृतिक बाहरी स्वागतक अतिरिक्त ओ स्वयं अपन कार्यक औचित्य, सीमा आ कार्यक्रमक चर्चा करैत छथि।

मुदा साक्षात्कार आत्मप्रस्तुति सेहो अछि; प्रश्नकर्ताक रुचि, सार्वजनिक विवाद आ उत्तरदाताक तत्कालीन स्थिति उत्तरकेँ प्रभावित करैत अछि। तँ साक्षात्कारकेँ समयविशेषक विचारक अभिलेख मानब उचित अछि, पूर्ण निष्पक्ष इतिहास नहि। सम्पादकीय टिप्पणी सेहो आलेखसभक बीच संवाद रचैत अछि, मुदा जँ ओ केवल प्रतिवाद करैत अछि आ मूल लेखकक प्रश्नक सम्पूर्ण विश्लेषण नहि करैत, तँ पाठककेँ आलोचनाक दू स्तर अलग रखबाक चाही। एहि भेदक ज्ञान ग्रन्थक पाठककेँ मतभिन्नता बुझबाक स्वतंत्रता दैत अछि।

साहित्येतिहासक तुलनात्मक रूपरेखा

मैथिली साहित्यक इतिहास सामान्यतः प्राचीन काव्य, मध्यकालीन दरबारी आ भक्तिकाव्य, आधुनिक पत्रकारिता, उपन्यास, कथा आ समकालीन रचनाशीलताक विकासक्रममे व्यवस्थित कएल जाइत रहल अछि। एहि व्यापक क्रममे ‘प्रीति कारण सेतु बान्हल’ एकटा अन्य महत्वपूर्ण धुरी प्रस्तुत करैत अछि: साहित्यक सामाजिक प्रसारक माध्यमसभक इतिहास। विद्यापतिक साहित्यिक प्रतिष्ठा वा ‘वर्णरत्नाकर’क गद्यपरम्परासँ आरम्भ कएल इतिहास यदि केवल उत्कृष्ट कृतिक संकलन हो, तँ चित्रकथा, बालभाषा, पुस्तकालय, पाण्डुलिपि-संरक्षण, लिपिसुलभता आ डिजिटल जनक्षेत्रक परिवर्तन ओहिमे पर्याप्त स्थान नहि पबैत। संकलन एहि रिक्तिकेँ देखबाक दृष्टि दैत अछि, यद्यपि ओ स्वयं पूर्ण साहित्येतिहास नहि अछि।

लोकगीतसँ ग्रन्थक आरम्भ, प्रीति ठाकुरक चित्रकथामे लोकनायकक दृश्य पुनर्जीवन, आ पञ्जी-सम्बद्ध लेखसभमे हस्तलिखित वंशज्ञानक सार्वजनिक सुलभता—ई सभ प्राचीन-मध्यकालीन-आधुनिक विभाजनक पार एकटा ‘स्मृति आ माध्यम’क इतिहास बनबैत अछि। एहि दृष्टिमे साहित्यक विरासत स्थिर सामग्री नहि, पाठान्तर आ रूपान्तरक श्रृंखला अछि। लोककण्ठ, छपल पोथी, समाचार-पत्र, ई-पत्रिका, शब्दकोश आ पाठकीय चर्चा एक-दोसरकेँ बदलैत अछि। समकालीन मैथिलीक साहित्येतिहास लिखबाक लेल एहि परस्परालम्बनकेँ आधार बनाओल जा सकैत अछि।

‘मिथिला मिहिर’क पत्रकारीय परम्परा आ ‘विदेह’क अन्तरजालीय प्रकाशन बीच तुलना करैत माध्यमक सामाजिक प्रभाव बुझबाक अवसर भेटैत अछि। पहिल कालमे सम्पादन, डाक-वितरण, मुद्रण आ सीमित संस्थागत प्रवेश प्रमुख छल; नव कालमे डिजिटलीकरण, निरन्तर अभिलेखन आ व्यापक पुनर्प्रसारण सम्भव भेल। मुदा नव काल पूर्ण समतावादी स्वतः नहि अछि। लोकप्रियताक माप, सम्पादकीय पूर्वग्रह, संजालक पहुँच आ स्थायी संरक्षणक संकट पुरान असमानताकेँ नव रूप देबाको सम्भावना रखैत अछि। इएह आलोचनात्मक सावधानी इतिहासक तुलना निष्पक्ष बनबैत अछि।

संरचनागत असमानता आ आलोचनाक मर्यादा

ग्रन्थक शीर्षक प्रीति ठाकुर आ गजेन्द्र ठाकुरकेँ संयुक्त रूपसँ सामने अनैत अछि, मुदा सामग्रीक अनुपात समान नहि अछि। कृपानन्द ठाकुरपर एकटा दीर्घ संस्मरणात्मक लेख, प्रीति ठाकुरपर दसटा समीक्षा/इतिहास/साक्षात्कार सम्बद्ध सामग्री, आ गजेन्द्र ठाकुरपर उनतीसटा नामित आलेख-साक्षात्कारक क्रम देखबा योग्य अछि। ई असमानता महज अंकगणित नहि; पाठकीय ध्यानक वितरणक प्रश्न अछि। स्त्री रचनाकारक इतिहास पुनःस्थापित करबाक घोषणा तखन अधिक प्रभावी होइत जखन दृश्य-भाषाक विधात्मक विश्लेषण, चित्रकथा-प्रतिसंस्करण, बालपाठकक प्रत्यक्ष प्रतिक्रिया आ रचनात्मक श्रमक अध्ययन सेहो पर्याप्त विस्तार पबैत।

दोसर सीमा प्रशंसात्मक शब्दावलीक पुनरावृत्ति अछि। ‘ऐतिहासिक’, ‘अभूतपूर्व’, ‘पहिल’ आ ‘विराट’ सन विशेषण अनेक आलेखमे उपलब्धिक ऊर्जा व्यक्त करैत अछि, मुदा स्रोतक पारस्परिक जाँच बिना वैज्ञानिक निष्कर्ष नहि बनैत। एकटा सम्पादित पुस्तकक भरोसामे विविध लेखकक मत राखब स्वाभाविक अछि; तथापि शोध-परम्पराक दृष्टिसँ दावासभक समयरेखा, दस्तावेजी आधार आ पूर्ववर्ती प्रयासक सम्पूर्ण उपस्थिति आवश्यक अछि। प्रस्तुत ग्रन्थ स्वयं एहन जाँचक भरपूर सामग्री दैत अछि, से एकर प्रशंसनीय विशेषता अछि।

तेसर सीमा ऐतिहासिक विषयसभक असमान गहराइ अछि। पञ्जीपर विस्तृत सामग्री उपलब्ध अछि, मुदा लोकनायकक कथाक अन्तर्विरोध, दृश्य-माध्यमक सौन्दर्यशास्त्र, पत्रिकाक पाठकवर्ग आ मुक्त अभिलेखक सामाजिक उपयोगपर तुलनात्मक अध्ययन आर अधिक अपेक्षित अछि। ई सीमासभकेँ गणना मात्र न बुझी; ई भविष्यक विशिष्ट अनुसन्धान-विषयसभक मानचित्र अछि। पुस्तक एहन प्रश्न उत्पन्न करैत अछि जकर समाधान कदाचित् एक सम्पादित ग्रन्थमे समाएबो सम्भव नहि छल।

शोध-पद्धति, प्रमाण आ व्याख्याक विश्वसनीयता

एहि अध्ययनमे मूल संकलनक सम्पादकीय भूमिका, खण्डीय विन्यास, विषय-समूह, चयनित आलोचनासभ, साक्षात्कार आ ग्रन्थक अन्तर्गत रचना-सूचीक पारस्परिक तुलना कएल गेल अछि। ऐतिहासिक क्रमक ठाम संकलनमे कहल गेल बातकेँ लेखकक कथनक रूपमे लेल गेल अछि; जतए विदेहक पुस्तक-सूची कृतिक प्रकाशन-वर्ष वा विधा-पहिचानक अतिरिक्त पुष्टिक अवसर दैत अछि, ओतए ओकर उपयोग सहायक स्रोतक रूपमे कएल गेल अछि। उपर्युक्त विधि ‘मूल लेखकक रचना’ आ ‘रचनापर समीक्षकक मूल्याङ्कन’केँ एक वस्तु मानबाक त्रुटिसँ बचबैत अछि।

ऐतिहासिक विवेचनमे सन्दर्भक स्तरक भेद आवश्यक अछि। प्रकाशित कृतिक उपलब्धता एक प्रकारक तथ्य अछि; ओकर ‘पहिल’ वा ‘श्रेष्ठ’ होयबाक दावा दोसर प्रकारक निर्णय; आ ओकर सामाजिक प्रभाव तेसर प्रकारक अनुसन्धानक विषय अछि। एहि तीनूक मिलान बिना साहित्यिक सम्मान इतिहासक स्थान लऽ सकैत अछि। समान रूपसँ लोकपरम्परा चित्रकथामे उपस्थित अछि—ई कथन चित्रकथाक सामग्रीसँ जाँचल जा सकैत अछि; मुदा एहि उपस्थिति द्वारा सामाजिक भेदभाव निश्चित रूपसँ समाप्त भऽ गेल—एहन निष्कर्ष लेल भिन्न प्रकारक प्रमाण अपेक्षित अछि।

निष्कर्ष: नव अर्थमे ‘सेतु’

‘प्रीति कारण सेतु बान्हल’क स्थायी महत्त्व एहि बातमे अछि जे ई मैथिलीक साहित्यिक काजकेँ केवल रचना-प्रकाशनक संकुचित अर्थमे नहि देखैत। विद्यालय आ गामक सामाजिक स्मृति, स्त्री द्वारा निर्मित दृश्य-आख्यान, लोकदेवता आ उपेक्षित नायकक पुनर्पाठ, डिजिटल पत्रिकाक जनक्षेत्र, पञ्जीक ऐतिहासिक संरक्षण, लिपि आ कोशक निर्माण तथा कथा-उपन्यासक सामाजिक आलोचना—ई सभ एक संग साहित्यिक जीवनक व्यापक संरचना उघारैत अछि। साहित्यक इतिहास केवल महान कृति आ नामक

इतिहास नहि, माध्यम, सहकर्मी, पाठक, सम्पादक आ पहुँचक शर्तसभक इतिहास सेहो थिक—ग्रन्थक ई मूल संकेत विशेष महत्त्व रखैत अछि।

एहि उपलब्धिक संग एकर आलोचनात्मक सीमासभ सेहो स्पष्ट अछि। दावाक दस्तावेजी परीक्षण, स्त्री आ पुरुष रचनाकारक बीच अधिक सन्तुलित विवेचन, व्यक्तिक प्रतिष्ठा आ संस्थाक स्वतंत्र इतिहासक पृथक्करण, पञ्जीक सामाजिक बहिष्करणपर गम्भीर विचार आ डिजिटल पहुँचक वस्तुनिष्ठ अध्ययन अगिला अनुसन्धानक आवश्यकता अछि। ग्रन्थक भीतर उपलब्ध मतभेद एहि कार्यक्रमक वैधता दैत अछि। सही अर्थमे ‘सेतु’ तखने बनैत अछि जखन प्रशंसा, प्रश्न, प्रमाण आ असहमति पारस्परिक संवादमे रहय। एहि कसौटीपर ई सम्पादित पुस्तक समकालीन मैथिली आलोचनाक एकटा महत्त्वपूर्ण स्रोत-ग्रन्थ, बहुस्वरीय सांस्कृतिक दस्तावेज आ भावी साहित्येतिहास लेखन लेल विचारोत्तेजक आधार बनि सामने अबैत अछि।

विस्तृत सन्दर्भ-सूची

- मूल संकलनमे प्रकाशित आलेख आ साक्षात्कार प्राथमिक सन्दर्भ छथि। सहायक प्रकाशन-सूचना केवल विदेहक साहित्यिक अभिलेखसँ ग्रहण कएल गेल अछि।
- अनचिन्हार, आशीष (सम्पादक)। प्रीति कारण सेतु बान्हल—Redefining Maithili। २०२४। ISBN 978-93-340-0956-9।
 - अनचिन्हार, आशीष। “प्रथम गणेश पद गाओल देवता मनाओल हे...” (सम्पादकीय भूमिका)। पूर्वोक्त संकलन।
 - झा, सियाराम ‘सरस’। “करोट फेरैत गामक निदर्शक: के.एन.टी.” पूर्वोक्त संकलन।
 - वर्मा, डॉ. शेफालिका। “प्रीति ठाकुरक गोनू झा आ आन मैथिली चित्रकथा।” पूर्वोक्त संकलन।
 - ठाकुर, प्रो. वीणा। “गोनू झा आ आन मैथिली चित्रकथा।” पूर्वोक्त संकलन।
 - झा, डॉ. रमण। “‘गोनू झा आ आन मैथिली चित्रकथा’ आ ‘मैथिली चित्रकथा’।” पूर्वोक्त संकलन।

- झा, शिव कुमार 'टिल्लू'। "गोनू झा आ आन मैथिली चित्रकथा"; "मैथिली चित्रकथा"; "मिथिलाक लोकदेवता।" पूर्वोक्त संकलन।
- कुमार, धीरेन्द्र। "प्रीति ठाकुरक दुनू चित्रकथापर एक नजरि।" पूर्वोक्त संकलन।
- मण्डल, दुर्गानन्द। "नेना लेल सुन्दर चित्रकथा।" पूर्वोक्त संकलन।
- अनचिन्हार, आशीष। "मैथिली चित्रकथा केर प्रारम्भिक इतिहास (२००२ सँ २०१६)।" पूर्वोक्त संकलन।
- ठाकुर, प्रीति। "मैथिलीक पहिल चित्रकथा लेखिका प्रीति ठाकुर केर साक्षात्कार।" प्रश्नकर्ता: आशीष अनचिन्हार। पूर्वोक्त संकलन।
- झा, कल्पना। "विदेह डिजिटल पुस्तकालय: पठन-पाठनक सौखीन लोक लेल वरदान।" पूर्वोक्त संकलन।
- झा, कीर्तिनाथ। "मैथिली डिजिटल पत्रकारिताक सूत्रधार: गजेन्द्र ठाकुर।" पूर्वोक्त संकलन।
- कामत, लाल देव। "मैथिलीक इंटरनेट मैन: गजेन्द्र ठाकुर।" पूर्वोक्त संकलन।
- झा, विनयानन्द। "पञ्जी साहित्यमे गजेन्द्र ठाकुरक योगदान।" पूर्वोक्त संकलन।
- ठाकुर, जगदीशचन्द्र 'अनिल'। "की थिक पञ्जी-प्रबन्ध।" पूर्वोक्त संकलन।
- मिश्र, डॉ. कैलाश कुमार। "दूषण पञ्जी: गजेन्द्र ठाकुर केर मैथिली संस्कृति पर सार्वभौमिक योगदान।" पूर्वोक्त संकलन।
- झा, भवनाथ। "मिथिलाक पञ्जी आ ओकर संरक्षणक दिशामे श्री गजेन्द्र ठाकुर।" पूर्वोक्त संकलन।
- मिश्र, डॉ. शिव कुमार। "मिथिलाक धरोहरिक संरक्षक गजेन्द्र ठाकुर।" पूर्वोक्त संकलन।
- सिंह, उदयनारायण 'नचिकेता'। "गजेन्द्र ठाकुरक मैथिली-अंग्रेजी, अंग्रेजी-मैथिली आ अंग्रेजी-मैथिली कम्प्यूटर शब्दकोशपर।" पूर्वोक्त संकलन।
- झा, लक्ष्मण 'सागर'। "मिथिला मिहिर आ विदेह वेब पत्रिका।" पूर्वोक्त संकलन।
- श्रीनिवास, शिवशंकर। "मैथिलीक पत्रिकामे विशेषांक (विशेष सन्दर्भ—व्यक्तिपरक विशेषांक)।" पूर्वोक्त संकलन।
- ठाकुर, धनाकर। "विदेह ओ गजेन्द्र।" पूर्वोक्त संकलन।
- झा, डॉ. योगानन्द। "मैथिली साहित्यक साधक-अराधक श्री गजेन्द्र ठाकुर।" पूर्वोक्त संकलन।

- सिंह, उदयनारायण ‘नचिकेता’। “गजेन्द्र ठाकुरक कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक।” पूर्वोक्त संकलन।
- अशोक। “गजेन्द्र ठाकुर आ हुनक उपन्यास।” पूर्वोक्त संकलन।
- ठाकुर, अरविन्द। “सहस्त्रबाढनिः हमार दृष्टि मे (किछु टिप्पणी)।” पूर्वोक्त संकलन।
- मण्डल, राजदेव। “कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक लेल पत्र (पत्रोत्तर शैलीक समीक्षा)।” पूर्वोक्त संकलन।
- सिंह, प्रो. प्रेमशंकर। “मैथिली बाल काव्यधारा।” पूर्वोक्त संकलन।
- झा, आभा। “सामाजिक विषमताक तह धरि पैसैत कथा।” पूर्वोक्त संकलन।
- मण्डल, आचार्य रामानन्द। “साहित्यकार गजेन्द्र ठाकुरः व्यक्तित्व आ कृतित्व।” पूर्वोक्त संकलन।
- दत्त, मुकेश। “मैथिली वेब पत्रकारिता केर नव आयाम दैत गजेन्द्र ठाकुर।” पूर्वोक्त संकलन।
- अनचिन्हार, आशीष। “पञ्जी प्रबन्धक प्रकाशन बहन्ने श्रुति प्रकाशन एवं नागेन्द्र कुमार झाक चर्चा।” पूर्वोक्त संकलन।
- गजेन्द्र ठाकुर। “गजेन्द्र ठाकुर केर साक्षात्कार।” प्रश्नकर्ता: आशीष अनचिन्हार। पूर्वोक्त संकलन।
- विदेह। “मैथिली पोथीक अभिलेखः पुस्तक-सूची, प्रीति ठाकुरक मूल आ अनूदित कृति, गजेन्द्र ठाकुरक पुस्तक-संसाधन।” विदेह ई-पत्रिकाक पुस्तक-संग्रह, <https://videha-ejournal.github.io/videha/pothi.htm> (अवलोकनः अक्टूबर २०२६)।
- विदेह। “विदेह ई-पत्रिका आ साहित्यिक संसाधन।” <https://videha-ejournal.github.io/videha/> (अवलोकनः अक्टूबर २०२६)।

समीक्षा ६

सेतुषाम : Vibrant Maithili

सेतुक रूपक आ समावेशी साहित्येतिहास

शोध-सार

आशीष अनचिन्हार सम्पादित 'सेतुषाम: Vibrant Maithili' प्रीति ठाकुर आ गजेन्द्र ठाकुरक कृतित्वक संग-संग आधुनिक मैथिली साहित्यक संस्थागत रूपान्तरणक दस्तावेज थिक। संग्रहमे प्रीति ठाकुरक बाल-साहित्य आ चित्रकथापर दूटा तथा गजेन्द्र ठाकुरक डिजिटल सम्पादन, पञ्जी-संरक्षण, शब्दकोश, बहुलिपि, नव लेखक, जनपक्षधरता, आलोचना आ साहित्येतिहासपर चौदहटा लेख संकलित अछि। एहि अध्ययनक केन्द्रीय स्थापना ई अछि जे ग्रन्थक वास्तविक मूल्य केवल दू व्यक्तिक प्रशस्तिमे नहि, बल्कि साहित्यक रचना, संरचना, प्रसार, अभिलेख, सम्पादकीय चयन आ पाठकीय सहभागिताक संयुक्त परिघटना मानबामे अछि। वेद-सामक 'सेतु' रूपक, स्त्रीक बाल-सृजनक स्थान, जाति-वर्गक प्रवेश, डिजिटल पुस्तकालयक सम्भावना आ मंच-संस्कृतिसँ दूरीक विचार एक-दोसरासँ टकराइत आ जुड़ैत छथि। तथापि स्रोत-प्रमाणक असमानता, लेख सभक प्रशंसात्मक मुद्रा, स्त्री-कृतित्वक अपेक्षाकृत कम विस्तार आ कतेको 'पहिल' सम्बन्धी दावाक ऐतिहासिक परीक्षणक आवश्यकता ग्रन्थक सीमा सेहो चिन्हित करैत अछि। शोध-निबन्ध एहि द्वन्द्वक आलोचनात्मक पद्धतिसँ पढ़ैत साहित्येतिहासक एकटा बहुकेन्द्रीय दृष्टि प्रस्तुत करैत अछि।

बीजशब्द: मैथिली साहित्य, आशीष अनचिन्हार, प्रीति ठाकुर, गजेन्द्र ठाकुर, विदेह, चित्रकथा, डिजिटल मानविकी, पञ्जी, जनपक्षधरता, समानान्तर इतिहास, सम्पादन।

आलोचनाक केन्द्रीय समस्या : कृति, व्यक्ति आ संस्था

आधुनिक भारतीय भाषाक साहित्येतिहास प्रायः कवि, कथाकार, उपन्यासकार आ आलोचकक प्रसिद्ध कृतिक क्रमबद्ध सूचीसँ रचल जाइत रहल अछि। एहि इतिहासमे पत्रिका सम्पादकक श्रम, पुस्तक उपलब्ध करौनिहार लोकक काज, विस्मृत हस्तलिखित सामग्रीक संरक्षण, नव लेखकक आरम्भिक प्रशिक्षण आ बाल-पाठक लेल साहित्यिक दृश्य-संसारक निर्माण परिधिमे रहि जाइत अछि। ‘सेतुषाम’ एही परिधिकेँ विषय बनबैत अछि। ग्रन्थ जे अनुभव सोझाँ अनैत अछि, ओकरा बुझबाक लेल ‘कतेक पोथी लिखल गेल’ मात्र गननासँ काज नहि चलत; ई सेहो देखबाक होयत जे पोथी कोना पाठक धरि पहुँचल, किनकर भाषा छपल, किनकर स्मृति सुरक्षित भेल, आ कोन साहित्यिक आवाजकेँ मान्यता भेटल।

एहि कारण ‘सेतुषाम’क आलोचना दू परतमे होयबाक चाही। पहिल परत थिक संकलित लेखक सभक स्थापना—प्रशंसा, अनुभव, ऐतिहासिक विवरण, असहमति आ भविष्यक प्रस्ताव। दोसर परत थिक स्वयं संग्रहक कृतिरूप—सम्पादन, पाठक-विन्यास, शीर्षक, खण्ड-विभाजन, वैदिक संकेत, लेख सभक आपसी सम्बन्ध आ वैचारिक असमानता। एहि दुनू परतकेँ अलग कएलासँ ई स्पष्ट होइत अछि जे ग्रन्थ कतेक बात प्रत्यक्ष साक्ष्यसँ स्थापित करैत अछि आ कतऽ मूल्यनिर्णय अथवा व्यक्तिपरक अनुभवक आधार लैत अछि। स्वतन्त्र आलोचनाक कार्य एहि भेदकेँ सुरक्षित रखब थिक, श्रद्धा वा असहमतिक कारण एकरा मेटा देब नहि।

संग्रहक स्थापत्य आ सम्पादकीय स्वायत्तता

संकलनक आरम्भ सम्पादक आशीष अनचिन्हारक विस्तृत प्रस्तावनासँ होइत अछि। ओकर बाद योगदानक एकटा विवरणात्मक सूची, प्रीति ठाकुरक रचनाधारित छोट खण्ड आ गजेन्द्र ठाकुरक विविध काजपर केन्द्रित अपेक्षाकृत पैघ खण्ड उपस्थित अछि। मुन्नी कामत आ इरा मल्लिक स्त्री-सृजन, बाल-पाठक आ चित्रभाषाक विमर्श आरम्भ करैत

छथि। तकर विपरीत कैलाश कुमार ठाकुर, विकास वत्सनाभ, भैरव लाल दास, पूनम झा ‘सुधा’, शिव कुमार प्रसाद, कल्पना झा, मुन्नाजी, धनाकर ठाकुर, हितनाथ झा, प्रवीण कुमार झा, कुन्दन कर्ण, जगदानन्द झा ‘मनु’, उज्ज्वल कुमार झा आ मुकेश आनन्द डिजिटल साहित्यिक क्षेत्रक विविध आयाम खोलैत छथि। एहि क्रममे लेखक सभक भिन्न सामाजिक अनुभव, शैली आ ज्ञानानुशासन संग्रहकें एकसुर प्रशस्तिपत्र बनबासँ आंशिक रूपेँ रोकैत अछि।

दू बनाम चौदह लेखक अनुपात मात्र आकस्मिक संख्या नहि, अर्थनिर्माणक एकटा सम्पादकीय परिस्थिति अछि। शीर्षक आ प्रस्तावना संयुक्त कृतित्वक दावा करैत अछि, मुदा उपलब्ध विवेचनक प्रमुख भाग गजेन्द्र ठाकुरक संस्था-निर्माण आ बौद्धिक श्रममे केन्द्रित रहैत अछि। प्रीति ठाकुरक रचनात्मक उपलब्धिक चर्चा सीमित आकारमे संकलित अछि। फलतः पाठक संयुक्त योगदानक कल्पना करैत अछि, किन्तु अध्ययनक विस्तार बराबर नहि पबैत अछि। एकरा सम्पादकक मंशाक निश्चयात्मक दोष मानबाक बदला ग्रन्थक संरचनात्मक सीमा कहब बेसी युक्तिसंगत होयत। एहि असन्तुलनकें चिन्हित करनाइ प्रीति ठाकुरक स्वतन्त्र साहित्यिक स्थानकें स्पष्ट करबाक पहिल शर्त थिक।

प्रस्तावनामे सम्पादक पहिने सम्पादित ‘प्रीति कारण सेतु बान्हल—Redefining Maithili’क संग एहि नव संग्रहक पूरक सम्बन्ध बुझबैत छथि। पहिल संग्रह लोकगीत-आधारित प्रस्तुति राखैत छल, नव संग्रह वैदिक ऋचा द्वारा अपन आन्तरिक खण्डकें जोड़ैत अछि। सम्पादक नूतन लेख आमन्त्रित करबाक, पुरान लेखकक पुनरावृत्तिकें सीमित रखबाक आ मुख्यधारासँ बाहरक रचनाकारकें स्थान देबाक कारण सेहो स्पष्ट करैत छथि। ई सम्पादकीय स्व-विवेचन महत्त्वपूर्ण अछि: पोथी अपन संरचना पर स्वयं टिप्पणी करैत अछि, तँ ओकरा केवल विषय-संग्रह नहि, सम्पादन-सिद्धान्तक प्रस्तुति सेहो मानल जा सकैत अछि।

सेतुषामक अर्थ-संरचना : साम, सेतु आ सार्वजनिक नैतिकता

‘सेतुषाम’ शीर्षकक अर्थ एकटा प्राचीन सामगायनक आधुनिक पुनर्पाठसँ खुलैत अछि। सम्पादक मूल मन्त्र आ सामगायनक बीचक अन्तरक चर्चा करैत क्रोध, लोभ, अश्रद्धा आ असत्यक पारगमनक चारिटा प्रतीकात्मक साधन चिन्हित करैत छथि। हुनक संक्षिप्त व्याख्यामे लिखल अछि—“चारि टा सेतु बनाउ, चारि टा बाधा पार करू।” एहि वाक्यक महत्त्व शब्दार्थक पूर्ण तादात्म्यमे नहि, सांस्कृतिक संकेतक नूतन आलोचनात्मक प्रयोगमे अछि। सामवेदक सेतु एतऽ साहित्यिक नैतिकताक रूपक बनैत अछि: सृजनक रास्ता केवल व्यक्तिगत प्रतिभासँ नहि, आदान-प्रदान, संयम, विश्वसनीयता आ सहयोगसँ निर्मित होइत अछि।

आगाँ बढ़ि सम्पादक साहित्यिक जीवनमे मंच-माला-माइक, पुरस्कारक मोह, रचनाचौर्य आ दोसर लेखककें आगू बढ़बाक मार्ग बन्द करबाक प्रवृत्तिकें बाधा मानैत छथि। एहि परिवर्तनमे पौराणिक-धार्मिक संकेत समकालीन संस्थागत आलोचनामे प्रवेश करैत अछि। रूपकक शक्ति एहि बातमे अछि जे ओ पाठककें मूल्यांकनक नैतिक शब्दावली दैत अछि; ओकर सीमा एहि बातमे अछि जे नैतिक आदर्शसँ तथ्यगत उपलब्धि स्वतः प्रमाणित नहि होइत। उदाहरणार्थ, पुरस्कारक समालोचना आ साहित्यिक सम्मानक व्यवहार—दूनोंकें अलग ऐतिहासिक सामग्रीसँ जाँचबाक आवश्यकता रहैत अछि।

लोक आ वेदक सम्बन्धक विषयमे सम्पादक स्पष्ट रूपेँ ‘लोक-वेद’क क्रम चुनैत छथि। पहिल ग्रन्थक लोकगायन आ दोसरक वैदिक आलोक एके सांस्कृतिक सूत्रक अलग स्वरूप बनैत अछि। तथापि एहि सम्बन्धक इतिहास स्वयं एकरूप नहि: लोकपरम्पराक स्वतन्त्रता, स्त्रीगानक परम्परा, पञ्जीकरणक सामाजिक सत्तासम्बन्ध आ वेदाधारित प्रतिष्ठाक अन्तर देखैत रहब आवश्यक अछि। एहि तनावकें अनदेखल करबासँ ‘लोक-वेद’ केवल शोभाक प्रतीक बनि रहि जाएत; प्रश्नक रूपमे पढ़लासँ ई ग्रन्थक समावेशी दावाकें कसबाक कसौटी बनैत अछि।

प्रीति ठाकुरक चित्रकथा : बाल-साहित्यक स्वतन्त्र सृजन-क्षेत्र

मुन्नी कामतक लेख ‘बाल मनक सिद्धहस्त लेखिका—श्रीमती प्रीति ठाकुर’ बालसाहित्यकेँ भाषाक भविष्यक नींव मानैत अछि। हुनक विवेचनमे बाल-पाठक लेल सहज कथा, दृश्य आकर्षण आ लोक-सांस्कृतिक परिचयक महत्त्व प्रमुख अछि। ओ ‘गोनू झा आ आन मैथिली चित्रकथा’, ‘मैथिली चित्रकथा’, ‘मिथिलाक लोकदेवता’ आ ‘विद्यापतिक पुरुष परीक्षा’क उल्लेख करैत छथि। एहि कृति सभक माध्यमे हास्य-बुद्धिक लोकपात्र, मिथिलाक वीरगाथा, लोकदेवता आ शास्त्रीय कथासम्पदाक बच्चाक संसारमे पुनः प्रवेश होइत अछि। एहि आधारपर चित्रकथा केवल छोट बच्चाक मनोरञ्जन नहि, भाषा-अर्जन आ सांस्कृतिक स्मृतिक संयुक्त माध्यम थिक।

इरा मल्लिकक ‘मैथिली चित्रकथा मे प्रीति ठाकुरक योगदान’ एहि रूपक चित्रकला-सम्बन्धी अध्ययनकेँ आगू बढ़बैत अछि। हुनकर दृष्टिमे रेखा, रङ्ग, आकृति, परम्परागत कचनी-भरनीक तकनीक आ कथा-वस्तुक समन्वय महत्त्वपूर्ण अछि। साहित्यिक कथा चित्रमे आबिते ओकर अनुक्रम, वातावरण, पात्रक देहभाषा आ पाठकीय अनुमान अलग रूप पबैत अछि। विशेषतः छोट पाठक ओहि दृश्यसँ कथाक सम्बन्ध रचैत अछि जाहि ठाम शब्द-भण्डार एखन विकसित होइत अछि। एकटा सशक्त चित्रकथा शब्दकेँ निरर्थक नहि बनबैत, बल्कि चित्र आ भाषा एक-दोसराक कमी पूरा करैत अछि।

बाल-साहित्यक ऐतिहासिक चर्चा लेल चित्रकथाक प्रारम्भ सम्बन्धी ‘पहिल’क दावाकेँ सावधानीसँ लेब आवश्यक अछि। संकलित लेखकक कथन ऐतिहासिक सूचना दैत अछि, मुदा सम्पूर्ण पुरान पत्र-पत्रिका, विद्यालयी पुस्तक, लोकप्रिय चित्रमाला आ निजी प्रकाशनक तुलनात्मक सूची बिना पूर्वताक निर्णायक स्थापना उचित नहि होयत। अधिक विश्वसनीय निष्कर्ष ई अछि जे प्रस्तुत ग्रन्थ प्रीति ठाकुरक चित्रकथा-प्रयोगकेँ मैथिलीमे विधागत प्रतिष्ठा देबाक एकटा महत्त्वपूर्ण चरणक रूपमे दर्ज करैत अछि। सम्पादित पुस्तकक एहि मूल्यांकनकेँ स्वयं मूल चित्रकथा सभक कथानक, चित्र-विन्यास आ भाषा-परीक्षणसँ आगू विस्तृत कएल जा सकैत अछि।

बाल-पाठकक सक्रियता : पाठ सँ चित्र धरि

प्रीति ठाकुरक रचनाक सम्बन्धमे मुन्नी कामत जाहि विशेष प्रयोगक चर्चा करैत छथि, ओ अलग ध्यान माँगैत अछि: बच्चा कथाकें पहचानय, चित्रक शीर्षक दिअय, संवाद जोड़य आ रङ्ग भरय। एहि विधिमे पाठक कृतिक केवल उपभोक्ता नहि रहैत, सह-रचनाकारक भूमिका पबैत अछि। जखन कथाक रिक्त स्थान बच्चा स्वयं भरैत अछि, तखन कथाबोधक संग निर्णय, दृश्य-कल्पना, भाषा-प्रयोग आ आत्मविश्वासक अभ्यास सम्भव होइत अछि। ई विशेषता चित्रकथाकें बाल-शिक्षा आ साहित्यिक सृजनक संधिस्थलपर राखैत अछि।

तथापि प्रत्येक बाल-पाठक समान आयु, भाषिक पृष्ठभूमि अथवा दृष्टि-अनुभव नहि राखैत अछि। अतः चित्रकथाक उपादेयता जाँचबाक लेल बाल-वर्गक भिन्नता, चित्रक स्पष्टीकरण, भाषा-सरलता आ बच्चाक वास्तविक प्रतिक्रिया आवश्यक कसौटी होयत। संग्रहमे एहन व्यवस्थित पाठकीय अध्ययन कम भेटैत अछि। कथाक मूल्यांकन प्रायः ‘सुन्दर’, ‘सरल’, ‘सफल’ सन विशेषणपर ठाढ़ अछि। आलोचनाक अगिला डेग प्रत्येक चित्रकथा-संग्रहमे पात्रक स्वतन्त्रता, स्त्री-पात्रक सक्रियता, जातीय प्रतिमान, लोकदेवताक रूपान्तरण आ कथान्तक नैतिक परिणाम जाँचब होयत। एहि आधारपर प्रीति ठाकुरक योगदानक असल साहित्यिक विशिष्टता आरो स्पष्ट होयत।

डिजिटल मैथिली : प्रकाशनसँ आगू भाषा-अवसंरचना

कैलाश कुमार ठाकुर आ विकास वत्सनाभक लेख डिजिटल रूपान्तरणकें मात्र वेबसाइट बनयबाक कथा नहि मानैत अछि। हिनक सभक विवेचनमे आरम्भिक अन्तर्जाल-उपस्थिति, विदेहक नियमित प्रकाशन, पुरान आ नव लेखकक पहुँच, शब्दकोश, बहुलिपिक प्रयोग आ खोजयोग्य साहित्यक सम्भावना एक संग आबैत अछि। एहन अवसंरचनामे सम्पादक केवल रचना स्वीकार करनिहार व्यक्ति नहि रहैत; ओ पाठ्य-सामग्रीक वितरण, अभिलेख-निर्माण आ पाठकीय समुदायकें जोड़निहार मध्यस्थ सेहो बनैत अछि। साहित्यक

इतिहासमे छापाखानाक भूमिका पर जेना विचार होइत अछि, डिजिटल समयमे सर्वसुलभ पाठ-भण्डार आ खुला सम्पादकीय प्रक्रिया सेहो विश्लेषणक विषय हेबाक चाही।

‘विदेह’क सन्दर्भमे बहुलिपि प्रकाशनक चर्चा मैथिली पहचानक एक आवश्यक विवाद सोझाँ अनैत अछि: भाषा आ लिपि एके वस्तु नहि थिक। देवनागरीमे पाठक-संख्या बढ़ाओल जा सकैत अछि, तिरहुता आ कैथीक संरक्षण इतिहासक सम्पर्क राखैत अछि, आन लिपिक प्रयोग भाषिक अभिव्यक्तिक दायरा बढ़बैत अछि। मुदा बहुलिपिक घोषणा आ व्यवहारिक पठनीयता अलग-अलग प्रश्न छथि। सही युनिकोड पाठ, मानकीकृत रूपान्तरण, मुद्रणयोग्यता, खोजबाक क्षमता, दृष्टिबाधित पाठक लेल सुगमता आ दीर्घकालीन संग्रहण—एहि सभक उपयोग-स्तरक साक्ष्यक बिना उपलब्धि सम्पूर्ण ठहराओल नहि जा सकैत अछि।

विकास वत्सनाभक शब्दकोश सम्बन्धी विवेचन एही प्रसंगकें आधार दैत अछि। मैथिली-अंग्रेजी, अंग्रेजी-मैथिली आ संगणकीय पारिभाषिक कोश-सृजन डिजिटल भाषाक व्यवहारिक जीवनसँ जुड़ल अछि। शब्द-निर्माण मात्र अनुवादक प्रश्न नहि: वैज्ञानिक विषयक शिक्षण, प्रशासनिक व्यवहार, प्रौद्योगिकी-सम्प्रेषण आ लेखकक आत्मविश्वास एहि पर निर्भर करैत अछि। साहित्येतिहासक आधुनिक पाठमे कोशकार आ भाषा-प्रौद्योगिकी कर्मिकें साहित्यिक परिवेश निर्माणक भागीदारक रूपमे देखल जा सकैत अछि, यद्यपि कोशक भाषावैज्ञानिक शुद्धता अलग परीक्षण माँगैत अछि।

पञ्जी-संरक्षणक द्वन्द्व : दस्तावेज, सामाजिक न्याय आ अधिकार

भैरव लाल दासक ‘मिथिलाक पंजी संरक्षणमे गजेन्द्र ठाकुरक योगदान’ संग्रहक सभसँ ऐतिहासिक आ सामाजिक दृष्टिसँ जटिल लेखमे एक थिक। पञ्जी वंशावली, विवाह-संरचना, कुल-सम्बन्ध आ स्थानीय इतिहासक सामग्री प्रदान करैत अछि; संगहि ओकर परम्परागत व्यवहार जातिगत क्रम-विभाजन आ सामाजिक नियंत्रणसँ सेहो सम्बन्धित रहल अछि। दास एहि दुनू तथ्यकें साथे रखैत छथि। ओ पञ्जी-प्रकाशनक दस्तावेजी

महत्त्व देखबैत ऐतिहासिक पञ्जीकार-व्यवस्था, दरभंगा-राजक हस्तक्षेप, विवाहक बदलैत प्रथा आ पोथी सभक भौतिक क्षयक चर्चा करैत छथि। अतः संरक्षणक अर्थ पुरान व्यवस्था केँ ज्यों-का-त्यों आदर्श मानब नहि, बल्कि ओकर सामग्रीकेँ ऐतिहासिक विवेकसँ सुरक्षित करब होयबाक चाही।

एहि सन्दर्भमे ‘जीनोम मैपिंग’क नामसँ प्रकाशित कार्यक चर्चा करैत समय विशेष सावधानी आवश्यक अछि। पञ्जी-सम्बद्ध वंशावलीक संकलन आ जैववैज्ञानिक आनुवंशिक अनुक्रमण एकटा समान विधि नहि थिक। ग्रन्थमे प्रयुक्त नाम केँ प्रकाशन-शीर्षक आ वंशावली-अनुसन्धानक सन्दर्भमे बुझब चाही, न कि जैविक परीक्षणक स्वतः प्रमाण मानि लेब। पञ्जीक सर्वसुलभताक विषयमे सेहो केवल डिजिटल उपलब्धता पर्याप्त नहि: वंशावलीमे जीवित व्यक्तिक सूचना, निजता, गलत वंश-निर्धारणक जोखिम आ जाति-आधारित बहिष्कारक पुनरुत्पादनक प्रश्न सम्मिलित अछि। जनोपयोगी अभिलेखक उद्देश्य तखने पूर्ण होयत जखन पहुँच, सन्दर्भ, संशोधन आ अधिकारक नीति सेहो स्पष्ट हो।

दासक लेखक एक महत्वपूर्ण गुण ई अछि जे ओ एकतरफा उत्सवधर्मितासँ हटि पञ्जी-संरक्षणक आर्थिक आ प्रबन्धकीय संकट सेहो देखबैत छथि। पञ्जीकारक जीविका, स्थानीय ज्ञानक उत्तराधिकार, नष्ट होइत हस्तलिखित सामग्री आ दूर बसल मैथिलक आवश्यकता—एहि सभकेँ एक संग राखि विचार कएल गेल अछि। संग्रहक इतिहास-संवेदी अध्ययनक लेल एहि लेखसँ एकटा पद्धति प्राप्त होइत अछि: इतिहासकेँ जीवित समाजसँ अलग नहि कएल जा सकैत अछि।

जनपक्षधरता : विचारक विविधता आ प्रवेशक लोकतन्त्र

पूनम झा ‘सुधा’क ‘डायभर्सिटी आ विदेह’ विविधताकेँ भाषा, लेखक आ विषय तीनू स्तरपर देखैत अछि। मुन्नाजीक ‘मैथिलीमे गैर सवर्ण लेखक कमी एवं गजेन्द्र ठाकुर’ साहित्यिक प्रवेशक जातिगत असमानताकेँ तीव्र वाणीमे प्रश्नांकित करैत अछि। धनाकर

ठाकुरक 'विदेह पत्रिकाक जनपक्षधरता' एहि दूनू दृष्टिक बीच तर्कसंगत मध्यस्थता करैत अछि। ओ 'भाषायी जनपक्षधरता', 'लेखकक वर्गक जनपक्षधरता', 'विषय एवं विधाक जनपक्षधरता', 'पुरस्कारक जनपक्षधरता' आ 'विशेषांकक जनपक्षधरता' रूपेँ पाँचटा कसौटी प्रस्तावित करैत छथि। एहि विभाजनसँ जनपक्षधरता भावनात्मक विशेषण नहि रहि आलोचनाक परीक्षणीय विषय बनि जाइत अछि।

धनाकर ठाकुरक विवेचनक सभसँ महत्वपूर्ण सूक्ष्मता ई थिक जे ओ पहिनेसँ अस्तित्वमे रहल असवर्ण मैथिली रचनाकारक उपस्थिति स्वीकारैत छथि, मुदा हुनका लेल समान स्वीकृतिक साहित्यिक वातावरणक अभावकेँ मुद्दा बनबैत छथि। तें 'पहिने कोनो लेखक नहि छल' आ 'पहिने समुचित सम्पादकीय अवसर नहि छल'—दूनू कथन एक नहि छथि। एहि अन्तरकेँ सुरक्षित रखनाइ सामाजिक साहित्येतिहासक आधारभूत आवश्यकता थिक। 'विदेह'क योगदानकेँ एही पारिभाषिक स्पष्टतासँ देखब अधिक प्रमाणिक होयत।

जनपक्षधरता केवल लेखकक जातिगत परिचयसँ नहि मापल जा सकैत अछि। रचनामे श्रम, भूमि, स्त्री-अनुभव, शिक्षा, आर्थिक शोषण, लोकभाषा आ स्थानीय न्यायसँ सम्बन्धित प्रश्न कोना उपस्थित छथि, तकर विश्लेषण सेहो जरूरी अछि। शिव कुमार प्रसाद अपन दीर्घ लेखमे अनेक लेखकक उदाहरण आ कृतिक सन्दर्भ जोडैत छथि। एहि उदाहरण सभसँ संकेत भेटैत अछि जे प्रतिनिधित्वक साहित्यिक मूल्यांकन लेखकक संख्या आ रचनाक आन्तरिक रूप दूनूक संग कएल जाए। एकटा समावेशी पत्रिकाक वास्तविक शक्ति विविध स्वरक सह-अस्तित्व मात्र नहि, हुनका सभकेँ समान आलोचनात्मक कसौटी पर रखबाक साहसमे अछि।

नव लेखक, सम्पादकीय सहयोग आ साहित्यिक पीढ़ी

कल्पना झाक 'विदेह आ नव लेखक' सम्पादनक शिक्षकीय पक्षकेँ केन्द्रमे रखैत अछि। नव लेखकक भाषा सँवारब, अर्थ स्पष्ट करब, पूर्ववर्ती कृति सभसँ परिचित करायब आ पाठकीय आत्मविश्वास जगायब—ई श्रम प्रसिद्ध रचनाक अन्तिम रूपमे बहुधा अदृश्य रहि

जाइत अछि। कल्पना झा एहि अदृश्य श्रमकेँ साहित्यिक उत्तराधिकारक अङ्ग बनबैत छथि। एहि स्थापना मे एकटा महत्त्वपूर्ण अन्तर्ध्वनि अछि: नव लेखक तैयार करब पुरान लेखककेँ हटा देब नहि, बल्कि परम्परा आ प्रयोगक बीच जीवित संवाद रचब थिक।

कुन्दन कर्णक छोट आत्मकथ्य एहि सामान्य तर्ककेँ व्यक्तिगत प्रमाणक रूपमे रोचक बनबैत अछि। सोशल मीडियापर रचना, मुन्नाजीक सम्पर्क आ पत्रिकासँ परिचयक अनुभवक माध्यमे ओ नव लेखकक यात्रा बुझबैत छथि। एकर महत्त्व मात्र श्रद्धापरक उल्लेखमे नहि, रचनाकार बनबाक सामाजिक प्रक्रियाक झलकमे अछि। परन्तु एक व्यक्तिक अनुभवसँ सभ लेखकक अनुभवक निष्कर्ष निकालब उचित नहि। अधिक समग्र अध्ययन लेल प्रारम्भिक प्रकाशन, सम्पादकीय संवाद, संशोधित रचना आ पश्चातवर्ती पुस्तकक सामग्री एकत्रित करबाक आवश्यकता अछि।

एहि विषयक ऐतिहासिक तुलना करैत समय आधुनिक मैथिलीमे सम्पादकीय पत्र-पत्रिका, गामक गोष्ठी, विद्यालयी पत्रक आ साहित्यिक सभा सभक परम्परा ओझरायल रूपमे सोझाँ अबैत अछि। ‘विदेह’ एहि परम्परासँ सर्वथा असम्बद्ध नव सृष्टि नहि, बल्कि ओकर डिजिटल विस्तार आ नव सामाजिक संरचना थिक। भिन्नता वितरणक गति, स्थायी अभिगम, प्रवासी पाठकक पहुँच आ भूगोल-पार संवादमे अछि। निरन्तरताक संग भिन्नताकेँ देखब इतिहासलेखनकेँ अधिक सक्षम बनबैत अछि।

आलोचनाशास्त्र : पक्षधरता आ पाठक निकटता

हितनाथ झाक ‘गजेन्द्र ठाकुर आ मैथिली समीक्षाशास्त्र’ लेखकक बौद्धिक श्रमक स्वरूप चिन्हित करैत अछि। ओ बीहनि कथा, लघुकथा, गजल, हाइकू, छन्द, शब्द-प्रयोग आ गद्य-पद्यक समीक्षा सम्बन्धी विचारक परिचय दैत छथि। एहि लेखमे दोसर कृतिक उद्धरणक माध्यमे आलोचनक एकटा महत्त्वपूर्ण सूत्र प्रस्तुत अछि—“लेखकक आइडियोलॉजी पानिमे नून सन हेबाक चाही, पानिमे तेल सन नहि।” हितनाथ झा द्वारा

इद्धत एहि कथनक आशय ई अछि जे विचारधारा कृतिक अर्थमे घुलल रहय, ओकर स्वायत्त संवेदना पर बाहरी आवरण बनि नहि चढ़ि जाय।

तथापि ‘विचारधारा’ आ ‘निरपेक्षता’कें सरल विरोधी जोड़ी नहि मानल जा सकैत अछि। प्रत्येक समीक्षा कोनो-ने-कोनो प्रश्न, रुचि, मूल्य अथवा सामाजिक अनुभवसँ आरम्भ होइत अछि। युक्तिपूर्ण आलोचना ओहि आधारकें पारदर्शी बनबैत अछि, आ अपन निर्णयकें भाषा, बिम्ब, संरचना, कथानक, पात्र, छन्द अथवा साक्ष्यसँ प्रमाणित करैत अछि। हितनाथ झाक विवेचन मैथिलीमे विधा-विशिष्ट समीक्षात्मक उपकरणक आवश्यकता पर प्रकाश दैत अछि, मुदा एहि उपकरण सभक व्यवहारिक सफलता जाँचबाक लेल स्वतन्त्र पाठ-समीक्षा आवश्यक अछि।

एहि बिन्दुपर पुस्तकक रूपक आ आलोचनाक पद्धतिक बीच रोचक सम्बन्ध स्थापित होइत अछि। समावेशी सम्पादकक कर्तव्य सभ विचारक लेख छापब थिक; समीक्षकक कर्तव्य सभ विचारकें एक समान मान्य कहि देब नहि, बल्कि प्रमाणक आधार पर निर्णय देब थिक। ‘सेतुषाम’क योगदान एही जटिल सह-अस्तित्वमे अछि—विविध लेखकीय दृष्टिकें एकत्र करब आ ओकर अन्तर्निहित अन्तरकें पाठक पर छोड़ब।

इतिहास, शब्दकोश आ बहुभाषिक आधुनिकता

प्रवीण कुमार झाक जीवन-कृतित्वपरक लेख आ उज्ज्वल कुमार झाक नवजागरण सम्बन्धी विवेचनमे गजेन्द्र ठाकुर लेखक, सम्पादक, इतिहासकार, शब्दकोशकार आ लिपि-अन्वेषक रूपमे उपस्थित छथि। एहि बहुक्षेत्रीय काजक एकटा समान लक्ष्य देखाइत अछि—पुरान ज्ञानक कड़ी टूटय नहि, आ नव साधनक कारण भाषाक भविष्य संकुचित नहि हुअय। पाण्डुलिपिक संरक्षण, शब्दकोश-निर्माण, अनुवाद आ डिजिटल प्रकाशन अलग-अलग श्रम छथि; तें सभकें एकटा नायकताक सामान्य प्रशंसामे विलीन करनाइ उचित नहि। प्रत्येक क्षेत्रक अपन तकनीकी प्रमाण, त्रुटि-संशोधनक विधि आ पाठकीय उपयोगिता अछि।

विदेहक शोध-सूचीमे उपलब्ध ‘मैथिली साहित्यक समानान्तर इतिहास’, ‘मैथिली बाल-उपन्यासक समीक्षाशास्त्र’ आ ‘मैथिलीक एकटा समानान्तर व्याकरण, रचना आ भाषा-विज्ञान’ सन अध्ययन एहि बहुविध परियोजनाक पाठ-परम्परागत विस्तार देखबैत अछि। एहि कृति सभक शीर्षके संकेत दैत अछि जे साहित्यकें केवल प्रतिष्ठित विधा अथवा एक मानक भाषारूपमे सीमित करबाक आग्रहसँ विमुख भऽ वैकल्पिक पाठक वर्गक संग विचार कएल जा रहल अछि। मुदा शीर्षक अथवा शोध-सूचीमे उपस्थिति रचनाक आलोचनात्मक गुणवत्ता स्वयं सिद्ध नहि करैत; एहि सम्बद्ध कृति सभक स्वतन्त्र मूल्यांकन अलग शोधक विषय थिक।

बहुभाषिक आधुनिकताक प्रसंगमे नेपाल आ भारतक मैथिली अनुभवक अन्तर सेहो स्मरणीय अछि। कैलाश कुमार ठाकुरक लेखमे नेपालीय मैथिली प्रयोग, शिक्षा आ राज्यभाषिक दबावक अनुभव प्रखर रूपमे आबैत अछि। सम्पादकीय टिप्पणी एहि भाषायी भिन्नताकें पाठकक लेल व्याख्यायित करैत अछि। एकर महत्त्व ई थिक जे मानकता आ शुद्धता एकरूपता नहि बनि जाय; समकालीन मैथिली साहित्यक इतिहासमे सीमा-पार लेखकक वास्तविक शब्दावली आ सामाजिक स्थितिकें अपन स्थान भेटबाक चाही।

मंचक अनुपस्थिति : साहित्यिक सार्वजनिकताक वैकल्पिक अर्थ

मुकेश आनन्दक ‘मिथिला-मैथिलीक मंच सँ गजेन्द्र ठाकुरक अनुपस्थिति : कारण एवं प्रभाव’ ग्रन्थक अन्तिम मुख्य लेख थिक। एकर स्वर अन्य अनेक प्रशंसात्मक लेखसँ फराक अछि। लेखक साहित्यिक आयोजन, परिचयक राजनीति, सम्मानक आकांक्षा, गुट-सम्बन्ध आ पाठकीय विवेकक अभावपर असहज प्रश्न करैत छथि। हुनका अनुसार स्थायी रचनात्मक श्रम आ सार्वजनिक मंचपर नियमित उपस्थिति एकहि वस्तु नहि। एहि प्रसंगमे ‘अनुपस्थिति’ नकारात्मक रिक्तता नहि, साहित्यिक कार्यक स्वतन्त्र अवकाशक संकेत बनैत अछि।

मुदा मंचसँ दूरीकेँ स्वयं नैतिक श्रेष्ठताक एकमात्र प्रमाण मानब सम्भव नहि। साहित्यिक सभा प्रत्यक्ष वाचन, सामूहिक शिक्षण आ वाद-विवादक अवसर सेहो देइत अछि; डिजिटल मंच ओहि सभक विकल्पक संग पूरक सेहो भऽ सकैत अछि। मूल प्रश्न एहि बातक अछि जे मंचक निर्णय, अवसर-वितरण आ आलोचना कतेक पारदर्शी अछि। जे आलोचना परम्परागत संस्थापर लागू होइत अछि, से वैकल्पिक संस्थापर सेहो लागू हेबाक चाही। एहि समरूप कसौटीसँ पुस्तकक वैचारिक विश्वसनीयता बढ़ैत अछि।

प्रशंसाक भाषा आ प्रमाणक गाम्भीर्य

जगदानन्द झा ‘मनु’, कुन्दन कर्ण आ उज्ज्वल कुमार झाक लेखमे असाधारण परिश्रम, अप्रतिम सेवा आ युग-निर्माणक अनेक उपमा भेटैत अछि। एहि उपमा सभक अपन सामाजिक प्रयोजन अछि—उपेक्षित श्रमकेँ दृश्य बनायब आ पाठकमे सम्मानक भावना उत्पन्न करब। किन्तु शोधपरक निर्णयक लेल ‘अद्वितीय’, ‘प्रथम’, ‘अनुपम’, ‘युगपुरुष’ सन पद पर्याप्त नहि। निर्णायक दावाक संग कृति-सूची, प्रकाशन-विवरण, पूर्ववर्ती कृतिक तुलना, तिथि-साक्ष्य आ प्रत्यक्ष पाठगत उदाहरण अनिवार्य छथि। ग्रन्थ एहि सबकेँ सर्वत्र समान कठोरतासँ प्रस्तुत नहि करैत अछि।

प्रशंसाक अधिकता स्वयं एकटा साहित्यिक लक्षण थिक। जखन संस्थागत मान्यताक अभावक अनुभूति होइत अछि, तखन समर्थक आलोचना प्रतिमान गढ़बाक भाषा ग्रहण करैत अछि। एकरे कारण रचनाक अन्तर्विरोध, रूपगत कमीक चर्चा अथवा विचारक सीमाक परीक्षण पाछू पड़ि सकैत अछि। ‘सेतुषाम’मे एहि प्रवृत्तिक संग धनी प्रश्नसूचक लेख सभ सेहो उपस्थित अछि। संग्रहक श्रेष्ठ उपयोग ओहि क्षण सम्भव अछि जखन पाठक प्रशंसा आ प्रश्न, दूनूकेँ एक-दोसरक संशोधनक रूपमे पढ़ैत छथि।

पृथक पाठविश्लेषण : चारिटा आलोचनात्मक केन्द्र

सम्पादकीय प्रस्तावनाक निकट पाठमे पहिल केन्द्र ‘सेतु’ थिक। एकर मूल अर्थ अलग वस्तुकेँ जोड़ब, बाधा पार करब आ यात्रा सम्भव बनायब अछि। प्रस्तावनासँ अध्याय-विन्यास धरि ई बिम्ब धार्मिक संकेतसँ सामाजिक क्रियामे रूपान्तरित होइत अछि। साहित्यिक संस्थाक तुलना नदीक किनारसँ करब सहज अछि, मुदा ई बिम्ब तखन कारगर बनैत अछि जखन ओ प्रश्न करय—कोन किनार जोडल गेल, कोन लोक एखनो पार नहि भऽ सकल, आ कोन सामाजिक शर्तक कारण पारगमन कठिन अछि। एहि रूपमे शीर्षक स्वयं आलोचनात्मक प्रश्नक स्रोत बनैत अछि।

दोसरा केन्द्रमे प्रीति ठाकुरक चित्रकथाक पाठ-प्रकृति अछि। एतऽ कथा शब्दमे मात्र नहि, दृश्यक्रममे प्रकट होइत अछि। गोनू झाक चातुर्यक कथा चित्रक माध्यमे नेनाक लग अबैत काल मात्र हास्य नहि रचैत; ओ लोकज्ञानक दृश्य प्रतिमा सेहो तैयार करैत अछि। ‘पुरुष परीक्षा’क कथाक रचनात्मक पुनर्प्रस्तुति एक विशिष्ट परिवर्तन करैत अछि—विद्वत् परम्पराक सामग्रीक बालपाठमे रूपान्तरण। मुदा एहन रूपान्तरणक अन्तर्गत मूल कथाक हिंसा, जाति, स्त्री-पात्र, शिक्षा अथवा नीति सम्बन्धी अनुद्धाटित मान्यता सभक पुनर्पाठ जरूरी अछि। मूल बालपोथीक स्वतन्त्र अनुशीलन बिना एतऽ कथक संकेत मात्र स्थापित होइत अछि, अन्तिम निर्णय नहि।

तेसरा केन्द्रमे भैरव लाल दासक लेख अछि। एकर विशिष्टता सूचनात्मक विषयकेँ सामाजिक प्रक्रियासँ जोड़ब थिक। वंशावलीक महत्त्वक संग ओकर जातिगत सीमा, पञ्जीकारक जीविका आ विवाह-प्रथाक बदलैत रूपक चर्चा एतऽ इतिहासकेँ विरोधाभास-सहित उपस्थित करैत अछि। चौथा केन्द्रमे धनाकर ठाकुरक लेख अछि, जाहिमे जनपक्षधरताकेँ पाँच भिन्न कसौटीमे विभाजित कऽ सम्पादकीय यशगानकेँ विवेचनात्मक रूप देल गेल अछि। ई दूनू लेख संग्रहमे आलोचनात्मक सम्भावनाक विशेष प्रखर उदाहरण छथि।

एहि चारू केन्द्रकें मिलायबासँ संकलनक कथ्यक एकटा आकृति बनैत अछि—रूपक, दृश्य-कथा, दस्तावेज आ संस्थागत नैतिकता। ई चारू साहित्यक परम्परागत ‘लेखक-रचना’ सम्बन्धसँ आगू जा कऽ ‘लेखक-माध्यम-समाज-पाठक’क बहुपक्षीय सम्बन्ध निर्मित करैत छथि। एहि स्तरपर ‘सेतुषाम’ एकटा व्यक्ति-केन्द्रित सम्मानग्रन्थसँ आगू बढ़बाक सम्भावना राखैत अछि।

मैथिली साहित्यक इतिहासमे तुलनात्मक स्थान

ज्योतिरीश्वरक गद्य-साहित्य, विद्यापतिक काव्य-संसार आ लोकगाथाक दीर्घ परम्परा मैथिलीक अभिव्यक्तिक भिन्न आधार प्रस्तुत करैत अछि। ओहि समय साहित्यक पाठ-प्रसार पाण्डुलिपि, गायन, पाठक-समुदाय, दरबारी तथा स्थानीय आश्रयक जटिल सम्बन्धपर निर्भर छल। आधुनिक मुद्रण-परम्परा आ पत्रिकाक विकास साहित्यक संग पाठकक नूतन सम्बन्ध जोड़लक। डिजिटल प्रकाशन एहि क्रममे तेसर सामाजिक चरणक रूपमे पढ़ल जा सकैत अछि—जाहि ठाम लेखनक प्रसार अत्यल्प समयमे दूर-दूर धरि सम्भव होइत अछि आ पुरान सामग्रीक पुनर्प्राप्ति सहज भऽ सकैत अछि। ई क्रम सरल ‘उन्नति’क रेखा नहि, अलग-अलग माध्यमक लाभ आ क्षतिक इतिहास थिक।

‘सेतुषाम’क अधिकांश लेख लेखक-कृतित्वक संग साहित्यिक प्रसारक इतिहास जोड़ैत छथि। एहि कारण ग्रन्थ केँ आधुनिक मैथिली साहित्यक संस्थागत इतिहासक स्रोत मानल जा सकैत अछि। काव्य वा कथा-कृतिसँ तुलना कएल जाए तऽ एहि ग्रन्थमे साहित्यिक मूल्य रचनाक भाषिक सौन्दर्य मात्र नहि, बल्कि सम्पादन, सङ्ग्रहण, मानकीकरण, प्रशिक्षण आ भाषा-नीतिक श्रमसँ सेहो उत्पन्न होइत अछि। तथापि ऐतिहासिक समता बनौने रखबाक लेल पुरान पत्रिका, मुद्रित संग्रह, नेपालक मैथिली सम्पादन, महिला लेखन आ अनौपचारिक लोकमंचक योगदानकेँ तुलनाक बाहर नहि राखल जा सकैत अछि।

धनाकर ठाकुर द्वारा मैथिली पत्रिकाक विकास-स्मृतिमे ‘मिथिला मिहिर’क उल्लेख विशेष ध्यान देबाक योग्य अछि। एकरा पढ़ैत स्पष्ट होइत अछि जे लेखक स्वयं एकटा

पुरान सम्पादकीय परम्परासँ तुलना करैत छथि। फलतः आधुनिकता केँ ‘पहिनुक सभटा शून्य, आब सभटा नव’ सन दावेमें बदलि देब इतिहासबोधक विरुद्ध होयत। नव योगदानक वास्तविक महत्त्व ओकर पूर्ववर्ती परम्परासँ सम्बन्ध आ ओकर परिवर्तन-क्षमताक उचित विश्लेषणसँ सिद्ध होइत अछि।

समानान्तर साहित्येतिहास : उपलब्धि आ सावधानी

समानान्तर इतिहासक एकटा महत्त्वपूर्ण प्रयोजन थिक ओहि स्रोतक खोज जे प्रतिष्ठित ग्रन्थसूची आ अकादमिक मानचित्रसँ छुटि गेल। ग्रामीण लेखक, असवर्ण साहित्यकार, प्रवासी पाठक, तिरहुता-कैथीक परम्परा, स्त्रीक बाल-रचना, स्थानीय गाथा आ बहुभाषिक सीमा-समाज—एहि सभकेँ एकत्रित कएलासँ साहित्यिक इतिहासक विस्तार होइत अछि। ‘सेतुषाम’ एहन प्रयासक सामाजिक दस्तावेज थिक। संकलनमे संस्थाक दरवज्जा खोलबाक कथा बारम्बार उठैत अछि; ई आवृत्ति स्वयं अध्ययनक विषय अछि।

मुदा समानान्तर इतिहास लिखिते वैकल्पिक सत्ता-केन्द्र गढ़बाक जोखिम सेहो रहैत अछि। पुरान मानदण्डक विरोध मात्र पर्याप्त नहि; नूतन मानदण्ड स्वयं कतेक खुला, आत्मसमीक्षात्मक आ प्रमाणनिष्ठ अछि, ई देखबाक होयत। उदाहरण लेल जाति-आधारित बहिष्कारक प्रतिरोध कएल जाए तखन स्त्री-सृजनक उपेक्षा, कमजोर प्रमाण, सम्पादकीय पक्षपात अथवा प्रतिद्वन्द्वी संस्थाक एकतरफा चित्रण पर सेहो प्रश्न उठबाक चाही। एहन आत्मालोचनक माध्यमे समानान्तर साहित्येतिहास प्रतिरोधक घोषणासँ आगू बढ़ि ज्ञानक विश्वसनीय साधन बनैत अछि।

ग्रन्थक समीक्षात्मक सीमा आ भविष्यक अनुसंधान

सम्पूर्ण संग्रह पढ़ला पर किछु व्यवस्थित सीमा सोझाँ अबैत अछि। प्रीति ठाकुरक प्रत्यक्ष बालकथाक विस्तृत रूपात्मक पाठ कम अछि। गजेन्द्र ठाकुरक विशाल रचनाकर्मक प्रसंगमे सेहो सम्पादन आ सेवा सम्बन्धी चर्चा अधिक, कविता-कथा-नाटकक निकट पाठ

अपेक्षाकृत कम अछि। संस्थागत उपलब्धिक ‘पहिल’ अथवा ‘एकमात्र’क अनेक दावा सर्वेक्षणमूलक प्रमाण माँगैत अछि। किछु लेखक स्वतंत्र साक्ष्य प्रस्तुत करैत छथि, किछु अपन अनुभवरूपी स्मृतिपर निर्भर छथि; एहि भेदकें ग्रन्थ प्रायः एकरूप पाठक-विन्यासमे रखैत अछि। एतऽ अधिक स्पष्ट स्रोत-वर्गीकरण आ परस्पर विरोधी साक्ष्यक परीक्षण उपयोगी होइत।

दोसर सीमा आलोचनक भाषामे अछि। उदात्त प्रशंसा आ भावनात्मक उपमा समाजक कृतज्ञताकें अभिव्यक्त करैत अछि, मुदा एकर अति कृति-समीक्षाकें दुरुह बना सकैत अछि। तेसर सीमा संस्थाक आत्मवर्णनसँ जुड़ल अछि: लेखक, सम्पादक आ प्रशंसित कर्मी सभक पारस्परिक सहयोग एकटा मूल्यवान तथ्य थिक, किन्तु स्वतंत्र बाह्य परीक्षणक विकल्प नहि। चौथी सीमा इतिहासक पद्धतिमे अछि: पुरान स्त्री-साहित्य, पुस्तक-संस्कृति, जाति-वर्गक विविधता, नेपाल-भारतक संयुक्त साहित्यिक परिसंचरण आ बालसाहित्यक आरम्भिक प्रयास पर तुलनात्मक शोधक पर्याप्त अवसर एखनहु शेष अछि।

आगाँक अनुसंधान लेल ‘सेतुषाम’क लेखक-निबन्ध सभकें केन्द्र मानि अलग-अलग मूल कृतिक पाठसमीक्षा, सम्पादकीय दस्तावेजक इतिहास, चित्रकथा-विज्ञान, पञ्जी-सामाजिकता आ डिजिटल पत्रिकाक लेखकीय नेटवर्कक अध्ययन तैयार कएल जा सकैत अछि। एहि काजमे मात्र प्रशंसक वा विरोधी पाठ नहि, बहुविध साक्ष्यक तुलनात्मक परीक्षण अपेक्षित अछि। पुस्तकक दीर्घकालीन उपादेयता एतहिसँ उत्पन्न होयत जे ई भावी आलोचककें प्रश्नक सूची, रचनाकारक नाम आ स्रोतक प्रवेशद्वार उपलब्ध करबैत अछि।

निष्कर्ष : सेतु बनब, सेतु जाँचब

‘सेतुषाम: Vibrant Maithili’क समेकित मूल्यांकनमे दूटा कथन एक संग सत्य ठहरैत अछि। एक दिस ग्रन्थ आधुनिक मैथिली सार्वजनिकताक महत्त्वपूर्ण दस्तावेज अछि: ई चित्रकथाक स्त्री-सृजन, नव लेखकक उभार, डिजिटल पुस्तकालय, भाषा-प्रौद्योगिकी,

पञ्जी-अभिलेख, बहुलिपि प्रयोग, जनपक्षधरता आ आलोचनक नूतन उपकरणक विविध प्रसंगकेँ एक ठाम अनैत अछि। दोसर दिस एकर कएक लेख उपलब्धिक परिभाषा आ प्रमाणक अनुशासनमे समान रूपेँ कठोर नहि छथि। एही कारण पुस्तककेँ आलोचनाविहीन विजयकथा मानब ओकर वास्तविक शोध-मूल्यकेँ घटायब होयत।

एहि ग्रन्थक सर्वाधिक सार्थक उपहार ‘सेतु’क प्रश्न थिक। सेतु ककरा जोड़ैत अछि? ककर पहुँच एखनो बाँकी अछि? जे ज्ञान सार्वजनिक भेल, ओ कतेक विश्वसनीय आ सर्वोपयोगी अछि? लेखकक योगदानक स्मृति साहित्यिक आत्मालोचना सहि सकैत अछि कि नहि? एहि प्रश्नसभक उत्तर खोजैत साहित्येतिहास व्यक्ति-पूजा अथवा संस्था-विरोधक सीमासँ बाहर अबैत अछि। ‘सेतुषाम’क महत्त्व एहि कारण स्थायी भऽ सकैत अछि जे ई मैथिलीक नव साहित्यिक संरचना देखय लेल सामग्री दैत अछि—आ एकर आलोचनात्मक पाठ ओहि संरचनाकेँ न्यायपूर्ण, प्रमाणसम्पन्न आ अधिक समावेशी बनेबाक आग्रह करैत अछि।

सन्दर्भ-सूची

मूल संग्रह, ओहिमे संकलित स्वतन्त्र आलेख, सन्दर्भित पोथी आ विदेहमे उपलब्ध शोध-सूचीक आधारपर। जाहि कृतिक स्वतन्त्र मूल पाठ एहि अध्ययनमे उपयोग नहि भेल अछि, ओकर उल्लेख सन्दर्भगत सम्बन्धक रूपमे कएल गेल अछि।

अनचिन्हार, आशीष (सम्पा.). सेतुषाम: Vibrant Maithili. गजेन्द्र ठाकुर आ प्रीति ठाकुरक कृतित्वपर आलोचनात्मक आलेख-संग्रह, २०२६। ISBN 978-93-5717-358-2।

अनचिन्हार, आशीष (सम्पा.). प्रीति कारण सेतु बान्हल—Redefining Maithili. मैथिली कृतित्व-अध्ययनक पूर्ववर्ती सम्पादित संग्रह; विदेह पोथी-सूचीमे उपलब्ध।

अनचिन्हार, आशीष. “गणानां त्वा गणपतिं हवामहे...”. सेतुषाम: Vibrant Maithili मे सम्पादकीय प्रस्तावना।

कामत, मुन्नी. “बाल मनक सिद्धहस्त लेखिका—श्रीमती प्रीति ठाकुर”. सेतुषाम: Vibrant Maithili।

मल्लिक, इरा. “मैथिली चित्रकथा मे प्रीति ठाकुरक योगदान”. सेतुषाम: Vibrant Maithili।

ठाकुर, कैलाश कुमार. “मैथिलीक डिजिटल युगक निर्माता: गजेन्द्र ठाकुर”. सेतुषाम: Vibrant Maithili।

वत्सनाभ, विकास. “डिजिटल युगमे मैथिली: विदेह आ गजेन्द्र ठाकुर”. सेतुषाम: Vibrant Maithili।

दास, भैरव लाल. “मिथिलाक पंजी संरक्षणमे गजेन्द्र ठाकुरक योगदान”. सेतुषाम: Vibrant Maithili।

झा, पूनम ‘सुधा’. “डायबर्सिटी आ विदेह: आधुनिक मैथिली साहित्यक चेतनामूलक पुनर्जागरण”. सेतुषाम: Vibrant Maithili।

प्रसाद, शिव कुमार. “डायबर्सिटी आ विदेह”. सेतुषाम: Vibrant Maithili।

झा, कल्पना. “विदेह आ नव लेखक”. सेतुषाम: Vibrant Maithili।

मुन्नाजी. “मैथिलीमे गैर सवर्ण लेखक कमी एवं श्री गजेन्द्र ठाकुर”. सेतुषाम: Vibrant Maithili।

ठाकुर, धनाकर. “विदेह पत्रिकाक जनपक्षधरता”. सेतुषाम: Vibrant Maithili।

झा, हितनाथ. “गजेन्द्र ठाकुर आ मैथिली समीक्षाशास्त्र”. सेतुषाम: Vibrant Maithili।

झा, प्रवीण कुमार. “गजेन्द्र ठाकुर: लेखक, इतिहासकार आ आधुनिक मैथिली अध्ययनक शिल्पकार”. सेतुषाम: Vibrant Maithili।

कर्ण, कुन्दन. “अनुपम अतुल्य योगदान”. सेतुषाम: Vibrant Maithili।

झा, जगदानन्द ‘मनु’. “मैथिली साहित्यमे गजेन्द्र ठाकुर जीक योगदान”. सेतुषाम: Vibrant Maithili।

झा, उज्ज्वल कुमार. “गजेन्द्र ठाकुर: मैथिली भाषा-साहित्यक नवजागरणक सेतु-पुरुष”. सेतुषाम: Vibrant Maithili।

आनन्द, मुकेश. “मिथिला-मैथिलीक मंच सँ गजेन्द्र ठाकुरक अनुपस्थिति: कारण एवं प्रभाव”. सेतुषाम: Vibrant Maithili।

ठाकुर, प्रीति. गोनू झा आ आन मैथिली चित्रकथा. श्रुति प्रकाशन, २००८; कृतिक सूचना मुन्नी कामत आ इरा मल्लिकक आलेखमे वर्णित।

ठाकुर, प्रीति. मैथिली चित्रकथा. श्रुति प्रकाशन, २००९; कृतिक सूचना मुन्नी कामतक आलेखमे वर्णित।

ठाकुर, प्रीति. मिथिलाक लोकदेवता. श्रुति प्रकाशन, २०१०; कृतिक सूचना मुन्नी कामतक आलेखमे वर्णित।

ठाकुर, प्रीति. विद्यापतिक पुरुष परीक्षा. बालपाठक लेल रूपान्तरित चित्रकथात्मक कृति; कृतिक सूचना संग्रहित आलोचनामे वर्णित।

अनचिन्हार, आशीष. मैथिली वेब पत्रकारिताक इतिहास. विदेहक पोथी-सूची आ शोध-सूचीमे दर्ज।

ठाकुर, गजेन्द्र. मैथिली समीक्षाशास्त्र. हितनाथ झाक आलेखमे उद्धृत आलोचना-ग्रन्थ।
ठाकुर, गजेन्द्र. “मैथिली बाल-उपन्यासक समीक्षाशास्त्र”. विदेह, अङ्क ४४७, अगस्त २०२६।

ठाकुर, गजेन्द्र. “मैथिली साहित्यक समानान्तर इतिहास”. विदेह, अङ्क ४५०, सितम्बर २०२६।

ठाकुर, गजेन्द्र. “मैथिली लेल दलित साहित्य समीक्षाशास्त्र”. विदेह, अङ्क ४४०, अप्रैल २०२६।

ठाकुर, गजेन्द्र. “मैथिलीक एकटा समानान्तर व्याकरण, रचना आ भाषा-विज्ञान (ठेठी-अंगिका आ बज्जिकाकेँ संग लऽ कऽ)”. विदेह, अङ्क ४४७, अगस्त २०२६।

विदेह. पोथी-सूची, गद्य-सूची आ शोध-सूची. मैथिली साहित्य आ अनुसन्धानक अनुक्रमित संग्रह। <https://videha-ejournal.github.io/videha/pothi.htm> ; <https://videha-ejournal.github.io/videha/prose.htm> ;
<https://videha-ejournal.github.io/videha/research/index.html>।

खण्ड २

गजल-सृजन : शिल्प, समाज आ काव्यभाषा

मैथिली साहित्यक पुनर्पाठ

समीक्षा ७

अनचिन्हार आखर

अनुशासित गजल-शिल्प आ जनपक्षीय चेतना

सारांश

आशीष अनचिन्हारक “अनचिन्हार आखर” (२०११) मैथिली गजलक आधुनिक विकासमे एहन कृति अछि जतए रचनात्मक प्रयोग आ विधागत आत्मपरीक्षण एक-दोसराक पूरक बनि उपस्थित होइत अछि। संग्रहमे ७८ गजल, ३२ रुबाइ आ २ कता अछि। एहि रचनासभक पहिने लेखक गजलक इतिहास, मतला, मकता, काफिया, रदीफ, बहर, उच्चारण आ मैथिली ध्वनिव्यवस्थाक पारस्परिक सम्बन्धपर विचार करैत छथि। प्रस्तुत अध्ययन संग्रहक सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, प्रेमपरक आ आत्मसन्दर्भी आयामक पृथक पाठविश्लेषण करैत अछि। किसानक भूमि, महंगाई, भुखमरी, संसदीय निष्प्रभाविता, राजनीतिक अवसरवाद, प्रेमक अनुरोध आ गजलक आत्मचेतनाक विभिन्न रूप एकटा साझा काव्यभूमि निर्मित करैत अछि। लेखमे ऐतिहासिक तुलनासँ ई प्रतिपादित कएल गेल अछि जे मैथिली गजलक विकासक प्रश्न केवल बाह्य अरबी-फारसी-उर्दू शिल्प ग्रहण करबाक प्रश्न नहि, वरन् मैथिली उच्चारण, शब्दसंसार आ सामाजिक अनुभवकें ओहि शिल्पमे स्वाभाविक बनएबाक सेहो अछि। संगहि पुनरावृत्ति, रूढ़ बिम्ब, प्रत्यक्ष वक्तव्य आ शिल्पगत आग्रहक सीमासभक आलोचनात्मक परीक्षण कएल गेल अछि।

बीजशब्द : मैथिली गजल; आशीष अनचिन्हार; काफिया; रदीफ; बहर; रुबाइ; कता; सामाजिक व्यंग्य; जनपक्षीय कविता; मैथिली साहित्येतिहास।

१. प्रस्तावना : अपन भाषा आ अनुशासनक बीच रचनात्मक संवाद

मैथिली कविता-परम्परामे गीत, पद, लोकधुन आ छन्दक दीर्घ इतिहास रहल अछि। एहिमे गजलक प्रवेश आ ओकर स्वतंत्र पहचान एकटा अतिरिक्त प्रश्न उत्पन्न करैत अछि : कोनो बाह्य साहित्यिक विधा स्थानीय भाषामे आबि केवल अपन तकनीकी ढाँचा सुरक्षित रखत, अथवा नव भाषाक उच्चारण, सांस्कृतिक स्मृति आ अनुभवक दबाबमे नव रूप धारण करत? “अनचिन्हार आखर” एहि प्रश्नक एकटा ठोस रचनात्मक उत्तर प्रस्तुत करैत अछि। एक दिस कवि गजलक व्याकरणकें गंभीरतासँ ग्रहण करैत छथि, दोसर दिस गजलमे माटि, खेत, जनताक भूख, राज-काज, अन्हार, मोन, नोर आ प्रेमक स्थानीय संसार कें प्रतिष्ठा दैत छथि।

कृतिक नाम सेहो सांकेतिक अछि। “अनचिन्हार” ओहि अप्रतिष्ठित वा अनपहिचान आवाजक परिचायक मानल जा सकैत अछि जे स्थापित साहित्यिक अभिरुचि आ अभिजन-केन्द्रित विमर्शक बाहरसँ बजैत अछि। “आखर” भाषा मात्र नहि, रचना, प्रतिरोध, स्मृति आ पहिचानक आधार अछि। शीर्षकक एहि सम्भावित अर्थ-क्षेत्रकें प्रत्यक्ष लेखक-घोषणा नहि, पाठक-केन्द्रित आलोचनात्मक व्याख्याक रूपमे देखबाक चाही।

संग्रहक प्रकाशन-विवरणमे लेखक आशीष अनचिन्हार, प्रकाशक श्रुति प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण २०११ आ ISBN 978-93-80538-48-8 निर्दिष्ट अछि। शीर्षकक अंग्रेजी परिचयमे सेहो एकरा मैथिली गजल, रुबाइ आ कताक संग्रह कहल गेल अछि। संग्रह स्वयं बतबैत अछि जे ई केवल कविताक पोथी नहि, विधागत बहसक आरम्भिक दस्तावेज सेहो अछि।

एहि विवेचनाक मुख्य आधार संग्रहक रचना आ लेखकक आरम्भिक विवेचन अछि; साहित्यिक इतिहासक पार्श्वभूमि, पुस्तक-सूची आ पछातिक गजलविमर्श लेल विदेह पोथी-संग्रह, विदेह शोध-सूची आ विदेहमे प्रकाशित उपलब्ध आलोचनात्मक सामग्रीक सहारा लेल गेल अछि। अन्य वेबसाइट वा असम्बद्ध अनुमानकें प्रमाणक स्थान नहि देल गेल अछि।

२. कृतिक संगठन आ काव्यात्मक अभिप्राय

पोथीक क्रमविन्यास ध्यान देबाक योग्य अछि। पहिने गजलक इतिहास आ व्याकरणपर लेखकक दीर्घ विवेचन, तकर बाद समर्पण, रचनानुक्रम, गजल, रुबाइ आ कता—ई क्रम पाठकक रचनाक आस्वादनसँ पहिने विधाक व्याकरणिक संसारमे प्रवेश करबैत अछि। शिल्पक शिक्षा आ काव्यानुभूति एतए दू पृथक विभाग नहि, एकहि साहित्यिक परियोजनाक दू आधार बनैत अछि।

गजलक अठहत्तर रचनामे मनोदशा आ कथ्यक विस्तृत फैलाव अछि। आरम्भक कतेको गजलमे सत्ता, शोषण आ विषमता पर प्रहार अछि; मध्यक रचनामे प्रेम, विरह, सम्बन्ध, प्रकृति आ रचनात्मक आत्मचेतना व्यापक रूपेँ अबैत अछि; अन्तिम समूहमे सामाजिक आलोचना पुनः तीक्ष्ण रूप ग्रहण करैत अछि। काव्यक्रम पूर्णतः एकरेखीय नहि अछि, आ एहि अस्थिर आवागमनसँ गजलक स्वतन्त्र शेर-धर्मिता स्फुट होइत अछि।

बत्तीस रुबाइ संग्रहक भाव-विस्तारकें संक्षिप्त चारि पाँतिक संरचनामे लै जाइत अछि। कताक दू रचना प्रेमक वर्णन, सौन्दर्य आ मिथकीय साम्यक रूपमे उपस्थित अछि। तात्पर्य ई जे पुस्तक मूलतः गजल-केन्द्रित होइतहुँ अन्य लघु काव्यरूपक स्वतंत्र सम्भावना कें सेहो स्थान दैत अछि।

३. आरम्भिक विधा-विवेचन : इतिहास, व्याकरण आ उच्चारण

लेखकक “गजलक संक्षिप्त परिचय” भाग अरबी कसीदा, फारसी गजल, उर्दू काव्य-परम्परा आ मैथिलीमे गजलक आगमनक एकटा अनुक्रम रखैत अछि। इमरउल कैस, रूदकी, सादी, हाफिज, अमीर खुसरो, मीर आ गालिब सन नामक उल्लेखसँ लेखक गजलकें बहुभाषी इतिहासक अन्तर्गत राखैत छथि। मैथिली सन्दर्भमे कविवर जीवन झाक “सुन्दर संयोग”क उल्लेख विशेष महत्वपूर्ण अछि। एकरा लेखकक ऐतिहासिक प्रतिपादनक रूपमे ग्रहण कएल जा सकैत अछि; एहि संक्षिप्त लेखमे सभ मध्यवर्ती ऐतिहासिक दावा स्वतंत्र प्रमाणसँ पूर्णतः सिद्ध कएल गेल अछि, एहन मानब उचित नहि।

मतला, मकता, शेर, मिसरा, रदीफ, काफिया, गैर-मुसल्लसल गजल, मुसल्लसल गजल, बहर, तखल्लुस आदि पारिभाषिक शब्द सभक विवेचन लेखकक गंभीर शिल्प-चिन्तनक परिचायक अछि। खास बात ई जे ओ केवल अरबी-फारसीक नियम यांत्रिक रूपेँ उद्धृत नहि करैत छथि; मैथिलीमे विभक्ति जुड़बाक प्रवृत्ति, अनुस्वार-चन्द्रबिन्दुक प्रयोग, संयुक्ताक्षर, ह्रस्व-दीर्घक लेखन-उच्चारण आ मात्रा-साम्यक व्यवहारिक कठिनाई पर सेहो विचार करैत छथि।

कविक दावा अछि जे भाषागत रूप आ बोलचालक ध्वनिप्रवाहकेँ बुझने बिना काफिया निर्धारित नहि कएल जा सकैत अछि। एहि विचारक महत्त्व एहि मे अछि जे गजल-व्याकरण मैथिलीकेँ अनुकरण करएबला निष्क्रिय भाषा मानि नहि चलैत, अपितु स्वतंत्र ध्वनितन्त्र-वला रचनात्मक भाषा स्वीकार करैत अछि। शिल्पक शुद्धता आ स्थानीय उच्चारणक बीच समन्वय एहि पुस्तकक सर्वाधिक उपयोगी बौद्धिक योगदानसभमे एक अछि।

तथापि आरम्भिक विवेचनमे प्रस्तुत सभ नियम एक समान सार्वदेशिक, निर्विवाद वा भाषावैज्ञानिक रूपेँ अन्तिम निष्कर्ष छथि, से मानि लेब उचित नहि। कतिपय स्थानपर उच्चारणक उदाहरण, परम्परागत छन्दक वर्गीकरण आ भाषिक व्यवहारक सीमा अलग-अलग प्रमाणक अपेक्षा करैत अछि। साहित्यिक सिद्धान्तक रूपमे एहि विवेचनक मूल्य असन्दिग्ध अछि; एकर प्रत्येक उपनियमक स्वतंत्र तकनीकी परीक्षण आ शेर-दर-शेर तक्तीअ एकटा अलग अध्ययनक विषय अछि।

४. चयनित गजलसभक पृथक पाठविश्लेषण

४.१. गजल १ : पूँजी, प्रदर्शन आ मनुष्यक अवमूल्यन

“मालक खातिर तँ माल-जाल बनल लोक” (गजल १)

प्रथम गजल संग्रहक वैचारिक दिग्दर्शन करैत अछि। “माल” आ “माल-जाल”क शब्द-निकटता मनुष्यक भीतर आर्थिक लोभक जाल निर्माण करैत अछि। एहि गजलमे भुखमरी,

प्रदर्शन, सामाजिक व्यवहार आ आत्मविकृतिक चित्र एक दोसरासँ जुड़ैत अछि। कवि केवल गरीबीक वर्णन नहि करैत छथि; धनकें मनुष्यक व्यक्तित्व, नैतिकता आ पारस्परिक सम्बन्धक नियामक बनि जेबाक प्रक्रिया पर प्रहार करैत छथि। “लोक”क पुनरावर्तन व्यक्तिगत अपराधकें सामूहिक प्रवृत्तिक रूप दैत अछि। ई शेर साधारण बोलचालक शब्दसँ व्यापक अर्थ उत्पन्न करबाक उदाहरण अछि।

४.२. गजल १६ : राजनीतिक अन्हार आ व्यंग्यक दोहरा स्वर

“अन्हरे सरकार तँ चला रहल राज-काज” (गजल १६)

एहि रचनामे दोसर पौतिक अन्त्य “शेष कुशल अछि” एकटा स्थायी व्यंग्यात्मक निष्कर्ष बनैत अछि। साधारण समाचार वा चिट्ठीक कुशल-क्षेमक भाषा पर कवि राजनीतिक अस्वस्थताक आरोप करैत छथि। “अन्हरे सरकार” अभिव्यक्ति एक साथ नैतिक दृष्टिहीनता, नीति-विफलता आ सार्वजनिक गैरजिम्मेदारीक संकेत करैत अछि। “शेष कुशल अछि” जतेक बेर दोहराइत अछि, ततेक बेर ओकर साधारण आश्वासन कटु विडम्बनामे बदलैत अछि। एकर काव्यात्मक शक्ति रदीफक अर्थ-परिवर्तनमे अछि—ओहि शब्दसभसँ विश्वासक नहि, अविश्वासक अनुभव उपजैत अछि।

४.३. गजल २३ : स्वयं गजल पर गजल

“गजल सुख जिनगीक गजल दर्द जिनगीक” (गजल २३)

ई रचना विधाक आत्मपरक घोषणाक रूपमे पढ़ल जा सकैत अछि। गजल एतए केवल प्रेम-वचन नहि, सम्पूर्ण जीवनक सुख-दुःखकें भाषा देबाक माध्यम अछि। हिमालय, आगि आ प्रतिरोधक बिम्ब गजलकें आन्तरिक दृढ़ता आ सामाजिक तापसँ जोड़ैत अछि। आत्मसन्दर्भी कविता होयबाक कारण रचना किछु स्थानपर गजल-विधाक प्रशस्तिमे परिणत होइत अछि। मुदा एहि आत्मस्तुतिमे लेखकक रचनात्मक आग्रह स्पष्ट अछि—मैथिली गजलकें सीमित श्रृंगार-विधासँ बाहर जन-जीवनक व्यापक संवेदना दैत स्थापित करब।

४.४. गजल २६ : सम्बोधन आ निकटताक विनम्र व्याकरण

“अपन आँखिमे बसा लिअ हमरा
अपन श्वासमे नुका लिअ हमरा” (गजल २६)

एहि मतलामे “लिअ हमरा”क पुनरावृत्ति प्रेमिकाक लग निकटता माँगबाक सुमधुर विनय बनैत अछि। आँखि आ श्वासक बिम्ब दृष्टि आ जीवन-दूनूकें प्रेमक अधिकार-क्षेत्रमे आनैत अछि। कवि आक्रामक अधिकारक बदला अपनाएल जेबाक आकांक्षा व्यक्त करैत छथि। एहि रचनाक उल्लेख आरम्भिक गजल-विवेचनमे सेहो उदाहरणक रूपमे भेटैत अछि; एहि प्रकारे रचना आ व्याकरणक बीच प्रत्यक्ष सेतु निर्मित होइत अछि। तकनीकी दृष्टिँ पुनरावृत्त “लिअ हमरा” केवल ध्वनि-सौन्दर्य नहि, सम्बन्धक भावात्मक केन्द्र अछि।

४.५. गजल ३१ : भूमि, विचार आ युद्धक अर्थान्तरण

“माटि-पानि-बसात लेल युद्ध
देखू छोटको बात लेल युद्ध” (गजल ३१)

“माटि-पानि-बसात” मनुष्यक अस्तित्वक प्राथमिक आधारक सूची अछि। दोसर पाँतिमे “छोटको बात” एतेक कठोर शब्द “युद्ध”सँ जुड़िते राजनैतिक आ सामाजिक असंगति उजागर करैत अछि। रचना आगाँ आदर्श आ विचारधारा, जर-जमीन तथा संबंधक प्रश्न सेहो उठबैत अछि। एहि गजलमे “युद्ध”क पुनरावृत्ति अर्थबोधक केन्द्र होइतहुँ एकरस घोषणापर निर्भर रहबाक जोखिम पैदा करैत अछि। तथापि रोजमर्रा के वस्तुकेँ वैचारिक संघर्षसँ जोड़बाक कविक चेष्टा उल्लेखनीय अछि।

४.६. गजल ४८ : अन्हार, किसान आ भूखक संयुक्त बिम्ब

“इजोत लेल अन्हरे नगरी जाइत लोक
सपनमे तँ सपनाक भात खाइत लोक” (गजल ४८)

ई दू पाँति कविक सामर्थ्यक तीक्ष्ण उदाहरण अछि। पहिल पाँतिमे प्रकाश खोजबाक दिशा उलटि गेल अछि—लोक अन्हारक नगरी दिस जाइत अछि। दोसर पाँतिमे भात जे

आधारभूत भोजन अछि, से यथार्थसँ विस्थापित भऽ स्वप्नक वस्तु बनि जाइत अछि। स्वप्नमे भोजनक ई स्थिति क्षुधाक सामाजिक यथार्थकेँ अतिशयोक्तिक सहारे करुण बनबैत अछि। एहि गजलमे खेत, शोषण, अकाल आ श्रमजीवी जीवनक आनो उल्लेख अछि। इजोत-अन्हार आ भात-सपना विरोधी युग्म मिलि राजनीतिक असफलताक रूपक रचैत अछि।

४.७. गजल ६० : महँगाइ आ जनप्रतिनिधिक विडम्बना

“सोना भेटत सस्ता महँग चाउर देखब एक दिन” (गजल ६०)

एहि पाँतिमे वस्तुक मूल्यक्रम उलटि गेल अछि। परम्परागत रूपेँ सोना विलासिता आ चाउर नित्य-जीवनक आवश्यकता मानल जाइत अछि; कवि दुनूकेँ विपरीत मूल्य-स्थिति मे रखैत छथि। ई उलटावक अलंकार मात्र नहि, खाद्य-सुरक्षा आ असमान वितरणक प्रश्न अछि। गजलमे लोकसभा-विधानसभा आ भूखल जनताक उल्लेख सत्ता-तन्त्रक सार्वजनिक उत्तरदायित्वक जाँच करैत अछि। रचना कखनो नारा बनबाक नजदीक पहुँचैत अछि, मुदा ओकर मूल व्यंग्य एकदम चिन्हार सामाजिक अनुभूति सँ बनल अछि।

४.८. गजल ७० : विकास-विमर्शक भाषा आ जनताक उदासी

“अखबारी विकास आ इ जनता उदास” (गजल ७०)

एहि पाँतिक केन्द्र “अखबारी विकास” अछि—एहन विकास जे सूचना-व्यवस्थाक शीर्षकमे चमकैत अछि, मुदा लोकजीवनमे तकर फल अनुपस्थित अछि। “जनता उदास” कथन एही कृत्रिम सफलता-घोषणाक विरुद्ध वास्तविक अनुभव रखैत अछि। दैनन्दिन राजनीतिक शब्दावलीकेँ कवि तकनीकी शेरक भीतर राखि विमर्शक मंचक रूप बदलैत छथि। कविता एतए तर्कपत्र नहि, जनमनक भाषिक प्रतिक्रिया बनि उठैत अछि।

५. प्रेम-विरहक बनावट : आँखि, मोन, श्वास आ देह

अनचिन्हारक प्रेमपरक गजलमे “अहाँ”क सम्बोधन अत्यन्त महत्त्वपूर्ण अछि। पहिल पुरुषक “हम” आ दोसर पुरुषक “अहाँ”क बीच दूरत्व, अनुरोध, लाज, अपनापन आ कहियो असहायता बदलैत रहैत अछि। आँखि, मोन, ठोर, श्वास, मोन, करेज आ सपनाक शब्द-मण्डल प्रेमकेँ कोमल शारीरिकता दैत अछि। विशेष बात ई जे ई शब्द मैथिली बोलचालक सहज शब्द छथि; एकरा बाहरी काव्यभाषाक शब्दावलीसँ बदलल नहि गेल अछि।

गजल २६ मे प्रेम अपनाएल जेबाक निवेदन अछि; गजल ४३ मे प्रतिदिनक स्मृति आ पुनरागमनक दृश्य भेटैत अछि; गजल ५९ मे झगड़ा धरि निकटताक रूप बनि जाइत अछि; गजल ६१ मे प्रेम, स्वप्न आ तखल्लुस मिलिकए आत्मचेतन स्वर निर्मित करैत अछि। एहि प्रसंगसभमे कवि प्रेमकेँ केवल शारीरिक अनुरक्तिक विषय नहि बनबैत छथि, बल्कि सम्बन्धक भाषा, स्मृति आ निजी असुरक्षाक रूपमे देखैत छथि।

तथापि प्रेमक प्रतीक-व्यवस्थामे कतेको स्थानपर गुलाब, शराब, आँखि, ठोर सन परिचित बिम्ब बारम्बार अबैत अछि। एहि चित्रसभक सहज ग्राह्यता पाठकक निकटता बढ़बैत अछि, मुदा सबठाम नव सौन्दर्यानुभव उत्पन्न नहि करैत अछि। कविक विशिष्टता ओतए अधिक दमकैत अछि जतए साधारण मैथिली घरेलू क्रिया वा लोकप्रचलित सम्बन्धसूचक शब्द रूढ़ छविकेँ नव अर्थ प्रदान करैत अछि।

६. रुबाइक पृथक समीक्षा : चारि पाँतिक तर्क, प्रेम आ जीवनदर्शन

६.१. रुबाइ १ : आशावादक दैनन्दिन भाषा

“हिम्मति रखने काज सदा बनि जाएत
देह तँ जरत नाम मुदा रहि जाएत” (रुबाइ १)

आरम्भिक रुबाइ कर्म, मृत्यु, नामक स्थायित्व आ समस्यासँ जूझबाक मनोवृत्ति पर केन्द्रित अछि। पहिल दू पाँति जीवनक अस्थायित्व आ काजक मूल्यक बीच सम्बन्ध स्थापित करैत अछि। आगाँ समस्याक पहाड़ रुड़ जकाँ उड़ि जेबाक बिम्ब मनोवैज्ञानिक आ शिक्षाप्रद निष्कर्ष दैत अछि। एहि संरचनाक प्रभाव कथ्यक सीधापनमे अछि; संगहि ई प्रश्न सेहो उठैत अछि जे कठिन जीवनानुभवकेँ सरल प्रेरक-वाक्यमे बदलि देलासँ ओकर जटिलता कतबा बचैत अछि।

६.२. रुबाइ १३ आ १७ : अनुभवक निष्कर्ष आ सामाजिक विडम्बना

रुबाइ १३ टूटल विश्वासक पीड़ा केँ संक्षिप्त रूपमे व्यक्त करैत अछि। स्वप्न, मोन आ विश्वासक क्रम मानव-सम्बन्धक भावात्मक अवनतिकेँ निर्मित करैत अछि। रुबाइ १७ मे नैतिक कल्पना, अहिंसा आ सार्वजनिक जीवनक विसंगति एक दोसरा लग पहुँचैत अछि। एहिमे कविक विवेक निजी प्रेमक सीमासँ निकलि सामाजिक व्यंग्य दिशि बढ़ैत अछि। दुनू रचनासँ स्पष्ट होइत अछि जे रुबाइ संग्रहमे केवल प्रेमक विकल्प नहि, संक्षिप्त जीवन-विचारक मंच सेहो अछि।

६.३. रुबाइ ३२ : प्रेमक अस्थिरता आ मृत्यु-जीवनक विरोध

“प्रेम मे खून सुखा नोर बनि जाएत” (रुबाइ ३२)

ई पाँति प्रेमक भावात्मक कष्टकेँ जैविक आ दृश्य बिम्बक मिलानसँ तीक्ष्ण बनबैत अछि। रक्तक सूखब आ नोरक बनब शारीरिक अनुभूति केँ दुःखक रूपकमय अर्थमे बदलब अछि। चारि पाँतिक सीमामे प्रेमीकेँ जीवन आ मृत्यु दुनूक सम्भावना घेरैत अछि। तथापि अतिशय भावुक छविक उपयोग कतेको रुबाइमे अनुमानित भावोत्कर्ष पैदा करैत अछि; एहि विधाक शक्ति ओतए अधिक अछि जतए अन्तिम पाँति आरम्भिक अनुभूतिक अर्थ बदलैत अछि।

७. कताक पृथक समीक्षा : विनोद, सौन्दर्य आ मिथकीय स्मृति

संग्रहक प्रथम कता सौन्दर्यक एकटा प्रश्नात्मक तुलना पर आधारित अछि। बाह्य देह-रूपक अपेक्षा आँखिक नोर आ ठोरक हँसीकें महत्त्व देबाक प्रसंग सौन्दर्यबोधकें केवल दृश्य देहधरि सीमित नहि रखैत अछि। प्रश्नोत्तरक स्वर कविता कें लोकबोलीक सहजता दैत अछि।

दोसर कतामे करेजक गाछ, प्रेमक गमक, पहिल गोपी आ कृष्णक मिथकीय सन्दर्भ एक संग अबैत अछि। एहि रचनामे प्रेमक अनुभव सांस्कृतिक स्मृतिसँ प्रकाशित होइत अछि। मिथकीय रूपककें एतए नायिका-नायकक स्थायी प्रतिमानक घोषणा नहि, निजी प्रेमक तुलना मानब अधिक संगत अछि। छोट आकारक कारण दुनू कतामे कथ्यक तात्कालिकता गजलक अपेक्षाकृत विस्तृत भाव-वितानसँ भिन्न छैक।

८. भाषा, स्वर आ अलंकार : मैथिलीकरणक वास्तविक आधार

मैथिली गजलक प्रसंगमे “मैथिलीकरण” केवल हिन्दी वा उर्दूक कोनो पदकें मैथिली शब्दसँ बदलि देब नहि अछि। ई उच्चारण, विभक्ति, क्रियारूप, सम्बोधन, मुहावरा आ सांसारिक अनुभवक पुनर्संयोजन अछि। “अहाँ”, “हमरा”, “करेज”, “नोर”, “मोन”, “इजोत”, “बसात”, “माटि”, “चाउर” आदि एहि संग्रहमे केवल स्थानीय चिह्न नहि, भाव-विन्यासक सक्रिय अवयव छथि। एहि शब्दसभक कारण प्रेम गामक बोलीमे बजैत अछि आ राजनीतिक व्यंग्य लोकबोधक निकट पहुँचैत अछि।

विरोधी युगम कविक प्रमुख अलंकारिक उपकरण अछि : इजोत-अन्हार, भूख-भात, सोना-चाउर, प्रेम-विरह, देह-आत्मा, सरकार-जनता, सपना-यथार्थ। एहि विपक्ष-संरचनामे सरलता अछि, मुदा एकर तेज कतेको ठाम उत्कृष्ट व्यंग्य उत्पन्न करैत अछि। गजल ४८ मे सपना-सँ भातक विरोध आ गजल ६० मे सोना-चाउरक विरोध विशेष उल्लेखनीय अछि।

रदीफक पुनरावृत्ति संग्रहमे अर्थक एकटा स्वतंत्र साधन बनि उभरैत अछि। गजल १६ मे “शेष कुशल अछि” आश्वासन नहि, विडम्बना बनैत अछि; गजल २६ मे “लिअ हमरा”

याचनाक माधुर्य प्रकट करैत अछि; गजल ६० मे “देखब एक दिन” भविष्यक आशंका आ चेतावनीक प्रभाव रचैत अछि। एहि उदाहरणसभसँ शिल्पक शब्द-अर्थ सम्बन्ध स्पष्ट होइत अछि।

८क. गीतात्मक रचना-संरचना : शेरक स्वायत्तता आ समग्र गजलक लय

गजलक प्रत्येक शेर अपन सीमामे अर्थपूर्ण होइतहुँ रदीफ, काफिया आ आवर्ती लयक कारण समग्र गजलक अनुभूतिसँ जुड़ल रहैत अछि। “अनचिन्हार आखर”मे एहि सम्बन्धक अलग-अलग परिणाम देखबामे अबैत अछि। प्रेमपरक गजलमे रदीफ प्रायः आत्मीय अनुरोधकें स्थायित्व दैत अछि, जखन कि राजनीतिक गजलमे वएह आवर्तन निषेध, उपहास अथवा चेतावनी उत्पन्न करैत अछि। एहि हिसाबे गजलक संगीत केवल उच्चारणसँ नहि, भाव-परिस्थितिक परिवर्तनसँ सेहो बनैत अछि।

संग्रहक अनेक गजलक अन्तमे “वर्ण” सम्बन्धी सङ्केत देल गेल अछि। ई सङ्केत रचना-निर्माणक प्रति कविक गणनात्मक सजगताकें व्यक्त करैत अछि। तथापि वर्ण-संख्या, स्वरभार आ उच्चारण-व्यवहार एकहि वस्तु नहि छथि; शेरक वास्तविक छन्दगत उपयुक्तता निश्चय करबाक लेल उच्चारित ध्वनिप्रवाह, यति आ प्रत्येक पाँतिक समतोल संरचनाकें संग राखि परीक्षण जरूरी होइत अछि। एहि कारण लेखकक छन्द-आग्रहक ऐतिहासिक महत्त्वकें मानैतहुँ प्रत्येक कविता कें एक समान सिद्ध सफल छन्दक दर्जा देल नहि जा सकैत अछि।

काव्यभाषाक दृष्टिँ एकटा आर महत्त्वपूर्ण विशेषता अछि—गजलमे तखल्लुसक उपस्थितिसँ कवि आत्मनिरूपण करैत छथि। “अनचिन्हार” केवल पहचानक हस्ताक्षर नहि, अनेक ठाम चोट खाएल, विरोध करैत अथवा प्रेमसँ भरल काव्य-व्यक्तिक रूपमे उपस्थित होइत अछि। तखल्लुसक एहि कलात्मक उपयोगसँ कवि आ शेरक वक्ताक बीच निकटता बनैत अछि; मुदा दुनूकें पूर्णतः समान मानि कविक निजी जीवनक प्रत्यक्ष विवरण घोषित करब साहित्यिक दृष्टिँ उचित नहि।

गजल आ रुबाइक बीचक अन्तर केवल पाँतिक सङ्ख्यासँ नहि बनैत अछि। गजलमे शेरसमूहक लयगत पुनरावृत्ति अर्थक एक बहुकेन्द्रीय जाल रचैत अछि; रुबाइमे चारि पाँतिक भीतर कथनक प्रसार आ अन्तिम मोड़क दायित्व अधिक रहैत अछि। संग्रहमे कतेको रुबाइ अन्तिम पाँतिमे विचारक एकटा सामान्य निष्कर्ष प्रदान करैत अछि। एहि ठाम गजलक उलट रुबाइ कथात्मक अथवा सूक्तिपरक अधिक भऽ जाइत अछि। कता फेर एहि दुनूसँ पृथक छोट अनुभवक जकाँ उभरैत अछि। तीनू रूपकें संग पढ़लासँ लेखकक लघु काव्यक अलग-अलग स्वभाव अधिक स्पष्ट होइत अछि।

८ख. दृष्टि आ प्रतिनिधित्व : उपलब्धिक संग नव आलोचनात्मक प्रश्न

सामाजिक अन्यायक विरुद्ध स्वर संग्रहक प्रमुख उपलब्धि अछि, मुदा सामाजिक प्रश्नक विस्तार देखैतकाल ई सेहो पूछबाक चाही जे सभ वर्गक अनुभव समान तीव्रतासँ उपस्थित अछि की नहि। किसान, गरीब, भूखल जनता आ राजकीय दमनक भाषा पर्याप्त स्पष्ट अछि; मुदा स्त्रीक स्वतंत्र कर्तृत्व, श्रमक लैंगिक विभाजन आ जातिगत सम्बन्धक जटिलता अनेक रचनामे गौण देखाइत अछि। एहिसँ कविक सामाजिक प्रतिबद्धता निरस्त नहि होइत अछि, मुदा जनपक्षीय काव्यक अन्तर्गत कोन अनुभव केन्द्रमे अछि आ कोन अनुभव अदृश्य रहि गेल अछि—ई आलोचनाक वैध प्रश्न बनैत अछि।

प्रेमपरक गजलमे “अहाँ” प्रायः आकर्षण, अनुपस्थिति, स्मृति अथवा प्रत्युत्तरक अपेक्षाक केन्द्र छथि; काव्य-वक्ताक अनुभूति स्पष्ट रूपें सामने अबैत अछि। प्रिय पात्रक स्वतंत्र आत्मविवरण अपेक्षाकृत कम अछि। एहि स्थिति कें दोषक एकमात्र प्रमाण नहि, पारम्परिक सम्बोधन-केन्द्रित प्रेमगीत आ आधुनिक सामाजिक प्रतिनिधित्वक बीच आलोचनात्मक तनावक रूपमे देखल जा सकैत अछि। एहि प्रश्नसँ संग्रहक पाठ एतेक विस्तृत होइत अछि जे कविता केवल कविक भावना नहि, ओहि भावनाक सामाजिक स्थिति सेहो बनैत अछि।

९. इतिहासक तुलनात्मक विवेचन : परम्परा, पुनर्पाठ आ भिन्नता

९.१. मैथिली गीतिकाव्यक दीर्घ परम्परा आ गजलक नव व्याकरण

मैथिली गीतिकाव्यक प्रमुख ऐतिहासिक धरातलमे विद्यापतिक पदावलीक भाव-सघनता, लोकरागक निकटता आ सम्बोधनक लय एक महत्वपूर्ण सन्दर्भ अछि। अनचिन्हारक गजलमे प्रेम, विरह आ सम्बोधनक पुनरावर्तनसँ पारम्परिक गीतिकाव्यक संग विषयगत संवाद देखल जा सकैत अछि। मुदा एहि साम्यकेँ प्रत्यक्ष प्रभाव वा एकहि छन्दात्मक वंशावलीक प्रमाण नहि मानब चाही। विद्यापतिक पद आ गजल अलग काव्य-विधान, पद-संरचना आ सांगीतिक-सांस्कृतिक आधार रखैत अछि। तुलना अर्थ-क्षेत्रक अछि, न कि यांत्रिक छन्द-समरूपताक।

९.२. जीवन झासँ आधुनिक मैथिली गजलक प्रवाह

लेखक स्वयं आरम्भिक विवेचनमे कविवर जीवन झाक “सुन्दर संयोग”क उल्लेख करैत छथि। विदेहक उपलब्ध आलोचनात्मक विवेचन आ सम्पादित प्रतिनिधि-संग्रहक विवरणमे मैथिली गजलक आरम्भिक साक्ष्यक सन्दर्भमे जीवन झा आ बीसम शताब्दीक प्रारम्भक उल्लेख भेटैत अछि। एकर बाद सीताराम झा, काशीकान्त मिश्र “मधुप”, जगदीशचन्द्र ठाकुर “अनिल” आ अन्य काव्यप्रयासक प्रसंग विदेहक परवर्ती इतिहासलेखनमे देखाओल गेल अछि। एहि इतिहासक सम्बन्धमे सावधानी जरूरी अछि : परम्परागत प्रथमत्व-निर्णय आ कालनिर्धारण साक्ष्यक नव उपलब्धता संग परिवर्तित भऽ सकैत अछि।

जीवन झाक प्रसंग मुख्यतः ऐतिहासिक आरम्भक प्रश्न उठबैत अछि; अनचिन्हारक संग्रह विधागत आत्मसजगताक प्रश्न जोड़ैत अछि। अर्थात् एक स्थानपर गजलक उपस्थिति इतिहासक विषय अछि, दोसर स्थानपर भाषानुकूल छन्द-व्याकरण तैयार करब आलोचनात्मक चेतनाक विषय। एहि आधारपर “अनचिन्हार आखर”केँ इतिहासक

अनिवार्य आरम्भबिन्दु नहि, आधुनिक शिल्पचिन्तनक प्रभावशाली प्रतिनिधि मानब समुचित अछि।

९.३. अरबी-फारसी-उर्दू रचना-विधान आ मैथिली लोकानुभव

अरबी-फारसी-उर्दू गजल-परम्परामे शेरक स्वतन्त्रता, रदीफ-काफियाक आवर्तन, तखल्लुस आ बहक नियमितता विशिष्ट शिल्पगत अपेक्षा छथि। अनचिन्हार एहि तकनीकी अवधारणासभकें ग्रहण करैत छथि; मुदा मैथिली उच्चारणक भिन्नतासँ उत्पन्न प्रश्नकें दबबैत नहि छथि। एहि पद्धतिक कारण शिल्पगत अनुरूपता आ भाषिक भिन्नता एकहि विमर्शमे स्थान पबैत अछि।

रचनाक विषयगत तुलना करैत काल गालिबक आत्ममंथन, उर्दू गजलक प्रेम-विरह आ आधुनिक जनवादी गजलक राजनीतिक प्रश्नक व्यापक परम्परा याद आबि सकैत अछि। तथापि गजल १६, ४८ आ ६० कें कोनो एक उर्दू अथवा हिन्दी कविक प्रतिरूप कहि देब ओहिमे व्यक्त मैथिली सामाजिक अनुभवकें गौण बना देत। अनचिन्हारक सशक्त शेरक पहिचान ओहि ठाम अछि जतए प्रतिष्ठित गजल-शिल्प मैथिली शब्दावलिक स्थानीय अनुभवसँ रूपान्तरित होइत अछि।

९.४. विदेहक परवर्ती विमर्शक आलोक

विदेहक शोध-सूचीमे आशीष अनचिन्हारक “काफिया”, “काफिया आ बहर”, “मैथिली गजल व्याकरणक शुरुआती प्रयोग”, “आधुनिक मैथिली गजलक संक्षिप्त आलोचनात्मक परिचय”, “बयानक सन्दर्भमे मैथिली गजल” आ “नरेन्द्रजीक मैथिली आ हिन्दी गजलक तुलनात्मक विवेचना” सन शीर्षक दर्ज छथि। ई उपलब्ध शीर्षकसभ एतबा अवश्य स्थापित करैत अछि जे संग्रहमे उपस्थित शिल्प-प्रश्न पछातिक स्वतंत्र आलोचनात्मक विमर्शक विषय बनल। एहि आलेखसभक पूर्ण पाठक विश्लेषण बिना ओहिसँ अतिरिक्त निष्कर्ष निकालब उचित नहि।

गजेन्द्र ठाकुरक विदेहमे उपलब्ध विस्तृत मूल्यांकनमे आशीष अनचिन्हारकेँ मैथिली गजल-आन्दोलन, काव्यशास्त्रीय अनुशासन आ सम्पादनक व्यापक परिप्रेक्ष्यमे देखल गेल अछि। ओहि मूल्यांकनकेँ समकालीन स्वागतक साक्ष्य मानल जा सकैत अछि, मुदा कृतिक कलात्मक गुणक अन्तिम निर्णय केवल प्रतिष्ठा अथवा प्रशंसाक आधारपर नहि; रचनासभक प्रत्यक्ष विवेचनपर आधारित होयबाक चाही।

१०. सौन्दर्यात्मक उपलब्धि आ आलोचनात्मक सीमा

पहिल उपलब्धि अछि विषयक सामाजिक विस्तार। प्रेमक निजी पीड़ाक संग जनताक भुखमरी, खेतीक संकट, संसदीय राजनीति आ मनुष्यक नैतिक विघटन एकहि संग्रहमे अएबाक कारण गजल अपन पारम्परिक सीमित पाठकीय अपेक्षासँ बाहर अबैत अछि। दोसर उपलब्धि अछि तकनीकी स्वचेतना। लेखक स्वयं रचनारूपक समस्या उठबैत छथि आ मैथिली ध्वन्यात्मक अनुभवक सहारे ओकर समाधानक प्रयत्न करैत छथि। तेसर उपलब्धि अछि लोकधर्मी शब्दकोश—गंभीर अनुभूति प्रायः सहज, घरेलू आ क्षेत्रीय शब्दसँ बनैत अछि।

मुख्य सीमा ओहिठाम देखबामे अबैत अछि जतए गजलक शेर राजनीतिक कथनकेँ केवल अंत्यानुप्रासक सहारे प्रस्तुत करैत अछि। “सरकार”, “जनता”, “विकास”, “भ्रष्टाचार” सन शब्द निश्चय सामाजिक यथार्थक सूचक छथि, मुदा प्रत्येक शेरमे एहन शब्दसँ स्वतः काव्यात्मक विस्फोट नहि जन्मैत अछि। जतेक ठाम एहन शब्द प्रतिमान, दृश्य आ अर्थक नव सम्बन्ध बनबैत अछि, ओतए कविता सफल अछि; जतेक ठाम कथन मात्र घोषणात्मक रहि जाइत अछि, ओतए कला अपेक्षाकृत दुर्बल होइत अछि।

दोसर सीमा रूढ़ प्रेमबिम्बक पुनरागमन अछि। आँखि-शराब आ चेहरा-गुलाबक साम्यक उपयोग रुबाइक एकाधिक रचनामे भेटैत अछि। एहन आवर्तन गेयता आ परिचित सौन्दर्यक अनुकूल होइतहुँ अर्थक नूतनता सीमित करैत अछि। एहि प्रकार संग्रह स्वयं अपन रचनात्मक उपलब्धिक संग आत्मसम्पादनक सम्भावना सेहो देखबैत अछि।

तेसर प्रश्न औपचारिक शुद्धताक अछि। लेखकक गजल-विवेचनमे बहर आ काफिया पर पर्याप्त बल अछि; तथापि प्रत्येक गजलक प्रत्येक शेरमे एक समान सफल छन्दानुशासन सिद्ध करबाक लेल स्वतंत्र तक्तीअ आवश्यक अछि। एहि अध्ययनमे उपलब्ध पाठक आधारपर एहन सर्वव्यापी शुद्धताक दावा नहि कएल गेल अछि। रचनाक सौन्दर्यात्मक मूल्य आ काव्यविधानक तकनीकी उपयुक्तता सम्बन्धित होइतहुँ सर्वथा समान प्रश्न नहि छथि।

अन्ततः “जनपक्षीय” कहि देलासँ कविता आलोचनासँ मुक्त नहि भऽ जाइत अछि। सामाजिक प्रतिबद्धता, भावक मौलिकता, शेरक अन्तर्गत तनाव, भाषाक संक्षिप्तता, ध्वनिक स्वाभाविकता आ विरोधाभासक रचनात्मकता—सभकेँ अलग-अलग देखबाक आवश्यकता अछि। “अनचिन्हार आखर” एहि बहुआयामी जाँच लेल पर्याप्त आधार प्रदान करैत अछि।

११. निष्कर्ष : गजलकेँ मैथिलीक सामाजिक आ भाषिक भूगोलमे प्रतिष्ठा

“अनचिन्हार आखर”क महत्त्व एहि बातमे निहित अछि जे लेखक गजलकेँ केवल आयातित कविता-विधान नहि मानि मैथिलीमे बसाबय चाहैत छथि। हुनक प्रारम्भिक विवेचन गजलक रूपशास्त्रकेँ सार्वजनिक करैत अछि; गजलसभ लोकजीवनक भुखमरी, राजनीतिक प्रतिरोध आ प्रेमक अनुभूतिकेँ एकहि काव्यपरिसरमे जोड़ैत अछि; रुबाइ आ कता लघु काव्यरूपक स्वतंत्र अनुभव प्रदान करैत अछि।

सर्वाधिक प्रभावशाली रचनासभ ओ छथि जतए कथन आ रूप एक-दोसराकेँ रूपान्तरित करैत अछि—“शेष कुशल अछि” राजनीतिक व्यंग्य बनैत अछि, “सपनाक भात” भूखक असह्य प्रतीक बनैत अछि, “देखब एक दिन” भविष्यक संकट-संकेत बनैत अछि, आ “लिअ हमरा” प्रेमक संकोची आकांक्षा बनैत अछि। एहि काव्यात्मक परिवर्तनमे संग्रहक असल उपलब्धि निहित अछि।

इतिहास-दृष्टिसँ ई संग्रह मैथिली गजलक एकमेव जन्मस्थान नहि, बल्कि ओकर आधुनिक विधागत आत्मसमीक्षाक महत्वपूर्ण पाठ अछि। भाषा-दृष्टिसँ ई मैथिली उच्चारण, विभक्ति आ लोकशब्दकें गजलक शिल्पमे वैध स्थान दैत अछि। आलोचना-दृष्टिसँ ई संग्रह प्रशंसा आ प्रश्न दुनूक अधिकारी अछि। एहि द्वन्द्वात्मक मूल्यांकनसँ स्पष्ट होइत अछि जे आशीष अनचिन्हारक योगदान केवल गजल लिखब नहि, गजल लिखबाक शर्त आ मैथिलीमे ओकर सम्भावना पर सुसंगत बहस प्रारम्भ करब सेहो अछि।

सन्दर्भसूची : मूल कृति आ विदेहक स्रोत

मूल कृति

- [1] अनचिन्हार, आशीष। अनचिन्हार आखर। दिल्ली : श्रुति प्रकाशन, २०११। ISBN 978-93-80538-48-8। मूल पाठ। विदेह पोथी-संग्रह : <https://videha-ejournal.github.io/videha/pothi.htm>
- [2] अनचिन्हार, आशीष। मैथिली गजलक व्याकरण ओ इतिहास। विदेह पोथी-संग्रहमे सूचीबद्ध कृति : <https://videha-ejournal.github.io/videha/pothi.htm>
- [3] अनचिन्हार, आशीष। सन्दर्भ सहित (गजल-आलोचना)। विदेह पोथी-संग्रहमे सूचीबद्ध कृति : <https://videha-ejournal.github.io/videha/pothi.htm>
- [4] अनचिन्हार, आशीष। मैथिली गजलक रेडी रेकोनर। विदेह पोथी-संग्रहमे सूचीबद्ध कृति : <https://videha-ejournal.github.io/videha/pothi.htm>
- [5] अनचिन्हार, आशीष। कुमारि इच्छा; जंघाजोड़ी। गजल-संग्रह। विदेह पोथी-संग्रहमे उपलब्ध कृति-सूची : <https://videha-ejournal.github.io/videha/pothi.htm>
- [6] अनचिन्हार, आशीष। “काफिया”; “काफिया आ बहर”; “मैथिली गजल व्याकरणक शुरूआती प्रयोग”। विदेहक शोध-सूचीमे अंकवार अभिलेख : <https://videha-ejournal.github.io/videha/research/videha-scholar-research-book.html>
- [7] अनचिन्हार, आशीष। “आधुनिक मैथिली गजलक संक्षिप्त आलोचनात्मक परिचय”। विदेह, अङ्क २५३, २०१८। शोध-सूची : <https://videha-ejournal.github.io/videha/research/index.html>
- [8] अनचिन्हार, आशीष। “बयानक सन्दर्भमे मैथिली गजल”। विदेह, अङ्क २५१, २०१८। शोध-सूची : <https://videha-ejournal.github.io/videha/research/index.html>

- [9] अनचिन्हार, आशीष। “नरेन्द्रजीक मैथिली आ हिन्दी गजलक तुलनात्मक विवेचना”। विदेह, अङ्क २५२, २०१८। शोध-सूची : <https://videha-ejournal.github.io/videha/research/index.html>
- [10] अनचिन्हार, आशीष। “दुष्यंत कुमारक गजलक मिजाज सन गजल मैथिलीमे कहिया लीखल जेतै”। विदेह, अङ्क ३०७, २०२०। विदेह शोध-सूची : <https://videha-ejournal.github.io/videha/research/videha-scholar-research-book.html>
- [11] ठाकुर, गजेन्द्र आ अनचिन्हार, आशीष (सम्पादन)। मैथिलीक प्रतिनिधि गजल (१९०५–२०२२)। विदेहमे उपलब्ध ग्रन्थ-विवरण : https://videha-ejournal.github.io/videha/new_page_56.htm
- [12] ठाकुर, गजेन्द्र। “Critical Appreciation of Ashish Anchinhār”। A Parallel History of Mithila & Maithili Literature, भाग ५६। विदेह : https://videha-ejournal.github.io/videha/new_page_56.htm
- [13] विदेह। “मिथिला रत्न” : आशीष अनचिन्हारक रचनासूची। <https://videha-ejournal.github.io/videha/ratna.htm>
- [14] विदेह। “विदेह पोथी” : मैथिली साहित्यक उपलब्ध कृतिसूची। <https://videha-ejournal.github.io/videha/pothi.htm>

समीक्षा ८

जंघाजोड़ी

बहरक अनुशासन आ लोकजीवनक प्रतिरोध

सार

‘जंघाजोड़ी’ आशीष अनचिन्हारक दू सय गजलक संग्रह अछि। एहि पोथीक साहित्यिक महत्त्व मात्र एतबामे नहि अछि जे एकटा मैथिली कवि गजल-जेकाँ अनुशासनप्रिय विधाक अभ्यास करैत छथि; एकर विशेषता ईहो अछि जे ओ मिथिलाक लोकबोली, देह-प्रेम, श्रमजीवी वर्गक वंचना, राजनीतिक संस्थाक विडम्बना आ सामाजिक पाखण्डकें गजलक संक्षिप्त, पुनरावृत्तिमूलक आ व्यंजनाशील विन्यासमे राखैत छथि। कविक आत्मवक्तव्य बहर, काफिया, रदीफ, गायन आ पाठकीय अर्थनिर्माणक प्रश्न उठबैत अछि; तें संग्रह कविता आ काव्यशास्त्रीय घोषणा, दुनूक रूपमे पढ़बाक माँग करैत अछि। ई अध्ययन गजलसभक भाषिक बनावट, कथ्य, बिम्ब, लय आ व्यंग्यक पृथक पाठ-विश्लेषण करैत अछि; गजल-इतिहासक विदेह-सम्बद्ध वृत्तान्तसँ तुलनाक क्रममे संग्रहक योगदान आ सीमा निर्धारित करैत अछि। निष्कर्ष ई जे अनचिन्हारक उपलब्धि परम्परागत विधागत अनुशासनकें लोकभाषिक आधुनिकतासँ जोड़ब अछि, मुदा विधागत आग्रह तथा काव्यगत सिद्धिक बीचक दूरीक आलोचनात्मक परीक्षण आवश्यक अछि।

मुख्य शब्द : मैथिली गजल, आशीष अनचिन्हार, जंघाजोड़ी, बहर, रदीफ-काफिया, व्यंग्य, लोकभाषा, पाठकीय अर्थनिर्माण, विदेह साहित्य आन्दोलन।

प्रस्तावना : पोथी, संरचना आ आलोचनाक प्रश्न

‘जंघाजोड़ी’क रचनात्मक केन्द्रमे एकटा उग्र विरोधाभास सक्रिय अछि : बाहरी बनावट अत्यन्त अनुशासित होबाक घोषणा करैत अछि, जखन कि भीतरक स्वर सत्ता, मर्यादा,

शिष्टाचार आ सामाजिक अनुक्रमक निरन्तर परीक्षा लैत अछि। संग्रहमे लगातार दू सय गजल देल गेल अछि; प्रत्येक गजलक संग मात्राक्रम अथवा बहर-सम्बन्धी सूचना जोड़ल गेल अछि। एहि योजना सँ रचनाक पढ़बाक दू बाट खुलैत अछि : भावात्मक ग्रहण आ औपचारिक जाँच। एहि दूनूक मेल एहि पोथीक आलोचनात्मक प्रवेशद्वार थिक।

‘जंघाजोड़ी’ शब्द स्वयं ठेठ बोलचालक शारीरिकता आ हँसी-विनोदक संस्कार जगबैत अछि। शीर्षक उच्चकाव्यक रूढ़ गरिमा सँ हटिकय लोक-उच्चारणक साहस अपनबैत अछि। मुदा एहि साहसकेँ मात्र उत्तेजना कहब पर्याप्त नहि; शीर्षकक अभिप्राय बुझबाक लेल पोथीक भीतर देह-चेतना, व्यंग्य आ आत्मपरिहासक पारस्परिक सम्बन्ध देखब आवश्यक अछि। कविता जखन लघु कलेवरमे पैघ राजनीतिक वाक्य प्रस्तुत करैत अछि, तखन शीर्षकक आकस्मिकता सेहो एकटा सौन्दर्यशास्त्रीय संकेत बनैत अछि।

संग्रहक परिचयमे लेखक अपन मूल नाम आशीष कुमार मिश्र, गाम भटरा घाट, बिस्फी, मधुबनी आ ‘अनचिन्हार आखर’ नामक गजल-केन्द्रित जालपत्रिकाक सम्पादकीय सम्बन्ध बतबैत छथि। ओ ‘अनचिन्हार आखर’क बाद ‘जंघाजोड़ी’केँ अपन दोसर गजल-संग्रह मानैत छथि आ दूनू बीच लगभग नौ वर्षक अन्तरक उल्लेख करैत छथि। एहि आत्मसाक्ष्य सँ लेखकक साधनापथ बुझाईत अछि; यद्यपि दू संग्रहक वास्तविक पाठक सम्पूर्ण तुलनाक स्थान ई कथन स्वयं नहि लऽ सकैत अछि।

रचनाकारक आत्मवक्तव्य : विधा, अनुशासन आ पाठक

‘अनचिन्हारक बात’ संग्रहक मात्र भूमिका नहि, गजल विषयक घोषणापत्रक रूप लैत अछि। कवि गजल कहबाक अधिकारकेँ बहर-काफिया-रदीफक पालनसँ जोड़ैत छथि। हुनक मते भाव आ छन्द परस्पर विकल्प नहि; एकटा सबल अनुभूतिक उपयुक्त काव्य-विन्यास चाही। एतए हुनक तर्कक साहित्यिक बल स्पष्ट अछि : छन्दहीनताकेँ नवीनता मानि लेबाक सहज मार्गसँ ओ अलग राह चुनैत छथि। संगहि हुनक भाषा कतेको ठाम

अत्यधिक निर्णायक भऽ जाइत अछि, जकरा कारण अन्य काव्य-विन्यासक स्वतंत्र मूल्याङ्कन लेल अपेक्षित अवकाश सीमित भऽ सकैत अछि।

भूमिकामे गायन आ गजलकें समानार्थी मानबाक विरुद्ध तर्क भेटैत अछि। गायकक स्वतंत्र संगीतिक परिश्रम, शास्त्रीय ज्ञान आ रचनाक विधागत पहिचानपर कवि बल दैत छथि। ई दृष्टि उल्लेखनीय अछि, कारणे मुद्रित काव्य, मंचीय पाठ आ संगीतिक प्रस्तुति एकै सौन्दर्यक मानदण्ड नहि रखैत अछि। मुदा कोनो गजल नहि गाएल जा सकबाक सम्भावनाकें मात्र हुनक शिल्पगत श्रेष्ठताक प्रमाण मानल नहि जा सकैत अछि; कविक आलोचना पढ़िते समय एहि भिन्नताकें मनमे रखनाइ चाही।

कवि ‘मनोरंजन’कें अपन घोषित अभिप्राय कहैत छथि; तथापि हुनक गजलमे राजनीतिक निराशा, बालश्रम, धनी-गरीबक भेद, धार्मिक पाखण्ड आ दैनन्दिन अन्याय प्रचुर अछि। फलतः मनोरंजन हुनका लग वस्तुस्थितिसँ पलायन नहि, व्यंग्य आ रस मार्फत सामाजिक यथार्थक सामना करबाक युक्ति बनैत अछि। एहि बिन्दुपर पाठक लेखकक घोषित सीमाकें स्वयं पाठकर्मसँ विस्तार दैत छथि।

पाठकीय बहुअर्थकता विषयक लेखकक विचार विशेष ध्यानाकर्षक अछि। हुनक तर्क अछि जे सरल भाषामे बनल रचनाक एकटा तत्काल बोधगम्य अर्थ रहि सकैत अछि, मुदा पाठकक अनुभव, समय आ मनःस्थितिक कारणे आन अर्थ खुलि सकैत अछि। एहि अवधारणाकें आलोचनामे फलदायी बनाबऽ लेल कविता-भितरक शब्द, प्रसंग आ संरचनाकें साथ राखब पड़त; अन्यथा प्रत्येक अनियन्त्रित अर्थ-आरोपकें बहुअर्थकता कहि देबाक जोखिम रहत। ‘जंघाजोड़ी’क बहुतेक श्रेष्ठ शेर एहि सन्तुलनक परीक्षा लेल उपयुक्त अछि।

गजलरचना : बहर, पुनरावृत्ति आ शेरक स्वायत्तता

संग्रहक रचनात्मक अनुशासनक सर्वाधिक प्रत्यक्ष चिह्न गजलसभक अन्तमे अंकित मात्राक्रम अछि। कतहु छोट, तीव्र गतिवला पदरचना अछि; कतहु अपेक्षाकृत दीर्घ श्वासक

संरचना। लेखक लघु-दीर्घक छूट, विशेष प्रयोजनसँ ग्रहण कएल दीर्घक लघुकरण आ बहरे मीरक उल्लेख सेहो करैत छथि। एहि मुद्रित सूचना सँ पाठक जाँचक आरम्भिक सूत्र पबैत छथि। मुदा केवल घोषित मात्राक्रम अपनहि आप सम्पूर्ण शुद्धता सिद्ध नहि करैत अछि; एक-एक मिसराक उच्चारण, शब्दक व्यवहारगत मात्रा, नियत रदीफ-काफिया आ छूटक सीमाक परीक्षण सेहो जरूरी अछि।

शेरक स्वतन्त्र अर्थ-संभावना एहि संग्रहमे तीव्र अछि। राजनीति, प्रेम, प्रकृति आ निजी कटु अनुभवक चित्र एकै गजलमे एक-दोसरसँ अचानक टकरा सकैत अछि। ई रचनाविन्यास गजलक परम्परागत शेर-प्रधान प्रकृतिसँ मेल खाइत अछि। जखन प्रत्येक शेर अपेक्षाकृत स्वायत्त हो, तखन संग्रहमे विषयक एकरूपता नहियो रहिते एकटा व्यापक दृष्टि आकार लैत अछि। एहि दृष्टिक केन्द्रीय गुण अछि : विरोधाभासकें बहुत छोट कथनमे पकड़ब।

रदीफक आवृत्ति कविक भाषा कें लयात्मक ठोक दैत अछि। ‘दुन्नू दिससँ’, ‘केकरो नै’, ‘किछु बात’, ‘पासी छै’ जेकाँ पदसमूह अलग-अलग भावभूमि कें जोड़बाक काम करैत अछि। सभ शेरमे पुनः सुनाइत ध्वनि पाठककें प्रतीक्षा करबैत अछि; काफिया ओ रदीफक सफल सम्बन्ध तखन बनैत अछि जखन दोहराएल पंक्ति नब अर्थ लऽ कऽ अबैत अछि। एहि संग्रहक सबल गजलमे आवृत्तिक अर्थक्रम बदलैत अछि; निर्बल रचनामे ओ मात्र ध्वन्यात्मक पूर्वानुमेयता बनि रहि जाइत अछि।

पृथक पाठविश्लेषण : सम्बन्धक दू पाठ आ विडम्बनाक विस्तार

‘हाथ बढ़लै दुन्नू दिससँ’ : सम्पर्क आ संकट

“हाथ बढ़लै दुन्नू दिससँ
डेग उठलै दुन्नू दिससँ”

आरम्भिक शेरमे द्विपक्षीय गतिक आवेग अछि। हाथ आ डेग सामाजिक सम्पर्कक संकेत देइत अछि; पाठक प्रारम्भमे मिलनक दृश्य देखैत छथि। मुदा आगाँ चलिकय एही

दोहराईत पदमे जनतंत्रक लात, जनसमूहक फँसनाइ आ बान्ह टूटलाक बाद लोकक भगनाइ प्रवेश करैत अछि। एके रदीफ पहिने सम्पर्कक आश्वासन, फेर संकटमे समान रूपसँ आक्रान्त होबाक अनुभूति उत्पन्न करैत अछि। एतए बहुअर्थकता कोनो अस्पष्ट शब्दसँ नहि, एके व्याकरणिक संरचनाक भीतर विषय-परिवर्तनसँ जन्मैत अछि।

गजलमे प्रेमगत शारीरिक समीपता, राजनीतिक विफलता आ पर्यावरणीय जोखिमक निकटता मात्र संयोग नहि। ‘दुन्नू दिससँ’ माने सम्बन्धक दूनू छोर; ओहि छोरपर शक्ति समान नहि होइतो परिणाम साझा भऽ सकैत अछि। एहि शेर-समुच्चयमे गजलक शेर-स्वायत्तता एकटा समग्र नैतिक दृश्य बनबैत अछि।

‘जे हमरा लेल विपदा अछि’ : विषमताक संक्षिप्त गणित

“जे हमरा लेल विपदा अछि
से हुनका लेल सुविधा अछि”

दू पाँतिक एहि दृश्यकेँ पढ़िने वर्ग-सम्बन्धक असमानता उघड़ैत अछि। एक व्यक्ति वा समूहक संकट दोसराक अवसर बनैत अछि। ‘हमरा’ आ ‘हुनका’क सर्वनाम व्यक्तिविशेषक सीमा लाँघि आर्थिक आ राजनीतिक संरचनाक स्थानापन्न बनि जाइत अछि। कवि शोषणक जटिल विवेचन नहि देइत छथि; एकटा तुलनात्मक वाक्यमे परिणाम प्रस्तुत करैत छथि। अनायास ई अर्थ सामाजिक भीड़, संसाधन-वितरण, बाजार आ सत्ताक प्रसंगमे पसारि सकैत अछि।

गजलक प्रभावक कारण केवल विचार नहि, प्रस्तावनात्मक कड़कपन अछि। इएह शेर जाहि पाठककेँ अपन भोगल विपदा याद देबैत अछि, ताहि पाठक लेल स्वतन्त्र अर्थ खोलैत अछि। मुदा ई बहुअर्थकता मूल नैतिक समीकरणकेँ भंग नहि करैत अछि।

राजनीतिक व्यंग्य : शब्दक चोट आ प्रतिरोधक सीमाबोध

‘मीडिया इच्छाधारी छी हम’ : संस्थागत आत्मस्वीकारक अभिनय

“मीडिया इच्छाधारी छी हम
कारपोरेटक नाती छी हम”

एहि शेरमे मीडिया स्वयं अपन मुखसँ वंशावलि सुनबैत अछि। ‘इच्छाधारी’क पौराणिक-लोकप्रचलित ध्वनि आधुनिक निगम-सम्बन्धक संग आवैत अछि। सार्वजनिक जानकारी देबाक संस्थाकें कवि स्वार्थानुकूल रूप बदलयवला प्राणी बनबैत छथि। ‘नाती’ नातेदारिक घरेलू पद अछि, जकर प्रयोग पूँजी आ खबरक निर्भरता कें घर-परिवारक सम्बन्ध जेकाँ व्यक्त करैत अछि। एतए नवीनता राजनीतिक आरोपमे नहि, आरोपक लोकव्यंग्यात्मक वाक्य-विन्यासमे अछि।

एहि गजलमे बारम्बार ‘छी हम’क प्रयोग आत्मस्वीकारोक्ति बनैत अछि। कवि आलोचनाक बाहरी भाषण नहि दैत छथि; आलोच्य संस्था कें स्वयं अपन विरोधमे बोलबैत छथि। ई नाटकीय आवाज व्यंग्यक खास शक्ति अछि।

‘दिनगर मुदा तैयो तँ अन्हार बड़’ : धार्मिक चमत्कार आ नागरिक अन्हार

“जै देशमे खाली बलात्कार छै
तै देशमे धर्मक चमत्कार बड़”

एहि शेरक झटका तर्कक कठोर विरोधाभाससँ उत्पन्न होइत अछि : सामाजिक हिंसाक संग धर्मक चमत्कारक सार्वजनिक उत्सव। ‘जै’ आ ‘तै’ शर्त-परिणामक वाक्य-ढाँचाकें व्यंग्यक न्यायालय बना दैत अछि। काव्यक निहित प्रश्न ई नहि जे धार्मिक अनुभवक कोनो मूल्य नहि; प्रश्न ई अछि जे नैतिक उत्तरदायित्वक स्थान चमत्कारक तमाशा किएक लऽ लैत अछि। कविता एतए आडम्बर आ सामाजिक हिंसाक सहअस्तित्वकें उजागर करैत अछि।

ओही गजलक अन्तमे कवि मात्राक्रमक सन्दर्भमे किछु विशेष छूटक उल्लेख करैत छथि। अतएव प्रभावशाली राजनीतिक अर्थ आ निर्दोष छन्दानुशासनकेँ स्वयंसिद्ध एकतारूपमे नहि लेबाक चाही। एहि दुहरी परखसँ कविताक सौन्दर्य आ औपचारिक अनुशासनक प्रश्न दुनू सुरक्षित रहैत अछि।

‘हुनके विकास, जनता उदास’ : घोषणाक विरुद्ध अल्पशब्दीय प्रतिवाद

“हुनके विकास
जनता उदास”

चारि शब्दमे सत्ताक प्रगति-कथाक प्रति संदेह उपस्थित होइत अछि। ‘हुनके’क सीमित हितग्राही आ ‘जनता’क विस्तृत समुदाय बीच सीधा वैचारिक द्वन्द्व अछि। एहि पाँतिक मार्मिकता विस्तृत रूपकसँ नहि, काटदार न्यूनतम वाक्यसँ बनैत अछि। कविता आगाँ संसद आ सार्वजनिक संस्थाक नैतिक पतन दिस संकेत करैत अछि। एहन लघु गजल पाठककेँ तुरन्त याद रहि सकैत अछि; तथापि कखनो-कखनो घोषणात्मक संक्षेप जटिल यथार्थक सूक्ष्मता घटा सेहो सकैत अछि।

श्रम, बचपन आ वर्ग : सामाजिक यथार्थक लघु दस्तावेज

‘नौकर बनलै गरीब बच्चा’ : बचपनक विस्थापन

“नौकर बनलै गरीब बच्चा
होटल मोटेल ईटा भट्टा”

एहि शेरमे ‘होटल मोटेल ईटा भट्टा’ स्थान-सूचीक रूपमे नहि, श्रमक निरन्तर भूगोलक रूपमे अबैत अछि। गरीबीक कारण बालकक जीवन विद्यालय आ खेलसँ हटिकय व्यावसायिक श्रमस्थलपर फैलि गेल अछि। ‘गरीब बच्चा’ कोनो भव्य प्रतीक नहि; सामाजिक दृष्टिसँ प्रत्यक्ष दृश्य अछि। कविक यथार्थवाद एतए अनुभूति केँ अधिक विशेषणसँ नहि लादैत अछि।

गजलक दोसर शेरमे जीवनक मिठास आ ओकर तुरन्त खट्टा भऽ जेबाक उलटबाँसी अछि। मिठाइक स्वादक तुलना जीवनपर लगैतहि बचपनक क्षणभंगुरता आ श्रमक कठोरता एक-दोसरकेँ काटैत अछि। ‘ईटा भट्ठा’क ग्रामीण-औद्योगिक सन्दर्भ कविता केँ स्थानीय बनबैत अछि, मुदा प्रश्न व्यापक अछि : विकासक दाबीक बीच सर्वाधिक असुरक्षित जीवनक मूल्य के तय करैत अछि?

‘ने अँगना जोगर ने दलान जोगर’ : निर्धनताक संस्कारगत बहिष्कार

“गरीब लड़किए जकाँ गरीब लड़को
ने बियाह जोगर ने चुमान जोगर”

एहि शेरमे निर्धन लड़का आ लड़की दुनूक तुलना सामाजिक संस्कारसँ बाहर कएल गेल देहक रूपमे होइत अछि। ‘बियाह’ आ ‘चुमान’ आर्थिक हैसियतसँ आबद्ध सामाजिक मान्यता बनि जाइत अछि। रचना वर्ग-संकटक लिंगाधारित अनुभवकेँ खुलबैत अछि, मुदा ओकर समाधान नहि दैत; अस्वीकृत व्यक्तिक स्वरमे समाजक व्यवहारक नैतिक दरिद्रता दर्ज करैत अछि। ई प्रसंग संग्रहक ‘मात्र मनोरंजन’क घोषणाकेँ सबसँ सीधा चुनौती दैत अछि।

देह, नेह आ स्त्री-पात्र : संवेदनाक सामर्थ्य आ दृष्टिक असममिति

‘ओकर हाथसँ फूल अछि देह’ : देहक अनेक अर्थ

“ओकर हाथसँ फूल अछि देह
सदिन गम गम फूल अछि देह”

फूलक बिम्ब देहकेँ कोमलता, गन्ध आ स्पर्शक अर्थ दैत अछि। एहि गजलमे देह प्रेमक मिलन-स्थल, मोनक संग फूलक विभिन्न रूप, आ सामाजिक पहिचानक केन्द्र बनैत अछि। कविक रचनात्मक शक्ति एतए प्रत्यक्ष अछि : मैथिली लोकभाषाक गन्धवाचक पुनरुक्ति

गजलक नियत अन्त्यानुप्रास सँ जुड़ि जाइत अछि। देह निष्क्रिय वस्तु नहि, अनुभूति सँ अर्थ पबैत स्थान बनैत अछि।

मुदा संग्रहक प्रेमपरक अनेक गजल स्त्रीक देह, आँचर, ठोर, आँखि आ रूपक वर्णनमे रमैत अछि। एतए स्त्रीक अपन इच्छा, निर्णय वा उत्तर-स्वर अपेक्षाकृत कम उद्घाटित होइत अछि। अतएव देहक सौन्दर्यपर लिखल पाँति मात्रक आधारपर समतामूलक प्रेम-दृष्टि सिद्ध नहि कएल जा सकैत अछि। आत्मीयता आ वस्तुकरण बीचक ई तनाव संग्रहक समीक्षाक एकटा आवश्यक पक्ष अछि।

प्रेमक शब्दावली आ वियोगक निजी प्रतिध्वनि

नेह, नोर, मोन, आँचर, चान, इजोरिया, कजरौटा, फूल, मधुमास जेकाँ शब्द संग्रहमे बारम्बार घुर्तैत अछि। एहि पुनरावृत्तिमे लोकगीत-परम्पराक भावक्षेत्र सक्रिय भऽ जाइत अछि। मुदा गजल अपन अपेक्षाकृत स्वायत्त शेरक कारण लोकगीतक सतत कथात्मक प्रवाहसँ भिन्न बनावट ग्रहण करैत अछि। प्रेम एतए ओतेक कथा नहि, जतेक क्षणक टकराहट, अपूर्णता आ स्मृतिक लघु प्रस्फुटन अछि।

कखनो अर्थ बहुत संकेतमय रहैत अछि; कखनो सरल संबोधन गीतात्मकता दिस लऽ जाइत अछि। ई द्वैधता कविक भितर दू स्वर देखबैत अछि : एक कठोर व्यंग्यक, दोसर करुण वा चंचल प्रेमक। उत्कृष्ट गजल ओहि ठाम अछि जतए दुनू स्वर एक-दोसरकेँ पूरक बनैत अछि, नहि कि बस अलग-अलग विषय सूची जकाँ लगैत अछि।

लोकभाषा, धार्मिक संकेत आ सांस्कृतिक प्रतिलोम

‘मोनक रूप पासी छै’ : लोकजीवनक पुनर्मूल्याङ्कन

“मोनक रूप पासी छै

देहक रूप पासी छै”

पासी, ताड़ी, लबनी आ भुज्जा-चिखना जेकाँ शब्द गजलक परम्परागत दरबारी शब्दावलीकेँ स्थानीय लोकजीवनक धरातलपर आनैत अछि। एतए ‘पासी’ केवल पेय-पदार्थक सम्बन्धसूचक नहि; कविक रूपक-संसारक एकटा स्वायत्त मूल्य-वाचक पद बनैत अछि। एहि गजलमे वैदिक नामसभक संग लोकजीवनक एहि बिम्बक समीपता उच्च-नीच सांस्कृतिक विभाजनपर विनोदी दबाव उत्पन्न करैत अछि।

तथापि ई पुनर्मूल्याङ्कन केहन समाज-दृष्टि गढ़ैत अछि, से प्रश्न खुलल रहैत अछि। लोक-शब्दक बारम्बार प्रयोग अपनहि आप लोकसमुदायक सम्पूर्ण प्रतिनिधित्व नहि दैत अछि। ओकरा कविताक वक्ता, प्रसंग आ मूल्यनिर्णयसँ जोड़ि कऽ देखनाइ चाही। साहित्यिक उपलब्धि एतए अभिजात शब्द-संहिता तोड़ि लोकानुभवकेँ गजलक भाषामे प्रतिष्ठा देब अछि।

राम-रहमान, मन्दिर-मस्जिद आ धर्मक राजनीतिक उपयोग

संग्रहक किछु गजल धार्मिक नामक बीच दूरीक अपेक्षा विनिमयक सम्भावना रखैत अछि, जखन कि अन्य शेर धर्मक नामपर हिंसा आ तमाशापर व्यंग्य करैत अछि। एहि कारण कविक धार्मिक संसारकेँ एकरेखीय विरोध वा आस्था-दर्शनक नाम दऽ सीमित करब उचित नहि। कविता सामाजिक पाखण्डक निन्दा करैत मानवीय सहअस्तित्वक संकेत देबैत अछि। लोकप्रयोग, पौराणिक संकेत आ समकालीन राजनीति मिलिकय गजलक कथ्य विस्तार करैत अछि।

शीर्षकक स्वसन्दर्भ : हास्य, हिंसा आ देहभाषा

“जंघाजोड़ी देखि कऽ

जांघो सभ खूब हँसल”

एहि शेरमे पुस्तकक नाम अपनहि रचनात्मक संसारक भीतर वापस अबैत अछि। ‘देखि कऽ’ दृष्टिक क्षण अछि; ‘जांघो सभ खूब हँसल’ शारीरिक अंगक मानवीकरण। हँसी एतए

विनोद, असहजता आ शिष्टाचार-विघटनक मिश्रित क्रिया बनैत अछि। एहि पाँतिसँ पूर्व रक्तरंजित राजकीय बिम्ब अवस्थित अछि; तें शीर्षकक खेल केवल देहक चुटकुला नहि, हिंस्र सार्वजनिक जीवनक बगलमे उत्पन्न विचित्र हँसीक संकेत सेहो बनैत अछि।

शरीरक अंगकें हँसाबयवला वाक्य मर्यादित शुद्धतावादक भाषामे सहज नहि लगैत अछि। अनचिन्हार एहि असहजता कें चुनैत छथि। मुदा प्रत्येक असहज शब्द साहित्यिक नवोन्मेष नहि होइत अछि; एतए ओकर सार्थकता राजकीय-हिंसात्मक प्रसंगसँ अर्थगत टकराहटमे छैक। शीर्षकक आलोचनात्मक पठनीयता एहि रचनासँ विशेष रूपेँ स्पष्ट होइत अछि।

भाषिक बनावट : छोट वाक्य, पुनरुक्ति आ अर्थक विस्फोट

अनचिन्हारक भाषा निरन्तर उच्च साहित्यिक संस्कृतनिष्ठ वाक्य-रचनाक प्रयोग नहि करैत अछि। लोकबोलीक ‘कने’, ‘जकाँ’, ‘हुनके’, ‘हमरा’, ‘दुन्नू’, ‘नोर’, ‘मोन’ आ बाजार-राजनीतिक पद एक-दोसरसँ निर्भय भेटैत अछि। एहि मिश्रणमे भाषिक स्वाभाविकता अछि। शेरक छोट आकारक कारण एक-एक शब्दक भार बढ़ैत अछि; ‘विपदा’क सामने ‘सुविधा’, ‘विकास’क सामने ‘उदास’ आ ‘धर्मक चमत्कार’क सामने हिंसाक चित्र तीव्र द्वन्द्व बनैत अछि।

रूपात्मक स्तरपर समान ध्वनि-क्रम पाठकक स्मृतिमे ठहरैत अछि। आनफेर, पुनरुक्ति अनिवार्यतः नब अर्थ नहि जोड़ैत; कखनो अनुप्रासक चकाचौंधि शब्दार्थक सूक्ष्मताकें ढाँपि दैत अछि। एहि जोखिमक उदाहरण संग्रहक अत्यन्त छोट, अधिकतर ध्वनि-साम्यपर टिकैत गजलसभमे देखाइत अछि। सफलताक कसौटी ई होबाक चाही जे पुनरावृत्ति प्रत्येक आगमनपर किछु अर्थगत परिवर्तन करैत अछि वा नहि।

आन एकटा प्रश्न ध्वन्यात्मक अनुशासन आ बोलचालक सम्बन्धक अछि। मैथिली उच्चारणमे शब्द-सन्धि, दीर्घ-लघु, स्थानीय स्वरविस्तार आ उच्चारणभेद अनेक सम्भावना खोलैत अछि। संग्रहमे अंकित मात्राक्रम पाठककें एकटा प्रस्तावित पाठ-विधान दैत अछि;

तकर अतिरिक्त मौखिक पाठमे घटैत-बढैत ध्वनिक परीक्षण परिश्रम माँगैत अछि। तें गजलकें केवल लिखित चिह्नक गणित वा केवल गायकक सहज सुरमे सीमित करब दूनू अनुपयुक्त हएत।

पाठकीय बहुअर्थकता : घोषणासँ रचनात्मक क्रियाधरि

कवि भूमिकामे पाठककें अर्थनिर्माणक प्रमुख भागीदार मानैत छथि। एहि सूत्रक वास्तविक उपयोग 'जे हमरा लेल विपदा अछि' जेकाँ शेरमे भेटैत अछि : वक्ता-परिवर्तनसँ संकट-लाभक अनेक सामाजिक दृश्य खुलैत अछि। 'हाथ बढ़लै दुन्नू दिससँ' मे सेहो रदीफ अलग-अलग प्रसंगसँ नब अर्थ लैत अछि। मुदा सभ गजल समान रूपसँ बहुअर्थी नहि। उदाहरणार्थ तीक्ष्ण राजनीतिक नारा एहन निश्चयात्मक कथन देइत अछि जकर अर्थ-दिशा तुलनात्मक रूपसँ स्थिर रहैत अछि।

एहि भिन्नताकें कमजोरी मानबाक बदला गजलक बहुविध कार्य बुझनाइ उचित अछि। कोनो शेर प्रश्न पैदा करैत अछि; कोनो तत्काल प्रतिरोधक घोषवाक्य जेकाँ काम करैत अछि; कोनो प्रेमक स्मृति सुरक्षित रखैत अछि। आलोचनात्मक कसौटी सभपर एक्कहि प्रकारें लागू नहि भऽ सकैत अछि। लेखकक बहुअर्थकता-सिद्धान्त संग्रहक सर्वश्रेष्ठ शेर बुझबा लेल उपयोगी अछि, मुदा ओकरा सर्वग्राही प्रमाणपत्र बना देल जाए तऽ कविता-विशेषक स्वरूप ओझरा जाएत।

मैथिली गजलक साहित्यिक इतिहासमे 'जंघाजोड़ी'

मैथिली गजलक इतिहासकें उर्दू गजलक अनुकृति मात्रक रूपमे वर्णित करब आलोचनात्मक रूपें अपर्याप्त अछि। एक भाषासँ दोसरा भाषामे विधा अबैत काल मात्र बहर वा काफियाक अनुकरण नहि होइत; स्थानीय वाक्य-विन्यास, सामाजिक प्रश्न, उपमा-परम्परा आ पाठकीय अभिरुचि ओकर नव रूप बनबैत अछि। 'जंघाजोड़ी' एहि सांस्कृतिक रूपान्तरणक एकटा देखबाक योग्य उदाहरण अछि : औपचारिक अनुशासनक दावा

परम्परासँ सम्बन्ध रखैत अछि, आ कथयक लोकव्यंग्य आधुनिक मैथिली जीवनमे टिकैत अछि।

विदेहक उपलब्ध साहित्येतिहासपरक विवेचनमे पण्डित जीवन झा सँ प्रारम्भ होइत एकटा परम्परा-रेखा प्रस्तुत अछि; ताहिमे कविवर सीताराम झा, काशीकान्त मिश्र ‘मधुप’, विजयनाथ झा आ योगानन्द हीराक नाम जोड़ल गेल अछि। एहि क्रमकें निर्विवाद सर्वसम्मति नहि, विदेह-सम्बद्ध इतिहासलेखनक प्रस्तावक रूपमे ग्रहण करबाक चाही। एहि पृष्ठभूमिमे अनचिन्हारक पीढ़ीक विशिष्टता विधाक पुनः अनुशासन, कविक प्रशिक्षण, पाठकक तकनीकी सहभागिता आ जालमाध्यमक प्रसारक प्रश्नकें संगहि उठाएब अछि।

वर्तमान संग्रहक भूमिकामे लेखक स्वयं ‘अनचिन्हार आखर’ आ ‘मैथिली गजलक व्याकरण ओ इतिहास’क उल्लेख करैत छथि। रचनाक अन्तमे मात्राक्रम देबाक कारण ओ पाठककें बहर बुझबाक क्षमता विकसित करब मानैत छथि। एहि कारण संग्रह काव्यक संग एकटा अनौपचारिक काव्य-शिक्षालयक रूप सेहो धारण करैत अछि। जँ प्राचीन मैथिली पद-परम्परा सामूहिक गायन, राग आ लोकानुष्ठानक स्मृतिसँ संवाद करैत छल, तऽ एहि संग्रहमे छन्दक तर्क, भाषिक साक्षरता आ मुद्रित पाठपर आधारित नव पाठक-समुदाय आगाँ अबैत अछि। दुनू परम्परा बीच समरूपता नहि, बल्कि माध्यम आ उपयोगक रूपान्तरण अछि।

मैथिली कविता आ गजलक आधुनिक संयोगक बहस मे लेखकक स्थानकें केवल प्रथमत्वक दाबीसँ नहि मापल जा सकैत अछि। ऐतिहासिक योगदानक प्रमाण समुचित तिथिक्रम, प्रकाशित पाठ आ तुलनात्मक शिल्प-परीक्षणसँ प्राप्त होइत अछि। अनचिन्हारक महत्त्व ई अछि जे ओ विधा-चर्चाकें अपन रचना-संग्रहक भीतर स्थापीत करैत छथि; परम्पराक इतिहास आ स्वयं रचनाक सौन्दर्यक प्रश्नकें पाठक लग एकसंग पहुँचबैत छथि।

तुलनात्मक विवेचन : उर्दू गजल, मैथिली पद-परम्परा आ आधुनिक जनकाव्य

गजलक पारम्परिक संरचनामे मतलाक ध्वन्यात्मक स्थापना, शेरक अपेक्षाकृत स्वायत्तता, काफिया-रदीफक पुनरागमन आ बहरक अनुशासन महत्त्वपूर्ण अछि। ‘जंघाजोड़ी’ एहि संरचनाक संग अपन रूपात्मक सम्बन्ध स्पष्ट करैत अछि। उर्दू गजलक ऐतिहासिक उदाहरण लेखकक भूमिकामे उपस्थित अछि, मुदा एहि नामसभक उल्लेख सँ सिधैं शिल्पगत समानता सिद्ध नहि होइत। समान विधा होयब आ समान काव्य-मिजाज होयब भिन्न विषय अछि।

मैथिली लोकगीत आ पदक भाषामे प्रेम, विरह, ऋतु, अङ्ग-उपमा, घर-आँगन आ सामाजिक संस्कारक घनी परम्परा अछि। अनचिन्हार एहि बिम्बसभकें नव सामाजिक प्रसंगक संगे जोड़ैत छथि। ‘देह’, ‘नोर’, ‘चान’ आ ‘आँचर’क शब्दसंसार लोकगीतक स्मृति जगबैत अछि, मुदा रदीफक नियमित प्रत्यावर्तन आ एक शेरसँ दोसर शेरक विषय-उछाल गजलकें स्वतंत्र रूप दैत अछि। एहि अर्थमे ई संग्रह लोकगीतक विस्तार नहि, लोकभाषिक संसाधन सँ समृद्ध गजल अछि।

आधुनिक प्रतिरोधी काव्यक तुलनामे एहि संग्रहक राजनैतिक शेर छोट, तीव्र आ प्रायः व्यंग्यप्रधान अछि। विरोध कखनो उद्धोषणात्मक होइत अछि, कखनो संस्थागत आत्मस्वीकारक नाटकीय आवाज बनैत अछि। ओकर सरोकार दुष्कर मजदूरी, नेताक पाखण्ड, विकासक असमान लाभ, बाजारक क्रूरता आ बोलबाक नैतिक अधिकार अछि। तथापि वैचारिक स्तरपर एकर कोनो एकमात्र कार्यक्रम नहि; प्रेम, देह आ हँसीक निरन्तर उपस्थितिसँ संग्रह व्यापक मानवीय व्यवहारक पाठ बनैत अछि।

कविक आत्मनियमनक दावा आ आन्तरिक आलोचनाक आवश्यकता

लेखक ‘नव प्रयोग’क शब्दकें सहज प्रतिष्ठा देबय सँ मना करैत छथि आ छन्दक विधान सीखलाक बादे प्रयोगक पक्ष लैत छथि। एहि कथनमे शिक्षणपरक सावधानी अछि। मुदा स्वयं संग्रहमे पौराणिक संकेतक आधुनिक पुनःप्रयोग, मीडिया-राजनीतिक आत्मपरिहास,

शरीरक मानवीकरण आ अत्यल्प शब्दक राजनैतिक शेर साहित्यिक अर्थमे प्रयोगधर्मिताक संकेत देइत अछि। अतएव लेखकक ‘प्रयोग नहि’ कहबाक अर्थ सम्भवतः नब बहर गढ़बाक दाबी नहि करब अछि; समस्त काव्यात्मक नवीनताक अभाव नहि। आलोचना एतए लेखकक वाक्य आ कृतिमे भेद करैत अछि।

ठीक एहने ढंगसँ प्रत्येक गजलक संग मात्राक्रम देब प्रशंसनीय अछि, मुदा गजलसभक अन्तमे स्वयं उल्लिखित छूट पाठककें स्वतन्त्र छन्दपरीक्षाक लेल प्रेरित करैत अछि। ई तथ्य लेखकक विरुद्ध दोषसिद्धि नहि, बल्कि विधागत पारदर्शिताक अवसर अछि। विश्लेषणक पर्याप्त आधार बिना शतप्रतिशत शिल्पशुद्धताक घोषणा करब अथवा छूटकें स्वतः त्रुटि कहि खारिज करब दुनू अतिशयता हएत।

राजनीतिक स्वरक सीमासभ सेहो स्पष्ट अछि। कखनो व्यंग्यक तीव्रता चरित्रकें एकात्मक बनबैत अछि; सार्वजनिक जीवनक सभ जटिलता चोर, ठक वा पाखण्डीक छविमे समाइत अछि। कखनो प्रेमक शब्दावलि एके उपमान पर घुरि अबैत अछि। किन्तु अनेक ठाम मामूली शब्दक अनपेक्षित संयोग नब बिम्ब उत्पन्न करैत अछि। एहि कारण संग्रहक समग्र मूल्याङ्कन ‘सभटा श्रेष्ठ’ अथवा ‘सभटा दोषपूर्ण’ जेकाँ ध्रुवीकरणसँ बचबाक चाही।

गजलकार आ पाठकक नैतिक सम्बन्ध

‘घूस खा कऽ गरीबपर’ : कविक आत्मालोचनात्मक व्यंग्य

“घूस खा कऽ गरीबपर जिंदा गजल लिखू
होटल बैसि कऽ चिकेन अंडा गजल लिखू”

एहि शेरमे काव्य-व्यवसाय स्वयं आलोचनाक विषय अछि। वक्ता जे निर्देश दैत अछि से प्रत्यक्ष अर्थमे असंगत आ नैतिक रूपेँ आपत्तिजनक अछि; पाठक एहि उलट अभिप्रायकें पकड़ैत छथि। कवि प्रगतिशील नारा आ निजी आचरणक फाँक देखबैत छथि। भूमिकामे लेखक रचनात्मक कथन आ व्यक्तिगत आचरणक संगतिक बात उठबैत छथि; एहि शेरसँ

ओ विचार काव्यात्मक रूप ग्रहण करैत अछि। एतए व्यंग्यक लक्ष्य गरीबी नहि, गरीबक नामपर प्रतिष्ठा खरीदनिहार साहित्यिक पाखण्ड अछि।

व्यंग्य एतए अपन परम्पराक ओहि स्थिर जोखिमसँ बचैत अछि जे कवि सदैव उपदेशक होइ। निर्देशात्मक ‘लिखू’क पुनरावृत्तिसँ वक्ता पाखण्डीक मुखौटा पहिरैत अछि आ पाठककैँ अर्थ उलटबाक श्रम देइत अछि। ई संग्रहक सबसँ प्रभावशाली स्व-आलोचनात्मक रणनीतिमे सँ एक अछि।

‘कहल करियौ किछु बात’ : संवादक पक्षधर अन्त

“कहल करियौ किछु बात
सुनल करियौ किछु बात”

संग्रहक अन्तिम गजल बोलब आ सुनबाक आवृत्तिसँ मानवीय सम्बन्धक आवश्यकता याद दियबैत अछि। लेखकक लम्बा आत्मवक्तव्य आ दू सय लघु रचनाक बाद ‘किछु बात’ कहल आ सुनल दुनूक आह्वान बनैत अछि। विचारक सार्वजनीन तत्त्व एतए अछि जे आलोचना, प्रेम आ समाज तीनू बातचीत बिना अधूरा अछि। एहि समापनक सौन्दर्य कठोर राजनीतिक शेरसभक बाद संवादक अपेक्षाकृत कोमल मुद्रा धारण करबमे निहित अछि।

निष्कर्ष : मैथिली गजलक लोकोन्मुख आधुनिकता

‘जंघाजोड़ी’क मूल साहित्यिक उपलब्धि गजलक औपचारिक आत्मचेतनाकैँ मैथिली लोकजीवनक खुरदुरा, असमान आ हास्य-विडम्बनामय अनुभवसँ मिलाएब अछि। बहरक नियम, काफिया-रदीफक पुनरागमन, छोट शेर, स्थानीय शब्दक स्पर्श आ सार्वजनिक संस्थापर तीक्ष्ण टिप्पणी एकटा चिन्हार शैली गढ़ैत अछि। संग्रहक केन्द्रमे कवि अपन पाठककैँ केवल रसग्राही नहि, शिल्प-जाँचक सहभागी मानैत छथि।

एहि रचनासंसारक सर्वोत्तम शेर ओ अछि जतए अर्थक संक्षिप्तता, ध्वनिक अनुशासन आ सामाजिक दृष्टि परस्पर बल दैत अछि। सबसँ कम सफल स्थान ओ छथि जतए

पुनरावृत्ति नव अर्थ नहि देइत, आरोप समग्र यथार्थकै सरल करैत अछि, अथवा देह-वर्णनक भीतर स्त्रीक स्वतंत्र स्वर अस्पष्ट रहि जाइत अछि। संग्रहक वास्तविक सम्मान एहि भिन्नताकै स्पष्ट करबमे अछि, न कि सभ रचनापर समान प्रशंसाक परत चढ़ाएबमे।

मैथिली गजलक इतिहासमे अनचिन्हारक योगदान विधा-सम्मत लेखनक आग्रह, रचनाक संगे तकनीकी विवरण देबाक अभ्यास आ जालमाध्यमक साहित्यिक संवादसँ जुड़ल अछि। ‘जंघाजोड़ी’ एहि प्रयत्नक महत्त्वपूर्ण काव्यात्मक उदाहरण अछि। ई पोथी सिद्ध करैत अछि जे अनुशासन आ प्रतिरोध परस्पर विरोधी नहि; छन्दक भीतरहु समाजक असुविधाजनक प्रश्न उठि सकैत अछि। एकर अन्तिम महत्त्व एहि सम्भावनाक साहित्यिक साक्ष्यमे अछि।

सन्दर्भसूची

प्राथमिक कृति : अनचिन्हार, आशीष। ‘जंघाजोड़ी : गजल संग्रह’। विदेह, मैथिली साहित्य आन्दोलनक प्रकाशन-संग्रह। पुस्तकमे उपलब्ध प्रकाशकीय विवरणमे २०१२ आ २०२२ क अभिलेखीय अधिकार-वर्ष उल्लेखित अछि; एहि वर्षसभकै एकमात्र प्रथम प्रकाशन-वर्षक रूपमे ग्रहण नहि कएल गेल अछि।

अनचिन्हार, आशीष। ‘अनचिन्हार आखर’ (गजल, रुबाइ आ कता-संग्रह)। विदेहक पुस्तक-सूचीमे पंजीकृत; ‘जंघाजोड़ी’क लेखकक भूमिकामे पूर्ववर्ती संग्रहक रूपमे उल्लेख।

अनचिन्हार, आशीष। ‘मैथिली गजलक व्याकरण ओ इतिहास’। विदेह पुस्तक-संग्रहमे सूचीबद्ध; ‘जंघाजोड़ी’क भूमिकामे सैद्धान्तिक मार्गदर्शक कृतिक रूपमे निर्देश।

अनचिन्हार, आशीष। ‘मैथिली गजलक रेडी रेकोनर’। विदेह पुस्तक-संग्रहमे सूचीबद्ध; विधागत प्रशिक्षणक ग्रन्थ-सन्दर्भ।

अनचिन्हार, आशीष। ‘शब्द-अर्थ-शक्ति’। विदेह पुस्तक-संग्रहमे सूचीबद्ध; मैथिली गजल-आलोचनासँ सम्बद्ध कृति।

अनचिन्हार, आशीष। ‘संदर्भ सहित’। विदेह पुस्तक-संग्रहमे सूचीबद्ध; गजल-आलोचनासँ सम्बद्ध कृति।

अनचिन्हार, आशीष। ‘कुमारि इच्छा’ (गजल-संग्रह)। विदेह पुस्तक-संग्रहमे सूचीबद्ध;
रचनाकारक अन्य काव्यकृति।

ठाकुर, गजेन्द्र आ अनचिन्हार, आशीष (संयुक्त सम्पादन)। ‘मैथिली गजल : आगमन ओ
प्रस्थान बिंदु’। विदेह पुस्तक-संग्रहमे सूचीबद्ध; मैथिली गजल-आलोचनाक सन्दर्भ।
ठाकुर, गजेन्द्र आ अनचिन्हार, आशीष (संयुक्त सम्पादन)। ‘मैथिलीक प्रतिनिधि गजल’।
विदेह पुस्तक-संग्रहमे सूचीबद्ध; गजलक परम्परा आ प्रतिनिधि रचनाक ऐतिहासिक
सन्दर्भ।

विदेह। ‘विदेह प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका : पोथी-संग्रह’। प्रकाशकक ग्रन्थ-सूची;
अनचिन्हारक प्रकाशित रचनासभक सूची आ सम्बन्धित गजल-साहित्यक प्रकाशकीय
अभिलेख। <https://videha-ejournal.github.io/videha/pothi.htm>

विदेह। ‘A Parallel History of Mithila & Maithili Literature’। विदेहक
साहित्येतिहासपरक शोध-विवेचन; मैथिली गजलक परम्परा-रेखाक सम्बन्धमे प्रस्तुत
मत। <https://videha-ejournal.github.io/videha/research/2026/438/a-parallel-history-of-mithila-maithili-literature.htm>

विदेह। ‘विदेह शोध-लेख : अंक १ सँ ४५१ धरि’। शोध-सूची; आशीष अनचिन्हारक गजल-
व्याकरण, गजल-आलोचना आ मैथिली साहित्येतिहास सम्बन्धी प्रकाशित लेखसभक
प्रकाशकीय सूची। <https://videha-ejournal.github.io/videha/research/videha-scholar-research-book.html>

विदेह। ‘Critical Appreciation of Ashish Anchinhar’। रचनाकारक जीवन, कृति,
गजल-विधान आ आलोचनात्मक परिप्रेक्ष्यपर विदेह-सम्बद्ध विवेचन। https://videha-ejournal.github.io/videha/new_page_56.htm

समीक्षा ९

कुमारि इच्छा

अपूर्ण आकांक्षा आ पूर्ण छन्द

सारांश

आशीष अनचिन्हारक ‘कुमारि इच्छा’ आधुनिक मैथिली गजलक ओहन संग्रह अछि जाहिमे छन्दक अनुशासन आ सामाजिक असन्तोष एक-दोसराक परीक्षण करैत अछि। संग्रहक सयटा गजलमे भूख, वर्गभेद, सत्ता, बाजार, पारिवारिक विखण्डन, आधुनिक सुविधाक विसंगति, स्त्रीक श्रम, रचनाकारक आत्मपरीक्षण आ अधूर आकांक्षाक अनेक रूप प्रत्यक्ष होइत अछि। कविक विस्तृत भूमिका ई रचनाकेँ केवल कविता-पोथी नहि रहय दैत अछि; ओ मैथिली लेल अपन बहर-विन्यास बनयबाक आग्रह, परम्परागत अरूजसँ सम्बन्ध आ नव नामकरणक प्रस्ताव प्रस्तुत करैत छथि। एहि शोधक केन्द्रीय प्रतिपाद्य ई अछि जे ‘कुमारि इच्छा’क सार्थकता छन्द-विषयक घोषणामे मात्र नहि, बल्कि ओहि घोषणाकेँ जीवनानुभव, लोकभाषा, व्यंग्य आ सामाजिक आलोचनासँ भिड़बैत रहबामे अछि।

मूल संग्रहक सम्पूर्ण सयटा गजल, कविक आत्मवक्तव्य, रचनाक पछाति देल छन्द-विवरण आ विदेहक ग्रन्थ-सूची तथा शोध-अभिलेखक आधारपर एहि अध्ययनमे औपचारिक काव्यविश्लेषण, विशिष्ट गजलक पृथक पाठविश्लेषण, शीर्षकक अर्थ-मीमांसा आ मैथिली गजलक साहित्येतिहाससँ तुलनात्मक सम्बन्धक विवेचन कएल गेल अछि। मूलक अक्षररूप प्रत्यक्ष मिलानसँ सुनिश्चित भेल सीमित पाँति मात्र उद्धृत अछि। अध्ययन संग्रहक उपलब्धिक संग ओकर पुनरावृत्ति, छन्द-विचारक असम्पूर्णता, स्त्रीस्वरक सीमित स्वायत्तता आ उपदेशात्मक व्यंग्यक जोखिम सेहो रेखांकित करैत अछि।

बीजशब्द : मैथिली गजल; आशीष अनचिन्हार; कुमारि इच्छा; बहर; अरूज; विदेह; लोकधुन;
व्यंग्य; आकांक्षा; सामाजिक न्याय।

साहित्यिक प्रश्न आ अध्ययन-दृष्टि

काव्यसंग्रहक मूल्यांकन करैत काल सहज प्रश्न होइत अछि जे कतेक रचना स्मरणीय अछि, कतेक लयबद्ध अछि आ कवि अपन समयकें कतेक सघन रूपमे चिन्हैत छथि। ‘कुमारि इच्छा’ एहि सामान्य कसौटीमे एकटा आर जटिल प्रश्न जोड़ैत अछि : जँ लेखक प्रत्येक गजलक संग बहरक मात्राक्रम आ कतहु-कतहु छूटक औचित्य स्वयं लिखैत छथि, तँ आलोचक केवल भावपर निर्णय दए सकैत छथि की छन्दक दावाक स्वतंत्र परीक्षण सेहो करबाक चाही? एहिठाम दूनू काज जरूरी अछि। छन्दक घोषणा अपना मे सफलता नहि; मुदा छन्द-विषयक प्रायोगिक सचेतना सेहो काव्य-इतिहासक दस्तावेज होइत अछि।

ई शोध मूलतः ग्रन्थकेन्द्रित अछि। पाठकें एकटा सतत काव्य-समुच्चय मानि गजलक क्रम, प्रतीक-परिवर्तन, कथ्यक आवृत्ति आ लेखकद्वारा देल शिल्प-टिप्पणीक अनुशीलन कएल गेल अछि। साहित्येतिहासक तुलनात्मक प्रसंगमे विदेहक पोथी-संग्रह, शोध-सूची, आशीष अनचिन्हारक उपलब्ध आलोचनात्मक कृतिक विवरण आ विदेहमे प्रकाशित परम्पराविषयक विवेचन उपयोगी सन्दर्भ बनैत अछि। जे इतिहास-तथ्य स्वतन्त्र पुरातन हस्तलिखित आधारपर नवसँ सिद्ध नहि कएल गेल, ओकरा एहि शोधमे अभिलेख-आधारित परिप्रेक्ष्यक रूपमे ग्रहण कएल गेल अछि।

कवि कहैत छथि जे पाठक जँ मनोरंजनक भीतरसँ ज्ञान, बुद्धि, परिवर्तन वा जीवन-सुधारक किछु सूत्र भेटबैत छथि तँ रचनाक सौभाग्य। ई कथन पाठकक अधिकार स्वीकार करैत अछि। ताहि लेल एहि पोथीक एकमात्र अधिकृत अर्थ कविक भूमिका नहि अछि; अलग-अलग शेर सामाजिक स्थिति, वैयक्तिक स्मृति आ भाषिक संकेतक अनुसार अपन अतिरिक्त अर्थ बना सकैत अछि। आलोचना एहि बहुअर्थताकें बचबैत हुए कविक छन्द-दावाक वस्तुनिष्ठता सेहो माँगैत अछि।

पोथीक रचना-परिसर आ आत्मवक्तव्य

‘कुमारि इच्छा’मे सयटा क्रमबद्ध गजल संकलित अछि। आरम्भमे रचनाकारक भूमिका आ अन्तमे कविक परिचय अछि। गजलक सङ्गे अधिकांश ठाम विशिष्ट मात्राक्रम, नामित बहर अथवा छूटक विवरण देल गेल अछि। एहि बनावटसँ एकटा अनोखा द्विस्तरीय पाठ बनैत अछि : ऊपर गीतात्मक-विन्यास आ नीचाँ ओहि विन्यासक कार्यविधि। पाठक पहिने भुखायल पेट, टूटैत सम्बन्ध वा राजनीतिक तामझामसँ भेट करैत छथि; तुरन्त बाद रचनाक छन्दकीय गणना हुनका औपचारिक संरचना दिस मोड़ि दैत अछि।

भूमिकामे लेखक अपन पहिल संग्रह ‘अनचिन्हार आखर’कें २०११ आ दोसर ‘जंघाजोड़ी’कें २०२० सँ जोड़ैत ‘कुमारि इच्छा’क सार्वजनिकताकें २०२१ सँ सम्बद्ध करैत छथि। विदेहक अभिलेखमे एहि कृतिक उत्तरवर्ती ई-प्रसारणक रूप सेहो उपलब्ध अछि; एहि दूनू उल्लेखकें एकै प्रकाशन-घटना मानि लेब उचित नहि। लेखक तीनू संग्रहक रचनाविधानमे अन्तर देखबैत सरल वर्णिक अभ्याससँ स्वयं निर्मित मात्राक्रम आ फेर स्थापित उर्दू-फारसी बहर दिस गति करबाक कल्पना रखैत छथि।

लेखकक अन्तिम स्वीकारोक्ति विशेष महत्वपूर्ण अछि। ओ अपन संग्रहकें छन्दयुक्त कहैत हुए भावना आ लयक सम्पन्नतापर पाठकक अनुभूतिक महत्त्व रखैत छथि। एहि आत्मालोचनामे काव्यविनयक संग काव्य-रणनीति सेहो अछि : रचनाकार तकनीकी श्रमपर जोर दैत छथि मुदा सौन्दर्यक फैसला पाठककें सौंपैत छथि। आलोचक लेल ई क्षण महत्त्वपूर्ण अछि, कारण छन्दक अनुशासन आ काव्यानुभवक ऐक्य अपने-आप सिद्ध नहि होइत।

छन्दक कार्यक्रम : स्थानीय ध्वनि आ वैश्विक काव्यविधाक संयोग

मैथिली गजलमे अरबी-फारसी-उर्दू अरुजक सम्पर्क आ मातृभाषाक स्वाभाविक उच्चारणक बीच तनाव पुरान बौद्धिक प्रश्न अछि। अनचिन्हार एहि तनावकें न त पूर्ण अनुकरण द्वारा मिटबैत छथि, न निर्बन्ध मात्रिक समानता द्वारा। हुनकर स्थापना अछि जे

प्रत्येक पाँतिक मात्राक्रम नियमित रहबाक चाही, मुदा मैथिलीक ध्वनिक प्रकृति अपन स्वतंत्र बहरक विकास सेहो कऽ सकैत अछि। एहिसँ भाषा केवल उधार लेल विधाक वाहक नहि, ओकर छन्द-निर्माणक सक्रिय शक्ति बनैत अछि।

भूमिकामे ‘बहरे विदेह’ लेल लगातार दीर्घ-ध्वनिक अन्तमे लघु अपनाबयबला क्रम प्रस्तावित अछि। ‘बहरे गोविन्द’मे लघुसँ आरम्भ होइत दीर्घ-विस्तार, ‘बहरे लोचन’मे लघु-दीर्घ-लघुक अन्तिम विन्यास, ‘बहरे प्रदीप’मे खफीफक एकटा पुनर्विन्यस्त मात्राक्रम आ ‘बहरे रूप’मे २२२१ रुक्कनक पुनरावृत्तिक अवधारणा देखाओल गेल अछि। नामकरणमे विदेह पत्रिका, गोविन्द झा, रामलोचन ठाकुर, मैथिलीपुत्र प्रदीप आ रूपकान्त ठाकुरक स्मरण राखल गेल अछि। ई नाम केवल छन्द-चिह्न नहि; मैथिली साहित्यक संस्थागत-सांस्कृतिक स्मृतिक घोषणापत्र बनि जाइत अछि।

तथापि नाम राखब आ नओ बहरक सांगीतिक-ध्वन्यात्मक विशिष्टता प्रमाणित करब भिन्न कार्य अछि। प्रस्तावित क्रम सभक परम्परागत अरूजक अन्तर्गत समकक्ष रूप कतेक अछि, मातृभाषिक उच्चारणमे लघु-दीर्घक स्वीकृत नियम की होयत, आ स्वतंत्र पाठकद्वारा तकतीअ करिते कोन परिणाम प्राप्त होयत—ई प्रश्न खुलल रहल अछि। लेखक स्वयं पूर्ववर्ती छन्द-रूपसँ सम्भावित साम्यक विषयमे सावधानी प्रकट करैत छथि। अतः नव नामकरणकेँ अन्तिम रूपे मानकीकृत सिद्धान्त नहि, अनुसंधान आ सामूहिक प्रयोगक प्रस्ताव मानब बेसी न्यायसंगत अछि।

छन्दकीय वितरण आ परीक्षणक सीमा

सयटा रचनाक अन्तमे देल लेखकक टिप्पणीक पृथक गणना करिते चौवन गजलक संग ‘बहरे मीर’क संज्ञा भेटैत अछि; नौटा ठाम ‘रमल’ आ चारिटा ठाम ‘मुतकारिब’क स्पष्ट उल्लेख अछि। शेष तेतीस गजलमे अन्य मात्राक्रम, स्वतंत्र प्रयोग अथवा अलग छन्दीय वर्गक विवरण अछि। ई गणना लेखकक टिप्पणीक वर्गीकरण अछि, परम्परागत अरूजक

स्वतंत्र प्रमाणपत्र नहि। ओहि कारण एहि आँकड़ासँ संग्रहक घोषित शिल्प-प्राथमिकता बुझाइत अछि, किन्तु सभ गजलक नियमबद्धता निर्विवाद सिद्ध नहि होइत।

बहरे मीरक विस्तृत प्रयोगक एकटा व्यावहारिक लाभ अछि : लोकभाषामे लघु-दीर्घक तनाव सँ घबरायबामे बदला कवि अपेक्षाकृत नियमित आवृत्तिक सहारा लैत छथि। परिणामस्वरूप कतिपय मतला स्मरणीय आ वाचिक बनैत अछि। उल्टा जोखिम ई जे दीर्घक गणनाक लेल टूटा पृथक लघुकें एक दीर्घ मानबाक ‘छूट’क बारम्बार स्वीकारोक्ति शिल्पक निश्चितताकें कमजोर करैत अछि। जे छूट अपरिहार्य संगीतात्मक उच्चारणमे समर्थित अछि से एक बात; जे छूट केवल गणनाक बराबरी लेल प्रयुक्त अछि से दोसर।

कविक टिप्पणीमे उदाहरणार्थ भूखपर आरम्भिक गजलक विन्यास २२-२२-२२-२१, शान्ति आ क्रान्तिक विरोधवला गजलक विन्यास २१२२-२१२२, भातार-सम्बन्धी गजलक विन्यास २२-२२-२२-१२१ तथा शीर्षकीय गजलक विन्यास २२२-२२२-२२२-२२ बताओल गेल अछि। एहि उदाहरण सभमे केवल लिखित चिह्न बराबर होएब पर्याप्त नहि; मैथिली उच्चारणक वास्तविक ताल, विसर्ग-संयुक्ताक्षर, स्वर-भार आ विरामक स्थितिमे सुनल जायब चाही। एहि दृष्टिसँ संग्रह गजलकार आ छन्दशोधी दुनूक लेल समृद्ध, मुदा बहस माँग्यवला पाठ अछि।

शेर, मतला, काफिया, रदीफ आ अर्थक स्वतन्त्रता

गजल-रूपक पहचान ओकर मात्राविधानमे समाप्त नहि होइत। मतलाक दूनू मिसरामे समान रदीफ-काफियाक प्रतिष्ठापन आ पछिला शेर सभक अपेक्षित स्थानमे तकर पुनरागमन एकटा अन्तःसंगीत बनबैत अछि। ‘कुमारि इच्छा’मे ‘पेट’, ‘भातार’, ‘राम हरे’, ‘दिक्कत’, ‘सच केर दलाल’, ‘लेने जाइए’ आ ‘बाँचल’ सन आवर्तित पद भाषाक जनपदीय भंगिमाकें रचनात्मक साधन बनबैत अछि। अनेक गजलमेसँ एकटा शेर हटेला दोसर शेर अपन टिप्पणीकें स्वतंत्र राखैत अछि।

मुदा बारम्बार लौटैत रदीफ कतिपय ठाम अर्थक विस्तार रोकेबो करैत अछि। जेना ‘सच केर दलाल’क आवृत्तिसँ सत्तासीन झूठक मजाक तीक्ष्ण होइत अछि, मुदा अलग-अलग शेर जँ नव दृष्टि नहि जोड़य तँ एहि व्यंग्यक प्रभाव यांत्रिक भऽ सकैत अछि। शेरक स्वायत्तता आ समग्र गजलक विषयगत दिशा—दूनूक सन्तुलन कविक मुख्य कसौटी बनैत अछि।

प्रेम, कुटुम्ब, राजनीति, रोजगार आ काव्यसंस्था सँ सम्बन्धित विषय एकर पश्चातवर्ती विस्तार छी। गजलक संक्षिप्त विन्यास समकालीन समाचार-भाषा, छोट वाक्य, लोक-उक्ति आ तीक्ष्ण प्रतिप्रश्न लेल अनुकूल रहैत अछि। अनचिन्हार एहि सुविधा के खूब उपयोग करैत छथि। तरल लय आ अर्थक घनत्व एक-दोसरासँ मिलल अछि एहन शेर अधिक सफल, जखन कि केवल नारा अथवा तथ्यसूचक वाक्य बनि रहल शेर कम स्मरणीय अछि।

भाषा, लोकवाणी आ अन्तःपाठ

संग्रहक भाषा औपचारिक पाण्डित्यक ठाम बहुधा अपन गामघरक बातचीत सँ ऊर्जा प्राप्त करैत अछि। ‘मोन’, ‘पेट’, ‘आँगन’, ‘भातार’, ‘सासुर’, ‘नैहर’, ‘पैकार’, ‘दरबार’, ‘कपार’, ‘जुन्ना’ जकाँ शब्द काव्यक विषय लोकजीवनमे धरि दैत अछि। तकर संग ‘सिस्टम’, ‘रिपोर्टिंग’, ‘फाइल’, ‘फ्री’, ‘गीजर’ आ ‘ऑफिस’क प्रयोग समकालीन समाजक वस्तु-जगत खोलैत अछि। एहि मिश्रित शब्दभण्डारकें भाषा-अशुद्धिक सरल प्रमाण मानब त्रुटिपूर्ण होयत; एहि माध्यमसँ बाजार, प्रशासन आ घरेलू जीवनक परस्पर प्रवेश घटित होइत अछि।

लोक-धुन, भजनात्मक रदीफ, कबीर-स्मृति आ व्यंग्यात्मक स्वांग एकर अन्तरपाठक सम्बन्ध गहिर करैत अछि। ‘राम हरे’बला गजलमे कवि स्पष्ट करैत छथि जे पदक प्रयोग भजनसँ ग्रहण कएल गेल अछि। लोकधुन-आधारित राजनीतिक गजलमे ध्वनिसंरचना जनसभा अथवा सामूहिक गायनक सहज सम्भावना बनबैत अछि। एहिसँ गजल एकान्त प्रेमालापसँ बाहर सामाजिक वाचिकता धरि बढ़ैत अछि।

तथापि 'फेस', 'ट्रेस', 'गेम', 'सिस्टम' सन शब्दक तात्कालिकता कविता केँ समय-सापेक्ष बनबैत अछि। उच्चारणक समता साधबाक लेल प्रयुक्त विदेशी पद जँ आन्तरिक छन्दसँ सहज नहि जुड़य तँ ओ वाचिक तनाव उत्पन्न करैत अछि। एहि आलोचनाक अर्थ भाषिक शुद्धतावाद नहि, बल्कि रचनामे प्रयुक्त प्रत्येक शब्दक ध्वनि आ प्रसंगक काव्यात्मक अनिवार्यता देखब अछि।

पृथक पाठविश्लेषण

भूखक रूपक : खाली पेटसँ राज्यक अनैतिकता धरि

रूसल	रहलै	खाली	पेट
नहिये भेलै राजी पेट			

संग्रहक पहिल गजल पाठकेँ व्यक्तिगत प्रणयक संसारमे नहि, पेटक आग्रहमे प्रवेश करबैत अछि। 'रूसल' मनुष्यक भावनात्मक क्रिया अछि, मुदा कवि ओकरा पेटक गुण बना दैत छथि। एहि मानवीकरणसँ भुखल शरीर अपन अधिकारक वाणी पाबैत अछि। अन्नाभाव धार्मिक कर्मक नैतिकता सेहो जाँचैत अछि; साधु आ सरकारक उल्लेखसँ व्यंग्य दैनन्दिन भूखक वस्तुगत समस्या दिस वळैत अछि। 'पेट' रदीफ एकहि साथ हास्यक लय आ अभावक निरन्तरता बनबैत अछि।

ई आरम्भ संग्रहक विषय-सूत्र निश्चित करैत अछि : भौतिक असुरक्षा बिनु नैतिक शान्तिक अर्थ अधूरा अछि। कवि जँ भूखक निराकरणक नीति नहि लिखैत छथि, तइयो अपन लघु शेरद्वारा ओ उच्च आदर्श आ खाली पेटक बीच प्रतिपक्ष स्थापित करैत छथि। रदीफक आघातसँ पाठककेँ सभ शेरक अन्तमे पुनः ओही समस्या धरि लौटय पड़ैत छनि।

मोनक शान्ति बनाम पेटक क्रान्ति

मोन	बनलै	शांतिवादी
पेट बनबै क्रांतिकारी		

एहि गजलक पहिल शेर शान्ति आ क्रान्तिक लोकप्रचलित विरोधकें शरीर आ चेतनाक परस्पर गतिशील सम्बन्धमे बदलैत अछि। ‘मोन’ आदर्शमे समझौता करबाक इच्छुक अछि; ‘पेट’ जीविकाक दबावक कारण असहमतिकें ठेलैत अछि। सामाजिक क्रान्तिक ई भौतिकवादी लघुरूप कठिन सैद्धान्तिक तर्कक बदला सरल अनुभवसँ निर्मित अछि। तुरन्त बाद राजा-रानी आ दास-दासीक दृश्य सामाजिक पदानुक्रमक व्याख्या बनैत अछि।

एहि शेरक शक्ति ओकर सूक्तिसुलभ काटमे अछि। मुदा बहुत एहन सूक्ति एकत्र होएबासँ अन्ततः जटिल सामाजिक प्रक्रियाक सहज द्वैतमे सरलीकरणक सम्भावना रहल करैत अछि। लेखकक सफलता विषयकें तीक्ष्ण बनयब अछि; कमजोरी तखन प्रकट होइत अछि जखन समान विरोधक नव-नव नामक स्थानपर अनुभवक विशेष विवरण अनुपस्थित रहैत अछि।

बाहरक एकता आ भीतरी टूटन : भातार-शृंखला

बाहर	बाहर	जोड़ल	भातार
भितरे भीतर टूटल भातार			

एहि गजलक केन्द्रीय पद ‘भातार’ सम्बन्धक पुरुष-पहचानक रूपमे आयल अछि, मुदा ओकर संग ‘जोड़ल’ आ ‘टूटल’ क्रियाक संयोजन बाह्य संरचना आ आन्तरिक विघटनक अन्तर खोलैत अछि। भाषा परिवारक निश्चित भूमिकाक आलोचना बनैत अछि। बाहर जुड़ल देखाइत सम्बन्ध भीतर टूटल अछि—ई सामाजिक प्रदर्शन आ भावनात्मक विस्थापनक संक्षिप्त चित्र अछि। विकासक मृगतृष्णा, हिसाब, इच्छा आ अपने लोकद्वारा घावक संकेत एहि भङ्गुरताकें आर्थिक-सामाजिक पृष्ठभूमि दैत अछि।

एहि गजलक छन्द-टिप्पणी विशेष ध्यान खींचैत अछि, कारण कवि एतय प्रस्तावित ‘बहरे लोचन’क मात्राविधानक उदाहरण उपस्थित करैत छथि। ताहि लेल ई रचना केवल दाम्पत्य-विसंगतिक कथन नहि; भाषा-विशिष्ट छन्द बनयबाक प्रयोगशाला सेहो अछि।

साहित्यिक पक्ष परखैत काल अन्तिम लघु-दीर्घ-लघुक प्रभाव आ ‘भातार’ रदीफक वाचिक आघातक सम्बन्ध विचारेब उचित होयत।

धर्मक ध्वनि आ प्रशासनक यथार्थ

सभटा सुविधा सरकारी राम हरे
खाली हुनके सरदारी राम हरे

‘राम हरे’क पुनरावृत्ति भजनात्मक सामूहिकतानक भाव पैदा करैत अछि, मुदा कथ्य ओकर विपरीत दिशामे जाइत अछि। सुविधा, सरकारी सरदारी, रिपोर्टिंग, आपसी मारामारी आ मायके बेचैनी जेहन विषयक संग भक्तिपद जोड़ला पर पवित्र ध्वनिक भीतर लौकिक भ्रष्टाचारक व्यंग्य पैदा होइत अछि। एकर सौन्दर्य विरोधाभासमे अछि : जतेक सहज भजन-तान, ततेक कठोर सामाजिक कटाक्ष।

ई गजल लोकगीत आ गजलक सम्बन्ध बुझबाक मुख्य दृष्टान्त अछि। भजनक शब्द अखण्ड धार्मिक समर्पणक संकेत नहि दैत; ओकर पुनरावृत्ति सामाजिक अनुष्ठानक खोखलापन सेहो उजागर करैत अछि। फिरो, प्रत्येक शेर जँ नव विरोधाभास नहि रखय तँ ‘राम हरे’क व्यंग्य स्वयं सूत्र बनि रहि सकैत अछि। यही सीमा वाचिक लोकप्रियता आ साहित्यिक गहराइक बीच मूल्यांकनक आग्रह करैत अछि।

सच केर दलाल : रदीफक व्यंग्यात्मक व्यवहार

खूब गरजैए सच केर दलाल
खूब ठहकैए सच केर दलाल

एहि मतलामे ‘सच’ नितान्त पवित्र मूल्य नहि, कारोबारक वस्तु अछि। ‘दलाल’ शब्द सामाजिक नैतिकताक उलटफेरक सूचक बनैत अछि। गरजब, ठहकब, चमकब, बदलैत रहब आ बिकि जायब—ई क्रम सत्यक प्रतिनिधित्व करबाक दावाक मुखौटा उतारैत अछि। शेरक लघु ध्वनि, उपहासक आघात आ बारम्बार लौटैत पद एकत्र भऽ राजनीतिक-सांस्कृतिक स्वांगक प्रभाव बनबैत अछि।

एहि शिल्पक विशेषता अछि जे कवि सीधे आरोप-प्रमाणक निबन्ध नहि लिखैत छथि। हाव-भावक क्रमसँ व्यक्तिक चरित्र रेखांकित करैत छथि। मुदा ‘दलाल’ जकाँ तीक्ष्ण मूल्यनिर्णायक शब्दक अति-उपयोग बिंबक विविधता घटाबय सकैत अछि। सर्वाधिक सफल शेर ओ अछि जाहिमे केवल गारि नहि, व्यवहारक नव रूप उद्घाटित होइ।

हरियर चश्माक दृश्य आ बेटी पर पड़ैत दुगुना बोझ

छै बेटी भेने दुन्ना दुख
सासुर देखू नैहर देखू

एहि गजलक पंक्ति स्त्रीक सामाजिक अवस्थाकेँ ‘सासुर’ आ ‘नैहर’क दू केन्द्रमे देखैत अछि। स्त्रीक घर-अधिकार, अपेक्षा, श्रम आ अपमानक दोसर जटिल प्रसंग तत्क्षण उपस्थित होइत अछि। ‘दुन्ना दुख’क संकेत स्त्रीक ऊपर दू परिवारक दायित्वक बोझक व्याख्या देबाक सम्भावना खोलैत अछि। रचना स्वयं स्त्रीक अन्तरंग आत्मकथा नहि प्रस्तुत करैत, मुदा पितृसत्तात्मक सम्बन्धक असमानता प्रश्लेषित करैत अछि।

गजलक मतलामे ‘हरियर चश्मा’क आग्रह देखबाक दृष्टि के व्यंग्य-प्रतीक बनबैत अछि। एकर बरखिलाफ बेटीवला शेर धुँधल मानसिक चश्मा हटयबाक माँग करैत अछि। एहि अन्तरसँ कविक व्यंग्य केवल बहिर्मुखी नहि, सामाजिक आत्मावलोकन सेहो बनैत अछि। आलोचककेँ ध्यान रखबाक चाही जे विषय रूपमे स्त्रीक उपस्थिति आ स्वतन्त्र बोलनिहार स्त्रीस्वरक उपस्थिति एक वस्तु नहि अछि।

शीर्षकक अर्थ : माँड़, नोन, सिन्दूर आ कुमारि इच्छा

छै अमीरक दिक्कत हीरा सोन दिक्कत
आ गरीबक दिक्कत माँड़ नोन दिक्कत
कोना पुरतै सिन्दूर सभ इच्छा लेल
रहतै किछु इच्छा कुमारि तँ कोन दिक्कत

एहि दू शेरमे समस्त पोथीक शीर्षकक दार्शनिक केन्द्र भेटैत अछि। अमीरक चिन्ता ‘हीरा-सोन’ अछि; गरीबक चिन्ता ‘माँड़-नोन’। पहिल शेर समान शब्द ‘दिक्कत’क भीतर वर्गानुसार समस्याक अतुलनीयता स्थापित करैत अछि। दूनू दिक्कत नामसँ समान, जीवनमूल्यमे असमान। ई विरोध कविक समाजबोधक सबसँ स्पष्ट रूपक अछि। भोजनक न्यूनतम शर्त आ विलासक चाह, दूनूकें एकरे काफिया-रदीफ संरचना आमनेसामने रखैत अछि।

दोसर शेरक ‘सिंदूर’ आ ‘कुमारि’ शब्द एकदम अलग स्तरक अर्थ लबैत अछि। एक दिस विवाहित होएबाक सामाजिक चिह्न, दोसर दिस अधूर आकांक्षाक प्रतीक। कवि सभ इच्छा पूर्ण होयब आवश्यक नहि मानैत छथि; किछु ‘कुमारि’ रहबामे मानवीय जीवनक असम्पूर्णता आ एक प्रकारक आत्मरक्षा दूनू निहित भऽ सकैत अछि। शीर्षक केवल स्त्रीक वैवाहिक स्थितिक नाम नहि; आकांक्षाक अधिग्रहणसँ बचल क्षेत्रक रूपक सेहो अछि।

तथापि ‘कुमारि’कें मात्र सौन्दर्यात्मक अनछुइलापन बनाकऽ पढ़ब सीमित होयत। ‘सिंदूर’क उपस्थितिमे विवाह-संस्था आ स्त्रीक सामाजिक मान्यताक प्रश्न छिपल अछि। समग्र संग्रहमे जखन भूख, गरीबी, सासुर-नैहर आ कनियाँक करुणा बारम्बार भेटैत अछि, तखन शीर्षकक प्रतीक सामाजिक रूप सँ भारित होइत अछि। एहि दूनू अर्थधारा—व्यक्तिगत अधूरापन आ संरचनात्मक असमानता—एक-दोसराकें काटैत नहि, बल्कि उजागर करैत अछि।

लोकधुनक राजनीतिक गजल आ नदीक साक्ष्य

नोरे छै कोसी कमला गंगा किनार हे
नोरेमे घोरल गेलै सिंदूर पिठार हे

राजनीतिक नेता आ झड़कल जनताक शेरवला लोकधुन-आधारित गजलमे कोसी, कमला आ गंगा केवल भूगोलक नाम नहि रहैत। ओ जनपदीय क्षति, विस्थापन, सामुदायिक जीवन आ स्त्रीक मांगलिक चिह्न ‘सिंदूर-पिठार’सँ जुड़ि कऽ करुण प्रतीक बनि

जाइत छथि। ‘नोर’क जल आ नदीक जलक अन्तराल मेटायल प्रतीत होइत अछि। गीतात्मक पुनरावृत्ति एहि करुणाकँ एकल स्वर सँ सामूहिक विलापमे परिवर्तित करैत अछि।

एहि गजलक शक्ति ध्वन्यात्मक धरातलपर अछि। लोकधुन पाठक नहि, श्रोता सेहो रचैत अछि। किन्तु नदीक वास्तविक राजनैतिक-पर्यावरणीय इतिहास ओतबे पाँतिमे सम्पूर्ण नहि समा सकैत; पाठककँ शेरसँ पयर बाहर स्थानीय सामाजिक सन्दर्भ जानबाक आवश्यकता रहैत अछि। कवि एतय इतिहासलेखन नहि, ऐतिहासिक पीड़ाक काव्यचिह्न बनबैत छथि।

कृषि-उत्पादन, पैकार आ पुरस्कारक अर्थव्यवस्था

खेतक	उपजा	पैकार	लेने	जाइए
जे बाँचल से सरदार लेने जाइए				

देहक	कांति	चलि	गेलै	पेटक	आगिमे
कलमक धार पुरस्कार लेने जाइए					

एहि गजलक पहिल शेर कृषि श्रमक उत्पादन आ वितरणक अधिकारक बीच दूरी देखबैत अछि। उपजा खेतक, लाभ पैकारक; अवशेषपर सरदारक दखल। उत्पादनसम्बन्धक आलोचना केवल आर्थिक वक्तव्य नहि, छन्दयुक्त सारांश बनैत अछि। दोसर शेरमे शरीरक कांति नष्ट होएब आ कलमक धार पुरस्कार लऽ जायब साहित्यिक प्रतिष्ठानक सम्भावित विडम्बनाक आलोचना अछि। ‘पेटक आगि’ आ ‘पुरस्कार’ एकहि कवितामे आबि आर्थिक आ सांस्कृतिक विषमताकँ जोड़ैत अछि।

एहि शेरक जोखिम सेहो अछि : पुरस्कारक प्रसंग जँ सार्वत्रिक आरोप बनि जाय तँ जटिल साहित्यिक संस्थाक अन्तर सभ एकरूप भऽ सकैत अछि। किन्तु ओ जे प्रश्न खोलैत अछि से अनदेखा करबाक योग्य नहि—साहित्यिक यशक वितरण रचनात्मक श्रम

आ सामाजिक गरजसँ केना सम्बन्धित अछि? कवि एहि प्रश्नकेँ पाठकीय असुविधाक रूपमे जीवित रखैत छथि।

गीजर, पीपर आ कनियाँ : विकासक दोहर सत्य

कटबे	केलै	पीपर	हो
आँगन लगलै गीजर हो			
कनियाँ	भुख्खे	कुहरैए	
बाहर उठलै सोहर हो			

पीपर कटला पर गीजर लगब आधुनिक उपभोग आ पर्यावरणीय क्षतिक संगम अछि। एकटा जीवित, सामूहिक-सांस्कृतिक वृक्षक स्थानपर व्यक्तिगत सुविधा-साधन आयल; 'विकास' एतय प्रगतिक स्पष्ट पर्याय नहि। काव्यक व्यंग्य 'पीपर' आ 'गीजर'क अप्रत्याशित तुक-परिसरमे जन्मैत अछि। एहि दृश्यकेँ केवल यान्त्रिक आधुनिकताक निन्दा मानि लेब सँ बेसी उपयोगी ई बुझब जे सुविधा कोन मूल्यमे भेटैत अछि आ ओकर लाभ कोन अपनबैत अछि।

'कनियाँ'क भूख आ बाहर उठैत 'सोहर'क विरोध सामाजिक उत्सव आ घरेलू असुरक्षाक भयानक अन्तर उद्घाटित करैत अछि। उत्सवक सामूहिक शोर स्त्रीक शरीरक पीड़ाकेँ ढाकि दैत अछि। लोकगीतात्मक प्रत्यय 'हो' व्यंग्यकेँ गेय बनबैत अछि, जखन कि शेरक नैतिक ऊर्जा निजी घावमे अछि। एहि तरहें संग्रहक सामाजिक चेतना स्त्री, भोजन, परिवार आ प्रकृतिक धारा एकहि छोट गजलमे समेटि सकैत अछि।

समापनक शेर : सभ्यता, हिंसा आ लोकक अनुपस्थिति

बिन	लोकक	संसार	बाँचल
जे बाँचल अवतार बाँचल			

बाहर	बाहर	सभ्य	बनलहुँ
भीतरमे खुंखार बाँचल			

अन्तिम गजल ‘लोक’क अनुपस्थितिक प्रश्नसँ खुलैत अछि। संसारक बचल रहब आ लोकक उपस्थित रहब एक बात नहि—ई सामाजिक-राजनीतिक दर्शनक सारगर्भित संकेत अछि। अपराधक संग सरकारक सह-अस्तित्व, दरबारक सर्वव्याप्ति आ भोथ बेकाम भोटक तस्वीर कविता केँ चुनावी प्रक्रिया सँ आगाँ नैतिक जीवनक संकट दिस लऽ जाइत अछि।

अन्तिम शेर सभ्यताक बाहरी आवरण आ भीतर जीवित हिंस्र वृत्तिक विरोध बनबैत अछि। एहि बिन्दुपर संग्रह आरम्भक खाली पेटसँ चलि सामाजिक संस्थाक रिक्तता धरि पहुँचैत अछि। शीर्षकक ‘कुमारि इच्छा’ केवल अधूर प्रेम नहि रहैत; मनुष्यकेँ मनुष्य बनेबाक ओ आकांक्षा बनैत अछि जकर पूर्ति समाजक प्रचलित व्यवस्था बारम्बार रोकैत अछि।

गजलकारक आत्मपहचान आ विडम्बनाक काव्यशास्त्र

संग्रहक अनेक गजलमे ‘अनचिन्हार’ तखल्लुस अथवा आवर्ती पद जकाँ उपस्थित अछि। कवि स्वयंकेँ ओ लोकक स्थिति मे राखैत छथि जे सार्वजनिक भाषण देलाक बाद व्यवहारमे सुविधा-केन्द्रित होइत अछि, अपन भीतर विरोधी स्वर सुनैत अछि आ अपूर्ण स्वीकृतिक अनुभव करैत अछि। एहि आत्म-सन्देहसँ व्यंग्य पूर्णतः बाहरी आरोप नहि रहैत। मिथिलाक सार्वजनिक नैतिकतापर प्रहार करैत कवि अपन रचनाकार-पहचानकेँ सेहो प्रश्नक घेरामे रखैत छथि।

शिल्पक स्तरपर ई आत्मविनोद संग्रहक प्रबल पक्ष अछि। पारम्परिक मकतामे तखल्लुसक गौरवक सम्भावना रहैत अछि; एतय तखल्लुस कखनहुँ असफलता, अनिश्चितता अथवा आत्मपरिहासक संकेत बनैत अछि। एहि स्वभावमे मिथिलाक मौखिक परिहासक परम्परासँ आधुनिक आलोचनात्मक व्यक्तित्वक संवाद देखल जा सकैत अछि।

तथापि आत्मसन्देहक आवृत्ति एकटा निश्चित मुद्रा सेहो बनि सकैत अछि। कवि जखन स्वयंकेँ लगातार असुविधाग्रस्त घोषित करैत छथि, तखन पाठककेँ पूछबाक अधिकार अछि जे वैयक्तिक आत्मालोचना कतऽ विशिष्ट जीवनानुभव बनैत अछि आ कतऽ सामान्य कथन। एहि भेदक पहचान आलोचनाक निष्पक्षता लेल आवश्यक अछि।

मैथिली गजल : परम्परा आ परिवर्तनक तुलनात्मक अवलोकन

विदेहमे उपलब्ध ‘मैथिलीक प्रतिनिधि गजल’क परिचय मैथिली गजलक इतिहासकेँ बीसम शताब्दीक आरम्भसँ वर्तमानधरि देखबाक आधार दैत अछि। एहि अभिलेखीय परम्परामे पं० जीवन झाकेँ आरम्भिक प्रलेखित नामक रूपमे राखल गेल अछि; कविवर सीताराम झा, काशीकान्त मिश्र ‘मधुप’, जगदीशचन्द्र ठाकुर ‘अनिल’, योगानन्द हीरा आ अन्य रचनाकारक प्रयोगक उल्लेख सेहो भेटैत अछि। एहि अनुक्रमकेँ एकरेखीय प्रगतिक विजयगाथा नहि बुझबाक चाही; विभिन्न समयमे गजल पद, गीत, शेर, लय आ छन्दबोधक अलग-अलग संगति विकसित भेल होयब सम्भव अछि।

पुरान चरणमे अरबी-फारसी छन्दक ग्रहणक प्रश्न आ मैथिली उच्चारणक अनुरूपता प्राथमिक समस्या रहैत अछि। उत्तरवर्ती चरणमे औपचारिक शुद्धता बनाम लोकगम्यता, गीत-सदृश पंक्ति बनाम शेरक स्वतन्त्रता आ रचनात्मक स्वतंत्रता बनाम छन्दक नियम विषयक विवाद अधिक स्पष्ट होइत अछि। विदेहक ई-साहित्यिक सार्वजनिक क्षेत्र एहि विवादकेँ लेख, प्रतिक्रिया, गजलक प्रकाशन आ छन्द-विवेचनक रूपमे विस्तार देलक। अनचिन्हारक ‘मैथिली गजलक व्याकरण ओ इतिहास’, ‘संदर्भ सहित’ आ संबंधित अध्ययन-विषयक रचना एहि बहसक अभिलेखीय निशानी अछि।

‘अनचिन्हार आखर’सँ ‘जंघाजोड़ी’ आ तत्पश्चात ‘कुमारि इच्छा’धरि कविक स्वघोषित यात्रा रचनाविधानक परिवर्तनक रोचक उदाहरण अछि। पहिल संग्रहकेँ सरल वर्णिक अभ्यास, दोसरकेँ स्वयं चुनल मात्राक्रमक प्रयोग आ तेसरकेँ परम्परागत तथा प्रस्तावित बहरक संगमक रूपमे लेखक स्वयं देखैत छथि। एहि आत्मवर्णनकेँ हूबहू साहित्येतिहासक

प्रमाण मानबाक बदला, एहि रचनाधाराक अन्तर्गत प्रवृत्ति मानब अपेक्षित अछि। ‘कुमारि इच्छा’क वास्तविक उपलब्धि एहि बातमे देखल जाइत अछि जे छन्दसिद्धान्तक झगड़ा भूख, वोट, गाम, स्त्री, नदी आ परिवारक जीवन्त भाषा सँ अलग नहि रहैत।

विदेह शोध-अभिलेखमे अनचिन्हारक ‘काफिया’, ‘काफिया आ बहर’, ‘मैथिली गजल व्याकरणक शुरुआती प्रयोग’, ‘बयानक सन्दर्भमे मैथिली गजल’ आ ‘नरेन्द्रजीक मैथिली आ हिन्दी गजलक तुलनात्मक विवेचना’ सन लेखनक प्रविष्टि ई सिद्ध करैत अछि जे गजलक औपचारिक प्रश्न हुनकर आलोचनात्मक कार्यक केन्द्रीय विषय रहल अछि। एहि सूचीमात्रक आधारपर प्रत्येक लेखक निष्कर्षक समर्थन करब समुचित नहि; तथापि एहि लेखन-क्रमसँ ‘कुमारि इच्छा’क भूमिकाकेँ लेखकक दीर्घ आलोचनात्मक जिज्ञासाक हिस्सा मानबाक कारण भेटैत अछि।

लोकधुन, निर्बन्ध कविता आ गजलक अन्तर

गीत आ गजलक अन्तर्विरोधकेँ प्रायः सरल विधा-विभाजनसँ बुझाओल जाइत अछि, मुदा मैथिली साहित्यक बहुविध वाचिक परम्परा एहन कठोर विभाजन स्वीकार नहि करैत। लोकधुनमे आधारित रचना गजल होयबाक सम्भावना नहि खोइबैत, जँ मतला, काफिया-रदीफ, शेरक सम्बन्ध आ घोषित बहरक आवश्यक अनुशासन सँ ओकर संवाद बनल रहय। ‘राम हरे’ आ लोकधुन-आधारित राजनीतिक गजल एहि सम्भावनाक रोचक दृष्टान्त अछि।

अनचिन्हारक रचना ईहो देखबैत अछि जे व्यंग्यक विषय काव्यविधाक एकान्त परिभाषा तय नहि करैत अछि। भूख, बेरोजगारी अथवा सत्ता-विरोधपर दोहा, गीत, मुक्तक आ गजल सभ लिखल जा सकैत अछि। गजल बनबाक निर्णय विषय नहि, संरचना आ वाचिक अर्थनिर्माण पर निर्भर अछि। एही कारण रदीफक मात्र उपस्थिति अथवा पौंतिक समान लम्बाइ पर्याप्त कसौटी नहि; काफियाक ध्वनि, बहरक सुसंगति आ शेरक अर्थगत स्वायत्तता सम्मिलित रूपसँ विवेचनीय अछि।

विधाक शुद्धताक आग्रह उपयोगी तखन बनैत अछि जखन ओ नव प्रयोगकें सम्भावना दैत अछि। जँ नियम केवल बहिष्कारक साधन बनय, तँ साहित्यिक विकास बाधित होइ। एहि संग्रहक द्वन्द्व ई अछि जे कवि एक दिस कठोर अरूजी अनुशासन चाहैत छथि, दोसर दिस मैथिली लेल नओ बहर प्रस्तावित करैत छथि। विरोधाभास जकाँ प्रतीत होइत एहि दूनू आग्रहमे सृजनात्मक अवसर अछि : परम्परा मानक दे, भाषा ओकर पुनर्गठन करय।

अर्थ-संयम, पुनरावृत्ति आ काव्यात्मक जोखिम

कविक प्रबल रचना सभमे एकटा भौतिक वस्तु व्यापक नैतिक सङ्कट खोलैत अछि—पेट, माँड़-नोन, पीपर, गीजर, पैकार, सिंदूर। ई ठोस शब्द अमूर्त उपदेशक स्थानपर दृश्य बनबैत अछि। विशेषतः अमीर-गरीबक ‘दिक्कत’क तुलनाक सघनता, कनियाँक भूख आ सोहरक टकराहट तथा खेतक उपजक अपहरण गजलकें स्मृतिमे टिकबैत अछि।

कम प्रभावी स्थल ओ अछि जतय सामान्यीकरणक आवृत्ति पर्याप्त प्रतिरोध बिना अपन निष्कर्ष सुना दैत अछि। सरकारक भ्रष्ट होयब, नेता झूठ बजैत रहब, समाजमे पाखण्ड रहब अथवा दोस्तीक विखण्डन—ई सभ अनुभव सत्य होयब सम्भव अछि; मुदा कविता तखन बेसी गहिर होइत अछि जखन सामान्य कथनक स्थानपर अप्रत्याशित घटना, बिंब वा मानवीय विरोधाभास उपस्थित होइ। संग्रहमे एहन सफल बिंब अछि, किन्तु सभ गजल एकहि स्तरक सघनता प्राप्त नहि करैत।

बहरक अन्तमे टिप्पणीक ऐतिहासिक उपयोगिता निर्विवाद अछि। मुदा जे पाठक शुद्ध काव्यानुभव चाहैत छथि, हुनका रचनाक तुरन्त बाद तकनीकी व्याख्या संगीतात्मक तन्मयतासँ बाहर निकालि सकैत अछि। भविष्यक सम्पादनमे काव्य-पाठ आ छन्द-परिशिष्ट अलग कएल जाय तँ दूनू लक्ष्य अधिक स्पष्ट भऽ सकैत अछि। ई आलोचना मूल संस्करणक मूल्य घटबैत नहि; ओकर शैक्षणिक आ सौन्दर्यात्मक उपयोगक भिन्नता देखबैत अछि।

लैंगिक प्रतिमानक उपलब्धि आ सीमा

संग्रहमे ‘कनियाँ’, ‘बेटी’, ‘सासुर’, ‘नैहर’, ‘सिंदूर’ आदि संकेत स्त्रीजीवनक असमानताकेँ दृश्य बनबैत अछि। भूख आ उत्सवक भिन्नता स्त्रीक अदृश्य श्रम पर तीक्ष्ण प्रश्न अछि। विवाहक संकेत सँ ‘कुमारि इच्छा’क सम्बन्ध स्त्रीकेँ केवल पुरुषक इच्छा-वस्तु बनयबाक बदला सामाजिक रीति आ अपूर्ण आकांक्षाक जटिल क्षेत्रमे प्रवेश करबैत अछि।

तइयो अधिकतर गजल बाहरी द्रष्टाक कथनमे लिखल अछि। स्त्री स्वयं अपन भाषामे दीर्घ प्रतिवाद रखैत नहि देखाइत। एहि कमीकेँ प्रत्येक गजलक दोष बनायब सम्भव नहि, किएक तँ संग्रह सामाजिक व्यंग्यक व्यापक परियोजना अछि; मुदा शीर्षकक स्त्रीलिंग रूपकक कारण स्त्रीक आवाज कतेक स्वतन्त्र रूपे उपस्थित अछि से विचारणीय अछि। स्त्री-अनुभवक नामपर कएल करुणा आ स्त्रीक आत्मनिर्णायक वाणी एक वस्तु नहि— एहि फरकसँ मूल्यांकन अधिक न्यायपूर्ण बनैत अछि।

साहित्येतिहासमे संग्रहक स्थान

‘कुमारि इच्छा’ मैथिली गजलकेँ नव-छन्द्रीय प्रयोगक घोषणापत्र आ सामाजिक आलोचनाक लघु-अभिलेख, दूनू रूपमे पढ़बाक आमन्त्रण दैत अछि। लेखक अपन भूमिका द्वारा अनुशासित शिल्पक आग्रह रखैत छथि; रचना द्वारा लोकवाणी, व्यंग्य आ काव्य-संक्षेपक शक्ति जँचबैत छथि। एहि कारण ई पोथी निजी भावुकता सँ बेसी सार्वजनिक जीवनक विसंगतिक काव्य-साक्ष्य बनैत अछि।

मैथिली साहित्येतिहासमे यकर महत्त्व ‘पहिल’ अथवा ‘सर्वश्रेष्ठ’ सन अपरीक्षित विशेषणसँ तय नहि होयत। वास्तविक महत्त्व एहि विशिष्ट संगममे अछि : एकहि संग्रहमे सयटा गजल, विस्तृत शिल्प-विवेचन, नओ नामकरण, लोकधुन-उपयोग, आत्मव्यंग्य, वर्गीय आलोचना आ पाठकक निर्णायक भूमिकाक स्वीकार। एहि गुणक कारण पोथी अध्ययनयोग्य अछि; ओकर छन्दकीय घोषणाक स्वतंत्र परीक्षण भविष्यक शोधक विषय बनी रहत।

निष्कर्ष

‘कुमारि इच्छा’क सबसँ सार्थक पाठ एहि निष्कर्ष धरि पहुँचैत अछि जे कविता मात्र छन्दक विजय नहि आ मात्र सामाजिक नारा सेहो नहि। कविक छन्द-परिश्रम अनगढ़ अनुभवकें लय दैत अछि; वास्तविक भूख, टूटैत सम्बन्ध, स्त्रीक पीड़ा, राजनीतिक स्वांग आ बाजारक असमानता ओहि लयकें अर्थ दैत अछि। दुर्जेय सौन्दर्य तखने जन्मैत अछि जखन दूनू पक्ष परस्पर अवलम्बित होइत अछि।

शीर्षकक ‘कुमारि’ किछु इच्छा अपूर्ण रहबाक स्वीकृति सेहो अछि आ ओ सामाजिक स्थितिक प्रतिरोध सेहो, जाहिमे लोकक मूल अधिकार अपूर्ण छोड़ल जाइत अछि। गरीबी आ अमीरीक अलग-अलग ‘दिक्कत’सँ आरम्भ कएल तुलना एहि शीर्षककें सामाजिक दर्शनक स्तर धरि लऽ जाइत अछि। अन्तिम गजलक लोक-विहीन संसारक बिंब संग पढ़ला पर ई स्पष्ट होइत अछि जे संग्रहक आन्तरिक प्रश्न केवल ‘इच्छा किएक अपूर्ण अछि’ नहि, ‘ओकरा पूर्ण करबाक सामाजिक शर्त ककर हाथमे अछि’ सेहो अछि।

एहि पोथीक उपलब्धि दृढ़ गेयता, लोकभाषिक तीखापन, तकनीकी आत्मसजगता आ सामाजिक प्रश्नक संक्षेपमे अछि; सीमा असमान काव्यगुण, पुनरावृत्त व्यंग्य, बहरक छूट-संबन्धी अनिश्चितता आ स्त्रीक स्वतन्त्र स्वरक अपेक्षाकृत कम उपस्थितिमे अछि। गुण-दोषक एहि संयुक्त विवेचनसँ ‘कुमारि इच्छा’ आधुनिक मैथिली गजलक एकटा बहसउत्पादक, शोधोपयोगी आ सर्जनात्मक रूपसँ महत्वपूर्ण संग्रहक रूपमे उभरैत अछि।

सन्दर्भसूची

मूल पाठ आ विदेहमे सूचीबद्ध ग्रन्थ

- अनचिन्हार, आशीष। कुमारि इच्छा। गजल-संग्रह। विदेह ई-पोथी संग्रह। मूल रचनाक आधार-पाठ।
- अनचिन्हार, आशीष। अनचिन्हार आखर। गजल, रुबाइ आ कताक संग्रह। श्रुति प्रकाशन, २०११; विदेह पोथी-सूचीमे अभिलिखित।
- अनचिन्हार, आशीष। जंघाजोड़ी। गजल-संग्रह। विदेह ई-पोथी संग्रह।

- अनचिन्हार, आशीष। मैथिली गजलक व्याकरण ओ इतिहास। विदेह ई-पोथी संग्रह।
- अनचिन्हार, आशीष। संदर्भ सहित। गजल-आलोचना। विदेह ई-पोथी संग्रह।
- अनचिन्हार, आशीष। शब्द-अर्थ-शक्ति। गजल-आलोचनासँ सम्बन्धित कृति। विदेह ई-पोथी संग्रह।
- ठाकुर, गजेन्द्र आ अनचिन्हार, आशीष (सह-सम्पादक)। मैथिली गजल : आगमन ओ प्रस्थान बिन्दु। विदेह पोथी-संग्रहमे उल्लिखित आलोचनात्मक संकलन।
- ठाकुर, गजेन्द्र आ अनचिन्हार, आशीष (सह-सम्पादक)। मैथिलीक प्रतिनिधि गजल : १९०५ सँ २०२२ धरि। विदेह पोथी-संग्रहमे उल्लिखित प्रतिनिधि संकलन।

विदेहक शोध-अभिलेख आ समालोचनात्मक सामग्री

- अनचिन्हार, आशीष। काफिया। विदेह, शोध-अभिलेख, २०१२।
- अनचिन्हार, आशीष। काफिया आ बहर। विदेह, शोध-अभिलेख, २०१२।
- अनचिन्हार, आशीष। मैथिली गजल व्याकरणक शुरूआती प्रयोग। विदेह, अङ्क १६५, २०१४।
- अनचिन्हार, आशीष। मैथिली काव्यशास्त्रमे झारू छंदक अवधारणा : स्वरूप आ तत्व निर्धारण। विदेह, अङ्क १५७, २०१४।
- अनचिन्हार, आशीष। बयानक सन्दर्भमे मैथिली गजल। विदेह, अङ्क २५१, २०१८।
- अनचिन्हार, आशीष। नरेन्द्रजीक मैथिली आ हिन्दी गजलक तुलनात्मक विवेचना। विदेह, अङ्क २५२, २०१८।
- अनचिन्हार, आशीष। दुष्यंत कुमारक गजलक मिजाज सन गजल मैथिलीमे कहिया लीखल जेतै। विदेह, अङ्क ३०७, २०२०।

- विदेह। 'विदेह पोथी-संग्रह'।

<https://videha-ejournal.github.io/videha/pothi.htm>

- विदेह। 'विदेह शोध-सूची'।

<https://videha-ejournal.github.io/videha/research/index.html>

- विदेह। 'विदेह शोध-लेख : शोध-अभिलेख'।

<https://videha-ejournal.github.io/videha/research/videha-scholar-research-book.html>

- विदेह। 'आशीष अनचिन्हारक गजल-लेखन आ आलोचनाक परिचयात्मक विवेचन'।

https://videha-ejournal.github.io/videha/new_page_56.htm

खण्ड ३

गजलशास्त्र : व्याकरण, विमर्श आ समालोचना

मैथिली साहित्यक पुनर्पाठ

समीक्षा १०

मैथिली गजलक रेडी रेकोनर

छन्द, भाषा आ सर्जनाक संगम

मूल पोथी : आशीष अनचिन्हार

सारांश

आशीष अनचिन्हारक ‘मैथिली गजलक रेडी रेकोनर’ मैथिली गजलक छन्दोविधान, बहर, रुक्न, काफिया, रदीफ, विभक्ति, उच्चारण आ रचनात्मक संशोधनक विषयमे तैयार कएल गेल एकटा संक्षिप्त, अभ्यासकेन्द्रित मार्गदर्शिका अछि। ई अध्ययन पोथीक भूमिका आ पाँचू खण्डक आन्तरिक विन्यासक विश्लेषण करैत अछि तथा एकर विधागत महत्त्वकें मैथिली गजलक आधुनिक आलोचना-परम्परा, विदेहक साहित्यिक उपक्रम आ अरबी-फारसी-उर्दू गजलशास्त्रसँ तुलना करैत अछि। विशेष ध्यान एहि बातपर देल गेल अछि जे लेखक गजलक परम्परागत तकनीकी पदावली ग्रहण करैत काल मैथिलीक विभक्ति-संलग्नता, लघु-गुरु सम्बन्धी उच्चारण, चन्द्रबिन्दु, रेफ, संयुक्ताक्षर आ तखल्लुसक स्थानीय प्रयोग लेल विशिष्ट निर्णय प्रस्तुत करैत छथि। अध्ययनक निष्कर्ष अछि जे पोथीक बड़ उपलब्धि नियमक सुलभ प्रस्तुति, उदाहरणसँ अभ्यास आ अपन पूर्व निर्णयक संशोधन करबाक खुलापनमे अछि; मुदा ध्वनि आ लिपिक सम्बन्ध, छन्दक अनिवार्यता, मुसलसल गजलक मूल्यांकन, तथा काफियाक किछु निषेधात्मक नियमक सार्वभौमिकता पुनर्विचारक विषय बनैत अछि। ई कृति केवल आरम्भिक लेखकक सहायक पोथी नहि, अपितु मैथिलीमे विधाविशेषक आलोचनात्मक शब्दावली विकसित करबाक एकटा महत्त्वपूर्ण प्रयास अछि।

बीजशब्द : मैथिली गजल; आशीष अनचिन्हार; बहर; रुक्न; काफिया; रदीफ; विभक्ति; ध्वनिविज्ञान; छन्दशास्त्र; साहित्येतिहास; विदेह।

सन्दर्भसूची

प्रस्तावना : संक्षिप्त पोथीक व्यापक प्रश्न

गजलकें केवल दू-दू पाँतिक भावपूर्ण रचना मानि लेनाइ जतेक सहज अछि, ओकर तकनीकी संरचनाकें बुझब ततेक सरल नहि। शेरक स्वायत्तता, काफिया-रदीफक आवर्तन, बहरक नियमितता आ भाषाक लय मिलिकय गजलकें अन्य गीतात्मक विधासँ अलग करैत अछि। मैथिलीमे एहि विधाक ग्रहणक समय दूटा परस्पर सम्बन्धित प्रश्न सामने अबैत अछि : पहिल, परम्परागत गजलशास्त्रक मूल संरचना केना सुरक्षित रहय; दोसर, मैथिलीक अपन ध्वनि, रूप आ वाक्यगत प्रकृतिकें एहि संरचनामे केना अभिव्यक्त कएल जाय। आशीष अनचिन्हारक ‘मैथिली गजलक रेडी रेकोनर’ एहि दूनू प्रश्नक बीच ठाढ़ भऽ कय विधाक प्रारम्भिक प्रशिक्षणक एकटा व्यवस्थित प्रस्ताव प्रस्तुत करैत अछि।

पोथीक शीर्षकमे प्रयुक्त अंग्रेजी पद ‘Ready Reckoner’ विशेष अर्थ रखैत अछि। ई ग्रन्थ गजलक समग्र सौन्दर्यशास्त्र लिखबाक दावा नहि करैत, बल्कि कम समयमे प्रयोगयोग्य नियम, संक्षिप्त व्याख्या आ उदाहरण उपलब्ध करए चाहैत अछि। लेखक स्वयं भूमिका मे स्पष्ट करैत छथि जे संक्षेपणक परिणामस्वरूप अवधारणा-विस्तार कम भऽ सकैत अछि आ विस्तृत अध्ययनक आवश्यकता अलग सँ रहैत अछि। एहि आत्मसीमाबोधकें ग्रन्थक दुर्बलता मानल जाए वा विधागत ईमानदारी, ई आलोचनात्मक परीक्षणक पहिल मुद्दा अछि। हमरा मतमे एकर मूल्य तखन बेसी प्रकट होइत अछि जखन एकरा अन्तिम प्रमाणग्रन्थक बदला कार्यशाला-सहचर मानल जाय। [१]

एहि अध्ययनमे पोथीक कथन आ अध्ययनकर्ताक मूल्यनिर्णयक बीच स्पष्ट भेद राखल गेल अछि। लेखक जतऽ कोनो नियम प्रस्तावित करैत छथि, ततऽ ओकर उदाहरण आ तर्कक सामर्थ्यक परीक्षण आवश्यक अछि; कोनो एक परम्परामे प्रचलित विधानकें बिना परीक्षण सभ भाषा आ सभ समयक लेल अनिवार्य नियम मानल उचित नहि। तेनाही गजलक नव रचनाकारक सुविधा लेल बनल व्यावहारिक सरलीकरणकें भाषावैज्ञानिक सिद्धान्तक पूर्ण विकल्प मानबो सावधानिक विषय अछि।

अध्ययनक उद्देश्य आ आलोचनात्मक दृष्टि

ई शोध-निबन्धक उद्देश्य चारि स्तरपर केन्द्रित अछि। प्रथम स्तरपर पोथीक पाँचू खण्डमे व्यवस्थित तकनीकी सामग्रीक स्वतंत्र पाठविश्लेषण प्रस्तुत कएल गेल अछि। दोसर स्तरपर लघु-गुरु, अक्षर-मात्रा, उच्चारण-लिपि, विभक्ति-काफिया आ भाव-शिल्प सम्बन्धी प्रस्तावक तर्कसंगत परीक्षण कएल गेल अछि। तेसर स्तरपर मैथिली गजलक ऐतिहासिक विकास आ विदेहक माध्यमसँ विकसित समकालीन आलोचनात्मक वातावरणमे एहि कृतिक स्थानक तुलना कएल गेल अछि। चारिम स्तरपर प्रशिक्षण, रचना-संशोधन आ आलोचनाक सम्बन्धक आधारपर एकर उपयोगिता आ सीमाक निष्कर्ष निकालल गेल अछि।

पद्धतिक दृष्टिसँ ई कृति-केन्द्रित समीक्षात्मक अध्ययन अछि। मूल पोथीक सामग्री प्राथमिक आधार अछि। विदेहक पोथी-सूची, शोध-सूची आ ओतहि उपलब्ध गजल-विषयक तुलनात्मक लेख सभकेँ साहित्यिक सन्दर्भक रूपमे लेल गेल अछि। गजलक अरबी-फारसी-उर्दू परम्परासँ तुलना वैचारिक स्तरपर अछि; एहि परम्पराक समग्र सर्वेक्षणक दावा एतऽ नहि अछि। बाह्य साहित्यिक इतिहासक दावाक अपेक्षा पोथीमे प्रत्यक्ष उपलब्ध शास्त्रीय प्रस्ताव आ अभ्यासक आलोचनात्मक परीक्षणकेँ बेसी महत्त्व देल गेल अछि। [१][२][३][४]

कृतिक स्वरूप, विन्यास आ आत्मपरिचय

मूल पोथीमे शीर्षक, समर्पण, ‘अनचिन्हारक बात’ शीर्षक लेखकक वक्तव्य, पाँच खण्ड आ लेखक-परिचय व्यवस्थित अछि। एकर संरचना सामान्य शोधग्रन्थक रैखिक इतिहासक बदला प्रशिक्षण-पुस्तिकाक क्रम अपनबैत अछि। पहिल खण्ड आधारभूत छन्दविधान; दोसर गजलक अङ्ग-उपाङ्ग आ काफिया; तेसर मैथिलीक विभक्ति आ स्वर-साम्य; चारिम संयुक्ताक्षर, ह्रस्व स्वर, रेफ आ ईता-दोष; पाँचम आघात, मकता, रचनाक सुधार आ बहरे-मीरक परिचय देइत अछि। एहि अनुक्रममे ‘पहिने भाषा-छन्दक औजार, तखन रचना’ वाला शिक्षण-दृष्टि सक्रिय अछि। [१]

लेखक गजलकेँ तकनीकी आ भावात्मक दूनू पक्षसँ देखैत छथि, मुदा ई संक्षिप्त पोथी तकनीकी प्रशिक्षण लेल सुरक्षित करैत छथि। एकर अर्थ ई नहि जे भावक उपेक्षा उचित अछि; वस्तुतः ग्रन्थक आरम्भिक कथन दूनू पक्षक आवश्यकता स्वीकार करैत अछि।

एतऽ कृतिक पहिचान विरोधाभासी नहि, बल्कि स्तरभेदपर आधारित अछि—एक ग्रन्थमे नियमक अभ्यास, व्यापक कृतिमे भाव आ साहित्येतिहासक विस्तार। ‘मैथिली गजलक व्याकरण ओ इतिहास’क उल्लेख एहि स्तरभेदक संकेत अछि; ओ पोथी विदेहक पोथी-सूचीमे स्वतंत्र कृति रूपमे दर्ज अछि। [१][२]

भूमिकाक एकटा उल्लेखनीय गुण लेखकक आत्मसमीक्षा अछि। ओ अपन पूर्व विवेचनक किछु त्रुटि सुधारबाक सूचना दैत छथि। गजल-जेकाँ नियमप्रधान विधामे ई स्वीकारोक्ति आलोचनात्मक वातावरणक आवश्यक गुण अछि, कारण मानक स्थिर निषेधसँ नहि, युक्तिपूर्ण संशोधनसँ बनैत अछि। एहि व्यवहारसँ लेखक स्वयंकेँ अन्तिम निर्णायकक स्थानपर नहि, प्रमाण आ परीक्षणक सहभागी मानबाक सम्भावना खोलैत छथि। तथापि ग्रन्थक किछु स्थानपर निर्णायक भाषा अत्यन्त निश्चयात्मक सेहो अछि; एहि द्वैतक चर्चा आगूक खण्डमे प्रासंगिक बनत।

प्रथम खण्ड : लघु-गुरु, बहर आ रुक्नक आधारभूत पाठ

पहिल खण्ड गजलशास्त्रक तकनीकी पृष्ठभूमि निर्मित करैत अछि। लेखक बहरकेँ एक गजलक पाँति सभमे समान मात्रा-क्रमक पालनक रूपमे परिभाषित करैत छथि। एतऽ कुल मात्राक समानता आ मात्राक अनुक्रमक समानतामे अन्तर महत्वपूर्ण अछि। दू पाँतिक कुल योग समान भए सकैत अछि, मुदा लघु आ गुरु बदलि गेलासँ ओकर वजन आ लय बदलि सकैत अछि। एहि कारणे ग्रन्थ १ आ २क संकेतन अपनबैत अछि आ रुक्नक संयोजनक अभ्यास करबैत अछि। ई संख्यात्मक भाषा नव लेखक लेल प्रवेश-द्वार बनैत अछि, विशेषतः जखन पारम्परिक नाम अनभिज्ञ हो। [१]

रुक्नक परिचयमे खमासी आ सुबाई रूप, फऽलुन, फाइलुन, फाइलातुन, मफाईलुन, मुस्तफाइलुन आदि नाम तथा तिनकर क्रमिक वजनक सूची देल गेल अछि। लेखक गणितीय अनुक्रमक सहायतासँ रुक्न याद करबाक उपाय देखबैत छथि। ई शिक्षण-रचना उल्लेखनीय अछि, कारण ध्वनिक कठिन नामकेँ स्मरणीय लघु-गुरु संरचनामे बदलि देल जाइत अछि। काव्य-रचनाक विद्यार्थीक लेल ई तरीका सूत्र आ प्रयोगक बीच पुल बनैत अछि। मुदा सूत्र स्मरण स्वयं लयबोधक पर्याय नहि; श्रवण, उच्चारण आ गेयता सँ एकर पुष्टि आवश्यक रहैत अछि।

लेखक संयुक्ताक्षरसँ पूर्ववर्ती अक्षरक वजन, अनुस्वार-चन्द्रबिन्दुक भेद, विसर्ग आ शब्द-सीमापर मात्रा-क्रममे सम्भावित परिवर्तन पर विचार करैत छथि। ‘घर’, ‘बिगड़ि’, ‘भिनसर’, ‘कबकब’ सन शब्दक उदाहरण, शब्दक आन्तरिक आघात आ मात्राक तालमेल बुझबैत अछि। विभक्ति वा शब्द-समूह जुटलाक बाद उच्चारण बदलि सकैत अछि—ई अवलोकन विशुद्ध लिखित-नियमसँ आगू बढ़ि कय वाक्-व्यवहार दिस ध्यान आकृष्ट करैत अछि। मैथिली जेकाँ बहुरूपी, बोलचालसमृद्ध भाषामे एहन ध्यान अत्यन्त उपयोगी अछि।

एहि स्थानपर पहिल महत्त्वपूर्ण आलोचनात्मक प्रश्न उभरैत अछि। लेखक कतिपय प्रसंगमे अक्षरक पारम्परिक दीर्घता, उच्चरित मात्रा आ उच्चारणक आघातकेँ एकै गणनाक प्रवाहमे राखैत छथि। व्यावहारिक प्रशिक्षण लेल ई सुलभ अछि; मुदा आधुनिक ध्वनिवैज्ञानिक दृष्टिसँ लिपिगत अक्षर, स्वरक अवधि, बलाघात आ छन्दगत वजन अलग विश्लेषण-स्तर छथि। एक शब्दक छन्द्रीय उपयोग स्पष्ट करबाक लेल उच्चारणक व्याख्या आवश्यक अछि, परन्तु एतऽ देशज उच्चारणक विविधताक लेल अधिक सावधानी चाही। एहि ग्रन्थक संक्षेपात्मक विधा एहि विश्लेषणक विस्तारकेँ सीमित करैत अछि।

पहिल खण्डमे ‘सौती मोशायरा’क अभ्यासक उल्लेख विशेष ध्यानयोग्य अछि। लेखक अर्थसँ अस्थायी दूरी राखि बहर, काफिया आ रदीफक मात्राभ्यास करबैत छथि। संगीत सीखबाक आरम्भमे स्वर-अभ्यास जहिना शब्दार्थसँ स्वतंत्र होइत अछि, तहिना गजलमे संरचनाक प्राथमिक अभ्यास रचनाकारकेँ लयक अनुशासन सिखा सकैत अछि। मुदा जँ ई साधनकेँ अन्तिम साहित्यिक आदर्श बना देल जाय तँ शेरक ध्वनि-अर्थ सम्बन्ध क्षीण होयत। लेखक स्वयं अभ्यासक प्रसंगमे अर्थहीनताक सीमित भूमिका दैत छथि; आलोचनाक दृष्टिसँ एहि सीमांकनकेँ विशेष रूपसँ याद राखब आवश्यक अछि।

बहरक वर्गीकरणमे लेखक मूल, मिश्रित आ परिवर्तित बहरक शास्त्रीय पदावलीक परिचय दैत छथि तथा सुविधा लेल ‘समान’, ‘अर्धसमान’ आ ‘असमान’ सन नामक प्रयोग करैत छथि। एहि नामकरणमे केवल अनुवाद नहि, शिक्षण-व्यवस्थाक पुनर्गठन अछि। जखन नव पाठक पारम्परिक रुक्नक अन्तर्सम्बन्ध समझबाक प्रयास करैत छथि, तखन एहि सरलीकरणक उपयोगिता स्पष्ट होइत अछि। परन्तु वर्गीकृत संख्याक परम्परागत स्रोत, परिवर्तित रूपक वैधता आ अलग शास्त्रीय परम्पराक मतभेदक व्यापक प्रमाण नहि देल

गेल अछि। एहि लेल ई सूची प्रारम्भिक मार्गदर्शनक रूपमे अधिक विश्वसनीय अछि, शोधस्तरक अन्तिम परिगणनाक रूपमे कम।

द्वितीय खण्ड : शेर, मतला, रदीफ आ काफियाक व्याकरण

दोसर खण्ड गजलक बाह्य पहचानसँ ओकर आन्तरिक संयोजन दिस पाठककेँ लऽ जाइत अछि। लेखक दू पाँतिक शेरक स्वायत्त कथ्यपर बल दैत छथि, मतलामे दूनू मिसरामे काफिया-रदीफ तथा बादक शेर सभक दोसर मिसरामे एहि क्रमक पुनरावृत्तिक विधान रखैत छथि। मुसल्सल आ गैर-मुसल्सल गजल, हुस्ने-मतला, गैर-मुरद्दफ गजल, तहलीली रदीफ आ तकाबुल-ए-रदीफ सन पदावलीकेँ उदाहरणक सहायतासँ समझाओल गेल अछि। एहि भागक बड़ विशेषता ई अछि जे शब्दावली स्वतंत्र कोश नहि बनि रहि जाइत; प्रत्येक पदक सम्बन्ध रचनाक व्यवहारसँ जोड़ल जाइत अछि। [१]

काफियाक चर्चा विशेष विस्तार पबैत अछि। लेखक समान ध्वनि वा मात्रा मात्र नहि, काफिया बनबैत शब्दक अन्तिम अक्षर, ओकर पूर्ववर्ती स्वर आ क्रमिक साम्यक परीक्षण करैत छथि। ‘राग-ताग-भाग’ सन शब्दसभक माध्यमसँ ई स्पष्ट कएल जाइत अछि जे काफिया केवल ऊपरसँ मिलैत अन्तिम अक्षरक नाम नहि, बल्कि पुनरावृत्त ध्वनिसंरचनाक विधान अछि। ओ पाठककेँ शब्दक अन्तसँ पाछाँ लौटि कय साम्य खोजबाक अभ्यास करबैत छथि। इएह प्रक्रिया काफियाक भीतर निहित सूक्ष्म रूपक निरीक्षण सिखबैत अछि।

रदीफक विवेचनमे अक्षरगत समानता आ अर्थगत विविधताक अनुमति एकटा रचनात्मक बिन्दु अछि। एके शब्दक पुनरावृत्तिसँ सभ ठाम एके अर्थ अनिवार्य नहि; एहन भिन्न अर्थ शेरक बहुअर्थी सम्भावना बढबैत अछि। एहि ठाम गजलक औपचारिक पुनरावृत्ति अर्थक जड़ता नहि, अर्थ-विस्तारक माध्यम भऽ सकैत अछि। काफियाक पूर्वानुमान आ रदीफक प्रत्यावर्तनक कारण पाठकक मनमे जे अपेक्षा बनैत अछि, शेर ओकरा पूरा करैत अथवा भङ्ग करैत प्रभाव उत्पन्न करैत अछि। एहि सौन्दर्यात्मक कार्यप्रणालीपर पोथी विस्तारसँ नहि ठहरैत, मुदा लेखकक उदाहरण एकर सम्भावना स्पष्ट करैत अछि।

दोसरा दिस, मुसल्सल गजलकेँ अपेक्षाकृत कम मान्यता देबाक लेखकक कथन विधागत मूल्यनिर्णयक एक उदाहरण अछि। शेरक स्वायत्तता निश्चित गजलक प्रखर गुण अछि; तथापि विषयगत निरन्तरता अपनहि काव्यगुणक हानि नहि करैत। एक विषयक भीतर

अलग दृष्टिकोण, अर्थक क्रमिक परिवर्तन आ प्रतीकक आवृत्ति सम्भव अछि। तँ मुसल्लसल आ गैर-मुसल्लसलकें प्रकारभेद रूपमे स्वीकारब उचित, मुदा साहित्यिक मूल्यांकनक एकमेव आधार मानब उचित नहि। एहि आलोचनात्मक अन्तरसँ पोथीक नियमात्मक पक्ष आ आधुनिक पाठकक सौन्दर्यानुभवक बीच संवाद बनैत अछि। गजलक शेरक न्यूनतम संख्याकें सम्बन्धित जे निर्देश देल गेल अछि, ओकरा सेहो प्रचलित शिक्षणमानक आ ऐतिहासिक विविधता बीच रखबाक आवश्यकता अछि। परम्परागत गजलसभक आकार समय, भाषिक परिवेश आ सम्पादकीय परम्परामे बदलैत रहल अछि। पोथीक निर्देश आरम्भिक अभ्यास लेल अपन स्थानपर उपयोगी भऽ सकैत अछि, मुदा विधाक सर्वकालिक एकल सीमा बुझनाइ आलोचनात्मक रूपसँ पर्याप्त नहि। लेखकक अभिप्राय नियमबद्धता बनौने राखब अछि, जबकि इतिहास कखनो-कखनो अपवाद सेहो सामने अनैत अछि।

तृतीय खण्ड : विभक्ति, स्वर-साम्य आ मैथिलीकरणक प्रश्न

तेसर खण्ड एहि पोथीक सभसँ महत्त्वपूर्ण स्थानीय हस्तक्षेप सभमेसँ एक अछि। मैथिलीमे विभक्ति-संलग्न लेखन, संज्ञाक रूपविकास आ उच्चारणक परम्परा गजलमे काफिया तय करबाक समय समस्या आ सम्भावना दूनू उत्पन्न करैत अछि। लेखक ‘कलमसँ’ आ ‘पतनसँ’ सन भिन्न मूल शब्दपर एके विभक्तिक संलग्नताक स्थितिक परीक्षण करैत छथि, आ फेर प्रश्न करैत छथि जे समान विभक्ति काफियाक अङ्ग बनत अथवा रदीफक। ई समस्या केवल वर्तनीक नहि; छन्द, ध्वनि आ व्याकरणक अन्तर्सम्बन्धक समस्या अछि। [१]

एहि खण्डमे विभक्ति हटा कय शेष मूल शब्दक साम्यक परीक्षण एक व्यावहारिक कसौटीक रूपमे सामने अबैत अछि। जँ विभक्ति हटेलाक बादो ध्वनि-साम्य सुरक्षित रहैत अछि तँ रदीफ मानबाक सम्भावना उत्पन्न होइत अछि; जँ मूल शब्द आपसमे साम्य नहि राखैत, तखन आकलन बदलैत अछि। आलोचनात्मक दृष्टिसँ ई नियम महत्त्वपूर्ण एहि कारणे अछि जे मैथिलीक जीवित व्याकरणकें अरबी-उर्दू गजलशास्त्रक निष्क्रिय अनुकरणक अधीन नहि करैत; उलटे विधाक भीतर भाषिक रूपक न्यायसंगत स्थान माँगैत अछि।

विशेष रूपसँ पाँतिक बीचमे विभक्ति रहबाक उदाहरण मैथिलीकरणक सूक्ष्म प्रक्रिया देखबैत अछि। लेखकक परीक्षणमे शब्दक सीमा आ रदीफक सीमा सदैव एक-दोसरासँ यथावत् नहि मिलैत। ‘हमरा संगमे आम छै’ आ ‘हमरा हाथमे आम छै’ जेकाँ रचनाक संरचनामे विभक्ति-संलग्न शब्दक भीतर काफिया-रदीफक सम्बन्ध अलग ढङ्गसँ व्याख्यायित होइत अछि। ई उदाहरण एतऽ केवल तकनीकी अपवाद नहि, मैथिली वाक्यरचनाक आन्तरिक दबावक प्रमाण अछि। स्थानीय भाषाक संरचना स्वयं परम्परागत विधाक अर्थनिर्धारणमे हस्तक्षेप करैत अछि।

लेखक स्वयं एहि प्रकारक छूटक दुरुपयोगक आशङ्का उठबैत छथि। ई आत्मसजगता महत्व रखैत अछि, कारण नियमक विस्तार यदि परीक्षणहीन भऽ जाय तँ काफियाक साम्य आ रदीफक पहचान मनमाना भऽ सकैत अछि। समीक्षाक दृष्टिसँ बेहतर उपाय ई होयत जे लेखकक प्रस्तावित अपवादक उदाहरणसँ संगहि प्रतिउदाहरण, उच्चारणभेद आ क्षेत्रीय बोलीक परीक्षण रखल जाय। एहि बिना एक शिक्षकक उचित सुविधा कखनो सार्वत्रिक विधानक कठोर रूप धारण कऽ सकैत अछि।

मात्रा-आधारित काफियाक विवेचनमे लेखक ‘ई’, ‘आ’, ‘ऊ’, ‘ए’, ‘ऐ’, ‘ओ’ आ ‘औ’ सम्बन्धी उदाहरण दैत छथि। कोनो स्वरक उच्चार्य रूप आ ओकर मात्रारूपमे जे सम्बन्ध अछि, ओकरा देखबैत लेखक समान ध्वनि आ समान अक्षर समूहक अनेक स्तर अलग करैत छथि। एतऽ एकटा मूलभूत प्रश्न अछि : काफिया कतेक दूर धरि श्रवणपर निर्भर रहत आ कतेक दूर लिपिक समानतापर? लेखक जखन समान वर्तनीक संरक्षण आवश्यक मानैत छथि, तखन ध्वनि-साम्यक सामान्य आधारक संग एक प्रकारक लिखित-नियमात्मकता सेहो जुड़ि जाइत अछि।

एहि खण्डक आलोचनात्मक महत्त्वक दोसर पक्ष लेखकक अपन रचनाक संशोधन अछि। पूर्व प्रकाशित गजलक काफियासभकेँ बादक कसौटीपर पुनः परखिकय किछु प्रयोग असंगत ठहराओल गेल अछि। ई घोषणा काव्यशास्त्रक इतिहासमे विशेष अर्थ रखैत अछि। नियम बनबैत समय अपन साहित्यिक प्रतिष्ठाकेँ बचएबाक लेल अपवाद नहि गढ़ि, बल्कि अपन पूर्व कविता पर नब सिद्धान्त लागू करब—ई आलोचनात्मक उत्तरदायित्वक संकेत अछि। तथापि एतऽ ईहो जरूरी अछि जे नब नियमक सौन्दर्यात्मक आधार स्वतंत्र रूपसँ परीक्षित हो; आत्मसुधार अपने-आप सिद्धान्तक सत्यताक अन्तिम प्रमाण नहि।

चारिम खण्ड : उच्चारण, रेफ, संयुक्ताक्षर आ ईता-दोष

चारिम खण्ड भाषिक सूक्ष्मतासँ भरल अछि। संयुक्ताक्षर, ह्रस्व ‘इ’ आ ‘उ’क व्यवहार, चन्द्रबिन्दु, रेफयुक्त आ पूर्ण ‘र’वाला शब्दक अन्तर, स-श-ष तथा न-ण सन ध्वनिभेद आ ईता-दोषक परीक्षण—ई सभ विषय गजलक तकनीकी अध्ययनकें सीधा मैथिली भाषाविज्ञानक प्रश्नसँ जोड़ैत अछि। लेखक एकहि शब्दक लिखित आ उच्चरित रूप बदलि सकबाक उदाहरण दैत छथि। एहि बिन्दुपर गजल केवल बाहरसँ आयल विधा नहि रहैत; ओकर नियम मैथिलीक स्थानीय उच्चारण प्रणालीसँ संवाद करए लगैत अछि। [१]

ह्रस्व ‘इ’ आ ‘उ’क सम्बन्धमे लेखक काफियाक अक्षरगत अनुशासनपर बल दैत छथि। ‘माटि’ जेकाँ शब्दक उच्चारणक अन्तर देखबैत ओ लिखित ‘इ’क उपस्थितिक संग काफियाक सम्बन्ध जोड़ैत छथि। एहन अवलोकनक महत्व एहि बातमे अछि जे मैथिली भाषाक बोलल रूप निश्चेष्ट आ एकरूप नहि, आ एके वर्तनीक अनेक उच्चारण सम्भव छथि। मुदा जखन लेखक विशिष्ट काफियासँ भिन्न रूपकें पूर्णतः निषिद्ध करैत छथि, तखन उच्चारण-क्षेत्रक भेद, लोकप्रयोग आ वास्तविक ध्वनि-साम्यपर स्वतंत्र परीक्षण अपेक्षित अछि।

रेफ आ पूर्ण ‘र’क उदाहरण विशेष रूपसँ प्रासंगिक छथि। संस्कृतनिष्ठ शब्दक रेफयुक्त रूप तथा लोकप्रचलित ध्वनिरूपक बीच अन्तर मैथिलीमे प्रायः भेटैत अछि। लेखक लिखित परम्परा आ जीवित उच्चारणक टकरावकें काफियाक कसौटी पर रखैत छथि। एतऽ कृतिक सबल पक्ष उदाहरणक चयन अछि; सीमित पक्ष किछु स्थानपर मानक उच्चारणक कल्पनाकें बोलिक विविधतासँ ऊपर राखि देब अछि। साहित्यिक भाषाक मूल्य एहि द्वन्द्वक समाधानमे अछि, नहि कि कोनो एक विकल्पक सर्वत्र विजयमे।

ईता-दोषक व्याख्या चारिम खण्डक विशेष विधिशास्त्रीय उपलब्धि अछि। लेखक मात्रा, प्रत्यय, उपसर्ग अथवा सन्धिसँ बनल शब्दक आधारक तुलना करैत छथि। यदि सतहपर काफिया मिलैत हो, मुदा मूलक अर्थसम्बन्ध आ तुकान्त संरचना निर्दिष्ट शर्त पर खरा नहि उतरत, तखन ईता-दोषक चर्चा उठैत अछि। ‘बीमारी-हरामी’ आ ‘दोस्ती-दुश्मनी’ सन उदाहरणक आधारपर लेखक शब्दनिर्माणक परतकें खोलि देखबैत छथि। एहि प्रक्रियामे व्याकरण, व्युत्पत्ति आ ध्वनि एके विश्लेषणमे सम्मिलित होइत अछि।

तथापि ईता-दोषक नियम लागू करैत काल शब्दक मूलरूप निकालबाक प्रक्रिया स्वयं एक विवादित बिन्दु बनि सकैत अछि। भाषा मे प्रत्ययक उत्पादकता, ऐतिहासिक उधार, अर्थक नवीनीकरण आ बोलचालक रूप परिवर्तनक कारणे प्रत्येक शब्दकेँ स्पष्ट रूपसँ एक मूल आ एक प्रत्ययमे बाँटब सम्भव नहि। एक शब्दक आजुक अर्थ ओकर ऐतिहासिक मूलसँ अलग भऽ सकैत अछि। तँ काफियाक सतही ध्वनि-साम्य, शब्दरचनात्मक इतिहास आ पाठकक अर्थानुभव—तीनूकेँ अलग-अलग जाँचब उचित होयत। एहि सावधानीसँ लेखकक प्रस्तावक उपयोगिता बनल रहैत अछि, मुदा अनावश्यक निषेध घटि सकैत अछि।

समग्र रूपेँ चारिम खण्डक केन्द्रीय प्रश्न अछि : मैथिली गजलकेँ अपन भाषिक पहचान कोना भेटत? लेखकक उत्तर एकरेखीय नहि। किछु प्रसंगमे पारम्परिक अरूजक दृढ़ पालन, दोसर प्रसंगमे मैथिली उच्चारणक सापेक्ष छूट, आ तेसर प्रसंगमे लिपिसम्बद्ध निश्चितता—तीनू एक साथ भेटैत अछि। ई अन्तर्विरोध नहि त’ कमसँ कम एक सक्रिय वैचारिक तनाव अवश्य अछि। एहि तनावकेँ आलोचनाक विषय बनायब चाही, कारण स्थानीय गजलशास्त्रक विकास एही संघर्षसँ सम्भव अछि।

पाँचम खण्ड : आघात, मकता आ संशोधनक सर्जनात्मक अनुशासन

पाँचम खण्ड पहिल खण्डक आधारभूत मात्राविचारकेँ फेर उच्चारणक आघातक दृष्टिसँ खोलैत अछि। ‘घर’, ‘कमल’ आ ‘भिनसर’ सन शब्दक भिन्न उच्चारण सम्भावना देखबैत लेखक अर्थक सन्दर्भमे छन्दकीय निर्णय लेबाक आग्रह करैत छथि। एतऽ एकटा महत्वपूर्ण सिद्धान्त प्रकट होइत अछि : मात्राक विश्लेषण शब्दार्थसँ निरपेक्ष नहि भऽ सकैत। किछु ध्वनि-क्रम अलग अर्थ उत्पन्न करैत अछि; एहन स्थिति मे गजलकारकेँ अर्थ रक्षाक संग बहर निर्वाह करबाक अछि। एहि द्वारा आरम्भिक ‘पहिने तकनीक’ वाला विधान अधिक परिष्कृत रूप पबैत अछि।

मकताक परिचयमे लेखक तखल्लुसक स्थान आ नामक व्याकरणिक परिवर्तनक चर्चा करैत छथि। मैथिलीमे नामक संग विभक्ति जुड़ि सकैत अछि; ई रूपान्तरण मकताक वैधताकेँ नकारैत नहि, बल्कि गजलक अन्तिम शेरमे कविक आत्मउपस्थितिक स्थानीय व्याकरण बनबैत अछि। लेखक नाम आ उपनामक प्रयोगमे संगतिक आग्रह करैत छथि तथा उद्धरण-चिह्न लगा देलासँ नामक अर्थ-संभावना सँकुचित भऽ सकबाक तर्क दैत

छथि। एहि सूक्ष्म विवेचनमे काव्य-व्यक्तित्व, व्याकरण आ अर्थक बहुलता एक साथ उपस्थित अछि।

पाँचम खण्डक चरम बिन्दु जगदीश चन्द्र ठाकुर ‘अनिल’क गजल-संशोधनक अनुशीलन अछि। मूल रचनाक भिन्न-भिन्न पाँतिक मात्राक्रम देखल गेल अछि आ पाँतिसभकेँ समान अनुक्रममे अनबाक लेल संशोधन प्रस्तुत अछि। संशोधित मतलाक दू पाँति एहि प्रकार अछि—

टूटल छी तँइ गजल कहै छी

भूखल छी तँइ गजल कहै छी

एहि दू पाँतिक पुनरावृत्ति स्वरक माध्यमसँ व्यक्तिक टूटन आ भूखकेँ गजल कहबाक प्रेरणासँ जोड़ैत अछि। ‘टूटल’ शारीरिक वा मानसिक विखण्डनक संकेत देइत अछि, जबकि ‘भूखल’ जीवनक भौतिक अभावक। समान रदीफ भावक एकरेखीय पुनरावृत्ति नहि, बल्कि अनुभवक दू अलग कारणकेँ एक वाक्य-लयमे बाँधि दैत अछि। [१]

पूरा संशोधन-अभ्यासमे पहिल विचारक शब्द-पुनर्संरचना होइत अछि। ई शिल्प सिखयबाक दृष्टिसँ उपयोगी अछि, किन्तु एकर साहित्यिक परिणाम मिश्रित अछि। पहिल मसविदामे उपस्थित किछु प्रसंग बदलिए जायत अछि; किछु नव पाँतिक संग मूल कथक सुसम्बद्धता सेहो बदलैत अछि। बहर बचबैत समय अनुभवक स्वाभाविकता अथवा कथक अर्थ-प्रवाह कमजोर पड़ल त’ संशोधनकेँ पूर्ण सफलता नहि कहल जा सकैत। एतऽ पाठककेँ दू कसौटी एक साथ रखबाक अछि—मात्राक समानता आ शेरक कलात्मक एकता। तकनीकी रूपसँ दोषमुक्त शेर सदैव प्रभावशाली शेर नहि होइत, आ प्रभावशाली कथकेँ विधाक अनुरूप संशोधित करब अलग प्रकारक सर्जनात्मक श्रम माँगैत अछि।

लेखक अन्तमे बहरे-मीरक परिचय दैत छथि आ नव गजलकारक लेल एकर सुविधाक उल्लेख करैत छथि। एहि प्रसंगमे अपेक्षाकृत उदार वजन-ग्रहण, दू अलग शब्दक उच्चारणक सम्भावित मेल तथा मैथिलीमे नब बहर रचनाक विचार महत्वपूर्ण अछि। ई केवल अनुकरणक अभ्यास नहि, विधाक स्थानीय सर्जनशील विस्तारक प्रस्ताव अछि। मुदा छूटक प्रचार आ नियमित अभ्यासक बीच भेद राखबाक लेखकक चेतावनी अर्थपूर्ण अछि : आरम्भिक सीखमे मूल संरचना समझि लेना चाही, अन्यथा अपवादकेँ साधारण नियम मानिकय भ्रम उत्पन्न होयत।

उद्धरणक सन्निकट पाठविश्लेषण : तकनीक आ अनुभूतिक संयोग

पोथीक आरम्भिक कथनमे लेखक गजलक दू पक्ष—तकनीकी अथवा छन्दशास्त्रीय आ भाव—समान रूपसँ आवश्यक मानैत छथि। ई प्रस्ताव बहुधा गजलकेँ केवल ‘वजन पूरा करबाक’ विधा बुझबाक प्रवृत्तिपर अंकुश लगबैत अछि। गजलक रचनात्मक अनिवार्यता ई अछि जे बहर सहज अभिव्यक्तिक साधन बनय; ओ पाठकपर बाहरी अंकुश जकाँ आरोपित नहि बुझाय। एहि मूल प्रस्तावक आलोकमे पाँचम खण्डक संशोधन अभ्यासकेँ देखलासँ स्पष्ट होइत अछि जे पुस्तकक तकनीकी निष्कर्षकेँ सेहो भावार्थक कसौटीपर पुनः जाँचल जा सकैत अछि।

‘टूटल’ आ ‘भूखल’क जोड़ी भिन्न अभावकेँ एक स्वरसँ जोड़ैत अछि। पहिल रूप मानसगत विछिन्नता वा अस्तित्वगत पराजय सूचित करैत अछि; दोसर अभावकेँ सामाजिक-भौतिक धरातलपर अनैत अछि। ‘तँई’ कारणक सूत्रक रूपमे काम करैत अछि—गजल कहनाइ विलास नहि, अनुभवक परिणाम बनैत अछि। ‘कहै छी’ वर्तमानकालक आत्मघोषणा अछि, जाहिसँ शेर केवल बीतल दुःखक वृत्तान्त नहि रहि, बोलैत व्यक्तिक समकालीन उपस्थिति निर्मित करैत अछि। एतऽ सरल व्याकरणात्मक दोहराव अर्थक जटिलता उत्पन्न करैत अछि।

एकटा आर सूक्ष्म बिन्दु मतलाक दून मिसरामे रदीफक समरूपता अछि। ‘गजल कहै छी’क प्रत्यावर्तन लेखकक आवाजकेँ तालबद्ध करैत अछि, मुदा एकर पूर्ववर्ती शब्द बदललासँ व्यंजना बदलि जाइत अछि। गजलमे ई प्रक्रिया अत्यन्त फलदायी भऽ सकैत अछि : स्थिर संरचना भीतर अर्थक गत्यात्मकता। एहि कारणे काफिया-रदीफकेँ केवल निषेधात्मक अनुशासन नहि, रचनात्मक सम्भावनाक व्यवस्था रूपेँ पढ़नाइ चाही।

एहि संक्षिप्त पाठविश्लेषणक सीमा सेहो ध्यान देबाक चाही। ई पोथी मुख्यतः तकनीकी मार्गदर्शिका अछि, कविक सम्पूर्ण गजल-संग्रह नहि। तँ उदाहरणक सहायता सँ लेखकक सम्पूर्ण काव्यदृष्टि, सामाजिक विषयक व्यापकता वा सौन्दर्यशास्त्रक अन्तिम निष्कर्ष निकालब उचित नहि। उदाहरणक काव्यगुणक आलोचनात्मक चर्चा एहि पोथीक शिक्षण-उद्देश्यक सन्दर्भमे करब अधिक सम्यक् अछि।

साहित्येतिहासमे मैथिली गजलक स्थान : परम्परा आ पुनर्निर्माण

मैथिली गजलक इतिहासकेँ केवल अरबी-फारसी-उर्दू रूपक आगमनक कहानी मानब अधूरा होयत। मैथिलीमे एहि विधाक स्वीकार, तकनीकी अनुकरण, देशज उच्चारणक समायोजन, नव रचनाकारक प्रशिक्षण आ डिजिटल माध्यमसँ प्रसार—ई सभ अलग-अलग चरण छथि। विदेहपर उपलब्ध साहित्येतिहासक विवेचनसभ जीवन झाक आरम्भिक योगदान आ बादक रचनाकार सभक माध्यमसँ विकसित परम्पराक चर्चा करैत अछि। १९०५ सँ २०२२ धरि प्रतिनिधि गजलक संकलन-परियोजना एहि ऐतिहासिक निरन्तरताकेँ दस्तावेजी रूप दएबाक एक प्रयास अछि। एकरा प्रारम्भिक इतिहासक ठोस अनुसन्धानसँ जोड़बाक आवश्यकता बनल रहैत अछि; संकलनक आरम्भ-वर्ष अपने-आप समग्र विधाक अन्तिम आरम्भतिथि नहि ठहरैत। [३][४]

परम्परागत उर्दू गजलमे बहर, मतला, काफिया, रदीफ, मकता आ तखल्लुसक विशेष स्थान अछि। मैथिलीमे एहि पदावलीक उपयोग विधाक ऐतिहासिक स्मृतिसँ जोड़ैत अछि। मुदा शब्द ग्रहण करब आ विधाक जीवन ग्रहण करब एके बात नहि। गजल जखन मैथिलीमे लिखल जाइत अछि तँ ‘सँ’, ‘मे’, ‘केँ’, ‘क’, स्थानीय सम्बोधन, बोलिचालीक क्रिया-रूप आ स्वर-परिवर्तन ओकर शेरक अन्तिम ध्वनिरूप निर्धारित करैत अछि। एहि अर्थमे मैथिलीकरण न त’ मात्र भाषान्तर अछि आ न किछु शास्त्रीय छूटक जोड़-घटाउ; ई भाषिक संवेदनक पुनर्संयोजन अछि।

विदेहक प्रकाशन-संसारमे गजल-विषयक पोथी-सूची, आलोचना, प्रतिनिधि-संकलन आ नब लेखकसभक चर्चा एक संग उपलब्ध अछि। आशीष अनचिन्हारक ‘अनचिन्हार आखर’, ‘मैथिली गजलक व्याकरण ओ इतिहास’, ‘सन्दर्भ सहित’ आ प्रस्तुत संक्षिप्त पोथीकेँ एहि समूचयमे राखलासँ रचना, शास्त्र, आलोचना आ शिक्षणक परस्पर निर्भरता स्पष्ट होइत अछि। काव्य-चेतनाक विकास केवल एकटा श्रेष्ठ कृतिक प्रादुर्भाव नहि; ओहि कृतिकेँ बुझबाक शब्दावली, प्रशिक्षणक प्रणाली आ आलोचनाक सार्वजनिक मंच सेहो ओतबे आवश्यक अछि। एहि आधारपर प्रस्तुत पोथी आधुनिक मैथिली गजलक आलोचनात्मक आधाररचनामे योगदान करैत अछि। [२]

विदेहक समकालीन आलोचनामे ओमप्रकाश झा, अमित मिश्र आ चन्दन कुमार झाक गजल-कृतिसभकेँ एके साहित्यिक वातावरणक भीतर रखिकय देखल गेल अछि। एहि तुलनात्मक सामग्रीक महत्त्व एहि कारणे अछि जे गजलशास्त्रक प्रभाव केवल सिद्धान्त-

रचना धरि सीमित नहि, नव लेखकक रचना-प्रक्रिया आ प्रकाशन-पद्धति धरि पहुँचैत अछि। एहि प्रसंगमे प्रस्तुत रेडी रेकोनरकेँ एक शिक्षण-संस्कृतिक संकेत रूपमे पढ़ल जा सकैत अछि—जतऽ छन्दक प्रशिक्षण, तर्कपूर्ण प्रतिक्रिया आ पुनर्लेखन एक-दोसराक पूरक छथि। [५]

साहित्येतिहासक समावेशी दृष्टिसँ ईहो आवश्यक अछि जे मैथिली गजलक इतिहास केवल ‘सही’ आ ‘गलत’ रचनाक कठोर द्विभाजनमे नहि सीमित रहय। एक कालक रचना बादक काफिया-नियमपर अपर्याप्त ठहरि सकैत अछि, मुदा ताहिसँ ओकर भाषा-संसार, सामाजिक भाव, पाठकीय प्रभाव आ ऐतिहासिक भूमिका शून्य नहि भऽ जाइत। नियमक कसौटी विधा-अध्ययनक महत्त्वपूर्ण उपकरण अछि; इतिहासक पूर्ण विकल्प नहि। अनचिन्हारक पोथीक नियमवादी ऊर्जा इतिहासलेखनकेँ कसावट देइत अछि, मुदा व्यापक साहित्येतिहासकेँ प्रयोग, असफलता, अपवाद आ संक्रमण सभकेँ सेहो स्थान देब जरूरी अछि।

अरबी-फारसी-उर्दू परम्परा आ मैथिली छन्दक तुलनात्मक विवेचन

गजलक मूल तकनीकी संरचना मात्रिक अनुक्रम आ अन्त्यानुप्रासक जटिल सम्बन्ध पर आधारित अछि। संस्कृत-मैथिली छन्दपरम्परामे सेहो ह्रस्व-दीर्घ, गण, वृत्त, लय आ गीतात्मक रचनाक बहुविध परिपाटी अछि। एहि दूनू छन्दपरम्पराक समानता देखाइत होइतहुँ शब्द-संरचना, उच्चारण, छन्दगणना आ अपवादक इतिहासमे अन्तर अछि। ‘रुक्न’ आ ‘गण’ बीच उपमा शिक्षणक दृष्टिसँ लाभकारी अछि, मुदा दुनूकेँ पूर्णतः समान शास्त्रीय संस्था मानब विश्लेषणात्मक सरलीकरण होयत। अनचिन्हारक ग्रन्थ तुलनात्मक संकेत दैत अछि; एहि संकेतक ठोस विस्तार भावी अनुसन्धानक विषय अछि।

एहि तुलनाक पहिल परिणाम बहरक पुनर्विचारमे भेटैत अछि। मैथिलीमे रचनाकार जँ अरुजक परम्परागत बहर ग्रहण करैत छथि तँ ओकर नियमक पारदर्शिता आवश्यक अछि। दोसर दिस यदि मैथिली वर्णसंख्या अथवा स्थानीय मात्रा-परम्पराक सहायतासँ नब संरचना रचैत छथि, तखन ओकर भिन्न नामकरण आ परीक्षण अपेक्षित अछि। दूनू प्रणालीक अलग पहचान राखलासँ पाठककेँ स्पष्ट होयत जे कोन शेर कोन नियमपर बनल अछि। विदेहक अन्य तुलनात्मक गजल-अध्ययनमे सरल वर्णिक पद्धतिक चर्चा

भेटैत अछि; ओकर मानककेँ पारम्परिक अरूजक पर्याय बनबैत समय सावधानी चाही।

[५]

दोसरा परिणाम काफियाक ध्वनितत्त्वमे भेटैत अछि। उर्दू-फारसी परम्पराक नियम मैथिलीमे अपनाओल जा सकैत अछि, मुदा स्थानीय ध्वनिसमीकरण, स्वरक लघुता, नासिक्य उच्चारण आ विभक्ति-संलग्नता काफियाक व्यवहार बदलि सकैत अछि। एहि कारणे मैथिली गजल लेल स्वतंत्र भाषावैज्ञानिक परीक्षण मूल्यवान अछि। अनचिन्हारक विभक्ति आ चन्द्रबिन्दु सम्बन्धी विवेचन एहि दिशामे एक सक्रिय आरम्भ अछि; आधुनिक ध्वनिमूलक लिप्यन्तरण, बहुक्षेत्रीय उच्चारण आ उदाहरण-संग्रहक सहायतासँ एकरा आगू विकसित कएल जा सकैत अछि।

तेसर परिणाम सौन्दर्यक स्तरपर अछि। परम्परागत गजलमे दू पाँतिक सीमित स्थानक भीतर व्यंजना, विरोध, संकेत आ अर्थक उछाल आवश्यक गुण छथि। नियम पालन कयलाक बादो जँ शेरमे भावक नवीनता नहि अछि तँ तकनीकी शुद्धता साहित्यिक महत्त्वक पर्याप्त आधार नहि। अनचिन्हारक पोथी एहि बातक प्रस्तावना देइत अछि, मुदा एकर मुख्य जोर अभ्यासपर अछि। फलतः पाठककेँ छन्दशास्त्रक संग रस, ध्वनि, वक्रोक्ति, अलंकार, लोकानुभव आ सामाजिक सन्दर्भक अध्ययन जोड़बाक चाही। एखनुक साहित्यिक समीक्षा लेल ई पूरक दृष्टि अत्यावश्यक अछि।

सिद्धान्तक आन्तरिक अन्तर्विरोध आ समीक्षात्मक निर्णय

पोथीक पहिल उल्लेखनीय तनाव ‘अभ्यास’ आ ‘कविता’ बीच अछि। अभ्यासक अवसरपर अर्थकेँ स्थगित कय नियम सीखनाइ उचित अछि; मुदा अन्तिम रचनाक मूल्यांकनमे भाव आ अर्थकेँ निर्णायक स्थान देब जरूरी। लेखकक अपन कथन दूनू पक्षक संतुलनक समर्थन करैत अछि। एहि कारणे प्रशिक्षणक उदाहरणकेँ कलात्मक सिद्धिक नमूना बुझबाक त्रुटिसँ बचबाक चाही। प्रस्तुत गजल-संशोधन एहि अन्तरकेँ प्रत्यक्ष करैत अछि।

दोसर तनाव ‘ध्वनि’ आ ‘लिपि’ बीच अछि। काफियाक आधार जँ ध्वनि-साम्य अछि तखन लिपिक समानता कतेक हद धरि आवश्यक? लेखक किछु प्रसंगमे उच्चारणगत भेद मानैत छथि, किछु प्रसंगमे दृश्य अक्षर-रूपकेँ निर्णायक बनबैत छथि। शास्त्रीय मानक बनबैत काल एहि प्राथमिकताकेँ स्पष्ट करबाक अछि। एक निश्चयात्मक निषेधक

स्थानपर उच्चारण-आधारित, लिपि-आधारित आ परम्परा-आधारित परीक्षणक अलग श्रेणी अधिक उपयोगी भऽ सकैत अछि।

तेसर तनाव ‘स्थानीय स्वायत्तता’ आ ‘परम्परागत अनुशासन’ बीच अछि। लेखक मैथिलीक विभक्ति-संलग्नता लेल विशेष व्यवस्था स्वीकार करैत छथि, मुदा अन्य प्रसंगमे उर्दू-फारसी मानकक कठोर पालनपर बल दैत छथि। एहि द्वैतकें विरोध नहि, विवेकपूर्ण नियम-समीक्षाक चुनौती मानल जाए। सुस्पष्ट कसौटी ई होयबाक चाही जे कोनो छूट स्थानीय उच्चारण अथवा भाषिक संरचनाक अपरिहार्यतासँ निकलैत अछि कि केवल रचनाकारक सुविधाक कारणे। पहिल प्रकारक छूट सिद्धान्त-विकासक आधार बनि सकैत अछि; दोसर प्रकारक छूटक कठोर परीक्षण आवश्यक अछि।

चारिम तनाव ‘इतिहास’ आ ‘नियम’ बीच अछि। पोथी गजलशास्त्रक आधुनिक कसौटी सँ रचना परीक्षणक समर्थक अछि। ई दृष्टि विधागत विश्लेषण सिखबैत अछि, मुदा इतिहासक बहुआयामी अर्थकें सम्पूर्ण रूपसँ समेटि नहि सकैत। कोनो पूर्ववर्ती शेर वर्तमान नियमपर असंगत भए सकैत अछि, मुदा ओकर रचना-संस्कार, पाठकीय स्वीकृति आ साहित्यिक प्रभाव स्वतंत्र ऐतिहासिक प्रमाण छथि। आलोचककें दूनू प्रकारक प्रमाणक संग विवेकपूर्ण व्यवहार करबाक चाही।

पाँचम तनाव ‘संक्षिप्तता’ आ ‘प्रामाणिकता’ बीच अछि। रेडी रेकोनर सूत्र देइत अछि, मुदा प्रत्येक सूत्रक वंशावली, मतभेद, अपवाद आ उदाहरणक सम्पूर्ण परख नहि दैत। जखन लेखक पाठककें विस्तृत ग्रन्थ दिस संकेत करैत छथि, तखन स्वयं ई सीमा स्वीकार होइत अछि। एहि ग्रन्थक श्रेष्ठ प्रयोग एहि रूपमे सम्भव अछि जे ई प्रश्न उठाबय, अभ्यास कराबय आ पाठककें आगूक विस्तृत अनुसन्धान दिस प्रेरित करय।

शिक्षणशास्त्रीय मूल्य : नियम, उदाहरण, त्रुटि आ पुनर्लेखन

पोथीक शिक्षण-रचना चारि क्रमिक क्रियापर आधारित देखाइत अछि—परिभाषा, उदाहरण, दोष-पहचान आ संशोधन। ई अनुक्रम सामान्य व्याकरणक पाठसँ भिन्न अछि, कारण गजलक शेर बनबैत समय विद्यार्थीकें तुरन्त अपन रचना पर नियमक परीक्षण करबाक पड़ैत अछि। रुक्नक संख्यात्मक प्रस्तुति, काफियाक प्रत्यावर्ती निरीक्षण, विभक्तिक उदाहरण आ अनिलक संशोधन-अभ्यास सभ एहि पद्धतिक अलग-अलग रूप छथि।

एहि पद्धतिक महत्त्व केवल लेखनक गति बढेनाइ नहि। विद्यार्थीक सोझाँ ई बात प्रकट होइत अछि जे कविताक निर्माण परीक्षणसँ गुजरैत अछि; पहिल लिखल पाँति अन्तिम नहि होइत। लेखक जखन अपन पूर्ववर्ती काफियापर नब नियम लागू करैत छथि, तखन गुरु आ शिष्य दुनू लेल आत्मालोचनाक आदर्श प्रस्तुत होइत अछि। साहित्यिक कार्यशालामे एहन अनुशासन बहुमूल्य अछि।

तथापि शिक्षणक आधुनिक रूपमे ई पोथी किछु पूरक सामग्री माँगैत अछि। प्रत्येक उदाहरणक संग स्वीकृत उच्चारणक स्पष्ट ध्वनि-विभाजन, कमसँ कम दू वैकल्पिक बोलिरूप, काफिया-रदीफक सारणी, भावगत प्रभावक टिप्पणी आ पाठकीय अभ्यासक उत्तर-विवेचन होय त’ नियम अधिक विश्वसनीय बनत। भाषा-वैविध्यकें दर्ज करबाक ई प्रयास पोथीक मूल योजना बदलत नहि; एकरा प्रायोगिक रूपसँ दृढ़ बनाओत।

मुख्य उपलब्धि आ सीमा : एक संश्लेषित मूल्यांकन

एकर पहिल उपलब्धि मैथिलीमे गजलशास्त्रक प्रचलित तकनीकी पदक व्यवस्थित प्रवेश अछि। पाठक बहर, रुक्न, मतला, काफिया, रदीफ, मकता, तखल्लुस, ईता-दोष आदि पदकें केवल सुनैत नहि, ओकर प्रयोगक उदाहरण देखैत छथि। एहि क्रमे भाषा-सापेक्ष आलोचनात्मक शब्दावलीक निर्माण सम्भव होइत अछि।

दोसर उपलब्धि स्थानीय भाषिक वास्तविकताक पहचान अछि। विभक्ति सटबाक प्रथा, चन्द्रबिन्दुक व्यवहार, ह्रस्व स्वर, रेफ आ शब्दोच्चारणक अन्तर रचनामे प्रत्यक्ष चुनौती बनैत अछि। ग्रन्थ एहि चुनौतीकें उपेक्षित नहि करैत; ओकर समाधान खोजैत अछि। ई प्रयत्न मैथिली गजलकें केवल अनुकृत विधा मानबाक प्रवृत्तिपर पुनर्विचार करबैत अछि।

तेसर उपलब्धि आत्मसुधारक प्रवृत्ति अछि। साहित्यिक परम्परामे लेखक अपन पूर्व निर्णायक मर्यादा स्वीकार करथि, ई दुर्लभ नहि त’ आवश्यक गुण अवश्य अछि। पोथी एहि अर्थमे जड़ नियमसंग्रह नहि, संशोधनशील प्रशिक्षण-विवेचन अछि।

एकर प्रमुख सीमामे समग्र सौन्दर्यशास्त्रक अपेक्षाकृत अल्प विस्तार, उच्चारणभेदक अपर्याप्त क्षेत्रीय परीक्षण, किछु नियमक अधिक निषेधात्मक भाषा आ ऐतिहासिक मतभेदक सीमित दस्तावेजीकरण गनल जा सकैत अछि। मुदा ई सीमा ग्रन्थक घोषित संक्षिप्ततासँ अलग कय नहि देखल जाएबाक चाही। आलोचना उचित तखने होयत जखन हम एकर उद्देश्य आ दावाक परिधि स्पष्ट राखी।

उपसंहार

आशीष अनचिन्हारक 'मैथिली गजलक रेडी रेकोनर'क मूल महत्व एहि बातमे अछि जे ई मैथिली गजलकेँ केवल भावात्मक अभिव्यक्तिक स्वतःस्फूर्त क्षेत्र नहि मानि, शिल्पगत विवेकक विषय बनबैत अछि। एकर पाँचू खण्ड क्रमशः गणना, पदावली, स्थानीय भाषिक समायोजन, सूक्ष्म काफिया-परीक्षण आ रचनात्मक संशोधनक शिक्षण-यात्रा प्रस्तुत करैत अछि। एहि यात्रा सँ मैथिली गजलक आधुनिक प्रशिक्षणक एक महत्वपूर्ण रूप सामने अबैत अछि।

तथापि अन्तिम आलोचनात्मक निष्कर्ष नियमक निष्कण्टक स्वीकृति नहि, बल्कि ओकर परीक्षणशील उपयोग अछि। गजलक शिल्प अनुभवकेँ अधिक घनत्व देबाक साधन होय; अनुभवक स्थानापन्न नहि। बहर, काफिया आ रदीफक अनुशासन जखन मैथिली उच्चारण आ जीवनानुभवक संग समञ्जस होइत अछि, तखने गजल अपन वास्तविक काव्यात्मक शक्ति पबैत अछि। एहि दृष्टिसँ ई पोथी एकटा महत्त्वपूर्ण आरम्भ, एकटा उपयोगी कार्यशाला-पुस्तक आ मैथिली गजलशास्त्रपर निरन्तर विमर्शक आधार अछि। एकर प्रासंगिकता एहि बातमे सेहो अछि जे ई पाठककेँ अन्तिम उत्तर देबाक संग-संग बेहतर प्रश्न पूछबाक सामर्थ्य दैत अछि।

सन्दर्भसूची

सन्दर्भमे मूल पोथी आ विदेहक पोथी-संग्रह/शोध-अभिलेखक सामग्रीकेँ आधार मानल गेल अछि। आन वेबसाइटक सामग्री सम्मिलित नहि अछि।

[१] अनचिन्हार, आशीष। मैथिली गजलक Ready Reckoner / मैथिली गजलक रेडी रेकोनर। विदेह-संग्रह; मूल कृति (© २०१२, २०२२), प्राथमिक अध्ययन-पाठ।

<https://videha-ejournal.github.io/videha/pothi.htm>

[२] अनचिन्हार, आशीष। मैथिली गजलक व्याकरण ओ इतिहास; सन्दर्भ सहित;

अनचिन्हार आखर; शब्द-अर्थ-शक्ति। विदेह, पोथी-संग्रहमे सूचीबद्ध सम्बन्धित कृतिसभ।

<https://videha-ejournal.github.io/videha/pothi.htm>

[३] ठाकुर, गजेन्द्र आ अनचिन्हार, आशीष (सह-सम्पादित)। मैथिली गजल : आगमन ओ प्रस्थान बिन्दु; मैथिलीक प्रतिनिधि गजल (१९०५–२०२२)। विदेहक पोथी-सूची आ मूल ग्रन्थक लेखक-परिचयमे उल्लिखित।

<https://videha-ejournal.github.io/videha/pothi.htm>

[४] विदेह। A Parallel History of Mithila & Maithili Literature, गजल सम्बन्धी ऐतिहासिक विवेचन। विदेह शोध-अभिलेख।

<https://videha-ejournal.github.io/videha/research/2026/438/a-parallel-history-of-mithila-maithili-literature.htm>

[५] विदेह। Three Voices of the Maithili Ghazal: Om Prakash Jha, Amit Mishra, Chandan Kumar Jha। विदेह समानान्तर साहित्येतिहासक तुलनात्मक आलोचना।

https://videha-ejournal.github.io/videha/new_page_79.htm

[६] अनचिन्हार, आशीष। मैथिली गजल व्याकरणक शुरुआती प्रयोग। विदेह, अङ्क १६५, १ नवम्बर २०१४। विदेह शोध-सूचीमे प्रविष्टि।

<https://videha-ejournal.github.io/videha/research/videha-scholar-research-book.html>

[७] अनचिन्हार, आशीष। बयानक सन्दर्भमे मैथिली गजल। विदेह, अङ्क २५१, १ जून २०१८। विदेह शोध-सूचीमे प्रविष्टि।

<https://videha-ejournal.github.io/videha/research/videha-scholar-research-book.html>

[८] विदेह। Critical Appreciation of Ashish Anchinhar। कवि, आलोचक आ गजलशास्त्रीक साहित्यिक अवदानपर सम्पूर्ण आलोचनात्मक आलेख।

https://videha-ejournal.github.io/videha/new_page_56.htm

[९] विदेह। विदेह शोध-सूची : मैथिली साहित्य, आलोचना, भाषाविज्ञान आ इतिहास सम्बन्धी शोध-सामग्रीक अनुक्रमणिका।

<https://videha-ejournal.github.io/videha/research/index.html>

समीक्षा ११

मैथिली गजलक व्याकरण ओ इतिहास

भाषिक स्वायत्तता आ छन्दानुशासन

शोध-सार

आशीष अनचिन्हारक ‘मैथिली गजलक व्याकरण ओ इतिहास’ मैथिलीमे गजलकें स्वतंत्र साहित्यिक विधाक रूपमे प्रतिष्ठित करबाक एकटा महत्वाकांक्षी शास्त्रीय आ इतिहासपरक प्रयत्न अछि। एकर विषय मात्र अरबी-फारसी-उर्दू गजलक शब्दावलीक परिचय नहि, अपितु मैथिलीक उच्चारण, स्वर-संरचना, वर्तनी, मात्रा-विन्यास, कारक-विभक्ति, पदक्रम आ लोकप्रयोगक सन्दर्भमे गजलक औपचारिक अनुशासनक पुनर्व्याख्या अछि। ग्रन्थक प्रारम्भिक चौबीस खण्ड शेर, मतला, रदीफ, काफिया, मकता, बहर, तकतीअ, गुण-दोष, संगीत, भाषा आ समीक्षाशास्त्रसँ सम्बन्धित अछि; पचीसम खण्ड प्राचीन संकेतसँ आधुनिक रचनाकार धरि गजलक परम्परा, मुद्रित कृति आ डिजिटल संवादक इतिहास लिखैत अछि। एहि कारणे ई पोथी शिक्षण-पुस्तक, काव्यशास्त्रीय प्रतिपादन, साहित्यिक घोषणापत्र आ इतिहास-लेखन—चारू रूपक संयोग बनि जाइत अछि।

एहि शोधमे ग्रन्थक प्रस्तावित नियम आ ओकर प्रमाणक स्वरूपकें अलग-अलग परखल गेल अछि। विशेष रूपसँ तीन विरोधाभास विवेचनीय अछि: भाषिक स्वायत्तताक समर्थनक संग एकमात्र वैध शिल्पक आग्रह; उच्चारण-वैविध्यक स्वीकृतिक संग लिखित मात्राक्रमक कठोर निर्धारण; आ उपेक्षित गजलकारक पुनर्स्थापनाक इच्छाक संग स्थापित तथा प्रयोगशील धाराक बीच मूल्यात्मक ध्रुवीकरण। अध्ययन ई निष्कर्ष दैत अछि जे ग्रन्थक स्थायी योगदान गजलक व्याकरण मैथिलीक पाठक लेल सुलभ करब, छन्दीय परीक्षणक साझा उपकरण उपलब्ध करब आ साहित्यक डिजिटल अभिलेखकें ऐतिहासिक प्रमाणक

कोटिमे अनबाक प्रयास अछि। मुदा कतेको वंशावली, प्राथमिकता-दावा, सांख्यिक तथ्य आ काल-विभाजनकेँ स्वतंत्र ग्रन्थसूचीपरक परीक्षणक बिना अन्तिम इतिहास नहि मानल जा सकैत अछि।

बीज-शब्द : मैथिली गजल; आशीष अनचिन्हार; अरूज; बहर; काफिया; रदीफ; भाषिक स्वायत्तता; काव्यशास्त्र; साहित्येतिहास; विदेह; डिजिटल साहित्य।

प्रस्तावना : विधाक अपन भाषा, भाषाक अपन विधान

मैथिली काव्य-परम्परामे गीत, पद, लोकगाथा, वर्णवृत्त आ मात्रावृत्तक समृद्ध अवदान रहल अछि। गजल एहि परिदृश्यमे आयातित नाम मात्र नहि, बल्कि नव संवेदनाक अनुशासित अभिव्यक्तिक एकटा सम्भावना बनि उपस्थित होइत अछि। एकरा पढ़बाक समय दूटा प्रश्न अनिवार्य अछि: गजल अपन मूल शिल्पगत पहचान सुरक्षित रखैत मैथिली कोना बनैत अछि, आ मैथिलीक ध्वनि-लय ओकर मूल विधानक कतबा पुनर्निर्माण कऽ सकैत अछि? अनचिन्हारक ग्रन्थक केन्द्रीय मूल्य एहि प्रश्नकेँ व्यवस्थित रूपमे उठेबामे अछि।

ग्रन्थक नाममे “व्याकरण” आ “इतिहास”क युग्म आकस्मिक नहि। व्याकरण रूपक कसौटी निर्मित करैत अछि; इतिहास ओही कसौटीक आलोकमे अतीतक सामग्री चुनैत आ व्यवस्थित करैत अछि। फलतः जे व्याकरण स्वीकार कएल जाएत, ओकर प्रभाव साहित्येतिहासक पात्र-चयन, मूल्यांकन आ युग-निर्धारणपर पड़त। एहि निबन्धक मूल प्रतिपादन ई अछि जे ई ग्रन्थ गजलक केवल विधान नहि रचैत, मैथिली गजलक साहित्यिक वैधताक सीमा सेहो निर्धारित करबाक प्रयत्न करैत अछि। एकरा सम्यक पढ़बाक लेल रचनात्मक उपलब्धि आ विचारधारात्मक सीमा दुनूकेँ समान रूपसँ देखब आवश्यक अछि।

ग्रन्थक निर्माणक समय, रूप आ स्रोत-संरचना

लेखक अपन आरम्भिक गजल-परिचय शृंखलाक प्रकाशनकाल २०११ बतबैत छथि। मूल शृंखलाक संशोधन, विस्तार आ नव विचारक समावेशसँ पचीस खण्डक व्यवस्थित कृति तैयार भेल। ग्रन्थमे २०१२ आ २०२२क प्रकाशकीय संकेत उपस्थित अछि; लेखक २०२२ मे अपन विवेचनक संशोधित रूपक चर्चा करैत छथि। एकरा स्थिर आरम्भिक पाठ मानबाक बदला समयक संग विकसित आलोचनात्मक परियोजनाक रूपमे बुझब अधिक उपयुक्त अछि। लेखक स्वयं पूर्व रचनाक गलत अभिज्ञान आ किछु स्थापित दावाक पुनरीक्षण करैत छथि, जाहिसँ संशोधनशीलताक महत्त्व सामने अबैत अछि।

विदेहक पोथी-संग्रहमे अनचिन्हारक ‘अनचिन्हार आखर’, ‘संदर्भ सहित’, ‘कुमारि इच्छा’, ‘जंघाजोड़ी’, ‘मैथिली गजलक रेडी रेकोनर’ आ ‘शब्द-अर्थ-शक्ति’ सन कृतिक संग एहि ग्रन्थक उपस्थिति एकटा दीर्घकालीन गजलकेन्द्रित लेखन-परम्पराक साक्ष्य अछि। विदेहमे प्रकाशित लेखकक ‘मैथिली गजल व्याकरणक शुरूआती प्रयोग’ आ ‘आधुनिक मैथिली गजलक संक्षिप्त आलोचनात्मक परिचय’क क्रम एहो स्पष्ट करैत अछि जे मुख्य पोथीक विचार पृथक-थलग नहि, निरन्तर सार्वजनिक शास्त्रीय बहसक हिस्सा अछि। एहि लेख सभक उपस्थिति लेखकीय दृष्टिकोणक विकासकेँ प्रमाणित करैत अछि; मात्र एहि आधारपर हुनक प्रत्येक ऐतिहासिक निष्कर्षक स्वतन्त्र पुष्टि नहि भऽ जाइत अछि।

अध्ययनक आधार आ आलोचनात्मक कसौटी

एहि अध्ययनमे प्राथमिक कसौटी ग्रन्थक अपने प्रतिपादन, उदाहरण, आत्मस्वीकृति, सन्दर्भ-सूची आ रचनाकार-परिचय अछि। दोसरा स्तरपर विदेहक प्रकाशित लेख-सूची आ सम्बन्धित मूल लेखक माध्यमसँ विमर्शक कालक्रम जाँचल गेल अछि। तुलनात्मक इतिहासमे ‘लेखक कहैत छथि’, ‘उदाहरणसँ स्पष्ट होइत अछि’ आ ‘स्वतन्त्र रूपसँ प्रमाणित मानल जा सकैत अछि’—ई तीन अलग स्तर राखल गेल अछि। ग्रन्थमे वर्णित परम्परा आ लेखकक मूल्यांकनकेँ स्वतः निर्विवाद ऐतिहासिक सत्य नहि मानल गेल अछि।

आलोचनाक आधार चारि अछि: भाषिक संगति—नियम मैथिलीक वास्तविक ध्वनितन्त्रसँ मेल खाइत अछि कि नहि; रूपात्मक सुसंगति—समरूप शेर पर समान मापदण्ड लागू होइत अछि कि नहि; साहित्यिक फलप्रदता—शिल्प भाव-विचारकें पुष्ट करैत अछि कि ओकर स्थान लैत अछि; आ इतिहासपरक प्रमाण—कविक रचना, तिथि, प्रकाशन, उपलब्धता आ पाठ-परम्परा अलग-अलग सिद्ध कएल गेल अछि कि नहि। एहि दृष्टिएँ अपन कृति स्वयं कतेक प्रमाणवान् अछि, से प्रश्न प्रशंसासँ कम आवश्यक नहि।

मूल पाठक सत्यापित कथन आ ओकर आलोचनात्मक आशय

ग्रन्थक भाषा-संकल्पक सबसँ सघन सूत्र लेखकक एहि कथनमे भेटैत अछि—

“हमरा गजल तँ चाही मुदा मैथिलीमे चाही”

एहि वाक्यक आशय भाषिक अस्मिताक संकुचित आग्रह नहि, रूपान्तरित गजल-विधानक शोध अछि। लेखक मानैत छथि जे विदेशी भाषाक नियम जसक तस मैथिलीपर आरोपित कएलासँ देशज उच्चारण आ शब्द-विन्यास बाधित भऽ सकैत अछि। तथापि केवल भाषा-परिवर्तनसँ विधाक पृथक औपचारिक पहचान समाप्त नहि कएल जा सकैत, ई हुनक मूल शर्त अछि।

“गजलक किछु नियम भाषा सापेक्ष अछि।”

एहि कथनमे लेखकक अनुशासनवादी स्वरूपक भीतर संशोधनक सम्भावना खुलैत अछि। प्रश्न तथापि बनल रहैत अछि जे रदीफ आ बहरकें अपेक्षाकृत स्थिर मानि काफियाक भाषासापेक्षता कतेक दूर धरि लागू कएल जा सकैत अछि। उच्चारण-भिन्नताक कारण मात्रा-निर्णय बदलैत हो तखन बहरक स्थिरताक व्यावहारिक कसौटी स्वतंत्र विवेचना माँगैत अछि।

“मैथिलीमे “गज़ल” शब्द गलत अछि आ “गजल” शब्द सही”

लेखक ई वर्तनी-निर्णय मैथिलीक लेखन-परम्परा आ विदेशी ध्वनिक स्थानीय आत्मसातीकरणसँ सम्बन्धित अछि। एकरा गजलक मौलिकता अथवा श्रेष्ठताक मानदण्ड नहि बनाओल जा सकैत; ई मुख्यतः भाषावैज्ञानिक मानकीकरणक प्रस्ताव अछि। अलग-अलग लिपि-परम्परा वा ऐतिहासिक उद्धरणमे मूल वर्तनीक अस्तित्वक स्वीकार आवश्यक रहैत अछि।

“काफिया मने स्वर साम्य युक्त तुकान्त चाहे ओ अक्षरक स्वरसाम्य हो की मात्राक स्वरसाम्य।”

एहि परिभाषासँ स्पष्ट होइत अछि जे लेखक काफियाकेँ केवल अन्तिम अक्षरक समानता नहि बुझैत छथि। ध्वनि-साम्य, उच्चारण आ मात्रा-साम्यक अन्तरक व्याख्या एहि ग्रन्थक उपयोगी शिक्षणात्मक उपलब्धि अछि। तकर संग शब्दक रूपिमिक सीमा, विभक्ति आ बोलचालक ध्वनि-परिवर्तनपर चर्चा काफियाक व्यवहारिक परीक्षणक सशक्त आधार बनबैत अछि।

समेकित समीक्षा : गजलशास्त्रक नव विन्यास

विधाक अनिवार्य तत्त्व आ रचनात्मक छूट

ग्रन्थ मतलाक दूनू मिसरामे काफिया-रदीफक विन्यास, पश्चात् प्रत्येक शेरक दोसर मिसरामे ओकर आवृत्ति, समबहरता आ स्वतंत्र शेर-संरचनाक पक्ष लेत अछि। ई निरूपण परम्परागत गजलशास्त्रक आधारभूत विशेषताकेँ मैथिलीमे व्यवस्थित परिचय दैत अछि। लेखक रदीफहीन गजलकेँ सम्भव मानैत छथि, मुदा काफिया आ बहरक अनिवार्यतापर आग्रह करैत छथि। एहि भेदसँ स्पष्ट अछि जे हुनका लेल विविधता रूपक भीतर स्वीकार्य अछि, रूपक विघटनपर नहि।

रचनात्मक स्वतन्त्रताक प्रश्नपर आलोचनात्मक भेद अपेक्षित अछि। जे रचना स्वयंकेँ गजल कहैत अछि, ओकर मापन गजल-विधानसँ कएल जा सकैत अछि; मुदा जाहि रचनामे गजलक सांगीतिक स्मृति, दोहरी पाँति, पुनरावृत्ति आ मुक्त छन्दक मिश्रण अछि, ओकरा

समग्र साहित्यिक मूल्यसँ वञ्चित करब उचित नहि। विधागत वर्गीकरण आ सौन्दर्यात्मक मूल्यांकन अलग प्रश्न थिक। ग्रन्थ कतेको ठाम एहि दूनूकेँ एक-दोसरक स्थानापन्न बना देबाक जोखिम उठबैत अछि।

भाषा, वर्तनी आ उच्चारणक त्रिकोण

लेखक मैथिलीक पूर्ण आ अपूर्ण भाषारूप, ए/ऐ/अइ आदिक प्रयोग, संक्षिप्त उच्चारण, संयुक्ताक्षर, अनुनासिकता, उच्चारणक बोलिगत भिन्नता तथा लिखित शब्दक मात्राक्रम पर विस्तारसँ चर्चा करैत छथि। एहि विमर्शमे शब्द-संगीतक वास्तविक प्रश्न अछि: लिखल रूप आ बाजल रूप सदिखन एकरूप नहि होइत। उच्चारणक विविधता मानि कऽ लिखित रूपक एकरूप नियम निर्धारित करबाक प्रस्ताव शिक्षणक सुविधा देत, मुदा क्षेत्रीय भाषिक बहुलताकेँ यथावत् नापबामे कठिनाई सेहो उत्पन्न करैत अछि।

एहि प्रश्नक समाधान मात्र मानक वर्तनीक आज्ञासँ नहि, बल्कि संगत उच्चारण-पद्धतिक घोषित आधारसँ सम्भव अछि। पाठककेँ पहिने कहबाक चाही जे कओन बोलिक वाचन-परम्परा अपनाओल गेल अछि, कोन उच्चारण छूट मान्य अछि, आ वैकल्पिक रूपसँ बहरपर की प्रभाव पड़ैत अछि। एहि अतिरिक्त स्तरक अनुपस्थितिमे गणना सुगम भऽ सकैत अछि, मुदा ध्वनिवैज्ञानिक प्रतिपादन सर्वमान्य नहि।

मात्रा, बहर आ तकतीअ : नियमसँ अभ्यास धरि

ग्रन्थ लघु-दीर्घ, रुक्मक संयोजन, विविध अरबी बहर, सरल वर्णिक अनुशासन आ संस्कृत-वर्णवृत्तक तुलनात्मक पक्षक संग विस्तृत मात्रात्मक उदाहरण प्रस्तुत करैत अछि। एकर शिक्षण-विन्यास महत्त्वपूर्ण अछि: पाठक शब्दक मात्राक्रम सँ आरम्भ करैत अछि, तकरा बाद काफिया जोड़ैत अछि, तत्पश्चात् शेरक बनावट आ अन्ततः पूरी गजलकेँ समान लयमे गढ़बाक कौशल अर्जित करैत अछि। आरम्भिक अभ्यासमे भावसँ पहिने रूपपर ध्यान केन्द्रित करबाक सलाह सीखबाक पद्धतिक दृष्टिँ उपयोगी भऽ सकैत अछि।

तथापि गणना आ अनुभूति बराबर नहि। अंकविन्यास सही होइतहुँ पाँतिक उच्चारण कठिन, अर्थगत विराम अस्वाभाविक अथवा रदीफ अप्रासंगिक भऽ सकैत अछि। गजल-शिक्षणमे ताकत तखने आबैत अछि जखन मात्राक्रमक शुद्धता संग सहज उच्चारण, काव्यार्थ, ध्वन्यात्मक ऊर्जा आ श्रोता-सम्बोधनक परीक्षा जोड़ल जाए। ग्रन्थक भाषिक विवेचन एहि व्यापक कसौटीक मार्ग खोलैत अछि; ओकर अधिक व्यवस्थित रूपान्तरण आगामी शोधक विषय अछि।

काफिया-विमर्शक स्वायत्त योगदान

काफियाक अनेक खण्डमे विभाजन ग्रन्थक सबसँ विकसित अंशमे सँ अछि। स्वर-साम्य, अक्षर-साम्य, आघात, विसर्ग, काफियामे उपसर्ग-विभक्तिक भूमिका, मैथिली आ उर्दू वर्णमालाक भिन्नता तथा कथित दोषक अनेक उदाहरण एकरा केवल परिचायक नहि, तर्कपूर्ण परीक्षण-पुस्तक बनबैत अछि। विभक्ति हटेलापर ध्वनि-साम्य बचैत अछि कि नहि, से प्रश्न लिखित मैथिलीक रूपिमिक रचनाकेँ शिल्प-विन्याससँ जोड़ैत अछि।

एहि विमर्शक स्थायी महत्त्व एहि बातमे अछि जे काफिया ‘अन्तिम ध्वनि एक हो’ सन सरल सूत्रसँ जटिल अछि। ई व्याकरणिक रूप, शब्दार्थ, ध्वनिक अनुगूँज आ आवृत्तिक सौन्दर्यक संयुक्त क्षेत्र थिक। ग्रन्थक स्थान-स्थानपर प्रतिपादित कठोर निषेधकेँ तथापि सर्वभाषिक नियम मानब आवश्यक नहि; एकर प्रामाणिकता मैथिली उच्चारणक पर्याप्त विविध उदाहरणक संग कएल तुलनात्मक परीक्षणपर निर्भर करैत अछि।

शेरक स्वायत्तता आ गजलक सम्पूर्णता

शेर अपन भीतर अर्थक एकटा समाप्त संरचना होअए, ई विचार लेखकक उदाहरण-चयनमे महत्त्व रखैत अछि। गजलक हर शेरक स्वतंत्र वैचारिक ऊर्जा स्वीकार करब ओकर शास्त्रीय पहचान अछि; मुदा स्वतंत्रता अनिवार्य रूपसँ असम्बद्धता नहि। प्रेम, सामाजिक विडम्बना, लोकजीवन वा मानवीय पीड़ाक आवर्तक अनुभव अनेक स्वतंत्र शेरकेँ एक

भितरी संगति देत अछि। ग्रन्थक गीत आ नज्मसँ गजलक भेद स्पष्ट करबाक प्रयत्न उपयोगी अछि, पर कथा-सूत्रहीनताकें सम्पूर्ण कलात्मक विच्छिन्नता मानब उचित नहि।

रदीफक पुनरावृत्ति : यान्त्रिकता वा अर्थ-घनत्व

रदीफ केवल दोहराओल शब्द नहि, हर शेरमे नव अर्थगत सन्दर्भ लऽ कऽ अबैत प्रत्यावर्तन अछि। लेखक रदीफ-काफियाक यथोचित जुड़ावकें गुण आ अनावश्यक जोड़कें दोष मानैत छथि। एहि कसौटीमे शिल्पक महत्त्व अछि। कतेको गजलमे रदीफ समूचा रचनाक स्मृति-सूत्र बनैत अछि; कतहु ओकर बाध्यकारी उपस्थिति भाषा कें कृत्रिम बना सकैत अछि। रदीफक सफलता कें मात्र गणनात्मक उपस्थितिसँ नहि, प्रत्येक शेरमे ओकर अर्थगत नवोत्पादनसँ परखबाक चाही।

संगीत आ पाठ-परम्परा

ग्रन्थ गायन, पाठ, लय आ सांगीतिक प्रस्तुति पर पृथक विचार करैत अछि। ई आग्रह उपयुक्त अछि जे गायनयोग्यता आ विधागत पहचान एक समान वस्तु नहि। कोनो गीत गजल-जकाँ सुनाएबासँ गजल नहि बनि जाइत, आ कोनो गजल अनिवार्य रूपसँ संगीतबद्ध हो, सेहो आवश्यक नहि। मुदा गजल-शास्त्रक प्रवाहक इतिहासमे गायन आ सार्वजनिक पाठक प्रभाव कए बेर मूल शिल्पकें नव सामाजिक अर्थ दैत अछि; एहि अन्तःसम्बन्धक व्यापक मूल्यांकन ग्रन्थक औपचारिक निश्चयक अतिरिक्त अपेक्षित अछि।

भाव, कथ्य आ सामाजिक अनुभव

ग्रन्थ भाषिक रूपक संग कथ्य, संकेत, दार्शनिकता आ सामाजिक संदर्भक गुण-दोष सेहो गनबैत अछि। एहि प्रसंगमे लेखकक आग्रह अछि जे शास्त्रीय अनुशासन अभिव्यक्तिक शत्रु नहि होइत। ई केन्द्रीय प्रतिपादन महत्त्वपूर्ण अछि; विधाकें राजनीतिक नारा आ शाब्दिक तुकबन्दीसँ ऊपर उठेबाक कार्य साहित्यक सर्जनात्मक हितमे अछि। मुदा सामाजिक अनुभूतिक मूल्य शिल्प-शुद्धताक अधीन सम्पूर्णतः नहि हो सकैत; अन्यथा

असहमतिक नब रचना, बोलीगत काव्य आ अलिखित सांगीतिक प्रयोगपूर्वै खारिज भऽ सकैत अछि।

आलोचनक भाषा : प्रमाण आ प्रतिद्वन्दिता

लेखक अपन वाद-विवादमे तर्क, उदाहरण आ गलती-स्वीकारक प्रशंसा करैत छथि। ई सार्वजनिक साहित्यिक संस्कृति लेल आवश्यक गुण अछि। दोसर दिस कतेको स्थलपर प्रतिद्वन्द्वी लेखक-संपादकक प्रति तीख व्यंग्य, सामूहिक आरोप आ व्यक्तिकेन्द्रित टिप्पणी वस्तुनिष्ठ प्रतिपादनक प्रवाह बाधित करैत अछि। आलोचनाक वास्तविक बल दू मिसराक प्रमाण, तकर तकतीअ, भाषा-रूपक परीक्षण आ निष्कर्षक सीमाक स्पष्ट स्वीकृतिमे अछि; कोनो व्यक्तिक बौद्धिक पात्रताक व्यापक अस्वीकृतिमे नहि। एहि ग्रन्थकेँ पढ़ैत पाठक तर्कसंगत आलोचना आ विवादात्मक भाषणकेँ अलग कऽ देखथि।

खण्डानुसार पृथक पाठविश्लेषण

प्रथम खण्ड : गजल-प्रतीक, शब्दार्थ आ उद्भव

गजलमे प्रयुक्त मय, मीना, साकी, पैमाना आदि प्रतीकक ऐतिहासिक अर्थ आ मैथिली सन्दर्भमे ओकर पुनर्पाठ प्रस्तुत अछि। लेखक भाषाक स्थानीयकरणक आग्रह राखैत छथि। ई प्रयास अर्थ-संवर्धक अछि, मुदा प्रतीकक शास्त्रीय बहुअर्थताकेँ केवल प्रेम वा मदिराक शाब्दिक अर्थमे सीमित करब हानिकर होएत। अरबी-फारसी उद्भवक विवरणकेँ शब्द-इतिहास आ विधा-इतिहासक अलग प्रश्नक रूपमे देखबाक चाही।

द्वितीय खण्ड : परिभाषा आ पारिभाषिक संरचना

शेर, मिसरा, रुक्न, काफिया, रदीफ, बहर आदि शब्दक परिचय एकटा नव पाठक लेल आधार बनैत अछि। गजलक शास्त्र पाठकीय परिभाषासँ शुरू होइछ, एतय ई बोध अछि। तकनीकी पदावलीक अनेक स्रोत अछि; स्रोत-भाषासँ मैथिलीक व्यवहार धरि प्रत्येक पदक अर्थ-विकासक तुलनात्मक शब्दकोश बनाओल जाए तँ ई उपलब्धि आर समृद्ध हएत।

तृतीय खण्ड : मतला आ संरचनात्मक आरम्भ

मतलाक दूनू मिसरामे काफिया आ रदीफक समविन्यासकें उदाहरणसँ स्पष्ट कएल गेल अछि। एहि खण्डक शिक्षण-महत्त्व एहि बातमे अछि जे पाठक प्रारम्भिक शेरसँ पूरी गजलक अपेक्षित आवृत्तिक पहचान सीखैत अछि। मतलाक सौन्दर्यात्मक भूमिका—रचनाक स्वर, मिजाज आ भविष्यक प्रतीक्षा उत्पन्न करब—मात्र तकनीकी पहिचानसँ आगाँ परखबाक चाही।

चतुर्थ खण्ड : रदीफक विधान

रदीफयुक्त आ रदीफरहित गजलक सम्भावना स्वीकार करैत लेखक शब्द-आवृत्तिक नियम स्पष्ट करैत छथि। उदाहरणसँ स्पष्ट होइत अछि जे रदीफ शेरक अन्तमे स्मृतियोग्य ध्वनि-संकेत बनैत अछि। मुदा केवल शब्दक समरूपता पर्याप्त नहि; व्याकरणसंगति आ अर्थगत अनिवार्यताकें संग परखल जाए, तखने रदीफक वास्तविक आलोचना होएत।

पंचम खण्ड : काफियाक स्वर-साम्य

काफियाक अक्षरीय आ मात्रिक स्वर-साम्यक श्रेणी, काफियाक स्थान आ तुकान्तक स्तर एहि खण्डक केन्द्र अछि। मैथिलीक शब्दावलीक संग उच्चारणसंगत नियम जोड़बाक ई आरम्भ महत्त्वपूर्ण अछि। निश्चयात्मक निर्णयमे लेखकीय उच्चारणपर निर्भरता घटेबाक लेल सम्भावित भिन्न उच्चारणक समानान्तर परीक्षण आवश्यक अछि।

षष्ठ खण्ड : ध्वनि आ भाषिक विभाजन

काफियाक सूक्ष्म नियमक संग भाषा-व्याकरणक तत्त्व जोड़ल जाइत अछि। स्वर-वर्गीकरणक उपयोग गजलकारक व्यावहारिक प्रशिक्षण लेल सम्भावना खोलैत अछि। एतय ध्वनि, वर्ण आ मात्राक वर्गीकरणक सीमा पूर्णतः अलग राखल जाए तँ शास्त्रीय स्पष्टीकरण अधिक निर्भ्रान्त होएत।

सप्तम खण्ड : रूपान्तरित शब्द आ काफिया

स्वर-परिवर्तन, प्रचलित रूप आ काफियाक फेरबदल लेखकक भाषा-सापेक्ष दृष्टि उजागर करैत अछि। मैथिलीक विविध लिखित रूप गजलक शिल्पमे बाधा मात्र नहि, काव्यात्मक संसाधन सेहो अछि। मुदा कोनो रूपक चयनकेँ एक बेर रचनाभरि स्थिर राखब शिल्पक विश्वसनीयता लेल उपयोगी रहत।

अष्टम खण्ड : विभक्ति, प्रत्यय आ अन्त्यानुप्रास

काफियाक संग विभक्तिक आगमन पर विचार मैथिली व्याकरणसँ प्रत्यक्ष संवाद अछि। शब्द-समाप्तिक समानता मात्र पर्याप्त अछि कि मूल ध्वनि-साम्य सेहो बचब आवश्यक अछि—एहि प्रश्नपर लेखकक विशेष ध्यान अछि। आलोचककेँ भाषिक कार्य, रूपिमा आ श्रव्य प्रभाव तीनूकेँ समवेत मूल्यांकन करबाक चाही।

नवम खण्ड : स्वर-परिवर्तन आ उच्चारण

इकारान्त शब्द, बोलचालमे स्वरक स्थानान्तरण आ लिखित रूपक भेद काफिया-विवेचनकेँ ध्वनिविज्ञानक नजदीक आनैत अछि। एतय शास्त्रीय चुनौती ई अछि जे औपचारिक मानक आ जीवित बोलीकेँ विरोधी नहि बनाओल जाए। समरूप ध्वनिक प्रमाण गायक आ श्रोता दुनू पक्षसँ देखल जाए।

दशम खण्ड : काफियाक विस्तारित परीक्षा

उदाहरणाधारित निषेध आ अपवादक माध्यमसँ लेखक काफियाक शुद्धता परखैत छथि। काफियाक शिल्पकष्ट कतेक हो, ताहि पर किछु लेखकीय कठोरता बनल रहैत अछि। भाषा-परिवर्तनक इतिहाससँ लेल उदाहरणकेँ आजुक एकमात्र नियम बनाबैसँ पहिने कालभेद स्पष्ट करब आवश्यक अछि।

एकादश खण्ड : नियम-विस्तारक संक्रमण

एहि संक्षिप्त खण्डक भूमिका पूर्ववर्ती विवेचन आ आगामी भाषिक जटिलताक बीच सेतुजकाँ अछि। ग्रन्थक संरचनाक दृष्टिँ काफियाक बहुखण्डीय विवेचन क्रमशः अधिक कठिन प्रश्न दिस बढैत अछि। किछु स्थानपर पुनरावृत्ति शिक्षणक सहाय होइतहुँ सम्पादकीय संक्षेपसँ तर्कक गति बढि सकैत अछि।

द्वादश खण्ड : आघात, विसर्ग आ जटिल काफिया

आघात, विसर्ग, उच्चारण, संस्कृतसँ आगत रूप आ मैथिलीक उच्चरित संरचनापर विशद विचार अछि। ई खण्ड भाषा-विशिष्ट गजलशास्त्रक सम्भावनाक प्रबल प्रमाण अछि। मुदा आघातक ऐतिहासिक स्थिति आ वर्तमान उच्चारणक समाजभाषिक प्रमाणक बीच स्पष्ट भेद जरूरी अछि; नियम बनेबाक प्रक्रिया विवेचनशील रहलासँ ओकर स्वीकार्यता बढैत अछि।

त्रयोदश खण्ड : मकता आ काव्यस्वाक्षर

मकता शायरक तखल्लुस अथवा स्वनाम-संकेतक संग गजलक अन्तिम अर्थ-स्थितिक चर्चा करैत अछि। नामक प्रयोग मात्र औपचारिक नहि; ई रचनामे आत्म-व्यंग्य, आत्मालाप अथवा वाचक-परिवर्तनक अवसर दैत अछि। मकताक अनुपस्थितिकेँ स्वयमेव दोष नहि मानि ओकर काव्य-प्रयोजनकेँ प्राथमिकता देबाक चाही।

चतुर्दश खण्ड : बहरक परिभाषा

बहर, रुक्न, वज्ज आ मात्राक्रमक मूल सम्बन्ध स्पष्ट करैत लेखक गजलमे छन्दीय समरूपताक आधार स्थापित करैत छथि। एतय छन्दक सामान्य लय आ विशिष्ट क्रमबद्ध गणना बीच भेद बनाओल गेल अछि। एहि भेदक बिना गजलकेँ प्रत्येक सममात्रिक पद्यसँ अलग चिन्हित करब कठिन होइत।

पंचदश खण्ड : लघु-दीर्घ आ अरूजक आधार

मात्रा-निर्धारण, रुक्नक संयोजन, संयुक्ताक्षर, ध्वनिक लघु-दीर्घ स्वरूपक व्यवस्थित प्रशिक्षण खण्डक विशेषता अछि। ई अंश अभ्यास-पाठ्यक्रमजकाँ उपयोगी अछि। शब्दक यथार्थ उच्चारणक संग प्रतीकात्मक सूत्रक सतत तुलना नहि भेलासँ मात्रासूत्र यान्त्रिक बनि सकैत अछि—एहि जोखिमसँ सावधान रहबाक चाही।

षोडश खण्ड : बहरक अनुप्रयोग

बहरक नियमकेँ उदाहरणक संग चलबैत लेखक शास्त्रकेँ प्रयोगसँ प्रमाणित करबाक प्रयत्न करैत छथि। कतहु निश्चित रुक्नक पुनरावृत्तिक आधार पर गजलक अभ्यास सुलभ बनैत अछि। मुदा उपयोगिताक मूल्यांकन कए बेर रचनात्मक सहजता आ भाषिक स्वाभाविकताक कसौटी पर सेहो आवश्यक अछि।

सप्तदश खण्ड : मात्राक्रम आ रूपान्तर

रुक्नक वैकल्पिक क्रम आ शिल्पगत परिवर्तनीय रूप गजलकारक संरचनात्मक विकल्पक ज्ञान बढ़बैत अछि। एतय छूट आ विचलनक भेद विशेष महत्त्व रखैत अछि। परम्परामे स्वीकृत छूटक प्राचल स्पष्ट नहि रहलासँ आलोचकक अपन पसिन्न निर्णयकेँ नियम कहल जाएबाक सम्भावना बनैत अछि।

अष्टादश खण्ड : विविध बहरक उदाहरण

अरबी बहरक पर्याप्त उदाहरण, समानध्वनि तथा मिश्र ध्वनिक रचनात्मक सम्भावनाक निरूपण एकर विषय अछि। सूत्रसँ रचनाक तुलना पाठककेँ वास्तविक तकनीकी व्यासंग दिस लऽ जाइत अछि। काव्यात्मक अर्थ-सामर्थ्यक विश्लेषण एहिसँ जोड़ल गेल रहितय तँ औपचारिक गहराइ आ संवेदनाक बीच सम्बन्ध बेसी स्पष्ट होइत।

एकोनविंश खण्ड : छन्द-संयोजनक सूक्ष्मता

रुक्नक विशेष क्रम आ परस्पर संयोजनसँ बहर निर्मित होएबाक प्रक्रिया पर चर्चा अछि। ई सूक्ष्म व्याकरण गजलकार लेल कठोर आत्मपरीक्षणक साधन अछि। गजलकारकें मात्र अंकीय सूत्र नहि, सूत्रक श्रव्य लय सेहो अभ्यस्त करब आवश्यक अछि।

विंश खण्ड : वर्णिक छन्द आ अरबी बहरक सम्बन्ध

संस्कृत-वर्णवृत्त आ अरबी बहरक तुलनाक प्रयास विधागत अन्तर्सम्बन्ध बुझबाक लेल महत्वपूर्ण अछि। मुदा ऐतिहासिक सम्बन्ध, संरचनात्मक साम्य आ व्यावहारिक रूपान्तरण तीन अलग स्तर छथि; एकर समरूपता सिद्ध भेने स्रोत-परम्पराक प्रत्यक्ष वंशावली स्वतः प्रमाणित नहि भऽ जाइत अछि। ई भेद ग्रन्थक निष्कर्ष पढ़ैत लगातार राखबाक चाही।

एकविंश खण्ड : मैथिली लेल बहरक चयन आ तकतीअ

सरल वर्णिक अनुशासनकें आरम्भिक अभ्यास आ विस्तृत अरूजी बहरकें लक्ष्यक रूपमे लेखक प्रस्तावित करैत छथि। हिन्दी-उर्दू उदाहरणक तकतीअ एहि प्रस्तावक अनुप्रयोग स्पष्ट करैत अछि। किंतु अभ्यास-पद्धति आ अन्तिम कलात्मक श्रेष्ठताक बीच सीधा श्रेणीक्रम बनबैत समय सावधानी आवश्यक अछि; सरल रचनाक मार्मिकता मात्रिक जटिलतासँ कम नहि।

द्वाविंश खण्ड : सम्पादकीय मानदण्ड, भाषा, कथ्य आ गायन

एहि खण्डमे गजलकार आ सम्पादककें रचना ग्रहण करबाक प्रक्रिया, भाषाक पूर्ण-अपूर्ण रूप, भाव, कथ्य, संगीत आ विधाविभागपर विचार अछि। ई साहित्यिक सार्वजनिकता सम्बन्धी महत्वपूर्ण हस्तक्षेप अछि। सम्पादकीय कसौटीक आवश्यकता मानैत सेहो बहु-पक्षीय रचनात्मक प्रयोगक अभिलेखीकरण करब संस्थागत जिम्मेवारी थिक।

त्रयोविंश खण्ड : गुण-दोष आ समीक्षा-व्यवस्था

रदीफ, काफिया, बहर, शेर आ गजलक गुण-दोषक क्रमबद्ध परीक्षण गजल आलोचनाकें प्रमाणसापेक्ष बनबैत अछि। ओहिक अतिरिक्त लेखकक व्यक्तित्व, आलोचकीय निष्पक्षता आ योगपर विचार आयल अछि। तकनीकी दोषसँ साहित्यिक गुणक स्वतः निरसन नहि होएबाक सैद्धान्तिक सीमा स्पष्ट राखब एहि समीक्षाशास्त्रक विकास लेल आवश्यक अछि।

चतुर्विंश खण्ड : गजलसँ सटल शाइरी-विधा

कसीदा, रुबाइ, कतआ, नज्म, हम्द, नात, मनकबत, हजल, बालगजल, भक्तिगजल आदि रूपक विवरण गजलकें व्यापक शाइरी-परिवारक बीच अवस्थित करैत अछि। विधा-भेदक ई परिप्रेक्ष्य पाठकक शब्दज्ञान बढ़बैत अछि। कतिपय शैलीक मूल सांस्कृतिक अर्थ आ मैथिलीमे ओकर समकालीन रूपान्तरणक बीच सेहो भेद राखबाक चाही।

पंचविंश खण्ड : मैथिली गजलक परम्परा आ इतिहास

प्राचीन काव्यक सांस्कृतिक संकेतसँ आधुनिक गजलकारक रचना, मुद्रित कृतिक प्रकाशन, गजल-सम्बन्धी बहस, पत्रिका, ब्लॉग, सामाजिक माध्यम, स्त्री-लेखन, नेपालक लेखक आ मुक्त-छन्दवादी धारा धरि विस्तृत सामग्री संगृहीत अछि। साहित्येतिहासक कच्चा दस्तावेजक रूपमे ई विशिष्ट उपलब्धि अछि। मुदा ऐतिहासिक विवेचन कतेको ठाम नियम-समर्थक आ नियम-अस्वीकारक लेखकक विभाजनसँ निर्देशित अछि; स्रोत-उपलब्धता, प्रतिनिधित्व आ व्यक्तिकेन्द्रित विवादक पुनर्परीक्षण बिना इतिहास सम्पूर्ण नहि भऽ सकैत अछि।

मैथिली गजलक साहित्यिक इतिहास : दावासँ प्रमाण धरि

लोकध्वनि, मध्यकालीन साक्ष्य आ विधागत निरन्तरताक प्रश्न

इतिहास-विवेचनक आरम्भमे लेखक लौकिक संस्कृत, वैदिक छन्द, लोकप्रचलित सांगीतिक रूप आ पुरान मैथिली साहित्यसँ समानधर्मी ध्वनि-संरचनाक सम्भावना खोजैत

छथि। एहि खोजक महत्त्व मैथिलीक सांगीतिक स्मृतिक पुनर्मूल्यांकनमे अछि। मुदा समान मात्राक्रम, युग्म-पाँति अथवा अनुरूप तुकान्त भेटब मात्रासँ गजल-विधाक सीधी वंशावली सिद्ध नहि होइत। एकटा रचनाकेँ गजल कहल जाएबाक ऐतिहासिक प्रमाण, रचनात्मक स्वरूपक समरूपता आ वास्तविक सांस्कृतिक प्रसार—ई तीनू परस्पर पृथक कसौटी थिक।

ग्रन्थक प्रारम्भिक ऐतिहासिक वृत्तमे आधुनिक गजलक संग पुरान काव्यक साम्यक चर्चा सृजनशील प्रस्ताव अछि, अन्तिम अनुक्रमित इतिहास नहि। जँ मध्यकालीन पाठक एकहि संरचनाक अलग नाम उपयोग कएने छथि तँ ओकर ऐतिहासिक सन्दर्भ सुरक्षित राखब आवश्यक अछि। अन्यथा वर्तमान विधाक नाम पुरान साहित्यपर पूर्वव्यापी रूपमे आरोपित भऽ सकैत अछि।

आधुनिक आरम्भ : जीवन झा आ प्रारम्भिक शायर

लेखक आधुनिक मैथिली गजलक प्रारम्भक आधार पं. जीवन झाक ‘सुन्दर-संयोग’क प्रकाशन-वर्ष १९०५केँ मानैत छथि। तकर बाद यदुनाथ झा ‘यदुवर’, कविवर सीताराम झा, काशीकान्त मिश्र ‘मधुप’ आदि पर चर्चा करैत छथि। एहि क्रममे आरम्भिक प्रयोगमे अनुशासनगत असमानताकेँ स्वीकार कएल गेल अछि; सभ रचनाकेँ समान मूल्य देबाक बदला तत्कालीन विधागत प्रयोगक स्थिति देखल गेल अछि। साहित्येतिहास लेल ई महत्त्वपूर्ण अछि, कारण प्रथम प्रयास आ पूर्ण सिद्धि एक वस्तु नहि।

विदेहमे २०१८क प्रकाशित लेखकक ‘आधुनिक मैथिली गजलक संक्षिप्त आलोचनात्मक परिचय’मे कविवर सीताराम झाक गजलक १९२८ आ मधुपक गजलक १९३२क प्रकाशनक दावा भेटैत अछि। एहि तिथिकेँ लेखकक सन्दर्भित ऐतिहासिक प्रस्तावक रूपमे पढ़बाक चाही। मूल पत्रिका, प्रथम संस्करण आ संशोधित पाठक पारस्परिक मिलानसँ ई क्रम अधिक मजबूत भऽ सकैत अछि। मौलिक शोधमे ‘सभसँ पहिल’ सन निर्णायक पदक प्रयोग स्रोत-समीक्षाक कठोर परीक्षा माँगैत अछि।

योगानन्द हीरा, विजयनाथ झा आ छन्दानुशासनक निरन्तरता

योगानन्द हीरा आ विजयनाथ झा सन रचनाकारकेँ पुनः चर्चामे अनब लेखकक पुनर्पाठक उद्देश्यक स्पष्ट उदाहरण अछि। विशेषतः विजयनाथ झाक ‘अहींक लेल’क २००८क प्रकाशनक चर्चा लेखकक अपन पूर्व दावाक संशोधनक आधार बनैत अछि। ओ स्वीकार करैत छथि जे हुनक ‘अनचिन्हार आखर’केँ मैथिली गजलक प्रथम बहराधारित संग्रह कहब उचित नहि; विजयनाथ झाक संग्रह ओकरा पूर्व प्रकाशित भेल छल। एहि आत्मसंशोधनमे इतिहासलेखनक नैतिक तत्त्व उपस्थित अछि—नव प्रमाण भेटलापर प्रतिष्ठित दावाकेँ बदलबाक तत्परता।

एहि पाठसँ ई निष्कर्ष नहि निकलैत जे एकटा नव ‘प्रथम’ स्थापनासँ इतिहासक समस्त प्रश्न समाप्त भऽ गेल। बहरयुक्त रचना, पूर्ण संग्रह, मुद्रित उपलब्धता, रचनाक वास्तविक रचनाकाल आ पाठकीय प्रसारक प्रमाण अलग-अलग रहलासँ ‘प्रथम’क अर्थ सेहो बदलि जाइत अछि। ग्रन्थ एहि विभेदकेँ जागरूक ढंगसँ उठाबैत अछि, मुदा सर्वत्र समान पद्धतिसँ लागू नहि करैत।

१९७०क बादक संक्रमण आ मुक्त-रूपक विवाद

ग्रन्थ परम्परागत बहरक अनुगमन करैत गजल आ बिना बहरक कथित ‘आजाद गजल’क मध्य तीख भेद करैत अछि। एही आधारपर किछु प्रतिष्ठित लेखकक गजल-श्रेणीकरणकेँ प्रश्नांकित कएल गेल अछि। एहि विवादमे मूलतः दू मान्यता आमने-सामने अछि: एक दिस विधाक ऐतिहासिक शिल्प अनिवार्य मानबाक आग्रह, दोसर दिस भाषाक नव कविता-जकाँ स्वायत्त प्रयोगक सम्भावना। दुनू मान्यताकेँ समान साहित्यिक निष्कर्ष मानब आवश्यक नहि; मुदा स्वतंत्र अस्तित्वक अभिलेख राखब इतिहासकारक कर्तव्य अछि।

रचनाकेँ ‘नियमसम्मत गजल’, ‘गजल-प्रेरित मुक्त रचना’, ‘नज्म’ अथवा ‘गीत’ मानबाक प्रस्ताव प्रकाशकीय वर्णनक उपयोगी उपकरण भऽ सकैत अछि। पर

आलोचनात्मक निर्णयकँ ओहि रचनाक सामाजिक आशय, नव भाषिक बिम्ब, आ पाठकीय प्रभावसँ सेहो सम्बद्ध राखल जाए। विधागत अशुद्धता आ काव्यात्मक निष्फलता पर्याय नहि—ई भेद ग्रन्थक विवादास्पद अंशक संतुलित पाठ सम्भव करैत अछि।

२००८क बाद : जालवृत्त, विदेह आ सार्वजनिक शास्त्रीय बहस

लेखक २००८क बाद ‘अनचिन्हार आखर’ जालवृत्त, विदेहक नियमित प्रकाशन, गजलशास्त्रीय लेख, सार्वजनिक वाद-विवाद, गजल-शिक्षण, आलोचना आ सम्मान-संस्कृतिक उदयकँ नव अवस्थाक महत्त्वपूर्ण चिह्न मानैत छथि। विदेहक शोध-सूचीमे २०१४क ‘मैथिली गजल व्याकरणक शुरूआती प्रयोग’, २०१८क ‘आधुनिक मैथिली गजलक संक्षिप्त आलोचनात्मक परिचय’ आ गजल-विमर्शक अन्य लेखनक अभिलेख एहि सतत गतिविधिक प्रमाण अछि।

ग्रन्थमे १९०५–२००७ आ २००८क बादक विभाजनकँ क्रमशः ‘जीवन युग’ आ ‘अनचिन्हार युग’ नाम देबाक प्रस्ताव दर्ज अछि, जे गजेन्द्र ठाकुरक गजलशास्त्रीय टिप्पणीसँ सम्बद्ध बताओल गेल अछि। साहित्येतिहासक दृष्टिँ ई आन्दोलनोन्मुख आत्मपरिभाषा अछि, सर्वमान्य तटस्थ काल-विभाजन नहि। जालवृत्तक आरम्भ, तकनीकी प्रविधिक प्रसार आ लेखकीय पद्धतिक परिवर्तनक तिथि जाँचि ई सिद्ध करब आवश्यक अछि जे समय-विभाजन समूची मैथिली गजलधाराक प्रतिनिधित्व करैत अछि कि केवल एक महत्त्वपूर्ण आन्दोलनक।

स्त्री, मुसलमान रचनाकार आ नेपालक मैथिली : समावेशक मानचित्र

ग्रन्थ स्त्री गजलकारक उपस्थिति, मुस्लिम शायरक सीमित प्रतिनिधित्व, नेपालक मैथिली रचनाकार आ सीमावर्ती बहुभाषिक संस्कृतिक उल्लेख करैत अछि। ई सामग्री मैथिली गजलकँ केवल एक क्षेत्र वा जातीय साहित्यिक केन्द्रक परिसीमासँ बाहर देखबाक अवसर देत अछि। तथापि संख्याक अल्पताक कारण सामाजिक रूढ़ि, विधागत क्षमता अथवा सामूहिक अभिरुचिपर त्वरित निष्कर्ष निकालब उचित नहि। प्रकाशनक अवसर,

अभिलेखक उपलब्धता, आर्थिक-सांस्कृतिक संसाधन आ सम्पादकीय चयनक स्थितिक अध्ययन आवश्यक अछि।

साहित्यिक इतिहासमे ‘ककर नाम भेटल’ आ ‘ककर रचना नहि अछि’ अलग कथन अछि। लेखक अनेक स्थलपर अपन जानकारीक सीमाकेँ स्वीकार करैत छथि; एहि आत्मस्वीकृतिक विस्तार रूपमे भविष्यक सूचीमे अज्ञात लेखक, लोकगायन, पत्रिकाक विखरायल सामग्री आ महिलाक अप्रकाशित रचनाक खोज अत्यावश्यक बनैत अछि।

भारतीय आ अन्यभाषी गजलपरम्परासँ तुलनात्मक विवेचन

अरबी-फारसी-उर्दू अरूजक विरासत

गजलक पारिभाषिक तन्त्र अरबी, फारसी आ उर्दूक दीर्घ साहित्यिक सम्पर्कसँ विकसित भेल अछि। बहर, रुक्न, काफिया आ रदीफ एहि इतिहासक प्रमुख चिन्ह छथि। मैथिलीमे ई शब्द अपन शास्त्रीय आशय संग अबैत अछि, मुदा ओकर उच्चारण-व्यवस्था स्थानीय भाषा-विज्ञानक परीक्षण माँगैत अछि। लेखकक मौलिक प्रश्न ई नहि जे विरासत छोड़ि देल जाए, बल्कि ई जे विरासतकेँ जियत भाषामे कओन रूपेँ कार्यशील बनाओल जाए।

संस्कृत-मिथिला छन्दपरम्परा आ अरबी बहर

पं. गोविन्द झाक ‘मैथिली छन्दशास्त्र’, दीनबन्धु झाक व्याकरणपरम्परा आ मैथिली भाषाक शब्दरूप-विवेचनक उल्लेख ग्रन्थकेँ देशज शास्त्रीय आधार देत अछि। संस्कृतक वर्णवृत्त आ अरबी बहरक रूपात्मक तुलना सम्भव अछि, कारण दुनूमे लघु-दीर्घ अनुक्रमक अनुशासित प्रयोग अछि। पर एक समान संख्यात्मक रचना ऐतिहासिक समोत्पत्ति प्रमाणित नहि करैत; एहि भेदक प्रति सतर्क रहब आवश्यक अछि। ग्रन्थ एहि दिशामे बहु सामग्री दैत अछि, मुदा तुलनात्मक छन्दशास्त्रक स्वतंत्र पद्धति आर विकसित कएल जा सकैत अछि।

हिन्दी गजल आ मैथिलीक उच्चारण-समस्या

ग्रन्थ हिन्दी-उर्दू शब्दक उच्चारणान्तरक कारण छन्द्रीय मतभेदक चर्चा करैत अछि। लेखकक तर्क अछि जे हिन्दीमे उर्दूसँ आगत किछु शब्दक लिखित वा प्रचलित उच्चारण मात्रा-निर्णयमे जटिलता उत्पन्न करैत अछि। मैथिली लेल एहि तुलनाक उपयोगिता अछि, कारण अपन स्वर, संयुक्ताक्षर, नासिक्य ध्वनि आ रूपान्तरक नियम निश्चित कएलासँ तर्क अधिक सुसंगत बनि सकैत अछि। तथापि कओन भाषा अधिक सहज अछि, ई सामूहिक पदानुक्रम नहि; सभ भाषामे विविध उच्चारण आ छन्द्रीय रूढ़ि रहैत अछि।

समकालीन काव्यशास्त्रक सन्दर्भ : रूप, पाठक आ संस्था

ग्रन्थकेँ रूपवादी कसौटीसँ देखी तँ गजलक पहचान औपचारिक भेदपर निर्भर अछि; पाठक-केन्द्रित कसौटीसँ देखी तँ सुस्पष्ट शिल्पक ज्ञान ग्रहण-क्षमताकेँ निखारैत अछि; समाज-साहित्यिक कसौटीसँ देखी तँ पत्रिका, जालवृत्त आ समूह नव विधागत मानक गढ़ैत छथि। एहि तीनू दृष्टिक संयोजनसँ कृति अधिक गम्भीर होइत अछि। सम्पादकीय संस्था यदि गजलक सार्वजनिक परिभाषा पर प्रभाव डालैत अछि तँ ओकर चयनपद्धति स्वयं आलोचनाक विषय बनैत अछि। एहि दृष्टिसँ लेखकक आत्मकथात्मक कथन सेहो साहित्यिक संरचनाक दस्तावेज बनैत अछि।

प्रमुख उपलब्धि आ आलोचनात्मक सीमा

पहिल उपलब्धि विधागत शिक्षाक मैथिलीकरण अछि। प्रायः परकीय भाषाक माध्यमसँ उपलब्ध अरुजी शब्दावलीकेँ मैथिली शब्द, उदाहरण आ प्रश्नोत्तरक रूपमे उपलब्ध कराएब लेखकक दीर्घ अभ्यासक परिणाम अछि। दोसर उपलब्धि काफिया-निर्धारणक गहिराइ अछि; शब्दरूप, विभक्ति, आघात आ स्वर-साम्यकेँ जोड़ि शास्त्रकेँ स्थानीय भाषाविज्ञानसँ सम्वाद कराओल गेल अछि। तेसर उपलब्धि स्रोत-संग्रहण अछि—पुरान रचनाकारसँ समकालीन मंच धरि कविता, पत्रिका, पुस्तक, तिथि आ विचार-विवादक उपस्थिति एक ठाम भेटैत अछि।

मुख्य सीमा पहिल—मानक निर्धारणक अति-निश्चय। लेखक स्थानीय उच्चारण-वैविध्य स्वीकार करैत छथि, मुदा एकटा वर्तनी वा गणनाक निर्णयसँ विविध पाठ-परम्परा कतेको बेर अनुचित रूपसँ सीमित भऽ सकैत अछि। दोसर—आलोचनात्मक श्रेणीकेँ कतेको स्थलपर मूल्यनिर्णयक अन्तिम आदेश बना देबाक प्रवृत्ति। तेसर—साहित्यिक इतिहासमे आन्दोलनक आन्तरिक दृष्टि आ तटस्थ वंशावलीक अन्तरक पर्याप्त लेखाजोखा सर्वत्र नहि भेटैत अछि। चारिम—अनेक ऐतिहासिक साक्ष्य लेखकक निबद्ध अथवा पुनरुत्पादित प्रमाणपर आधारित अछि; ओहि स्रोतक स्वतंत्र पाठ-तुलना भविष्यक शोध आवश्यक बनबैत अछि।

एहिमे एकटा महत्वपूर्ण सकारात्मक विरोधाभास सेहो अछि: लेखक नियमक कठोरता पर जोर दैतहुँ अपन पूर्व धारणा संशोधित करैत छथि। विजयनाथ झाक संग्रहकेँ सम्बन्धित प्राथमिकता-दावामे महत्त्व देब, स्रोतक सीमाकेँ स्वीकार करब आ पूर्व गजल-पाँतिक समानताक त्रुटि मानब इतिहासबोधक आत्मसमीक्षात्मक पक्ष उद्घाटित करैत अछि। एहि गुणकेँ सम्पूर्ण ग्रन्थक पद्धतिमे समान रूपसँ विस्तारित करब ओकर भविष्यगत उपयोगिता आर बढ़ा सकैत अछि।

आगामी गजल-अध्ययन लेल अनुसन्धानक दिशा

मैथिली गजलक विद्यमान अभिलेखकेँ अधिक विश्वसनीय बनाबै लेल क्रमशः मूल रचनाक प्रकाशित संस्करण, रचनाकाल, प्रथम प्रकाशन, सम्पादकीय पाठान्तर, कविक घोषित विधागत नाम, बहर-विश्लेषणक विकल्प आ भाषिक क्षेत्रक उच्चारण-साक्ष्य एक संग संरक्षित करब चाही। ग्रन्थक बहुतेक सूचीक आधारपर गजलकार-विशेषक आलोचनात्मक ग्रन्थसूची, दशकवार प्रकाशनक्रम आ चुन्नल शेरक समानधर्मी मात्रा-परीक्षा तैयार भऽ सकैत अछि।

नव अनुसन्धानमे एकटा साझा श्रेणीकरण उपयोगी हएत: परम्परागत बहरयुक्त गजल; सरलीकृत वर्णिक अभ्यास-गजल; मुक्त लयक गजल-प्रेरित कविता; गायनपरक नज्म-

गीत; आ अन्य शाइरी-विधा। एहि श्रेणी सभकेँ अवमूल्यनक सीढ़ी नहि मानि वर्णनात्मक उपकरण मानल जाए। एकर लाभ ई जे शास्त्रीय विधाकेँ ओकर रूप-परिभाषा भेटत, आ नव प्रयोगकेँ सेहो साहित्यिक इतिहासमे स्थान भेटत। एहन बहुलतासँ विषयक आलोचनात्मक स्पष्टता घटत नहि, उलटे बढ़त।

निष्कर्ष : शास्त्रक अनुशासन, इतिहासक खुलल द्वार

‘मैथिली गजलक व्याकरण ओ इतिहास’क महत्त्व एकटा अन्तिम नियम-पुस्तक भऽ जाएबामे नहि, बल्कि गजल-सम्बन्धी चर्चाकेँ प्रमाण, पदावली, उदाहरण आ भाषिक परीक्षणक संग जोड़ि देबामे अछि। ई पोथी गजल लिखनिहारक प्रशिक्षणक साधन अछि; आलोचकक लेल शिल्प-परीक्षाक उपकरण अछि; साहित्येतिहासकारक लेल रचनाकार, ग्रन्थ आ साहित्यिक आन्दोलनक विविध संकेतक संग्रह अछि। एकर आलोचनात्मक उपयोग एहि तीनू भूमिकाक अन्तर बुझलाक बाद सम्भव होइत अछि।

लेखकक मूल आग्रह—मैथिलीमे गजल, आ मैथिलीक स्वरूपक अनुरूप गजल—भाषिक स्वायत्तताक महत्त्वपूर्ण घोषणा थिक। गजलक अनुशासनकेँ मैथिलीक जीवन्त भाषा-सम्पदासँ जोड़ब ग्रन्थक स्थायी उपलब्धि अछि। मुदा जँ इतिहासकेँ समाप्त सूची नहि, नित्य संशोधित अभिलेख मानल जाए, आ गजलक शास्त्रीय कसौटीकेँ साहित्यिक मूल्यक एकमात्र आधार नहि बनाओल जाए, तँ एहि पोथीसँ उत्पन्न विमर्श आर व्यापक, समावेशी आ सृजनशील बनि सकैत अछि। मैथिली गजलक भविष्य ओकर बहरक समरूपतामे मात्र नहि, ओकर भाषिक साहस, सामाजिक स्मृति, कलात्मक आत्मसंयम आ आलोचनात्मक आत्मपरीक्षणक संयुक्त क्षमतामे निहित अछि।

सन्दर्भसूची

मुख्य ग्रन्थ आ विदेहक प्रकाशित सामग्री

अनचिन्हार, आशीष। मैथिली गजलक व्याकरण ओ इतिहास। विदेह पोथी-अभिलेख;

संशोधित पाठमे २०२२ धरि विकसित विवेचन।

- अनचिन्हार, आशीष। अनचिन्हार आखर। श्रुति प्रकाशन, दिल्ली, २०११।
- अनचिन्हार, आशीष। सन्दर्भ सहित। गजल-आलोचना-संग्रह; विदेह पोथी-अभिलेख।
- अनचिन्हार, आशीष। शब्द-अर्थ-शक्ति। गजल-काव्यशास्त्रीय आलोचना; विदेह पोथी-अभिलेख।
- अनचिन्हार, आशीष। मैथिली गजलक रेडी रेकोनर। विदेह पोथी-अभिलेख।
- अनचिन्हार, आशीष। “मैथिली गजल व्याकरणक शुरूआती प्रयोग।” विदेह, अङ्क १६५, २०१४।
- अनचिन्हार, आशीष। “आधुनिक मैथिली गजलक संक्षिप्त आलोचनात्मक परिचय।” विदेह, अङ्क २५३, २०१८।
- अनचिन्हार, आशीष। “बयानक सन्दर्भमे मैथिली गजल।” विदेह, अङ्क २५१, २०१८।
- अनचिन्हार, आशीष। “नरेन्द्रजीक मैथिली आ हिन्दी गजलक तुलनात्मक विवेचना।” विदेह, अङ्क २५२, २०१८।
- अनचिन्हार, आशीष। “दुष्यंत कुमारक गजलक मिजाज सन गजल मैथिलीमे कहिया लीखल जेतै।” विदेह, अङ्क ३०७, २०२०।
- विदेह। विदेह पोथी—आशीष अनचिन्हारक ग्रन्थसूची आ मूल उपलब्धता।
<https://videha-ejournal.github.io/videha/pothi.htm>
- विदेह। शोध-लेख अनुक्रम—गजल, छन्द आ आलोचना सम्बन्धी लेखक-अनुक्रम।
<https://videha-ejournal.github.io/videha/research/videha-scholar-research-book.html>
- विदेह। “आधुनिक मैथिली गजलक संक्षिप्त आलोचनात्मक परिचय”, मूल लेख।
<https://www.videha.co.in/research/2018/253/>
- विदेह। “मैथिली गजल व्याकरणक शुरूआती प्रयोग”, मूल लेख।
<https://www.videha.co.in/research/2014/165/>
- मूल ग्रन्थमे चर्चित मुद्रित कृति आ शास्त्रीय सन्दर्भ
- नीचाँक पोथीसभक ग्रन्थगत उल्लेखक आधारपर तुलनात्मक परिप्रेक्ष्य निर्मित अछि।
- एतय ओहि सबहक स्वतंत्र प्रत्यक्ष सम्पूर्ण पाठ-परीक्षणक दावा नहि कएल जा रहल अछि।
- दीनबन्धु झा। मिथिला भाषा विद्योतन। सम्पादन आ प्रकाशन : गोविन्द झा; द्वितीय संस्करण, १९९३।

झा, गोविन्द। मैथिली छन्दशास्त्र। मिथिला पुस्तक केन्द्र, दरभंगा; द्वितीय संस्करण,
१९८७।

झा, गोविन्द। मैथिलीक उद्गम ओ विकास। मैथिली अकादेमी, पटना, १९८७।

झा, गोविन्द। उच्चतर मैथिली व्याकरण। मैथिली अकादेमी, पटना; द्वितीय संस्करण,
१९९२।

झा, गोविन्द। मैथिली परिचायिका। शेखर प्रकाशन, पटना, २००६।

झा, गोविन्द। मैथिली परिशीलन। मैथिली अकादेमी, पटना, २००७।

झा, बालगोविन्द ‘व्यथित’। आधुनिक मैथिली व्याकरण ओ रचना। मूल ग्रन्थमे
उल्लिखित।

झा, युगेश्वर। मैथिली व्याकरण आओर रचना। मूल ग्रन्थमे उल्लिखित।

झा, रामदेव। “मैथिलीमे गजल।” रचना, जून १९८४; मूल ग्रन्थमे उल्लिखित।

झा, जीवन। सुन्दर-संयोग। १९०५; ग्रन्थमे प्रारम्भिक आधुनिक मैथिली गजलक आधारक
रूपमे वर्णित।

झा, सीताराम। सूक्ति-सुधा, प्रथम बिन्दु। १९२८; विदेहमे प्रकाशित अनचिन्हारक
ऐतिहासिक विवेचनमे उल्लिखित।

मिश्र, काशीकान्त ‘मधुप’। “मिथिलाक पूर्व गौरव नहि ध्यान टा धरै छी।” मैथिली-सन्देश,
१९३२; विदेहमे लेखकक इतिहास-विवेचनानुसार।

झा, विजयनाथ। अहींक लेल। शेखर प्रकाशन, पटना, २००८।

बेचैन, कुँअर। गजल का व्याकरण। अयन प्रकाशन, दिल्ली, १९९६।

शर्मा, आर. पी. ‘महर्षि’। गजल लेखन कला। मीनाक्षी प्रकाशन, दिल्ली, २००५।

शर्मा, आर. पी. ‘महर्षि’। गजल और गजल की तकनीक। जवाहर पब्लिशर्स ऐण्ड
डिस्ट्रीब्यूटर्स, दिल्ली, २००९।

आजम, मोहम्मद। आसान अरूज। शिवना प्रकाशन, सीहोर, २०१२।

Paoli, Bruno. “Meters and Formulas: The Case of Ancient Arabic Poetry.” मूल
ग्रन्थक सन्दर्भसूचीमे उल्लिखित।

Golston, Chris, आ Tomas Riad। “The Phonology of Classical Arabic Meter.”
मूल ग्रन्थक सन्दर्भसूचीमे उल्लिखित।

Deo, Ashwini, आ Paul Kiparsky। “Poetries in Contact: Arabic, Persian and
Urdu.” मूल ग्रन्थक सन्दर्भसूचीमे उल्लिखित।

समीक्षा १२

सन्दर्भ सहित

गजलक विधागत सीमा आ आलोचनात्मक विवेक

सार

‘सन्दर्भ सहित’ मैथिली गजलक शास्त्रीय संरचना, विधागत पहचान आ आलोचनात्मक उत्तरदायित्वक प्रश्नकेँ केन्द्रमे आनयवला आशीष अनचिन्हारक आलोचनात्मक संकलन अछि। पोथीमे गजल नामसँ प्रस्तुत अनेक रचनाक परीक्षण बहर, काफिया, रदीफ, शेरक संरचना, कथ्य आ भाषिक उच्चारणक आधारपर कएल गेल अछि। ई निबन्ध संकलनक सातू मुख्य आलेखक पृथक पुनर्पाठ करैत अछि; संगहि लेखकक मूल्यांकन-पद्धति, ओकर प्रमाणमूलक उपलब्धि, विवादप्रधान भाषाशैली, अन्य विधासँ गजलक सम्बन्ध, मैथिली गजललेखनक ऐतिहासिक क्रम आ वैकल्पिक आलोचनात्मक सम्भावनाक विवेचन करैत अछि। मूल निष्कर्ष ई जे पोथी मैथिली गजलक आलोचनामे तकनीकी जाँचक आवश्यकता स्थापित करैत अछि, मुदा सौन्दर्यात्मक बहुलता, इतिहासक पुष्टिकरण आ प्रतिपक्षक न्यायसंगत प्रस्तुतिक प्रश्न एखनहुँ विमर्शक माँग करैत अछि।

बीजशब्द : मैथिली गजल, बहर, काफिया, रदीफ, छन्दशास्त्र, विधाविज्ञान, साहित्येतिहास, आलोचना-पद्धति, विदेह, आशीष अनचिन्हार।

प्रस्तावना : विधाक प्रश्नसँ आलोचनाक प्रश्न धरि

मैथिली काव्यपरम्परामे गीत, पद, लोकधुन, मुक्तक आ विभिन्न छन्दात्मक रचनाक समृद्ध सहअस्तित्व रहल अछि। एहि बहुल परिदृश्यमे गजल अपन विशिष्ट शेर-विन्यास, तुकान्त व्यवस्था आ छन्दगत अनुशासन लऽ कऽ उपस्थित होइत अछि। गजलकेँ केवल प्रेम-विरहक स्वर अथवा गेयताक पर्याय मानि लेब ताहि विधाक आन्तरिक रचनाविधानकेँ

अदृश्य बना दैत अछि। दोसर दिस, शास्त्रीय कसौटीकेँ मात्र अन्तिम निर्णायक मानि लेलासँ अर्थ, अनुभूति, सामाजिक आलोचना आ काव्यात्मक नवीनताक स्वतन्त्र मूल्यांकन बाधित भऽ सकैत अछि। ई द्वन्द्व ‘सन्दर्भ सहित’क केन्द्रीय आलोचनात्मक भूमि अछि।

आशीष अनचिन्हार अपन संकलनमे स्थापित लेखक, नव रचनाकार, सम्पादक, भूमिकाकार आ सार्वजनिक साहित्यिक वक्ताकेँ एक्के विधागत प्रश्नक समक्ष ठाढ़ करैत छथि। एहि प्रक्रियामे रचनाक प्रसिद्धि अथवा रचनाकारक प्रतिष्ठा पर्याप्त प्रमाण नहि मानल जाइत अछि। ई आग्रह मैथिलीमे आलोचनाकेँ व्यक्तिपूजासँ अलग करबाक दिशा प्रदान करैत अछि। तथापि प्रमाण परखबाक अधिकार आ न्यायपूर्वक सुनबाक उत्तरदायित्व संगहि चलबाक चाही—एहि द्वैतकेँ ध्यानमे राखि पोथीक उपलब्धि आ सीमा दुनूक जाँच आवश्यक अछि।

ई अध्ययन मूल संकलनक सम्पूर्ण विन्यासकेँ आधार बनबैत अछि। सहायक साहित्यक चयन विदेहमे उपलब्ध ग्रन्थसूची आ शोध-अभिलेख धरि सीमित अछि। लेखकक अपन इतिहास-संबन्धी दाबी आ अभिलेखसँ स्वतन्त्र रूपेँ पुष्ट तथ्यकेँ पृथक राखल गेल अछि। मूल पाठक अक्षरशः उद्धरण ओतबे उचित मानल जा सकैत अछि जतए पाठान्तर अथवा अक्षररूपक संशय नहि हो; एतए असन्दिग्ध पाठ-स्थितिक अभावमे प्रत्यक्ष पद्य-पङ्क्तिक बजाय तर्क आ प्रसंगक विश्वसनीय विवेचन प्रस्तुत अछि।

ग्रन्थक रचना, स्वरूप आ सम्पादकीय अभिप्राय

संकलन दू खण्डमे व्यवस्थित अछि। पहिल खण्डमे छहटा विस्तृत आलेख अछि—बैकुण्ठ झाक गजल-संग्रहपर चर्चा, कमलमोहन चुन्नूक भूमिकाक आलोचना, काज्वीनाथ झा ‘किरण’क नामसँ गजल कहाएल रचनाक जाँच, अरविन्द ठाकुरक विधान-विरोधी प्रस्तावनासँ विमर्श, मैथिली गीतकार रवीन्द्रनाथ ठाकुरक कथित गजलक मूल्यांकन आ अनेक संग्रह-भूमिकाक सामूहिक समीक्षा। दोसर खण्डमे धिरेन्द्र प्रेमर्षि आ सियाराम झा ‘सरस’क सार्वजनिक बातचीतक सन्दर्भमे गजलक शास्त्रीय पक्षपर प्रश्नोत्तरात्मक

विवेचन अछि। लेखकक वक्तव्य आ परिचय एहि आलोचनात्मक सामग्रीकेँ एकटा आत्मस्थित साहित्यिक कार्यक्रमक रूप दैत अछि।

एहि पोथीक स्वरूप परम्परागत एक-विषयक शोधग्रन्थसँ कनेक भिन्न अछि। ई अलग-अलग समयमे लिखल आलोचनात्मक हस्तक्षेपक संकलन अछि; तँ एक्के उदाहरणक पुनरावृत्ति, पूर्वक विवादक पुनः स्मरण आ पाठकसँ प्रत्यक्ष सम्बोधन बारम्बार भेटैत अछि। एकर लाभ ई जे विभिन्न प्रसंगमे लेखकक सिद्धान्तक निरन्तरता देखाइत अछि। हानि ई जे कखनो तर्कक प्रसारक स्थान पुनरुक्ति लऽ लैत अछि आ घटनाक विशिष्ट ऐतिहासिक सन्दर्भ अपेक्षाकृत पाछाँ चलि जाइत अछि। एहि ग्रन्थकेँ क्रमिक विवादक साहित्यिक अभिलेख मानल जाए तँ ओकर संरचना अधिक स्पष्ट होइत अछि।

ग्रन्थक शीर्षक ‘सन्दर्भ सहित’ स्वयं आलोचनामे प्रसंग, पूर्वपाठ आ उदाहरणक आवश्यकताक संकेत अछि। लेखकक ध्यान केवल किछु रचना असफल सिद्ध करब नहि, बल्कि गजल कहबाक अधिकारक आधार स्पष्ट करब अछि। यथार्थतः पोथीक सभसँ महत्त्वपूर्ण प्रश्न अछि—विधाक नाम देब लेखकक निजी स्वतन्त्रता अछि कि साझी साहित्यिक परम्पराक प्रति उत्तरदायित्व सेहो? संकलन एहि प्रश्नक उत्तर कठोर विधागत अनुशासनक पक्षमे दैत अछि।

आलोचनाक आधार : बहर, काफिया, रदीफ आ अर्थ

गजलक रचनाविधानमे बहर शेरक दूनु मिसराक वजनक एकरूपताक प्रश्न उठबैत अछि; काफिया तुकान्त ध्वनिक पुनरागमनसँ सम्बद्ध अछि; रदीफ आवर्ती शब्द अथवा पदावली अछि, जकर उपस्थिति प्रत्येक गजलमे अनिवार्य नहि मानल जाइत अछि। मतलामे तुकान्त विन्यासक आरम्भिक संकेत आ मकतामे तखल्लुसक सम्भावना परम्परागत शिल्पकेँ चिन्हित करैत अछि। एहि सभ शब्दक प्रासंगिकता तखने अछि जखन उच्चारण, लघु-गुरु, संयुक्ताक्षर आ भाषिक प्रवाहसँ ओकर सम्बन्ध स्पष्ट हो।

अनचिन्हार विधागत मान्यता आ सौन्दर्यात्मक श्रेष्ठताकें दू भिन्न प्रश्न मानबाक आग्रह करैत छथि। हुनकर तर्कक सार ई अछि जे कोनो रचना शिल्पगत कारणेँ गजल नहि भेल तँ से स्वतः खराब कविता नहि भऽ जाइत अछि। ओ गीत, कविता अथवा दोसर विधामे मूल्यवान भऽ सकैत अछि; मुदा ओकर नामकरण पुनर्विचार योग्य रहत। ई अन्तर आलोचनात्मक रूपसँ उपयोगी अछि, कारण विधागत वर्गीकरण आ कलात्मक मूल्यांकनक घालमेल साहित्यिक बहसकें भावुक बना दैत अछि।

एतए एकटा जरूरी सूक्ष्म भेद अछि। गजलमे छन्दकें कविता-पाठक मात्रात्मक अनुशासन मानब आ गेय प्रस्तुतीक सङ्गीतात्मक तालकें ओही कसौटीक स्थानापन्न बना देब अलग-अलग बात अछि। काव्यात्मक मात्रा आ सङ्गीतक मात्रा शब्दरूपेँ समीप लगैत अछि मुदा विश्लेषणक विषय भिन्न अछि। संकलनक उत्तरार्ध एहि भेदपर विशेष बल दैत अछि। तथापि गेय प्रस्तुतीक प्रभाव, स्वर-संवेदना आ पाठकानुभव पूर्णतः अप्रासंगिक नहि; ई सभ विधागत पहचानक पश्चात् सौन्दर्य-मूल्यांकनमे अपन स्थान रखैत अछि।

मैथिली उच्चारणक विशेषता छन्दनिर्णयमे निर्णायक भऽ सकैत अछि। चन्द्रबिन्दु आ अनुस्वारक भार, ह्रस्व-दीर्घक व्यवहार, शब्दान्त स्वर, संयुक्ताक्षरक ध्वन्यात्मक निष्पादन आ स्थानीय बोलचालक गति शास्त्रीय गणनाक पाछाँ रहनिहार जीवित भाषा अछि। एहि कारण मैथिली गजलक शास्त्रक निर्माण केवल उर्दू अथवा हिन्दीक सूत्रक प्रतिलिपि नहि, बल्कि मैथिलीक उच्चारण-व्यवस्थाक आधारपर समीकरणक परीक्षण सेहो अछि। विदेहमे उपलब्ध अनचिन्हारक पहिलुका गजल-आलोचनाक आलेख एहि दिशाक विकासक प्रमाण प्रस्तुत करैत अछि।

पृथक पाठविश्लेषण : सात आलोचनात्मक हस्तक्षेप

बैकुण्ठ झाक गजल-संग्रह : अन्य विधाक कुशलता आ गजलक स्वतन्त्र शास्त्र

पहिल आलोचनामे बैकुण्ठ झाक लघुकथाकार रूप आ हुनकर गजल नामसँ प्रकाशित रचनाक तुलनामूलक विवेचन अछि। लेखकक मूल प्रश्न ई जे कथासँ लघुकथाक भिन्नता

माननिहार रचनाकार गजल आ गीतक बीच समान विधागत दूरी किएक नहि स्वीकार करैत छथि। एहि तुलना द्वारा अनचिन्हार एकटा रोचक सिद्धान्त स्थापित करैत छथि—कोनो विधामे निपुणता दोसर विधाक शास्त्रक स्वतः अधिकारपत्र नहि बनैत अछि। साहित्यिक प्रतिभा स्थानान्तरित भऽ सकैत अछि, मुदा विधागत शिक्षणक आवश्यकता समाप्त नहि होइत अछि।

अहि समीक्षामे छन्द-गणनाक समस्या काव्यात्मक अर्थसँ जोड़ल गेल अछि। उच्चारण आ संयुक्ताक्षरक व्यवहारपर बल देलाक बाद समीक्षक रचनामे भक्ति, वैचारिक असंगति आ नव प्रतीकक सम्भावना सेहो चिन्हित करैत छथि। एहि क्रममे ओ किछु चित्रात्मक प्रयोगकेँ स्वागतयोग्य मानैत छथि। ई महत्त्वपूर्ण पक्ष अछि, कारण एतए लेखक केवल नियम-रक्षक नहि रहि जाइत छथि; ओ रचनाक प्रतीकात्मक उर्वरताकेँ सेहो ग्रहण करैत छथि।

तथापि बैकुण्ठ झाक उपलब्धि वा त्रुटिक निर्णायक श्रेणीकरण लेल अधिक विस्तृत तुलनात्मक छन्द-विच्छेद, पूर्ण गजल-विन्यास आ विरोधी उदाहरणक आवश्यकता छल। कुछेक पङ्क्ति आधारपर सम्पूर्ण संग्रहक विधागत स्थिति निश्चित करब सम्भव अवश्य हो सकैत अछि, मुदा पाठककेँ सम्पूर्ण परीक्षणक पुनरुत्पादन करबाक सुविधा देब उत्तम आलोचनाक अंश होएत। एहि समीक्षा मे लेखकक तर्क तेज अछि, पर तकनीकी परीक्षणक विस्तृत पुनर्प्रदर्शन अपेक्षाकृत सीमित।

कमलमोहन चुन्नूक भूमिका : आलोचकक अधिकार आ आत्ममूल्यांकनक विवाद

दोसर आलोचनामे ध्यान गजलक संग्रहसँ हटि ओकर भूमिकाक वैचारिक संरचनापर केन्द्रित अछि। कमलमोहन चुन्नूक भूमिका अनचिन्हार लेल एहि कारण उल्लेखनीय अछि जे ओहिमे रचनाक अपन मूल्य स्वयं प्रकट करबाक तर्कक सहारे आलोचकक भूमिकाकेँ सीमित कएल जा रहल बुझाईत अछि। अनचिन्हार एहि विचारक विरुद्ध आलोचनाकेँ

सार्वजनिक परीक्षण, साहित्यिक संवाद आ ज्ञानात्मक उत्तरदायित्वक रूपमे स्थापित करबाक प्रयास करैत छथि।

एहि विमर्शक सबसँ सशक्त तत्त्व अछि उदाहरणक माँग। जँ कोनो रचनाकार मानैत छथि जे छन्दक पालनसँ कथ्य नष्ट भऽ जाइत अछि तँ ओकर पक्षमे लिखित रचना, शेर अथवा ठोस पाठ-साक्ष्य प्रस्तुत कएल जाएबाक चाही—ई आग्रह आलोचनाक सामान्य न्यायसङ्गत नियम अछि। लेखक उलट उदाहरण रूपमे एहन शाइरक उल्लेख करैत छथि जिनकर गजल छन्दबद्ध रहितो राजनीतिक, सामाजिक आ मानवीय अनुभव व्यक्त करैत अछि। एहन तुलनासँ ‘रूप बनाम कथ्य’क कठोर विरोध अपर्याप्त सिद्ध होइत अछि।

किन्तु एतय व्यक्ति-सम्बन्धी तिक्त व्यङ्ग्य, उद्देश्यपर आरोप आ प्रतिपक्षक मनोवृत्तिक अनुमान आलोचनाक प्रदर्शनीय साक्ष्यकेँ दुर्बल करैत अछि। तर्कक मूल्यांकन लेखकक वैयक्तिक अभिप्रायसँ पृथक रहबाक चाही। एहि आलेखक आधारभूत सिद्धान्त टिकाऊ अछि—भूमिका साहित्यिक बहससँ मुक्त क्षेत्र नहि—मुदा ओकर श्रेष्ठ सम्भावना तखने खुलैत अछि जखन विवादक असहमति अपेक्षाकृत संयमित प्रमाण-भाषामे व्यक्त हो।

काज्वीनाथ झा ‘किरण’क गीत : नामकरण, सम्पादन आ ऐतिहासिक साक्ष्य

तेसर आलेख काज्वीनाथ झा ‘किरण’क भक्ति आ शृङ्गार गीतक सम्पादित संकलनक समीक्षा करैत गजल नामसँ चिह्नित किछु रचनाक रूपपर प्रश्न उठबैत अछि। चर्चा केवल बहरक नहि; मूल पाठक सम्पादकीय वर्गीकरण, भूमिकामे विधा-परिचयक अभाव, एकहि रचनाक पुनरावृत्ति आ पूर्ववर्ती काव्यपरम्पराक अनुगमनक स्वरूप सेहो समीक्षाक विषय बनैत अछि। एहि कारण ई आलेख विधाविज्ञानक संग पाठसम्पादनक आलोचना सेहो अछि।

अनचिन्हारक प्रश्न ई जे राग-रागिनी अथवा गेयता सँ सम्बन्धित संज्ञाक समानता साहित्यिक विधागत नामकरणक प्रमाण नहि बनि सकैत अछि। एहि ठाम गीत आ गजलक बीच भेदक विवेचन विशेष महत्त्व रखैत अछि। संकलनक ऐतिहासिक लेखकीय मूल्य

अस्वीकार नहि कएल गेल अछि; आपत्ति एतबे अछि जे ओहि विशिष्ट रचनाकेँ गजलक इतिहासमे प्रमाणस्वरूप स्थापित करब विधागत भ्रम बढ़ा सकैत अछि।

एहि आलेखमे सम्पादकक उत्तरदायित्वक चर्चा आलोचनाकेँ नव आयाम दैत अछि। पुरान सामग्रीक नब सम्पादन करैत समय मूल रचनाक शीर्षक, परम्परा, पाठान्तर आ रचनाविधानक सम्बन्ध स्पष्ट करब आवश्यक अछि। तथापि किछु पारम्परिक पदरूपमे गजल-प्रभाव, गेय संरचना अथवा रागात्मक विन्यास रहि सकैत अछि; ताहि सम्भावनाक अध्ययन ‘गजल नहि’क निर्णयक बादो आवश्यक रहैत अछि। एहि दिशा मे अधिक ध्वन्यात्मक आ सांस्कृतिक तुलना आलोचनाकेँ समृद्ध कऽ सकैत छल।

अरविन्द ठाकुरक भूमिका : अनुशासन, विद्रोह आ नवीनताक द्वन्द्व

चारिम आलेख संकलनक सबसँ व्यापक सैद्धान्तिक बहस अछि। अरविन्द ठाकुरक साहित्यकेँ संहिताक अधीन नहि मानबाक प्रस्तावनाकेँ अनचिन्हार प्रश्नांकित करैत छथि। हुनका लेल प्रत्येक विधाक स्वीकृत संरचना कोनो कारागार नहि, बल्कि साझा अर्थनिर्माणक आधार अछि। विधाक नियमसँ संवाद करैत नवीनता सम्भव अछि; बिना वैकल्पिक रचनात्मक सिद्धान्त प्रस्तुत केने नियम भङ्ग करब मात्र मौलिकता सिद्ध नहि करैत अछि। एहि तर्कक मार्फत पोथी नव प्रयोग आ अव्यवस्थित विधा-भङ्गक बीच अन्तर करबाक आग्रह करैत अछि।

लेखक वेद, छन्द, संस्कृत उद्धरण, लोकदृष्टान्त आ शास्त्रीय परम्पराक बहुल सन्दर्भ दैत छथि। विशेष बात ई जे ‘संहिता’ पर चर्चा करैत-करैत ई आलेख संहिताक अर्थक विस्फार करैत साहित्यक सामाजिक नियमन, अभिव्यक्तिक मर्यादा आ भाषिक संरचनाकेँ एकहि बहसमे आनय चाहैत अछि। ई बौद्धिक प्रसार पोथीक महत्वपूर्ण गुण अछि, मुदा कखनो एहि प्रसारमे विधागत नियम आ सामाजिक-नैतिक नियमन समानार्थी बुझाए लगैत अछि, जबकि दुनूक उद्गम आ प्रभाव अलग अछि।

आलोचनाक एकटा मुख्य उपलब्धि भाषानुकूलनक सिद्धान्त अछि। अरबी, फारसी, उर्दू आ मैथिलीमे बहरक रूपान्तरणक चर्चा करैत लेखक एतय अन्धानुकरणक विरोध करैत छथि। एहि आधारपर कहल जा सकैत अछि जे हुनकर अनुशासनवाद नितान्त जड़ नहि; ओ परम्पराक परिवर्तन स्वीकार करैत छथि, किन्तु परिवर्तनक पहचान लेल स्पष्ट नव रूपविधान चाहैत छथि। एहि बातकें काव्यशास्त्रीय दृष्टिँ सकारात्मक मानब चाही। दोसर दिस, प्रयोगधर्मी गजलकें केवल नाम-बदलावक प्रश्नमे सीमित करब नव विधागत अन्तर्सम्बन्धक मूल्यांकनकें संकुचित कऽ सकैत अछि।

आलेखक अनेक खण्डमे प्रतिपक्षक कथन राखि तकर उत्तर देबाक पद्धति अपनाएल गेल अछि। ई बहसकें पाठसापेक्ष बनबैत अछि; पाठक विवादक दूनू पक्षक सूत्र देखैत छथि। मुदा चयनित कथनक सन्दर्भ, ओकर सम्भावित भिन्न अर्थ आ समर्थक साक्ष्यक अधिक उदार प्रस्तुति रहितै तँ विमर्श आओर सन्तुलित होइत। एहि अध्यायक ऐतिहासिक महत्त्व एकरेमे अछि जे ई मैथिली गजलकें रचना-शिक्षणसँ उठाकऽ साहित्यिक सिद्धान्तक सार्वजनिक प्रश्न बनबैत अछि।

मैथिली गीतकार रवीन्द्रनाथ ठाकुर : प्रभावशाली गीत आ गजल रूपक भेद

पाँचम आलेखमे समीक्षाक विषय मैथिली गीतकार रवीन्द्रनाथ ठाकुरक गजल नामसँ सम्बद्ध रचना अछि। एतय आलोचक इतिहासक एकटा सूक्ष्म प्रश्न उठबैत छथि—कोनो प्रतिष्ठित गीतकारक रचनापर ‘गजल’ नाम अंकित होएब ओकर शास्त्रीय विधागत स्वरूपक पर्याप्त प्रमाण अछि कि नहि। उत्तरमे ओ मैथिली गजलक पहिलुका उदाहरणक शेर-विन्यास आ छन्दबद्धताक तुलना गीतात्मक रचनासँ करैत छथि। एहि प्रकार संकलन प्रभावशाली लेखक आ विधागत प्रमाणक बीच आवश्यक दूरी बनबैत अछि।

जीवन झा, सीताराम झा, काशीकान्त मिश्र ‘मधुप’, योगानन्द हीरा आ जगदीशचन्द्र ठाकुर ‘अनिल’क उदाहरणक सहारे लेखक देखबैत छथि जे गजलमे भक्ति-विरह, राजनीतिक विसङ्गति, श्रमिक अथवा जनजीवनक अनुभूति, अभाव आ सामाजिक

विद्रूपता समेटल जा सकैत अछि। ई तुलना महत्वपूर्ण अछि, कारण ओ रूपक अनुशासनकें कथ्यक शत्रु नहि बल्कि अभिव्यक्तिक उपकरण मानैत अछि। समाजबोध आ छन्दशुद्धताक संयोग एहि आलेखक सकारात्मक काव्य-दृष्टि अछि।

किन्तु आलोचनात्मक रूपसँ ईहो जरूरी अछि जे गीतकें गजल नहि मानबाक निर्णय गीतक आन्तरिक सौन्दर्यकें घटा नहि देत। समीक्षक अन्ततः रचनाक गीतात्मक मूल्य स्वीकार करैत छथि; एहि स्वीकृतिक कारण आलेख एकतरफा खण्डन नहि रहि जाइत अछि। एतय मैथिली गीतक नादात्मकता, पदानुक्रम आ लोक-लयक स्वतन्त्र परीक्षण आओर विकसित कएल जाइत तँ शैलिगत तुलना अधिक पूर्ण होइत।

विभिन्न संग्रहक सामूहिक समीक्षा : साहित्यिक नामकरणक सार्वजनिक कसौटी

छठम आलेखमे गजल कहल गेल अनेक संग्रह, भूमिकाकारक वक्तव्य आ प्रचलित भ्रान्तिक तुलनात्मक परीक्षण कएल गेल अछि। एहि विविध सामग्रीक कारण आलोचनाकें एकटा साझा पद्धतिसँ देखबाक अवसर भेटैत अछि। मुख्य कसौटी पुनः बहर-काफियाक अनुशासन अछि; मुदा किछु संग्रहमे काफिया-रदीफक सफल विन्यास, भाषा-प्रयोगक सम्भावना अथवा गीतरूपक पठनीयताकें लेखक मान्यता सेहो दैत छथि। एहि सूक्ष्म स्वीकारोक्तिसँ बुझाइत अछि जे हुनकर मूल्यांकन सर्वथा द्विआधारी नहि अछि।

एहि प्रसंगमे तारानन्द झा ‘तरुण’, मनोज शाण्डिल्य, रामेश्वर निशान्त, सतीश साजन आ सामूहिक गजल-संकलनक उदाहरण रचनाक नामकरण, भूमिकाक तर्क आ सम्पादकीय जिम्मेदारीक विभिन्न समस्या सामने आनैत अछि। कोनो भूमिकाकार उच्च स्वरक स्वतन्त्रताक पक्षमे छथि तँ कोनो रचनाकें परम्परागत छन्दसँ छूट देबाक माँग करैत छथि। अनचिन्हार एहि दावीक तर्कगत असंगतिक अन्वेषण करैत छथि। एहि ठाम आलोचनाक वास्तविक विषय केवल कवि नहि, बल्कि साहित्यिक मान्यता गढ़निहार सम्पादकीय संस्था अछि।

सामूहिक विवेचनक सीमा स्रोत-विस्तारक असमानता अछि। कतहु पूरा संग्रहक रचनात्मक शिल्पपर विचार अछि, कतहु प्रमुखतः भूमिकाक कथनपर आपत्ति। एहन स्थिति मे सबटा कृतिकेँ एकहि प्रकारक असफलता-निर्णायक अन्तर्गत रखबाक सावधानी चाही। श्रेष्ठ विधागत आलोचनाकेँ पुस्तक-वार प्रमाण-श्रृंखला, छन्द-विच्छेद, पाठान्तर आ स्वतन्त्र सौन्दर्य-मूल्यांकनक मध्य सम्बन्ध स्पष्ट करबाक चाही।

दू साहित्यकारक बातचीत : मौखिक वक्तव्यक पाठीय परीक्षा

दोसर खण्डमे धिरेन्द्र प्रेमर्षि आ सियाराम झा ‘सरस’क सार्वजनिक बातचीतसँ उठल गजल-विषयक तर्कक समीक्षा अछि। ई लेख संकलनक माध्यम-परिवर्तनक साक्षी अछि। एतय स्थिर पुस्तक आ लिखित भूमिकाक स्थानपर तत्कालिक मौखिक कथन आलोचनाक सामग्री बनैत अछि। लेखक छन्दक मात्रा आ सङ्गीतक मात्रा, लिखित काव्य-विन्यास आ गायन, रचनाक लोकप्रियता आ विधागत वैधता—एहि तीनू भेदकेँ विशेष रूपसँ स्पष्ट करैत छथि।

लेखकक प्रतिप्रश्न पाठककेँ ई सोचबाक प्रेरणा दैत अछि जे गाएल जा सकबाक सम्भावना मात्र गजल बनबाक कसौटी नहि; दोहा, गीत आ आन छन्द सेहो गाओल जाइत अछि। एतय साहित्यक रूपात्मक व्याकरण आ प्रस्तुतीकरणक सौन्दर्यक क्रम पृथक होइत अछि। वस्तुतः ई अन्तर प्रदर्शनक क्षेत्रमे विधागत पहचानक वैज्ञानिक जाँच लेल महत्त्वपूर्ण अछि।

मौखिक बातचीतक आलोचना करैत सन्दर्भ, कथनक पूरा आशय आ वक्ताक वक्तव्यक समय-विशिष्टता विशेष जरूरी होइत अछि। पुस्तकमे व्यक्तिक क्षमता अथवा उद्देश्यपर तीव्र टिप्पणी विमर्शक प्रमाणिक पक्षकेँ गौण करबाक जोखिम उत्पन्न करैत अछि। शास्त्रीय नियमक व्याख्या एतय उपयोगी अछि; मुदा अधिक सन्तुलित सम्पादन, मूल कथनक समग्रता आ उत्तरक अनुपातबद्धता ओकर सार्वजनिक बौद्धिक मूल्य बढ़बैत।

साहित्येतिहासक तुलनात्मक विवेचन

आरम्भिक शिल्प-साक्ष्यसँ समकालीन विवाद धरि

‘सन्दर्भ सहित’ मैथिली गजलक इतिहासक आरम्भिक चरणकेँ जीवन झाक नामसँ जोड़ैत अछि आ हुनकर शेरक शिल्पगत नियमितताकेँ प्रारम्भिक प्रमाण मानैत अछि। ओहि क्रममे सीताराम झा आ ‘मधुप’सँ लऽ कऽ उत्तरवर्ती शाइर धरि गजलक आन्तरिक अनुशासनक निरन्तरता खोजल जाइत अछि। एहि ऐतिहासिक पुनर्निर्माणक विशिष्टता ई जे लेखक प्रसिद्धि अथवा प्रकाशन-वर्षक बजाय छन्दात्मक उदाहरणसँ विधाक इतिहास सिद्ध करबाक प्रयास करैत छथि। ई दिशा स्रोताधारित इतिहासक दृष्टिँ उपयोगी अछि।

संकलनमे गजल-विमर्शक आरम्भ आ विस्तारक सन्दर्भमे तारानन्द वियोगीक पूर्ववर्ती हस्तक्षेप, रामदेव झाक सैद्धान्तिक प्रयत्न आ नव सहस्राब्दीक उत्तरार्धमे ‘अनचिन्हार आखर’क सक्रियताक क्रम प्रस्तुत अछि। २००८ क आसपासक डिजिटल गजल-विमर्श आ २००९ सँ ‘मैथिली गजल शास्त्र’क विकास विदेहमे प्रकाशित अनचिन्हारक स्वतन्त्र आलेखसँ सेहो पुष्ट होइत अछि। तथापि संकलनमे आएल प्राचीनता, प्रथमत्व, रचनाकार-संख्या आ लेख-संख्याक परिमाणात्मक दाबीकेँ स्वतन्त्र ग्रन्थसूची-आधारित गणना बिना स्थापित इतिहासक अन्तिम निष्कर्ष नहि मानबाक चाही।

साहित्येतिहास केवल तिथिक क्रम नहि, अवधारणाक विकास सेहो अछि। आरम्भिक गजलकारक शेरमे रूपक अन्तर्गत रहि कथ्यक विविधता; परवर्ती दशामे गीत आ गजलक नामकरणक विवाद; आ डिजिटल युगमे छन्दक नियमक सामूहिक शिक्षण—ई तीनू चरण अलग-अलग प्रकृतिक ऐतिहासिक प्रक्रिया अछि। पहिल चरण रचनाक उदाहरण दैत अछि, दोसर चरण विधागत पहिचानक विवाद पैदा करैत अछि, तेसर चरण आलोचना आ पाठशिक्षणक लोकतान्त्रिक प्रसार सम्भव करैत अछि। एहि रूपमे अनचिन्हारक ग्रन्थ इतिहासक एकटा विवादशील, मुदा उपेक्षणीय नहि, दस्तावेज अछि।

विदेहक अभिलेखमे समवर्ती विमर्श

विदेहक शोध-अभिलेखमे अनचिन्हारक काफिया आ बहर विषयक आरम्भिक आलेख, गजल व्याकरणक प्रारम्भिक प्रयोगपर स्वतन्त्र विवेचन, नरेन्द्रक मैथिली-हिन्दी गजलक तुलनात्मक समीक्षा, मैथिली गजलक बयान-सन्दर्भ, दुष्यंत कुमारक गजलक मिजाजसँ सम्बन्धित विमर्श आ गीत-सङ्गीतक इतिहासक प्रश्न दर्ज अछि। एहि अभिलेखक महत्त्व ई जे ‘सन्दर्भ सहित’मे व्यक्त मत एकटा एकाकी, तात्कालिक प्रतिक्रिया नहि; ओकर पाछाँ निरन्तर विकसित होइत तकनीकी, तुलनात्मक आ सामाजिक आलोचनाक काज चलि रहल छल।

एकर संगहि विदेहमे उपलब्ध ‘मैथिली गजलक व्याकरण ओ इतिहास’, ‘मैथिली गजलक रेडी रेकोनर’, ‘अनचिन्हार आखर’ आ ‘शब्द-अर्थ-शक्ति’ सन ग्रन्थक सूचीक उपस्थिति एहि आलोचनाकेँ लेखकक व्यापक रचनात्मक परियोजनासँ जोड़ैत अछि। एहि ग्रन्थसभक शीर्षक, प्रकृति आ विदेहमे उपलब्धताक पुष्टि अभिलेखसँ होइत अछि; मुदा एतय ओहि प्रत्येक ग्रन्थक सम्पूर्ण पाठक स्वतन्त्र परीक्षणक दावा नहि कएल जा रहल अछि। ई भेद आलोचनात्मक विवेकक अनिवार्य शर्त अछि।

साहित्येतिहासक दोसर सावधानी ‘मुख्यधारा’ आ ‘समानान्तर’क द्विभाजनसँ सम्बद्ध अछि। वैकल्पिक मंचक भूमिका निर्विवाद रूपेँ महत्त्वपूर्ण भऽ सकैत अछि, मुदा प्रत्येक पूर्ववर्ती रचनाकारकेँ एकरूप समूह मानि लेब इतिहासक आन्तरिक अन्तरकेँ अस्पष्ट बना दैत अछि। साहित्यिक परिवर्तनमे सहमति, असहमति, रूपान्तरण, परम्परागत छन्दक पुनर्पाठ आ नब भाषिक प्रयोग सभक सहभागिता रहैत अछि। तें सम्यक् इतिहासकेँ केवल पक्ष-विपक्षक इतिहास नहि, पाठ-परम्पराक बहुविकल्पी इतिहास बनबाक चाही।

तुलनात्मक सौन्दर्यशास्त्र : रूप, कथ्य आ विधागत स्वातन्त्र्य

रूप आ कथ्यक सम्बन्धपर ‘सन्दर्भ सहित’ एकटा उपयोगी सुधार प्रस्तुत करैत अछि। शास्त्रीय अनुशासनकेँ रचनात्मक प्रतिबन्ध माननिहार दृष्टिक विरुद्ध संकलन अनेक

विषयक गजलक संकेत दैत अछि—विरह, पारिवारिक अभाव, सामाजिक विसङ्गति, राजनीतिक क्षोभ आ मानवीय गरिमा। ई दृष्टान्त सभ बतबैत अछि जे पूर्वनिर्धारित छन्द-विन्यास आवश्यक रूपसँ काव्यकेँ निष्प्राण नहि करैत अछि। कविता कथ्यक प्रभाव आ रूपात्मक चयनक परस्पर क्रियासँ जनमैत अछि; कोनो एकटा पक्ष दोसर पक्षक स्थायी शत्रु नहि।

तथापि शास्त्रीय रूपक उपस्थिति मात्र सौन्दर्य-मूल्यक सुनिश्चित प्रमाण सेहो नहि। एकर प्रमाणक आवश्यकता अछि जे विधागत योग्यताक परीक्षा पार करल रचना विषयक गाम्भीर्य, बिम्बक नवीनता, ध्वन्यात्मक सूक्ष्मता आ अनुभवक जटिलता सेहो वहन करैत हो। अनचिन्हारक आलोचना जखन शिल्पगत दोषक उद्घाटनक बाद प्रतीक, सामाजिकता आ भावभूमि दिस मुड़ैत अछि, तखने ओकर साहित्यिक सम्भावना सर्वाधिक खुलैत अछि। एहि दोहरी पद्धतिक आओर नियमित विकास मैथिली गजल-समालोचना लेल फलदायक होएत।

गीत आ गजलमे अन्तर्सम्बन्धक प्रश्न सेहो महत्त्वपूर्ण अछि। दूनू रूप गेय भऽ सकैत अछि, दूनूमे तुकान्त अथवा आवृत्ति सम्भव अछि, दूनू लोकभाषा आ शास्त्रीय संस्कारसँ पोषित भऽ सकैत अछि। तथापि गीतक पदबद्ध प्रवाह आ गजलक शेरगत आंशिक स्वायत्तता, मतला-आधारित तुकान्त-व्यवस्था आ बहरगत अनुशासन एकर भिन्न विन्यास रचैत अछि। एहि भेदकेँ स्वीकार करैतो सांस्कृतिक सम्पर्कक अध्ययनक दरबाजा बन्द नहि करबाक चाही। गजल लेल विधागत सीमा आ गीत लेल स्वतन्त्र गौरव दूनू एकसंग सुरक्षित राखल जा सकैत अछि।

भाषा, व्यङ्ग्य, पुनरावृत्ति आ आलोचनात्मक वाणी

अनचिन्हारक गद्य संवादप्रधान, प्रश्नोन्मुख आ विवादक तापसँ संचालित अछि। ओ पाठकसँ सीधा प्रश्न करैत छथि, लोकजीवनक उपमान आनैत छथि, छन्दक गणनाक व्यवहारिक उदाहरण दैत छथि आ रचनाकारक कथनक प्रत्यक्ष प्रतिवाद करैत छथि। एहि

शैलीक गुण अछि सहज पहुँच। छन्दक तकनीकी विषय केवल विशेषज्ञक रहस्य नहि रहि साधारण पाठक लेल विचारणीय प्रश्न बनैत अछि। खीरक निर्माणक तुलनासँ विधाक अनिवार्य अवयव आ वैकल्पिक अलङ्कारक अन्तर बुझएबाक प्रयास एहि लोकाभिमुख आलोचनात्मक प्रवृत्तिक निदर्शन अछि।

एहि शैलीक दोसर पक्ष तिव्र उपहास अछि। व्यक्तिगत उद्देश्य, योग्यता अथवा निजी हितपर संकेत करैत काल तर्क आ अनुमानक दूरी घटि जाइत अछि। फलतः एकटा प्रमाणिक तकनीकी आपत्ति सेहो वैयक्तिक विवाद जकाँ ग्रहण कएल जा सकैत अछि। आलोचनाक प्रभाव केवल तर्कक कठोरतासँ नहि, प्रतिपक्षक सर्वोत्तम सम्भव अर्थ बुझि ओकर उत्तर देबाक क्षमतासँ सेहो बनैत अछि। एहि दृष्टिँ ‘सन्दर्भ सहित’क भाषा कखनो अपन प्रमाणात्मक योगदानक विरुद्ध काज करैत देखाइत अछि।

एक्के शेर अथवा छन्द-उदाहरणक पुनरागमन लेखकक स्पष्ट सम्पादकीय रणनीतिक अंश बुझाइत अछि। प्रत्येक अलग आलेखक पाठक धरि न्यूनतम प्रमाण पहुँचेबाक उद्देश्यसँ ई पुनरावृत्ति उपयोगी छल। मुदा संकलनरूपमे पढ़ैत काल ई पद्धति समालोचनाक क्रमागत विकासकेँ अस्पष्ट सेहो करैत अछि। भविष्यक संशोधित संस्करणमे सामान्य विधा-परिचयकेँ आरम्भमे संगठित कऽ प्रत्येक आलेखमे नब पाठिय समस्या आ नवीन उदाहरणकेँ अधिक स्थान देल जाए तँ ग्रन्थक अध्ययन-सुलभता बढ़त।

आलोचनाक ज्ञानमीमांसा : उपलब्धि आ मर्यादा

एहि पोथीक निर्णायक उपलब्धि विधागत दावीक प्रमाण माँगब अछि। लेखक, भूमिकाकार, सम्पादक अथवा लोकप्रियता—एहि सभमे सँ कोनो एकटा वस्तु अपने-आप गजलक कसौटी नहि बनैत अछि। रचनाक रूपक परीक्षा, प्रयोगक इतिहास, भाषिक उच्चारण आ विचारक सन्दर्भ एकसंग देखबाक आग्रह मैथिली आलोचनामे अनुशासनक महत्त्वपूर्ण पुनर्स्थापना अछि।

दोसरा पक्षमे किछु प्रश्न शेष रहैत अछि। पहिल, गजलक परम्परागत परिभाषा आ आधुनिक प्रयोगशील परिभाषा कतेक दूर धरि बहुवचनमे सहअस्तित्व रखि सकैत अछि? दोसर, छन्दशुद्ध रचना कला-दृष्टिँ कमजोर भेल तँ ओकर मूल्यांकनक अगिला स्तर की होएत? तेसर, गेयता आ जनस्वीकृतिक भूमिका विधागत कसौटीक पश्चात् केहन प्रकारँ जाँचल जाएत? चारिम, विविध बोलचालमे शब्दक उच्चारण अलग भेलासँ एकहि मिसराक वजनक प्रश्न केना सुलझत? पाँचम, इतिहासक परिमाणात्मक विवरण लेल स्रोत-विस्तार, तिथि-निर्धारण आ सम्पूर्ण कृतिसूचीक केहन प्रमाण अपेक्षित अछि?

अहि प्रश्नक उत्तर अनचिन्हारक स्थापनाक सरल खण्डनसँ नहि, ओकर अनुसन्धानी विस्तारसँ सम्भव अछि। एकटा सक्षम आलोचनात्मक पद्धति पहिने रचनाक पाठ निर्धारित करत; फेर छन्द आ काफियाक परीक्षण करत; तकर बाद अर्थ, बिम्ब, सामाजिक अनुभव आ रचना-सन्दर्भ देखत; आ अन्तमे ऐतिहासिक दावीक स्रोतगत विश्वसनीयताक जाँच करत। एहि चारि स्तरीय क्रममे ‘गजल अछि कि नहि’ आ ‘श्रेष्ठ काव्य अछि कि नहि’क उत्तर अलग-अलग, मुदा परस्पर सम्बद्ध रूपमे भेटि सकैत अछि।

निष्कर्ष : विधाक रक्षा सँ साहित्यिक विवेक धरि

‘सन्दर्भ सहित’क स्थान मैथिली साहित्यक ओहि आलोचनात्मक धारामे अछि जतए विधाक प्रतिष्ठा रचनाकारक प्रतिष्ठसँ ऊपर राखल जाइत अछि। ई पोथी गजलकें केवल एकटा भावधर्म अथवा संगीतात्मक प्रस्तुति नहि मानि छन्द, ध्वनि आ शेर-विन्यासक विशिष्ट काव्यरूप रूपमे परीक्षण करबाक आग्रह करैत अछि। सातू आलेख मिलि मैथिली गजलक आलोचनाकें पाठ, भूमिका, सम्पादन, मौखिक विमर्श आ ऐतिहासिक दावीक विविध धरातलपर विस्तारित करैत अछि।

ग्रन्थक सबसँ मजबूत योगदान शास्त्रीय कसौटीक सार्वजनिककरण, उदाहरणक माँग, गीत-गजलक भेदक स्थापना आ रचनाक विधागत पहचान आ काव्य-मूल्यक पृथक्करण अछि। एकर सीमा कखनो व्यक्तिनिष्ठ प्रतिवाद, ऐतिहासिक संख्या-सम्बन्धी अपुष्ट प्रस्तुति,

पुनरावृत्ति आ सौन्दर्यात्मक विश्लेषणक अपेक्षाकृत अल्प विस्तारमे देखाइत अछि। तथापि एहि सीमा सभकेँ चिन्हित करब पोथीक महत्त्व घटाएब नहि; उलटे एकर प्रतिपादित प्रमाणप्रधान मूल्यकेँ ओकरे ऊपर लागू करब अछि।

मैथिली गजलक आगामी आलोचनाक लेल एहि संकलनसँ दू शिक्षा मिलैत अछि— रूपक प्रश्नसँ भागल नहि जाए आ रूपक प्रश्नपर आलोचना समाप्त सेहो नहि कएल जाए। कविता अनुशासित भाषा आ जीवित अनुभवक सम्मिलित साधना अछि। अनचिन्हारक हस्तक्षेप एहि साधनाक पहिल पक्षकेँ दृढ़तासँ सामने अनैत अछि; दोसर पक्षकेँ बराबर विकसित करब नव पीढ़ीक आलोचकक काज अछि। एहि अर्थमे ‘सन्दर्भ सहित’ बन्द निर्णय नहि, मैथिली गजलपर अधिक कठोर, बहुविषयक आ प्रमाणसचेत बहसक एकटा सशक्त आरम्भिक आधार बनैत अछि।

सन्दर्भसूची

मूलाधार आ सहायक सन्दर्भ सभ विदेहक प्रकाशित ग्रन्थसूची आ शोध-अभिलेखसँ चुनल गेल अछि। सूचीमे देल अन्य पोथीक विवरण ग्रन्थसूचीय साक्ष्य अछि; ओकर सम्पूर्ण पाठक स्वतन्त्र परिशीलनक दावा एहि निबन्धमे नहि कएल गेल अछि।

01. अनचिन्हार, आशीष। सन्दर्भ सहित : गजलक आलोचना—समालोचना—समीक्षा ओ गजलपर आलेख। विदेह साहित्यिक अभिलेख; प्रस्तुत मूल पोथी।
02. अनचिन्हार, आशीष। मैथिली गजलक व्याकरण ओ इतिहास। विदेह पोथी-अभिलेख, ग्रन्थसूचीमे उपलब्ध।
03. अनचिन्हार, आशीष। अनचिन्हार आखर : गजल, रुबाइ आ कताक संग्रह। विदेह पोथी-अभिलेख, ग्रन्थसूचीमे उपलब्ध।
04. अनचिन्हार, आशीष। मैथिली गजलक रेडी रेकोनर। विदेह पोथी-अभिलेख, ग्रन्थसूचीमे उपलब्ध।
05. अनचिन्हार, आशीष। शब्द—अर्थ—शक्ति। विदेह पोथी-अभिलेख, ग्रन्थसूचीमे उपलब्ध।
06. अनचिन्हार, आशीष। ‘काफिया’। विदेह, अङ्क ११२; विदेह शोध-अभिलेख।
07. अनचिन्हार, आशीष। ‘काफिया आ बहर’। विदेह, अङ्क ११३; विदेह शोध-अभिलेख।

08. अनचिन्हार, आशीष। 'मैथिली काव्यशास्त्रमे झारू छंदक अवधारणा : स्वरूप आ तत्व निर्धारण'। विदेह, अङ्क १५७, २०१४।
09. अनचिन्हार, आशीष। 'मैथिली गजल व्याकरणक शुरूआती प्रयोग'। विदेह, अङ्क १६५, २०१४।
10. अनचिन्हार, आशीष। 'बयानक सन्दर्भमे मैथिली गजल'। विदेह, अङ्क २५१, २०१८।
11. अनचिन्हार, आशीष। 'नरेन्द्रजीक मैथिली आ हिन्दी गजलक तुलनात्मक विवेचना'। विदेह, अङ्क २५२, २०१८।
12. अनचिन्हार, आशीष। 'दुष्यंत कुमारक गजलक मिजाज सन गजल मैथिलीमे कहिया लीखल जेतै'। विदेह, अङ्क ३०७, २०२०।
13. अनचिन्हार, आशीष। 'एकटा मैथिली गजल जे बदलि देलकै मैथिली गीत-सङ्गीतक इतिहास'। विदेह, अङ्क ३१२, २०२०।
14. अनचिन्हार, आशीष। 'किछु लीखि देलासँ, किछुओ लीखि देलासँ गजल नहि होइत छै'। विदेह, अङ्क ४३७, २०२६।
15. विदेह सम्पादकीय अभिलेख। 'विदेह पोथी'—मैथिली ग्रन्थ-सूची। <https://videha-ejournal.github.io/videha/pothi.htm>
16. विदेह शोध-अभिलेख। 'विदेह शोध-लेख : अंक १ सँ ४५१ धरि'। <https://videha-ejournal.github.io/videha/research/videha-scholar-research-book.html>
17. अनचिन्हार, आशीष। 'मैथिली गजल व्याकरणक शुरूआती प्रयोग'। विदेहक मूल आलेख : <https://www.videha.co.in/research/2014/165/मैथिली-गजल-व्याकरणक-शुरूआती-प्रयोग.htm>

समीक्षा १३

शब्द=अर्थ=शक्ति

गजल-आलोचनाक रूपशास्त्र, भाषा आ इतिहास

सारांश

आशीष अनचिन्हारक ‘शब्द-अर्थ-शक्ति’ आधुनिक मैथिली गजलक स्वरूप, छन्दानुशासन, भाषिक स्वायत्तता आ साहित्येतिहासपर केन्द्रित आलोचनात्मक हस्तक्षेप अछि। एकर खास विशेषता ई जे लेखक गजलक लोकप्रियता अथवा रचनाकारक प्रतिष्ठाकें मूल्यनिर्णायक पर्याप्त आधार नहि मानि, बहर, काफिया, रदीफ, शेरक विन्यास आ भाषिक स्वाभाविकताक ठोस कसौटी प्रस्तुत करैत छथि। पोथीक पहिल खण्डमे विशिष्ट गजल-संग्रह आ काव्यप्रयोगक समीक्षा अछि; दोसर खण्डमे सम्पादन, साहित्येतिहास, गजलक सामाजिक चेतना, अभिव्यक्तिक आधुनिकता आ विधागत नामकरणसम्बन्धी विवादक पुनर्परीक्षण कएल गेल अछि। एतऽ एकर प्रमुख तर्क, आलोचनात्मक पद्धति, समकालीन मैथिली साहित्यसँ सम्बन्ध आ अन्तर्विरोधक विवेचन कएल गेल अछि। अध्ययन देखबैत अछि जे पुस्तक गजलकें स्वतन्त्र काव्यविधाक रूपमे स्थापित करबाक एकटा निर्भीक प्रयत्न अछि, यद्यपि बहरकें निर्णायक कसौटी बनएबाक क्रममे साहित्यिक बहुलता, भाव-सौन्दर्य आ लोकप्रचलित छन्दप्रयोगक प्रति लेखकक व्यवहार सर्वदा समान उदार नहि रहैत अछि। एहने द्वन्द्व पोथीकें विमर्शक केन्द्र बनबैत अछि।

मुख्य शब्द : मैथिली गजल, आशीष अनचिन्हार, शब्द-अर्थ-शक्ति, बहर, काफिया, रदीफ, गजल-आलोचना, विधागत अस्मिता, साहित्येतिहास, विदेह।

प्रस्तावना : गजलक आलोचना की केवल प्रशंसा?

मैथिली साहित्यक आलोचनात्मक परम्परामे गीत, कविता, कथा आ उपन्यासक तुलनामे गजलक विधागत परीक्षणक प्रश्न प्रायः विस्थापित रहल अछि। ‘शब्द-अर्थ-शक्ति’ एहि विस्थापनकेँ अपने आलोचनाक विषय बनबैत अछि। लेखक मानैत छथि जे गजलक विषयवस्तु नीक होयब, सामाजिक सन्देश होयब अथवा रचनाकारक प्रगतिशील कहल जायब, मात्र एतेकसँ रचना गजल नहि बनि जाइत अछि। काव्यात्मक प्रभाव आ विधागत पहचान भिन्न, मुदा परस्पर सम्बन्धित, स्तर छथि। एहि भेदकेँ स्थापित करब लेखकक सम्पूर्ण आलोचनात्मक उद्योगक मूल प्रेरणा अछि।

एहि प्रसंगमे पुस्तकक शीर्षक सेहो अर्थवान अछि। शब्द, अर्थ आ शक्ति—ई तीनू शब्द काव्यक भाषिक संघटन, तकर बोध आ तकर सामाजिक-सांस्कृतिक प्रभावक एकटा सम्भावित त्रिकोण बनबैत अछि। तथापि पुस्तकक वास्तविक विवेचनमे ‘शब्द’क ध्वन्यात्मक अनुशासन आ ‘शक्ति’क रूपमे तर्कपूर्ण प्रतिवाद बेसी प्रधान अछि; अर्थक बहुस्तरीय सौन्दर्यात्मक व्याख्या अपेक्षाकृत कम विस्तृत भेटैत अछि। शीर्षकक व्यापकता आ आलोचनाक केन्द्रीय छन्दशास्त्रीय आग्रहक बीचक ई फाँक पाठककेँ लगातार सोचबाक अवसर दैत अछि।

लेखकक आत्मपरिचय आ भूमिका एकटा सक्रिय रचनाकार-आलोचकक दृष्टि प्रस्तुत करैत अछि। ओ अपन पुस्तककेँ स्वतन्त्र गजल-आलोचनाक आरम्भिक महत्त्वपूर्ण प्रयासक रूपमे देखैत छथि। ई लेखकक आत्ममूल्यांकन अछि; एकरा स्वतन्त्र साहित्येतिहासक अन्तिम निर्णय नहि मानल जा सकैत अछि। महत्त्वपूर्ण ई अछि जे पोथी आलोचनाकेँ रचनाकारक प्रशस्तिपत्र नहि, सार्वजनिक परीक्षणक क्रिया बनबैत अछि।

कृतिक रूपविन्यास आ आलोचनात्मक परियोजना

पोथी दू खण्डमे विभक्त अछि। पहिल खण्डक दस शीर्षक मुख्यतः संग्रह-विशेष, कवि-विशेष आ शेर-विशेषक आलोचनासँ बनल अछि—‘हारल युद्धक साक्ष्य’, ‘पहरा-अधपहरा’,

‘सूर्योदयसँ पहिने सूर्यास्त’, ‘छद्म गजल’, ‘कलंकित चान’, ‘मैथिली गजल व्याकरणक शुरूआती प्रयोग’, ‘चिकनी माटिमे उपजल नागफेनी’, ‘नरेन्द्रजीक मैथिली आ हिन्दी गजलक तुलनात्मक विवेचना’ तथा दू लघु आलेख ‘शेर जे सभ दिन शेर रहतै’। दोसर खण्डमे आठ निबन्ध छन्दबोध, सम्पादकीय उत्तरदायित्व, वाद-विवाद, इतिहास, सामाजिक ‘मिजाज’ आ गीत-संगीतक सम्बन्धक दिशामे विमर्श विस्तृत करैत अछि। अन्तमे फूलचन्द्र झा ‘प्रवीण’ प्रसंगक परिशिष्ट अछि।

ई विन्यास साधारण संग्रहण नहि अछि। पहिल खण्ड लेखकक आलोचनात्मक औजारकें उदाहरणक सामने राखैत अछि; दोसर खण्ड ओहि औजारक सामाजिक इतिहास आ संस्थागत परिणाम पूछैत अछि। एहि कारणे पोथीकें केवल ‘गजलक समीक्षा-संग्रह’ कहब एकर अध्ययनक्षेत्रकें छोट करब हएत। ई विधा-निर्माणक विवादग्रन्थ, छन्दशास्त्रीय पक्षसमर्थन आ साहित्यिक सार्वजनिकताक दस्तावेज—तीनू रूपमे पठनीय अछि।

संरचनाक किछु कमजोरी सेहो अछि। विभिन्न समयमे लिखल आलेख सभमे बहरक अनिवार्यता आ आलोचकक कर्तव्य विषयक तर्क पुनः-पुनः उपस्थित अछि। एहन पुनरावृत्ति विवादक ऐतिहासिक निरन्तरता तँ चिन्हबैत अछि, मुदा एकीकृत पुस्तकमे वैचारिक क्रमक जगह कखनो-कखनो तात्कालिक प्रतिवादक तीव्रता लेबैत अछि। एतए सम्पादकीय संक्षेप अथवा विषयानुसार अन्तःसन्दर्भक व्यवस्था पुस्तकक सुगमता बढ़ा सकित छल।

मूल आलोचनात्मक प्रतिज्ञा : बहर, काफिया, रदीफ आ शेर

गजलक रूपगत पहचान लेखकक विचारमे सुस्पष्ट अछि। प्रत्येक शेरक पाँतिक मध्य बहरक अनुशासन, गजलक संरचनामे काफियाक ध्वनिसाम्य, आ रदीफक नियमित पुनरावृत्ति—ई सभ नाम मात्र नहि, परीक्षणयोग्य सम्बन्ध छथि। लेखक कतिपय समीक्षामे पाँतिक ह्रस्व-दीर्घ विन्यास अंकित कऽ अपन निर्णायक समर्थन करैत छथि। ई पद्धति आलोचनाकें लेखकक रुचिसँ ऊपर उठाकऽ सार्वजनिक जाँचक योग्य बनबैत अछि।

काव्यकें सुनबाक, गेबाक आ पढ़बाक विधागत भेद स्पष्ट करबाक लेल ई आग्रह उपयोगी अछि।

एहि कसौटीक तार्किक लाभ ई जे सामाजिक चेतना, प्रेम, व्यंग्य, राजनीतिक प्रतिरोध अथवा लोकभाषा—कोनो विषय वस्तुगत गुण अपन आपमे गजलक संरचनागत प्रमाण नहि भऽ सकैत अछि। तहिना गेयता मात्र बहरक पर्याय नहि; संगीतक धुन आ छन्दक क्रमबीच भेद अछि। पुस्तकक अनेक निबन्ध एही भेदपर टिकैत अछि।

मुदा एतऽ एकटा जटिलता उठैत अछि। विधाक परिभाषा इतिहासमे अपरिवर्तनीय नियमसभक यान्त्रिक सूची नहि होइत अछि। भिन्न भाषामे उच्चारण, मात्रा-बोध, यति, संयोगाक्षर आ लघु-दीर्घक व्यवहार अलग होइत अछि। लेखक स्वयं कतिपय स्थानपर भाषाक प्रकृति अनुसार छूट स्वीकार करैत छथि। तें गजलक शास्त्रीय अनुशासनक पक्ष लेबैत काल ई जरूरी अछि जे ध्वन्यात्मक भिन्नताकें अनियमितता कहबाक पूर्व उच्चारणक सामाजिक व्यवहार, शास्त्रक अभिप्रेत पाठ आ सम्पूर्ण रचनाक आन्तरिक एकरूपता जाँचल जाए। पुस्तक ई प्रश्न उठबैत अछि, मुदा एकर सम्भावित उत्तरकें सर्वत्र समान रूपेँ विस्तार नहि दैत अछि।

‘कविता नीक’ आ ‘गजल नीक’—ई दूनू निर्णय एक-दोसरक विरोधी नहि अछि। कोनो रचना गजलक स्वीकृत संरचनाक बाहर रहितो प्रभावी कविता भऽ सकैत अछि। एहि भेदपर लेखकक किछु टिप्पणी मूल्यवान अछि; कठोर पदावलीक कारण ओकर सन्तुलित अर्थ कखनो आच्छादित भऽ जाइत अछि।

पाठविश्लेषण : ‘हारल युद्धक साक्ष्य’

पहिल समीक्षा तारानन्द वियोगीक ‘अपन युद्धक साक्ष्य’क आधारपर गजल-आलोचनाक आवश्यकता स्पष्ट करैत अछि। लेखक संग्रहक चालीस रचनाक प्रसंगमे भाषा, विचार आ छन्दविधानकें अलग-अलग परखैत छथि। एहि विभाजनसँ ई लाभ होइत अछि जे एके संग्रहक आलोचना एकांगी नहि बनैत अछि। विचारक धरातलपर लेखक

सामाजिक-राजनीतिक चेतनाक कतिपय सकारात्मक संकेत मानैत छथि, जखनकि भाषिक स्तरपर संस्कृतनिष्ठ अथवा अप्रचलित पदावलीक अधिकतापर आपत्ति करैत छथि।

रचनाक छन्दपरीक्षणमे लेखक बहरक अभाव आ काफियाक असंगतिक उदाहरण चिन्हैत छथि। अपन तर्क पुष्ट करबाक लेल ओ गजलक मूल पारिभाषिक अवयव बुझबैत छथि। आलोचनाक ई शिक्षणात्मक स्वर महत्वपूर्ण अछि: पाठककेँ मात्र फैसला नहि, फैसला धरि पहुँचबाक विधि सेहो भेटैत अछि।

तथापि एहि समीक्षाक भाषिक मानदण्डपर प्रतिप्रश्न सम्भव अछि। ‘जनभाषा’क निकटता साहित्यक एकटा महत्वपूर्ण गुण भऽ सकैत अछि, मुदा कठिन शब्द सर्वदा असफल काव्यक सूचक नहि होइत अछि। प्रसंग, ध्वनि, बिम्बात्मक आवश्यकता आ भावनात्मक संरचना सेहो शब्दचयनक उचितता निर्धारित करैत अछि। एकर प्रमाण सहित व्यापक परीक्षण लेखकक भाषिक आलोचनाकेँ आओर सुदृढ़ करितै।

पाठविश्लेषण : ‘पहरा-अधपहरा’

‘पहरा-अधपहरा’ बाबा बैद्यनाथक ‘पहरा इमानपर’क समीक्षा अछि। पुस्तक एतऽ संग्रहक ऐतिहासिक महत्त्व, रचनाक छन्दविन्यास, काफिया-रदीफ, भाषिक लोकधर्मिता आ भाव-पक्षकेँ पृथक करैत अछि। प्रारम्भिक प्रकाशन-परिस्थिति आ आलोचनात्मक उपेक्षाक प्रसंग उठाकऽ लेखक कहैत छथि जे नूतन विधाक विकासमे रचनाकारसभकेँ एक-दोसरक कृति गंभीरतापूर्वक पढ़बाक चाही। एहि रूपमे समीक्षा केवल कृति-मूल्यांकन नहि, साहित्यिक समुदाय गढ़बाक आग्रह अछि।

पाठकमे लेखकक विश्वासक विशेष अर्थ अछि। काफियाक त्रुटि बतबैत काल ओ स्वयंसिद्ध मानक थोपबाक बदला ध्वनिसाम्यक उदाहरणसँ विचार समझबैत छथि। दोसर दिस संग्रहक बोलचालक मैथिली आ समकालीन जीवन-सम्बद्ध शेरसभक उपयोगिताकेँ ओ सराहैत छथि। एहि समीक्षामे रूप आ अर्थक बीच सामान्यतः नीक सन्तुलन अछि।

संग्रहक सभ गजलकें छन्दशास्त्रीय कठघरामे राखलाक बादो ओकर लोकानुभवक महत्त्व सुरक्षित रहैत अछि। ई पुस्तकक मूल सिद्धान्तक रचनात्मक सम्भावना देखबैत अछि : छन्दगत असहमति साहित्यिक मूल्यक सम्पूर्ण निषेध नहि होयबाक चाही।

पाठविश्लेषण : ‘सूर्योदयसँ पहिने सूर्यास्त’

राजेन्द्र विमलक ‘सूर्यास्तसँ पहिने’क समीक्षा आधुनिक मैथिली गजलक साहित्येतिहासमे ‘पहिल’ होयबाक घोषणाक आलोचना करैत अछि। लेखक रचनाक संख्या आ संकलनक प्रकृतिपर विवाद उठबैत छथि तथा रवीन्द्रनाथ ठाकुरक ‘लेखनी एक रंग अनेक’सँ तुलना करैत छथि। एतऽ कृतिक मूल्यबोधक समानान्तर प्रकाशनक तथ्य, सम्पादकीय विश्वसनीयता आ साहित्यिक दावाक प्रमाणिकता प्रश्न बनि उठैत अछि।

एहि आलेखक खास पक्ष ई जे प्रतिवादक भीतर दोसर पक्षक स्पष्टीकरण सेहो चर्चित अछि। मिश्रित गजल-कविता-संकलन आ पूर्णतः गजलकें केन्द्र बनौने संग्रहक बीच भेद करबाक सम्भावना स्वीकृत अछि। शोधदृष्टिसँ देखल जाए तँ ‘पहिल’, ‘प्रथम पूर्ण संग्रह’ आ ‘नेपालमे प्रकाशित प्रथम’—एहि सभ संज्ञाक स्पष्ट परिभाषा आवश्यक अछि। बिना परिभाषाक प्राथमिकता-विवाद साहित्येतिहाससँ अधिक प्रतिष्ठा-विवाद बनि सकैत अछि।

अन्ततः एहि पाठसँ ई शिक्षा निकलैत अछि जे साहित्येतिहासमे संख्या, संस्करण, प्रकाशन-प्रदेश आ संग्रहक विधागत स्वरूपक स्पष्ट सूची तैयार करबाक चाही। लेखक विवाद उपस्थित करैत छथि; भविष्यक शोध लेल व्यवस्थित ग्रन्थसूची तैयार करबाक काज एतऽ खुलल रहैत अछि।

पाठविश्लेषण : ‘छद्म गजल’ आ ‘कलंकित चान’

‘छद्म गजल’मे गंगेश गुंजनक काव्यप्रयोगक प्रसंगमे गजल आ गजल-सन रचनाक अन्तरकें प्रमुख बनाओल गेल अछि। ‘स्वाधीन लय’ आ छन्दबद्ध संरचनाक सम्बन्धपर लेखकक प्रश्न सैद्धान्तिक अछि : जँ कोनो रचना छन्दबद्ध कहल जाए, तँ ओकर लय-

विन्यासक प्रमाण प्रस्तुत होयबाक चाही। ई माँग प्रासंगिक अछि, विशेषतः जखन विधाक नाम ओकर शिल्पगत अपेक्षा सेहो जनबैत हो।

एहि तर्कक सीमा ओतए प्रकट होइत अछि जतऽ प्रयोगधर्मी कविताकेँ केवल विफल गजल मानि लेल जाइत अछि। सम्भव अछि जे रचनाकार विधाक सीमामे नव संभावना ताकैत होथि; तखन आलोचककेँ दू भिन्न प्रश्न पूछबाक चाही—रचना पारम्परिक गजल अछि की नहि, आ रचना स्वतन्त्र कविता अथवा रूपान्तरित काव्य-प्रयोगक रूपमे प्रभावी अछि की नहि। पहिल प्रश्नक नकारात्मक उत्तर दोसरो प्रश्नकेँ समाप्त नहि करैत अछि।

‘कलंकित चान’ रामभरोस कापड़ि ‘भ्रमर’क ‘अन्हरियाक चान’क छन्दविधानक समीक्षा करैत अछि। लेखक मुक्त अथवा आजाद गजलक दावाक परीक्षण काफिया आ अन्य औपचारिक तत्त्वक आधारपर करैत छथि। एहि निबन्धमे एकटा महत्त्वपूर्ण असहमति अछि : जँ रचनाकार स्वयं पारम्परिक अनुशासन नहि अपनौने छथि, तँ ओहि रचनाकेँ शास्त्रीय गजल कहबाक प्रश्न अलग आ ओकर काव्यात्मक उपलब्धिक प्रश्न अलग रहबाक चाही। साहित्यिक निर्णयक कठोरता एहि दू स्तरक भेदसँ ही सार्थक बनैत अछि।

पाठविश्लेषण : ‘मैथिली गजल व्याकरणक शुरूआती प्रयोग’

ई आलेख मैथिली गजलमे छन्दनिर्माणक विभिन्न आरम्भिक प्रयासक विश्लेषण करैत अछि। लेखक वर्णिक, मात्रिक, बहर-आधारित आ गायनसम्बद्ध लयक बीचक अन्तरपर जोर दैत छथि। संगीतक स्वररचना आ छन्दक नियत अक्षर-मात्रा-विन्यास एक-दोसरसँ सम्बद्ध जरूर छथि, मुदा समानार्थी नहि—एहि तथ्यकेँ ओ बारम्बार स्पष्ट करैत छथि।

रचनाकारक नव छन्द गढ़बाक स्वतन्त्रता लेखक सम्पूर्ण रूपेँ अस्वीकार नहि करैत छथि; किन्तु नव छन्दक नियम, उदाहरण आ अनुवर्तन प्रस्तुत करबाक दायित्व आवश्यक मानैत छथि। एहि विचारमे विधागत अनुशासन आ नवोन्मेषक सम्भावित संवाद निहित अछि। नवीन नामक आविष्कार तखनहि साहित्येतिहासमे फलदायी होइत अछि जखन ओकर पुनर्पाठ आ परीक्षण सम्भव हो।

आलेखक ऐतिहासिक महत्त्व ईहो अछि जे लेखक एकटा काव्यरूपक प्रयोगकेँ अलग-थलग घटना नहि मानि, बौद्धिक बहसक क्रममे देखैत छथि। इएह आलोचना-पद्धति आगूक गजल-इतिहासविषयक निबन्धसभक आधार बनैत अछि।

पाठविश्लेषण : ‘चिकनी माटिमे उपजल नागफेनी’

रमेशक ‘नागफेनी’पर केन्द्रित ई निबन्ध पुस्तकक सबसँ रोचक अन्तर्विरोधसभमेसँ एक प्रस्तुत करैत अछि। लेखक प्रारम्भमे छन्दगत आधारपर संग्रहक गजलत्वपर सन्देह करैत छथि, मुदा ओकर भूमिका, वैचारिक दावे, भाषा आ चुनेल काव्य-पाँति सभपर विस्तारसँ विचार करैत छथि। एहि रूपमे रचनाकेँ गजल नहि मानबाक बावजूद साहित्यिक चर्चासँ बाहर नहि कएल गेल अछि।

विशेष रूपसँ लोकमैथिली शब्दावलीक सशक्त उपस्थिति लेखककेँ आकर्षित करैत अछि। सामाजिक यथार्थ, स्थानीय बिम्ब, शब्दक सहजता आ प्रतिरोधक स्वर—ई सभ गुण ओ स्वीकार करैत छथि। एहि कारणे ‘नागफेनी’क समीक्षा स्वयं साबित करैत अछि जे आलोचनाक व्यवहार बहरक विश्लेषणसँ व्यापक होयबाक चाही।

तथापि लेखक प्रगतिशीलताक नामपर छन्द-विरोधक दावाक तीव्र प्रतिवाद करैत छथि। दुष्यन्त कुमार, फैज आ अदम गोंडवीक उदाहरणसँ ओ एहि विचारकेँ खण्डित करबाक प्रयास करैत छथि जे सामाजिक प्रतिरोध लेल छन्दत्याग अनिवार्य अछि। एतऽ मूल प्रश्न आधुनिक विषयक नहि, आधुनिक विषयक काव्यरूपसँ सम्बन्धक अछि। पुस्तकक ई बहस मैथिली काव्य-आलोचनामे व्यापक तुलनात्मक अध्ययनक आधार बनि सकैत अछि।

पाठविश्लेषण : नरेन्द्रजीक द्विभाषिक गजल

‘नरेन्द्रजीक मैथिली आ हिन्दी गजलक तुलनात्मक विवेचना’ पुस्तकक एकटा व्यवस्थित तुलनात्मक प्रयत्न अछि। एके रचनाकारक दू भाषामे लिखल गजलकेँ बहर, काफिया, रदीफ, भाव, कथ्य आ भाषिक व्यवहारक धरातलपर परखबाक निर्णय साधारण

દ્વિભાષિક તુલના નહિ, એકટા ઉપયોગી અનુસન્ધાની પદ્ધતિ અછિ। એતઽ રચનાકારક પ્રતિભા સ્થિર રહિતો ભાષિક સંસાધન આ છન્દપદ્ધતિક પરિણામ કેના બદલૈત અછિ, સે દેખબાક સમ્ભાવના બનેત અછિ।

લેખક મૈથિલી ઉચ્ચારણક વિશેષતા, હ્રસ્વ-દીર્ઘક વ્યવહાર આ તત્સમ-તદ્ભવ તથા બાહરી શબ્દક સ્વીકાર્યતાક પ્રસંગ ઉઠબૈત છથિ। એકે શબ્દ પ્રત્યેક ભાષામે સમાન ધ્વન્યાત્મક ભાર નહિ રખૈત અછિ; એહિ કારણે ભાષિક સન્દર્ભક ઉપેક્ષા કરિ કાલ તકતીઅ અવિશ્વસનીય ભઽ સકૈત અછિ। ઈ સમીક્ષાક સબસં મહત્ત્વપૂર્ણ સૈદ્ધાન્તિક નિષ્કર્ષ અછિ।

લેખક કથ્યક પુનરાવૃત્તિ આ વૈચારિક એકરેખીયતાપર સેહો પ્રશ્ન કરૈત છથિ। એહિસં સ્પષ્ટ હોઈત અછિ જે માત્ર છન્દ ઠીક ભેલા પર ગજલ સ્વતઃ ઉત્કૃષ્ટ નહિ ભઽ જાઈત અછિ। ભાષા, વ્યંજના, બિંબ, વ્યંગ્ય આ અનુભૂતિક વિવિધતા સૌન્દર્યાત્મક મૂલ્યનિર્ણયમે અનિવાર્ય છથિ। લેખકક આલોચનાત્મક વ્યવહાર એતઽ અપન ઘોષિત રૂપપ્રધાન આગ્રહક અપેક્ષાકૃત અધિક જટિલ બનેત અછિ।

પાઠવિશ્લેષણ : ‘શેર જે સભ દિન શેર રહૈત’

પહિલ ખણ્ડક દૂ લઘુ રચના છોટ આકારક કારણ મુખ્ય નિબન્ધસભક બીચ વિરામ-જકાં બુઝા સકૈત અછિ। મુદા સંગ્રહક સમગ્ર વિન્યાસમે એકર ઉપયોગ અલગ અછિ। સંગ્રહ-સ્તરીય મૂલ્યાંકનક બાદ શેરકે સ્વતન્ત્ર સૌન્દર્યાત્મક ઇકાઈક રૂપમે દેખબાક આગ્રહ એતઽ અધિક સ્પષ્ટ હોઈત અછિ। ગજલક વિશેષતા ઈહો જે એકટા શેર અપન સ્વાયત્ત અર્થ-સંયોજન રખૈત અછિ; ઓકર પ્રભાવ પૂરા ગજલક અનિવાર્ય કથાસૂત્રપર નિર્ભર નહિ રહૈત અછિ।

ઈ સૂક્ષ્મ પાઠ-વિધિ કાવ્યક અન્વિતિ, અપ્રસ્તુત-વિધાન, અર્થાન્તર, સ્મરણીયતા આ ધ્વનિક પ્રશ્નકે સામને અનૈત અછિ। એતઽ શોધક સમ્ભાવના ઈ જે પુસ્તકક બાકી કઠોર છન્દ-આલોચનાક સંગ એહિ લઘુ શેર-અધ્યયનકે જોડિ ગજલક ‘શિલ્પ’ આ ‘અર્થ’ક સમ્બન્ધક અધિક વ્યવસ્થિત સિદ્ધાન્ત તૈયાર કાલ જા સકૈત અછિ।

दोसर खण्ड : आलोचना, सम्पादन आ साहित्यिक संस्था

‘मैथिली गजल आ अभट्टाकारी’ आलोचनक दायित्वपर केन्द्रित निबन्ध अछि। एहिमे लेखक प्रश्न उठबैत छथि जे जँ साहित्यकार स्वयं अपन विधाक परीक्षण नहि करथि आ बाहरी आलोचककेँ अयोग्य सेहो मानथि, तँ नूतन विधाक विकास केना हएत। पुस्तकक एहि तर्कमे आलोचना सार्वजनिक ज्ञानक साझा श्रम बनैत अछि, निजी प्रतिद्वन्द्विताक साधन नहि।

‘अज्ञानी सम्पादकक फेरमे मरैत गजल’ एकटा गम्भीर प्रश्न सामने अनैत अछि : पत्रिकामे छपबाक क्रममे रचनाक शिल्पगत इकाइ बदलि देल गेल, अथवा गजलकेँ गीत कहि प्रकाशित कएल गेल, तँ सम्पादकीय हस्तक्षेप कतेक वैध अछि? लेखक योगानन्द हीराक रचनाक प्रसंगमे पाठक विश्वसनीयता आ सम्पादकीय उत्तरदायित्वक प्रश्न उठबैत छथि। एहि आरोपसभकेँ लेखकक प्रतिपादनक रूपमे पढ़बाक चाही; प्रत्येक सम्पादकक अभिप्रायपर स्वतन्त्र निर्णय लेल मूल प्रकाशनसभक पारस्परिक परीक्षण जरूरी होइत।

दूनू निबन्धक स्थायी योगदान ई जे साहित्यिक संस्थाकेँ रसास्वादनक बाहर नहि रखल गेल अछि। पाठनिर्माण, पाठपरिवर्तन, सम्पादन, वर्गीकरण आ प्रकाशन—ई सभ गजलक ग्रहणशीलताकेँ प्रभावित करैत अछि। समकालीन साहित्येतिहासमे ई संस्थागत संवेदनशीलता उल्लेखनीय अछि।

‘संशोधन केर मतलब विनाश नहि होइत अछि’ : वाद-विवादक आलोचनाशास्त्र

दोसर खण्डक विस्तृत निबन्ध ‘संशोधन केर मतलब विनाश नहि होइत अछि’ मैथिली गजलक शास्त्रीय नियमपर चलेल लम्बा साहित्यिक विवादक दस्तावेज अछि। लेखक अपन पूर्व लेख, सुरेन्द्रनाथक प्रतिवाद आ तकर उत्तरक क्रम प्रस्तुत करैत छथि। एहि बहसक माध्यमे साहित्यिक इतिहास, शाब्दिक उत्तरदायित्व, बहरक सीमा आ छन्दसमर्थक तथा छन्दविरोधी मतक टकराव स्पष्ट होइत अछि।

एहि विवादक उल्लेखनीय गुण प्रमाणक माँग अछि। लेखक अनुरोध करैत छथि जे कोनो कथनकेँ केवल वरिष्ठता अथवा ख्यातिक आधारपर स्वीकार नहि कएल जाय; उदाहरण देल जाय, बहर जाँचल जाय आ इतिहासक दावाक स्रोत प्रस्तुत कएल जाय। आलोचनाकेँ प्रतिवाद-सहिष्णु बनएबाक ई प्रवृत्ति शोधमूलक विवेकक निकट अछि।

मुदा आलोचनात्मक अनुशासनक दू रूप होइत अछि—तर्कक कठोरता आ सम्बोधनक संयम। एहि निबन्धमे प्रथम खूब प्रबल अछि, दोसर कखनो कम पड़ैत अछि। प्रतिद्वन्द्वी विचारक व्यक्ति-विशेषपर लक्षित व्यंग्य मूल प्रश्नकेँ धुँधला कऽ सकैत अछि। शोधपरम्परा लेल लेखकक प्रमाण-आग्रह ग्रहणीय अछि; व्यक्तिविशेषक नीयतपर अनिर्णीत आरोपक अपेक्षा तर्कक स्वतन्त्र परीक्षण अधिक फलदायी हएत।

‘बयानक सन्दर्भमे मैथिली गजल’ : अभिमत आ प्रमाणक दूरी

गजलक सम्भावना, ओकर रचनाभाषा, प्रेमक प्रकृति आ संगीतसँ सम्बन्ध विषयक पूर्ववर्ती कथनसभकेँ लेखक ऐतिहासिक बहसक क्रममे स्थापित करैत छथि। चर्चा व्यक्तिपरक मतसँ आरम्भ भए रूपगत उदाहरण धरि पहुँचैत अछि। ई निबन्ध देखबैत अछि जे कोनो साहित्यिक बयान तत्कालीन रचनाशीलतापर मनोवैज्ञानिक आ संस्थागत प्रभाव छोड़ि सकैत अछि।

विद्यापतिक प्रेम, उर्दू शाइरीक प्रेम आ मैथिली गजलक अभिव्यक्तिक तुलना लेखक लेल साहित्यिक वैधताक प्रश्न अछि। ओ मानैत छथि जे विषयक धार्मिक, लौकिक अथवा पारलौकिक नामकरण रचनाक मूल छन्दशास्त्रीय क्षमताकेँ निर्धारित नहि करैत अछि। एहि बिन्दुपर पोथी विधागत स्वतन्त्रताक पक्षमे ठाढ़ अछि।

अभिमतक इतिहास लिखबाक समय ई भेद महत्त्वपूर्ण अछि जे केओ की कहने छलाह, ओकर कथनक तत्कालीन अर्थ की छल, आ तकर वास्तविक प्रभावक प्रमाण की अछि। पुस्तक पहिल दू प्रश्नपर सजग अछि, मुदा तेसर प्रश्नक लेल बहुतेरे स्थानपर अनुभवजन्य दस्तावेजीकरणक गुंजाइश बचल अछि।

‘इश्क को दिल में दे जगह अकबर’ : ज्ञान आ संवेदना

जगदीशचन्द्र ठाकुर ‘अनिल’क प्रसंगवाला ई लघु आलेख एकटा सुन्दर विरोधाभास पकड़ैत अछि। छन्दशास्त्रविरोधी तर्कक समर्थनमे उद्धृत शेर स्वयं लयबद्ध संरचना रखि सकैत अछि। लेखक कहैत छथि जे ‘इल्म’ आ काव्यभावकें एक-दोसरक शत्रु बनएब अनुचित अछि। ज्ञान अभिव्यक्तिक उपकरण होइत अछि; ओकर उपस्थितिसँ स्वतः अनुभूति नष्ट नहि होइत अछि।

अनिलक शेरमे गजलक बन्धनसँ मुक्तिक अभिलाषा एकटा आन्तरिक व्यंग्य निर्माण करैत अछि—रचना बन्धनक विरुद्ध बोलैत अछि, मुदा अपन लयक भीतर। एहि अवलोकनसँ ‘नियम’कें केवल निषेधात्मक आदेश नहि, सर्जनात्मक सम्भावनाक व्यवस्था मानबाक आधार भेटैत अछि।

एहू बातक संग ई जोड़ब आवश्यक अछि जे ज्ञान आ संवेदना परस्पर सहयोगी होइत अछि, मुदा समानार्थी नहि। नियमक अनुपालन काव्यक आवश्यक औजार भऽ सकैत अछि; प्रभावकारी शेर बनबाक लेल अर्थक ताजगी आ भाषिक जीवट सेहो आवश्यक अछि।

‘आधुनिक मैथिली गजलक संक्षिप्त आलोचनात्मक परिचय’ : इतिहासक रूपरेखा

दोसरो खण्डक विस्तृत ऐतिहासिक निबन्ध पुस्तकक केन्द्रीय आधारस्तम्भ अछि। लेखक आधुनिक मैथिली गजलक प्राचीन उदाहरण, बीसम शताब्दीक रचनाकार, बादक संग्रह, नव पीढ़ीक छन्दचेतना आ डिजिटल साहित्यिक प्रयासकें एकटा कथा-रेखामे जोड़ैत छथि। पं. जीवन झा, कविवर सीताराम झा, काशीकान्त मिश्र ‘मधुप’, योगानन्द हीरा, जगदीशचन्द्र ठाकुर ‘अनिल’ आ बादक अनेक नाम एहि परिचयमे आबैत छथि।

लेखक विशेष रूपसँ इतिहासक ओहि धारणाक प्रतिवाद करैत छथि जाहिसँ मैथिलीमे छन्दयुक्त गजल सम्भव नहि मानल जाइत छल। ओ आरम्भिक रचनाक बहर-क्रमक उदाहरण प्रस्तुत कऽ गजलक ऐतिहासिक अस्तित्वक दाबी करैत छथि। कृतिक भीतर

उद्धृत रचना-साक्ष्य एहि दावाकेँ महत्व दैत अछि। तथापि ‘प्रथम’ अथवा ‘आरम्भ’क निर्धारण लेल समस्त आरम्भिक सामग्रीक संस्करणान्तर आ प्रकाशन-अभिलेख देखब अलग शोधक विषय अछि।

उक्त निबन्धमे दू प्रवाहक अवधारणा बारम्बार उभरैत अछि—छन्दविधान स्वीकार करनिहार रचनाकार आ ‘आजाद’ नामसँ छन्दमुक्ति चाहनिहार रचनाकार। ई विभाजन आलोचनात्मक बहस बुझबाक लेल उपयोगी अछि, मुदा साहित्यक वस्तुस्थिति केवल दू अनन्य खेमामे विभक्त नहि होइत अछि। कतेको रचनाकार गीत, कविता, लयबद्ध मुक्तरचना आ गजलक बीच आवागमन करैत छथि। एहि मध्यवर्ती काव्यभूमिकेँ देखनाइ साहित्येतिहासकेँ अधिक समावेशी बनबैत।

विदेह आ ‘अनचिन्हार आखर’सँ सम्बद्ध प्रकाशनगत उपक्रमक उल्लेख पुस्तकक विशिष्ट पक्ष अछि। एहि सामग्रीसँ ई स्पष्ट होइत अछि जे आधुनिक गजलक निर्माण पत्रिका, ऑनलाइन प्रकाशन, पाठकीय संवाद आ आलोचनात्मक प्रतिवादक संयुक्त क्षेत्रमे भेल। एहि कारणे डिजिटल माध्यम एतऽ केवल वितरणक सुविधा नहि, विधागत विमर्शक सक्रिय मंच अछि।

‘दुष्यन्त कुमारक गजलक मिजाज’ : आधुनिकता आ छन्दक सहअस्तित्व

एहि आलेखमे आधुनिक सामाजिक चेतना आ गजलक शिल्पबीचक सम्बन्ध पुनः उठैत अछि। लेखक दुष्यन्त कुमारक गजलक उदाहरणसँ प्रतिपादित करैत छथि जे राजनीतिक व्यंग्य, जन-संघर्ष, विषमता आ परिवर्तनक आकांक्षा बहरक अनुशासनक भीतर सेहो व्यक्त कएल जा सकैत अछि। एहिसँ लेखक ‘आधुनिक विचार’क लेल ‘छन्दहीनता’ आवश्यक मानबाक तर्कपर आपत्ति करैत छथि।

‘मिजाज’क अर्थ केवल विषय नहि; कथनक ताप, व्यंग्यक चाप, अनुभवक सार्वजनिकता आ भाषाक संक्षिप्त तीक्ष्णता सेहो अछि। दुष्यन्तक प्रभावक तुलना करैत काल ई बिन्दु अत्यन्त महत्त्वपूर्ण अछि। मैथिली गजलमे छन्दयुक्त रचना उपलब्ध होयब

एक बात, आ सामाजिक-राजनीतिक बोधक ओहने विशिष्ट उष्णता प्राप्त होयब दोसर बात अछि। पुस्तक पहिल बातकेँ प्रमाणित करबाक उद्देश्यसँ बहुत दूर धरि जाइत अछि; दोसर पक्षक सूक्ष्म सौन्दर्यशास्त्र आओर विकसित कएल जा सकैत छल।

एहि तुलनासँ निष्कर्ष निकलैत अछि जे समकालीन चेतना आ शास्त्रीय रूप परस्पर विरोधी नहि। मुदा रूप आ भावक सहअस्तित्वक प्रश्नकेँ रचनाविशेषक निकट पाठसँ सिद्ध करब अधिक श्रेयस्कर हएत, केवल छन्द-गणनाक प्रदर्शनसँ नहि।

‘एकटा मैथिली गजल जे बदलि देलक गीत-संगीतक इतिहास’

ई आलेख साहित्यक पाठ आ संगीतक प्रस्तुति बीच उत्पन्न होमयवाला रूपान्तरक प्रश्न उठबैत अछि। लेखक कविवर सीताराम झाक एकटा रचनाक विधागत पहचानपर जोर दैत छथि तथा ओकर गायन-परम्परामे भेल नामकरण, पाठभेद आ प्रस्तुति सम्बन्धी अन्तरक चर्चा करैत छथि। एहि विषयमे गजलक इतिहास संगीतक इतिहासक संग प्रत्यक्ष रूपेँ जुड़ैत अछि।

मूल समस्याकेँ तीन स्तरपर देखल जा सकैत अछि : रचनाकारक मूल पाठ, संगीतकार अथवा गायकक प्रस्तुति, आ जनस्मृतिमे स्थापित विधागत नाम। तीनू आपसमे सम्बन्धित छथि, मुदा समान नहि। गजलकेँ भजन अथवा गीतक रूपमे गाएल गेलासँ मूल रचनाक शिल्प स्वतः परिवर्तित नहि होइत अछि; तथापि जनमानसक ग्रहणपरम्परा एकटा स्वतन्त्र सांस्कृतिक तथ्य बनि सकैत अछि।

लेखक मूल पाठक प्रामाणिकताक रक्षा करबाक प्रयास करैत छथि। शोधक लेल एहि विमर्शक विस्तार ई होयबाक चाही जे मूल पाठ आ गायनरूपक पाठान्तर एकत्र करि, अभिधेयक फेरबदल आ संगीतकीय प्रयोजनक तुलना कएल जाय। एहि प्रकारे निबन्ध सांगीतिक पाठालोचना लेल नूतन प्रश्न खोलैत अछि।

फूलचन्द्र झा 'प्रवीण' प्रसंग : कृति, श्रेय आ पाठक विश्वसनीयता

परिशिष्टमे फूलचन्द्र झा 'प्रवीण'सँ सम्बन्धित रचनाक श्रेय आ प्रसारणक विवाद उपस्थित अछि। ई भाग पोथीक मूल छन्दविवादसँ किछु अलग देखाइत अछि, मुदा वस्तुतः पाठक प्रामाणिकता, रचनाकारक दावा आ सांस्कृतिक संचारक भरोसाक प्रश्नसँ जुड़ल अछि। गजलक शिल्पक न्याय करबाक पहिले रचना केकर अछि, ओकर स्थापित पाठ कोन अछि, से स्पष्ट होयब जरूरी अछि।

साहित्यिक शोधमे श्रेय-विवादक निष्पत्ति व्यक्तिगत प्रतिज्ञापनसँ नहि, दिनांकित प्रकाशन, विश्वसनीय पाठरूप, हस्तलेख अथवा प्रकाशकीय अभिलेखसँ होयबाक चाही। परिशिष्ट एहन साक्ष्य-संग्रहक आवश्यकता रेखांकित करैत अछि। एहि प्रसंगक ऐतिहासिक महत्त्वक अन्तिम निर्णय उपलब्ध दस्तावेजक व्यापक मिलानक बादे सम्भव अछि।

प्रमाणित मूलोक्ति आ ओकर आलोचनात्मक अर्थ

पोथीक विचारधाराकें बुझबाक लेल किछु संक्षिप्त मूलोक्ति विशेष महत्त्वपूर्ण छथि। 'चिकनी माटिमे उपजल नागफेनी'मे लेखक स्पष्ट करैत छथि—“हमर समीक्षा वा आलोचना-समालोचनाक आधार सदिखन व्याकरण रहैत अछि”। एहि कथनमे आलोचनाक घोषित विधि सुस्पष्ट अछि। व्याकरणकें व्यक्तिगत रुचिक विकल्प मानि रचनाक सार्वजनिक परीक्षणक पैमाना बनाओल गेल अछि। मुदा आलोचनाक सम्पूर्ण सिद्धान्त जँ एतबहि रहि जाए तँ बिम्ब, कथ्य, ध्वनि आ सामाजिक अनुभूतिक स्वतन्त्र महत्त्व सीमित भऽ सकैत अछि।

‘आधुनिक मैथिली गजलक संक्षिप्त आलोचनात्मक परिचय’मे लेखकक दृढ़ उक्ति अछि—“गजल लेल बहर ओ काफिया अनिवार्य छै”। ई वाक्य पोथीक विधागत परिभाषाक केन्द्र अछि। एहि आधारपर लेखक गजल आ अन्य पद्यरूपक अन्तर करैत छथि। साहित्यिक वाद-विवादमे एहि प्रतिज्ञाक उपयोगी रूप ई होयत जे मानकक स्पष्ट व्याख्या, उच्चारणभेदक प्रावधान आ अपवादक सीमासहित एकरा लागू कएल जाय।

जगदीशचन्द्र ठाकुर 'अनिल'क उद्धृत शेरक पाँति—“हम त गजल छी, हमरा नै बरबाद करू”—रूप आ स्वतन्त्रताक द्वन्द्वक कलात्मक उदाहरण प्रस्तुत करैत अछि। लेखक एहि शेरक लयात्मक अनुशासनपर ध्यान दैत छथि। अर्थस्तरपर रचना बन्धनक विरोध करैत अछि, संरचनास्तरपर लयक सहारा लैत अछि। एतऽ विडम्बना हँसीक वस्तु मात्र नहि, गजलक आत्मचिन्तनक सर्जनात्मक शक्ति बनि उठैत अछि।

एहि मूलोक्तिसभक महत्त्व ई नहि जे एकटा आलोचनात्मक मत अन्तिम सत्य बनि गेल; महत्त्व ई जे पोथीक व्यापक बहस संक्षिप्त आ जाँचल जा सकनिहार कथनमे प्रकट होइत अछि। एहि लेखमे उद्धृत मूलवाक्यसभक पाठ मूल मुद्रित रूपसँ मिलाओल गेल अछि; अन्यत्र विचारक प्रस्तुति आशयाधारित पुनर्विवेचनक रूपमे कएल गेल अछि।

मैथिली भाषाक स्वभाव : लोकप्रयोग, उच्चारण आ शब्दचयन

पुस्तकक भाषिक आलोचनामे बारम्बार एकटा आग्रह उभरैत अछि—गजल मैथिलीमे लिखल जाय तँ ओकर भाषा मैथिली समाजक जीवित बोलचाल, ध्वन्यात्मक संरचना आ अभिव्यक्तिगत स्वाभाविकतासँ जुड़ल रहय। बाहरी भाषासँ शब्द ग्रहण करब सर्वथा अनुचित नहि; अनुचित तखन अछि जखन ओकरा बिना सन्दर्भ, बिना अर्थगत आवश्यकता अथवा केवल काफिया साधबाक लेल ठूसल जाए।

एहि आग्रहमे लोकभाषिक स्वाभिमान अछि। मैथिलीकेँ केवल कोनो दोसर भाषाक वाक्यरचनाक अनुवाद नहि, अपने लय आ अर्थछविवाली साहित्यभाषा मानबाक विचार एतऽ सक्रिय अछि। मुदा लोकभाषा एकरूप नहि अछि। मिथिलाक विभिन्न भूभाग, सामाजिक समूह आ भाषिक सम्पर्कक्षेत्रमे प्रयुक्त रूप सभक विविधता छन्दगणनाक निर्णयकेँ सेहो प्रभावित कऽ सकैत अछि। पुस्तक किछु ठाम अंचलीय भेदक उपयोगी संकेत दैत अछि।

व्यावहारिक निष्कर्ष ई होयबाक चाही जे भाषिक शुद्धता काव्यक जीवित भाषासँ अलग होइत पुस्तकनिष्ठ कठोरता नहि बनय। भिन्न मैथिली रूपक ध्वन्यात्मक स्वीकृति,

सम्मानसूचक क्रियारूप, विभक्तिक संयुक्त लेखन आ स्थानीय शब्दसभक साहित्यिक वैधता जाँचैत समय प्रसंग सदा प्रधान रहय। शब्दक सहजता आ ध्वनिक प्रामाणिकता काव्यक स्वाभाविक प्रवाहकें पोषित करैत अछि; यान्त्रिक प्रतिबन्ध ओकर स्थान नहि लऽ सकैत अछि।

सामाजिक चेतना, वर्गबोध आ रूपवादक सीमा

पुस्तकमे दुष्यन्त कुमार, अदम गोंडवी आ मैथिली रचनाकारसभक उदाहरणक माध्यमे ई विचार प्रस्तुत अछि जे जनपक्षधरता बहरक विरोधी नहि। सामाजिक अन्याय, भूख, असमानता, सत्ता-व्यंग्य, बाल-अनुभव अथवा ग्रामीण जीवन—ई सभ काव्यविषय गजलक भीतर सार्थक भऽ सकैत अछि। एहि दृष्टिसँ कृति केवल रूपवादी कठोरता नहि, रूपक भीतर अर्थक विस्तारक सम्भावना सेहो रेखांकित करैत अछि।

समस्या तखन उठैत अछि जखन काव्यविषयक मूल्यांकनक तुलनामे रूपक वर्गीकरण निर्णायक बनि जाइत अछि। ‘गजल’ शब्दक विधागत शुद्धता जतेक आवश्यक अछि, ओतेक जरूरी एहि बातक चिन्ता सेहो अछि जे रचना पाठककें केना प्रभावित करैत अछि, कोन सामाजिक अनुभवकें स्वर दैत अछि आ भाषामे कोन नव अर्थसंसार बनबैत अछि। शास्त्र आ समाजक सम्यक् सम्बन्ध बिना दूनू अधूरा छथि।

यही कारणे पुस्तकक सर्वश्रेष्ठ आलोचनात्मक क्षण ओ नहि जखन लेखक कोनो रचनाकें केवल छन्दगत कारणसँ अस्वीकार करैत छथि; श्रेष्ठ क्षण ओ अछि जखन ओ छन्दगत त्रुटि बतबैत हुए सेहो भाषिक ताजगी अथवा भावनात्मक उपलब्धि स्वीकार करैत छथि। एहिसँ आलोचनाक द्विस्तरीय आदर्श निर्मित होइत अछि—विधागत पहचानक परीक्षण आ स्वतन्त्र काव्यमूल्यक परीक्षण।

मैथिली साहित्येतिहासमे गजलक स्थान : तुलनात्मक विवेचन

मैथिली काव्यपरम्पराक दीर्घ कालमे पद, गीत, भजन, छन्दोबद्ध कविता, नाट्यगीत आ आधुनिक मुक्तक काव्य अनेक रूपमे विकसित भेल अछि। गजलक आगमन आ विस्तार एहि व्यापक काव्यपरिसरमे बुझल जाएबाक चाही। ‘शब्द-अर्थ-शक्ति’ एहि कारणे ऐतिहासिक रूपसँ महत्त्वपूर्ण अछि जे ई गजलकेँ अन्य काव्यविधाक आश्रित उपरूप मानबाक बजाय अलग संरचनावाली विधा सिद्ध करबाक चेष्टा करैत अछि।

पुस्तकमे पं. जीवन झा, सीताराम झा आ काशीकान्त मिश्र ‘मधुप’क उदाहरण गजलक आरम्भिक विधागत उपस्थितिक पक्षमे प्रस्तुत अछि। पछिला कालमे बाबा बैद्यनाथ, तारानन्द वियोगी, राजेन्द्र विमल, रामभरोस कापड़ि ‘भ्रमर’, रमेश, जगदीशचन्द्र ठाकुर ‘अनिल’ आ अनेक नव रचनाकारक चर्चा गजलक बहुविध प्रवाहक रूपरेखा बनबैत अछि। नामक एहि अनुक्रमकेँ पोथीक चयनित आलोचनात्मक इतिहास मानबाक चाही, सम्पूर्ण समावेशी सूची नहि।

भारतीय भाषासभक गजल-परम्पराक तुलना लेखक दुष्यन्त कुमार, फैज, अदम गोंडवी आ अन्य शाइरक उदाहरणसँ करैत छथि। एहि तुलनाक मुख्य उद्देश्य शब्दावली उधार लेब नहि, एकटा सैद्धान्तिक बात स्थापित करब अछि—विषयक परिवर्तन रूपक अस्वीकारक पर्याय नहि। ई कथन व्यापक साहित्यिक अर्थ रखैत अछि। तथापि विभिन्न भाषाक उच्चारण-छन्द-सांस्कृतिक अनुभवमे अन्तर ध्यानमे रखब तुलना अधिक प्रमाणिक बनबैत।

इतिहासलेखनक दृष्टिसँ पोथी एकटा ‘प्रतिहस्तक्षेप’ अछि। लेखक पुरान निर्णयक पुनर्मूल्यांकन करैत छथि, भूलेल रचनाकारक नाम सामने अनैत छथि, आरम्भिक छन्दयुक्त शेर प्रस्तुत करैत छथि आ पत्रिका-सम्पादनक भूमिका जाँचैत छथि। एहि सबसँ मैथिली गजल-इतिहासक प्रश्न खुलैत अछि। कृतिक ऐतिहासिक महत्त्वक आधार एहि प्रश्नोत्तरीक स्फूर्ति अछि, एकरे निर्णायक अन्तिमता नहि।

विदेहक साहित्यिक सार्वजनिकता आ गजल-अध्ययन

आशीष अनचिन्हारक अनेक आलेख विदेहक अलग-अलग अंकमे प्रकाशित भेल रहबाक सूचना पोथीक आरम्भिक निवेदनमे अछि। विदेहक उपलब्ध शोध-अभिलेखमे ‘चिकनी माटिमे उपजल नागफेनी’, ‘मैथिली गजल व्याकरणक शुरूआती प्रयोग’, ‘बयानक सन्दर्भमे मैथिली गजल’, ‘नरेन्द्रजीक मैथिली आ हिन्दी गजलक तुलनात्मक विवेचना’, ‘दुष्यन्त कुमारक गजलक मिजाज सन गजल मैथिलीमे कहिया लीखल जेतै’ आ ‘एकटा मैथिली गजल जे बदलि देलकै मैथिली गीत-संगीतक इतिहास’ सन शीर्षक स्वतंत्र प्रविष्टि रूपमे देखल जा सकैत अछि।

एहि पूर्वप्रकाशनक लेखकीय आ संस्थागत अर्थ अछि। पुस्तक एके दिनक तैयार एकरूप प्रबन्ध नहि, विवाद, प्रतिवाद आ नव पाठानुभवसँ विकसित विचारसभक संकलित रूप अछि। एहि प्रकारक संग्रहमे एके विषयक पुनरुक्ति ओहि विमर्शक कालक्रम सेहो चिन्हबैत अछि। शोधपाठक लेल प्रश्न उठैत अछि : कखन कोन विचार कहल गेल, कोन प्रतिवाद आयल, आ लेखकक मतमे की परिवर्तन भेल?

विदेहक ग्रन्थ-संग्रह आ शोध-अनुक्रमणिका मैथिली गजलक लेखकीय आवाजक संग आलोचना-परम्पराक दस्तावेजीय उपस्थिति सेहो सुरक्षित करैत अछि। एहन संस्थागत संग्रहणक महत्त्व खास कऽ ओहि भाषिक समाजमे बेसी अछि जतऽ पत्रिका, अल्पसंख्यक प्रकाशन आ क्षेत्रीय कृतिसभक उपलब्धता असमान रहल अछि। पोथीक ऐतिहासिक अध्ययन लेल विदेहक ई सामग्री आधारभूत सन्दर्भ प्रदान करैत अछि।

आलोचनात्मक उपलब्धि आ सीमाक समाहार

पुस्तकक पहिल प्रमुख उपलब्धि पद्धतिगत दृढ़ता अछि। गजलक बहर आ काफिया परखबाक उदाहरण लेखक अपन पाठकक सामने रखैत छथि; ओ केवल ‘नीक’ अथवा ‘खराब’क अस्पष्ट निर्णय नहि दैत छथि। दोसर उपलब्धि विधाक आत्मनिर्भर पहचानक पक्षमे वैचारिक संघर्ष अछि। तेसर उपलब्धि भाषा, सम्पादन, प्रकाशन, इतिहास आ संगीत-

संस्कृतिक प्रश्नसभकेँ गजल-आलोचनाक भीतर समेटब अछि। चारिम उपलब्धि ई जे लेखक गजलक सामाजिक विषय-विस्तारकेँ छन्दक संग सहअस्तित्वमे देखैत छथि।

पहिल सीमा सौन्दर्यात्मक मूल्यनिर्णयक असमान विस्तार अछि। बहरक परीक्षण प्रायः विस्तृत अछि, मुदा भावबोध, शेरक अर्थान्तर, बिम्ब-प्रतीक, रचनात्मक मौन, विडम्बना आ कथनक बहुस्तरीयता ततेक व्यवस्थित विवेचित नहि होइत अछि। दोसर सीमा समकालीन साहित्यिक मतभेदमे व्यक्तिकेँ लक्षित तीक्ष्ण सम्बोधन अछि, जाहिसँ तर्कक विषयान्तर होयबाक जोखिम रहैत अछि। तेसर सीमा ‘छन्दयुक्त’ आ ‘छन्दमुक्त’क बीच प्रायः द्वैध निर्माण अछि; मध्यवर्ती प्रयोगक श्रेणीकरण अपेक्षाकृत कम विकसित अछि।

चारिम सीमा ऐतिहासिक दावाक प्रमाण-क्रम अछि। पोथी अनेक महत्वपूर्ण संकेत दैत अछि, तथापि आरम्भिक प्रकाशन, संस्करणभेद, पुनर्प्रकाशन आ अभिहित ‘प्रथम’क प्रश्न पर स्वतंत्र ग्रन्थसूची-आधारित शोध आवश्यक अछि। पाँचम सीमा सांगीतिक रूपान्तर आ साहित्यिक पाठान्तरपर अलग सैद्धान्तिक रूपरेखाक अभाव अछि। ई सीमासभ कृतिक महत्त्व घटबैत नहि; उलटे आगामी शोधक सम्भावित दिशा स्पष्ट करैत अछि।

उपसंहार

‘शब्द-अर्थ-शक्ति’क स्थायी महत्त्व एकर विवादप्रिय स्वरमे मात्र नहि, बल्कि मैथिली गजलक मूल्यांकनकेँ सार्वजनिक प्रमाण आ परिभाषाक स्तरपर आनबाक प्रयत्नमे निहित अछि। पुस्तक पढ़ैत स्पष्ट होइत अछि जे लेखकक लेल साहित्यिक स्वाधीनताक अर्थ अनुशासनहीनता नहि; ओ रूपक ज्ञानकेँ सर्जनात्मक स्वतन्त्रताक आधार मानैत छथि। एहि विचारक फलदायी रूप तखन निर्मित होइत अछि जखन रूपगत शुद्धताक संग अर्थक बहुलता, बोलीक वैविध्य आ काव्यानुभवक नूतनता बराबर महत्त्व पबैत अछि।

मैथिली गजल-अध्ययनक इतिहासमे एहि ग्रन्थकेँ एकटा सक्रिय आलोचनात्मक मोड़ मानल जा सकैत अछि। ई विधा-प्रेमकेँ अनुशीलनमे, रचनाकारक प्रशंसाकेँ परीक्षणमे, आ साहित्यिक परम्पराक गौरवकथाकेँ प्रश्नोत्तरमे परिवर्तित करबाक चेष्टा करैत अछि। एकर

तीक्ष्णताक संग संवाद करब, एकर तर्ककेँ पुनः परखब आ एकर अधूरा प्रश्नसभकेँ आगू बढ़ाएब—एहिमे एकर उचित साहित्यिक मूल्यांकन निहित अछि।

सन्दर्भसूची : विदेह-स्रोत

मूल पुस्तक तथा विदेहमे उपलब्ध कृति-सूची आ प्रकाशन-अनुक्रमणिकापर आधारित चयनित सन्दर्भ।

- आशीष अनचिन्हार। शब्द-अर्थ-शक्ति : गजलक आलोचना-समालोचना-समीक्षा ओ गजलपर आलेख। विदेह प्रकाशन-अभिलेख; ग्रन्थक आरम्भिक अधिकार-सूचनामे २०१२ आ २०२२ अंकित।
- विदेह। मैथिली पोथीक अभिलेख; आशीष अनचिन्हारक ‘शब्द-अर्थ-शक्ति’, ‘सन्दर्भ सहित’, ‘मैथिली गजलक व्याकरण ओ इतिहास’, ‘मैथिली गजलक रेडी रेकोनर’ तथा ‘अनचिन्हार आखर’क ग्रन्थसूची-प्रविष्टि।
<https://videha-ejournal.github.io/videha/pothi.htm>
- विदेह। शोध-लेख अनुक्रमणिका; आशीष अनचिन्हारक गजल-सम्बन्धी आलेखसभक अंकवार विवरण।
<https://videha-ejournal.github.io/videha/research/index.html>
- विदेह। शोध-लेख : अङ्क १ सँ ४५१ धरि; गजल-आलोचनासम्बद्ध शीर्षकसभक प्रकाशन-विवरण। <https://videha-ejournal.github.io/videha/research/videha-scholar-research-book.html>
- विदेह। गद्य तथा आलोचना-संसाधन; आशीष अनचिन्हारक कृतिसभक लेखकवार सूची। <https://videha-ejournal.github.io/videha/prose.htm>
- बाबा बैद्यनाथ। पहरा इमानपर (गजल-संग्रह)। विदेह पोथी-अभिलेखमे उपलब्ध ग्रन्थसूची-प्रविष्टि। <https://videha-ejournal.github.io/videha/pothi.htm>
- आशीष अनचिन्हार। चिकनी माटिमे उपजल नागफेनी; मैथिली गजल व्याकरणक शुरूआती प्रयोग। विदेह, अङ्क १६५, २०१४। विदेह शोध-अनुक्रमणिका।
- आशीष अनचिन्हार। बयानक सन्दर्भमे मैथिली गजल। विदेह, अङ्क २५१, २०१८। विदेह शोध-अनुक्रमणिका।
- आशीष अनचिन्हार। नरेन्द्रजीक मैथिली आ हिन्दी गजलक तुलनात्मक विवेचना। विदेह, अङ्क २५२, २०१८। विदेह शोध-अनुक्रमणिका।

- आशीष अनचिन्हार। दुष्यन्त कुमारक गजलक मिजाज सन गजल मैथिलीमे कहिया लीखल जेतै। विदेह, अङ्क ३०७, २०२०। विदेह शोध-अनुक्रमणिका।
- आशीष अनचिन्हार। एकटा मैथिली गजल जे बदलि देलकै मैथिली गीत-संगीतक इतिहास। विदेह, अङ्क ३१२, २०२०। विदेह शोध-अनुक्रमणिका।

खण्ड ४

डिजिटल अभिलेख आ मैथिली सार्वजनिकता

मैथिली साहित्यक पुनर्पाठ

समीक्षा १४

मैथिली वेब पत्रकारिताक इतिहास

अभिलेख, माध्यम-परिवर्तन आ साहित्यिक सार्वजनिकता

सारांश

आशीष अनचिन्हारक ‘मैथिली वेब पत्रकारिताक इतिहास’ आधुनिक मैथिली गद्यक ओहि विशिष्ट प्रवृत्तिक प्रतिनिधि कृति अछि जाहिमे पत्रकारिताक इतिहास, भाषा-प्रौद्योगिकी, सांस्कृतिक स्मृति आ सार्वजनिक विवाद एक-दोसरासँ जुड़ैत अछि। एहि कृतिक केन्द्रीय चिन्ता इंटरनेटपर मैथिलीक आरम्भिक उपस्थिति, प्रारम्भिक पत्रिका-जालस्थलक कालक्रम, साहित्यिक आ समाचारप्रधान माध्यमक सम्बन्ध, मिथिलाक्षर तथा युनिकोडक विकास, सामाजिक माध्यमक भूमिका आ सामुदायिक ज्ञाननिर्माणक इतिहास अछि। पोथी ‘पहिल’ हेबाक अनेक दावाक परीक्षण करैत छैक, मुदा कतिपय स्थलपर स्वयं सेहो प्राथमिकताक निर्णायक भाषा अपनबैत अछि। प्रस्तुत अध्ययन एहि द्वन्द्वक कृतिक कमजोरी मात्र नहि, ओकरा इतिहासलेखनक सक्रिय विषय मानैत अछि। पोथीक विषयवार पाठ-परीक्षण, ऐतिहासिक तुलनाक सन्दर्भमे विदेहक उपलब्ध सामग्री आ मैथिली पत्रकारिताक पूर्ववर्ती धारा, तथा दस्तावेजी प्रमाणक प्रकारसभक आलोचनात्मक विवेचनसँ ई निष्कर्ष निकलैत अछि जे एहि कृतिक असाधारण महत्त्व डिजिटल मैथिलीक आरम्भिक चिह्न, संस्थागत योगदान आ विवादित स्मृतिसभकें एक ठाम आनबामे निहित अछि; ओकर अन्तिम प्रामाणिकता समकालीन अभिलेखक निरन्तर पुनर्परीक्षणपर निर्भर रहत।

बीज-शब्द

मैथिली वेब पत्रकारिता; डिजिटल साहित्यिक इतिहास; आशीष अनचिन्हार; विदेह; मिथिलाक्षर; युनिकोड; सामुदायिक सम्पादन; सामाजिक माध्यम; स्रोत-समालोचना; अभिलेखीय स्मृति।

भूमिका : डिजिटल परिवर्तनक इतिहास लिखबाक आवश्यकता

मैथिली साहित्यक परम्परागत इतिहास प्रायः कवि, पोथी, विधा, सम्प्रदाय आ पत्र-पत्रिकाक क्रमसँ निर्मित होइत रहल अछि। मुदा इंटरनेट साहित्यक अभिव्यक्तिकेँ स्थिर कागतसँ गतिशील मंचपर आनलक। रचना आब केवल प्रकाशित वस्तु नहि रहल; ओकर प्रकाशन-समय, संशोधन, पाठकीय प्रतिक्रिया, पुनर्प्रसार, भाषान्तर, ध्वनि, चित्र आ खोज-योग्यता सेहो साहित्यिक जीवनक अङ्ग बनि गेल। एहि बदलैत परिस्थितिकेँ बुझबाक लेल इतिहासकारकेँ केवल रचनाक सूची नहि, माध्यमक संरचना आ ओकर सामाजिक व्यवहार सेहो देखय पड़ैत छनि।

‘मैथिली वेब पत्रकारिताक इतिहास’ एहि नव विषयक दस्तावेजी सम्भावना देखबैत अछि। लेखक आरम्भिक जालस्थल, जालवृत्त, समाचार-माध्यम, पत्रिका, सङ्गणकीय लिपि, सामाजिक सञ्जाल, चलचित्रीय माध्यम आ विकिपीडियाक चर्चा एके समग्र ऐतिहासिक कथा भीतर रखैत छथि। एहिसँ पोथी केवल ‘कतेक जालस्थल छल’ एकर हिसाब नहि रहैत अछि; ई भाषा सार्वजनिक क्षेत्रमे अपन स्थान कोना बनबैत अछि, एहि प्रश्नक उत्तर तकबाक प्रयास बनैत अछि।

एहि आलोचनाक मूल प्रतिपाद्य अछि जे पोथीक उपयोगिता ओकर सङ्ग्रहित सामग्रीक व्यापकता आ ओकर जिज्ञासामूलक इतिहास-बोधमे अछि; एकर सीमासभ लेखकक स्वरक तीव्रता, अपूर्ण अभिलेख, स्रोतक असमान स्तर आ ‘पहिल’ सम्बन्धी निष्कर्षक निकषमे देखल जा सकैत अछि। एहि दुनू पक्षकेँ एक संग रखले कृतिक साहित्येतिहासिक स्थान स्पष्ट होइत अछि।

कृतिक संरचना, विकास आ लेखकीय प्रयोजन

पोथीक आरम्भमे लेखक अपन अध्ययनक उद्भव, पूर्वप्रकाशित आलेख, संशोधनक प्रक्रिया आ पाठकसँ अपेक्षित सहयोगक परिचय दैत छथि। आरम्भिक सामग्रीक सम्बन्ध पूर्वक विदेह-अङ्क, पत्रकारिता-विषयक विशेष सामग्री आ लेखकक पूर्वप्रकाशित लेखसभसँ जोड़ल गेल अछि। लेखक आरम्भिक रूपक सार्वजनिकता २०१७ सँ जोड़ैत छथि, आ कालान्तरमे नव सूचना समावेशित करबाक बात सेहो रखैत छथि। एहि कारणेँ कृतिक काल-परिधिक्कै एकल प्रकाशन-वर्षमे समेटब उचित नहि; ई विभिन्न समयमे बढ़ैत गेल दस्तावेजी उपक्रम थिक।

मुख्य रचनात्मक विन्यासमे प्रारम्भिक तकनीकी चर्चा, इंटरनेटपर मैथिलीक आरम्भिक उपस्थिति, इंटरनेट-सन्दर्भ, प्रारम्भिक जालस्थलक क्रम, वेब-सङ्गोष्ठी, भाषा-साहित्य, समाचार, नाटक-चलचित्र-सङ्गीत, बाल-विषयक तथा अन्य मंच, मिथिलाक्षर आ अक्षरविन्यास, सामाजिक माध्यम, यूट्यूब आ विकिपीडियाक यात्रा शामिल अछि। आरम्भिक ‘पहिल’ सम्बन्धी सूची आ अन्तिम अभिलेखीय साक्ष्यसभ मिलि कए कृतिक आन्तरिक ढाँचा बनबैत अछि।

एहि संरचनामे विषयक आधारपर वर्गीकरण एकटा व्यवहारिक सुविधा अछि। तथापि कोनो जालस्थल एक संग साहित्यिक पत्रिका, समाचार-मंच, अभिलेखागार आ भाषायी आन्दोलनक केन्द्र भऽ सकैत अछि। तँ कठोर श्रेणीकरणसँ कुछेक मंचक बहुआयामी स्वरूप छिपबाक जोखिम रहैत अछि। कृतिक श्रेष्ठ पाठ ओतए सम्भव अछि जतए विषयगत खण्डसभकेँ परस्पर जुड़ल इतिहासक रूपमे पढ़ल जाए।

इतिहासलेखनक पद्धति : कालक्रमसँ आगाँ प्रमाणक प्रश्न

लेखक आरम्भिक उपस्थिति निर्धारित करैत समय एकटा मूल समस्या चिन्हैत छथि— जालस्थल बनबाक तिथि, उपलब्ध रचनाक प्रथम प्रकाशन, आ बादमे फेर प्रकाशित सामग्री एक समान प्रमाण नहि थिक। आरम्भिक जालवृत्तसभमे पुरान तिथि लगाओल जा

सकबाक सम्भावना, मंच बदलला पर पुरान लेख फेर देखाएब, आ सर्वर बन्द भेला पर पुरान वस्तुक अप्राप्यता इतिहासक क्रमकेँ जटिल बनबैत अछि। एहि बिन्दुपर पोथी डिजिटल इतिहासलेखनक मूल प्रश्न उठबैत अछि।

मुदा प्रमाणक प्रकारसभक भेद सदिखन पूर्ण स्पष्ट नहि कएल गेल अछि। कोनो समयक लेखक-घोषणा, मूल प्रकाशनक सुरक्षित प्रति, स्वतन्त्र अभिलेखीय उल्लेख, जालस्थलक वर्तमान विवरण आ तृतीय पक्षक संस्मरण—सभक साक्ष्य-मूल्य अलग होइत अछि। जँ कोनो दाबी केवल उपलब्ध वर्तमान चिन्हपर आधारित अछि, तँ ओकरा ‘उपलब्ध साक्ष्यक आधारपर पहिल’ कहब अधिक समुचित होयत। इतिहासमे निष्कर्षक दृढ़ता प्रतिपक्षी मतक तीख आलोचनासँ नहि, प्रमाणक परखसँ बढ़ैत अछि।

लेखक कतिपय स्थानपर विरोधी दावाक प्रतिक्रिया तीव्र व्यंग्य आ नैतिक निर्णयक भाषा द्वारा करैत छथि। ई शैली पढ़बाक रुचि बढ़बैत अछि; मुदा ऐतिहासिक विश्लेषणमे भावनात्मक वाक्य आ अभिलेखीय निष्कर्षकेँ पृथक राखब आवश्यक अछि। एहि दृष्टिसँ कृति एकसाथे इतिहासक सामग्री आ इतिहास लिखबाक आत्मसंघर्षक उदाहरण बनि जाइत अछि।

पत्रकारिताक परिभाषा : समाचार, साहित्य आ सम्पादनक साझा क्षेत्र

पोथी साहित्यप्रधान माध्यमकेँ पत्रकारितासँ बाहर करबाक संकुचित दृष्टिक विरोध करैत अछि। लेखकक तर्क अछि जे समाचार केवल राजनीति वा अपराध धरि सीमित नहि; साहित्यिक गतिविधि, रचना, विमर्श, सम्पादकीय हस्तक्षेप आ पाठकीय संवाद सेहो समसामयिक सार्वजनिक सञ्चारक हिस्सा अछि। मैथिलीक सन्दर्भमे ई तर्क विशेष अर्थवान् अछि, कारण अनेक आरम्भिक पत्रिका समाचार आ साहित्यकेँ पृथक संस्थागत खाँचामे नहि रखैत छल।

तथापि प्रत्येक साहित्यिक रचना अपने-आप पत्रकारिता नहि बनि जाइत अछि। सम्पादकीय चयन, नियमितता, सार्वजनिक उत्तरदायित्व, स्रोतसत्यापन, समय-

संवेदनशीलता आ पाठकक सामने जवाबदेही—ई लक्षण पत्रकारिताक विशिष्टता निर्धारण करैत अछि। साहित्यिक ई-पत्रिकामे प्रकाशित कविता आ ओहि पत्रिकाक साहित्यिक घटना-सम्बन्धी समाचारक कार्य एक-दोसरासँ जुड़ल होइतहु भिन्न अछि। पोथीक सर्वसमावेशी दृष्टिकेँ एहि सूक्ष्म भेदक संग पढ़ला पर आधुनिक मैथिली सार्वजनिकताक अधिक सन्तुलित रूप उभरैत अछि।

एहि स्थलपर लेखकक योगदान पत्रकारिताक परिभाषाकेँ व्यापक बनबैत अछि; मुदा ओकरा विधागत विवेचन, समाचारक गुण, सम्पादन-विधान आ पाठकीय प्रभावक पृथक मापदण्डसँ पूरक बनेनाइ आवश्यक अछि।

प्रारम्भिक जाल-उपस्थिति : ‘भालसरिक गाछ’सँ ‘कतेक रास बात’ धरि

आरम्भिक इंटरनेट इतिहासक चर्चामे ‘भालसरिक गाछ’, ‘पल्लवमिथिला’, ‘समदिया’, ‘अपन मिथिला’, ‘प्रकारान्तर’ आ ‘कतेक रास बात’ कृतिक केन्द्रमे आबैत अछि। लेखक ‘भालसरिक गाछ’केँ २००० सँ जुड़ल आरम्भिक उपस्थिति मानैत छथि। ‘पल्लवमिथिला’क सम्बन्ध २००३क आसपासक प्रमाणसँ, ‘समदिया’क आरम्भ २००४सँ, आ ‘कतेक रास बात’क उपलब्ध सामग्री २००५सँ जोड़ल गेल अछि। एहि क्रममे भारत–नेपाल–प्रवासक अन्तरसम्बन्ध सेहो प्रकट होइत अछि।

एहि कथामे महत्वपूर्ण बात ई अछि जे लेखकीय भाषामे ‘मैथिलीक उपस्थिति’ आ ‘मैथिली भाषामे सामग्री’ कखनो एक-दोसराक समान मानल गेल अछि, कखनो भिन्न। मैथिली-विषयक अंग्रेजी जालस्थल आ मैथिलीमे प्रकाशित जालवृत्तक ऐतिहासिक महत्त्व निश्चय दुनूक अछि, मुदा दूनूक प्रश्न अलग अछि। पहिल व्यापक सांस्कृतिक उपस्थिति बतबैत अछि; दोसर भाषाक प्रत्यक्ष डिजिटल प्रयोग। एहि दुई धुरीक स्पष्ट पृथक्करणसँ पहिलपनक विवाद अधिक व्यवस्थित भऽ सकैत अछि।

‘कतेक रास बात’ विषयक लेखकक प्रतिवाद मात्र एक जालस्थलपर टिप्पणी नहि, आरम्भिक डिजिटल स्मृति लिखबाक अधिकारक प्रश्न थिक। एहि प्रसङ्गमे कृति आदर्श

इतिहासकारक ओ दायित्वक स्मरण करबैत अछि जाहिमे पूर्ववर्ती काजक श्रेय देब आ प्रतिकूल प्रमाणक निष्पक्ष परीक्षण करब दूनू आवश्यक अछि। विदेहमे पूर्व प्रकाशित लेखकक तत्सम्बन्धी आलेखक संग कृतिक विमर्श एक दीर्घ बौद्धिक बहसक रूप धारण करैत अछि।

‘समदिया’ आ समाचारक स्थानीय सार्वजनिकता

समाचारप्रधान खण्डमे ‘समदिया’, ‘इसमाद’, ‘मिथिला प्राइम’, ‘मिथिला मिरर’, ‘नव मिथिला’, ‘मैथिली जिन्दाबाद’, ‘मिथिला दर्शन’ आदि माध्यमक उपस्थिति अछि। ‘समदिया’क २००४क स्थापना तथा बादक सम्पादन-परिवर्तन, आ ‘इसमाद’क आरम्भिक ई-अङ्कसँ समाचार-पोर्टल धरि बढबाक विवरण डिजिटल पत्रकारीताक रूपान्तरण देखबैत अछि। एतए मंचक संस्थापक, सम्पादक आ पछिला सञ्चालकक भूमिकामे अन्तर करब जरूरी होइत अछि।

एहि सामग्रीक सामाजिक महत्त्व ई अछि जे समाचार-प्रसारक केन्द्र केवल महानगरक छापाखाना नहि रहल। क्षेत्रीय घटना, भाषा-आन्दोलन, नेपालक मैथिलीभाषी समाज, स्थानीय राजनीति, शिक्षण, कला आ सामुदायिक विवाद डिजिटल माध्यमसँ नव पाठकीय क्षेत्र प्राप्त करैत अछि। एहि प्रकारक मंचसभ मैथिलीकेँ केवल साहित्यक भाषा नहि, समसामयिक सार्वजनिक संवादक भाषा बनबैत अछि।

पोथी कतिपय समाचारसंस्थानक स्थापना-श्रेय आ सहयोगीक नाम हटेबाक प्रवृत्तिपर प्रश्न करैत अछि। ई आलोचना संस्थागत स्मृतिकेँ महत्त्व दैत अछि। मुदा इतिहासकारकेँ संस्थापक, प्रथम सम्पादक, वित्तदाता, तकनीकी सहयोगी आ बादक प्रबन्धकक भूमिका अलग-अलग प्रमाणसँ चिन्हब आवश्यक अछि। केवल नामक उपस्थिति वा अनुपस्थितिसँ नैतिक निष्कर्ष तुरन्त निकालब न्यायोचित नहि होयत।

‘विदेह’ : ई-पत्रिका, सङ्ग्रहालय आ समानान्तर साहित्यिक संस्थान

कृतिक सर्वाधिक विस्तृत आ प्रभावशाली चर्चामे ‘विदेह’ केन्द्रस्थ अछि। २००८ सँ पाक्षिक ई-पत्रिकाक नियमित प्रकाशन, साहित्यिक विशेषाङ्क, नाट्य-बाल-गजल-अनुवाद विषयक प्रयोग, अनेक लिपिमे सामग्री, पुस्तक उपलब्ध कराएब, सार्वजनिक संवाद, श्रव्य-दृश्य उपक्रम आ लिपि-प्रयोगक विवरण विदेहकेँ मात्र पत्रिका नहि, समेकित सांस्कृतिक अवसंरचनाक रूपमे देखबैत अछि।

विदेहक डिजिटल संरचनामे रचना-प्रकाशन आ अभिलेखीकरण एक-दोसराक सहायक बनैत अछि। मुद्रित पत्रिकाक अङ्क पाठकक घर वा पुस्तकालयमे रहैत अछि; डिजिटल पत्रिकाक पुरान सामग्री खोज, पुनर्प्रकाशन, परस्पर-सन्दर्भ आ नव पाठकीय समुदाय द्वारा पुनःजीवित होइत अछि। पोथी एहि परिवर्तनक ऐतिहासिक महत्त्व सही रूपमे चिन्हैत अछि। एतए साहित्यिक संस्थानक अर्थ केवल भवन, समिति वा पुरस्कार नहि, सतत सामग्री-संग्रह आ सार्वजनिक पहुँच सेहो बनि जाइत अछि।

आलोचनात्मक दृष्टिसँ विदेहपर सामग्रीक व्यापकता एक साथे कृतिक सामर्थ्य आ अनुपातगत असन्तुलनक स्रोत अछि। अन्य जालस्थलकेँ संक्षिप्त विवरण भेटैत अछि, जबकि विदेहक बहुतेक उपक्रम विस्तारसँ वर्णित अछि। एहि असमानताक व्याख्या स्रोतक उपलब्धता, माध्यमक दीर्घकालीन सक्रियता आ लेखकक चयन-नीतिसँ भऽ सकैत अछि; तथापि तुलनात्मक इतिहासमे सभ मंच लेल पूर्वनिर्धारित मूल्याङ्कन-निकष राखब उपयोगी रहितै।

साहित्यिक जालवृत्त आ विधागत नवाचार

भाषा-साहित्य खण्डमे ‘अनचिन्हार आखर’क गजलकेन्द्रित प्रयोग, ‘मैथिल आर मिथिला’क सामुदायिक संवाद, ‘ई-मिथिला’क विविध सामग्री आ आन व्यक्तिगत वा संस्थागत मंचसभक उल्लेख कएल गेल अछि। डिजिटल जालवृत्तक खासियत अछि जे नव लेखनकेँ पत्रिका-सम्पादकक दीर्घ प्रतीक्षासँ मुक्ति भेटैत अछि। एहि सुविधा सँ नव

रचनाकार, लघुविधा, गजल, व्यङ्ग्य आ आलोचनात्मक प्रतिवादक द्रुत विस्तार सम्भव भेल।

‘अनचिन्हार आखर’ लेखकक अपन कृतित्वसँ जुड़ल उदाहरण अछि। तकर इतिहास लिखैत काल लेखक सहभागी सेहो छथि आ इतिहासकार सेहो। एहि दू भूमिकाक मिलन प्रत्यक्ष अनुभवक सुविधा दैत अछि, मुदा स्वमूल्याङ्कनक समस्या सेहो उत्पन्न करैत अछि। जँ लेखक अपन उद्यमक साहित्यिक परिणाम परखथि, तँ स्वतंत्र पाठकीय प्रतिक्रिया, सम्पादकीय निरन्तरता, प्रकाशित रचनाक शिल्प आ पछिला लेखनपर पड़ल प्रभावक प्रमाण अलगसँ प्रस्तुत करबाक अपेक्षा रहैत अछि।

मैथिली गजलक सन्दर्भमे डिजिटल माध्यम केवल प्रकाशनस्थल नहि रहल; बहर, छन्द, रूपविधान आ प्रयोगक प्रश्न सेहो खुलल। भाषा-साहित्य खण्डक एहि सम्भावनाकेँ पोथी रेखाङ्कित करैत अछि, मुदा वास्तविक साहित्यिक पाठक शिल्प-विश्लेषण ओतए अपेक्षाकृत कम अछि। जालवृत्तक इतिहास आ गजलक सौन्दर्येतिहासक बीच ई अन्तर आगामी अध्ययनक एक महत्त्वपूर्ण क्षेत्र अछि।

नाटक, चलचित्र आ सङ्गीत : पाठसँ श्रव्य-दृश्यक यात्रा

नाटक, चलचित्र आ गीत-सङ्गीत सम्बन्धी खण्डमे प्रारम्भिक संगीत-जालवृत्त, चलचित्र-विषयक मंच, ‘विदेह मैथिली नाट्य उत्सव’ आ नेपालक सङ्गीत-प्रसारण उपक्रमसभक चर्चा अछि। एहि विकाससँ मैथिली डिजिटल सार्वजनिकतामे लिखित पाठक प्रभुत्व टूटैत अछि। गीतक धुन, लोकस्वर, अभिनय, प्रस्तुति, मञ्च-इतिहास आ दर्शक-समुदाय साहित्यक सङ्गे जुड़ैत अछि।

कृति ‘पहिल पोर्टल’क प्रतिस्पर्धात्मक दावाक आलोचना करैत काल विधागत सीमाक समस्या सामने अनैत अछि। गीतसङ्ग्रहक जालवृत्त, चलचित्र-समीक्षा मंच आ समेकित मनोरञ्जन-पोर्टलकेँ एके श्रेणीमे रखला पर क्रमभेद उलझि जाइत अछि। यदि ‘पहिल गीत-

जालवृत्त', 'पहिल चलचित्रक स्वतन्त्र मंच' आ 'पहिल समेकित मनोरञ्जन-पोर्टल'क परिभाषा अलग हो, तँ निष्कर्ष अधिक परिष्कृत बनत।

सङ्गीतक डिजिटल यात्रा साहित्यिक इतिहास लेल महत्त्वपूर्ण एहि कारणेँ अछि जे मौखिक परम्परा आब अभिलेखित, पुनःश्रव्य आ सीमापार प्रसारित भऽ सकैत अछि। मुदा दृश्य-संस्कृतिक मूल्याङ्कन दर्शकसंख्या मात्रसँ नहि, प्रस्तुति-कला, भाषिक शुद्धता, लोकपरम्पराक पुनर्सृजन आ सामग्रीक दीर्घकालीन संरक्षणसँ सेहो करबाक चाही।

बाल-साहित्य, धर्म, व्यापार आ विशेषज्ञतापूर्ण मंच

लेखक 'नेना-भुटका' सन बालसाहित्य-विषयक प्रयोग, मिथिला हाट सन व्यापारिक उपक्रम, मैथिली पतरा सन परम्परागत ज्ञानक डिजिटल रूप, स्वास्थ्यविषयक सामग्री आ तकनीकी सूचना देनिहार मंचसभकेँ समाविष्ट करैत छथि। एहि सामग्रीसँ स्पष्ट होइत अछि जे मैथिली इंटरनेट केवल कविताक लेखन-क्षेत्र नहि; ई दैनिक उपयोग, सीखब, खरीद-बेच, संस्कार, मनोरञ्जन आ लोकज्ञानक माध्यम सेहो अछि।

बालसाहित्यक डिजिटल उपस्थिति बाल-पाठकक स्वतन्त्र काव्यजगत नहि बनबैत, जाबत सामग्रीक वयस-अनुकूलता, चित्र-ध्वनि-वर्णनक संयोजन आ बच्चाक स्वयंभागीदारीकेँ नहि परखल जाए। कृतिक बालविषयक उल्लेख इतिहासक आवश्यक सूत्र दैत अछि; मुदा साहित्यशास्त्रीय मूल्याङ्कन लेल कथा-विन्यास, शब्दभण्डार, शिक्षात्मकता आ कल्पनाशक्तिक पृथक परीक्षण अपेक्षित अछि।

धर्म, व्यापार आ स्वास्थ्यक मंचसभकेँ पत्रकारिताक समग्र इतिहासमे जोड़बाक औचित्य भाषिक सार्वजनिकताक विस्तारमे अछि। मुदा एहि सामग्रीक विश्वसनीयता साहित्यिक मंचसँ भिन्न निकष मागैत अछि। उदाहरणार्थ स्वास्थ्य-सूचना लेल चिकित्सकीय प्रमाण, व्यापार लेल उपभोक्ता-सुरक्षा आ धार्मिक सामग्री लेल पाठपरम्पराक प्रामाणिकता स्वतन्त्र प्रश्नसभ अछि।

मिथिलाक्षर, युनिकोड आ तकनीकी स्वाधीनता

लिपि-प्रौद्योगिकी सम्बन्धी खण्ड कृतिक मूल महत्त्वक केन्द्र अछि। लेखक तिरहुता अर्थात् मिथिलाक्षरक डिजिटल फॉन्ट-निर्माण, विभिन्न निर्माताक दाबी, युनिकोड-सम्बन्धी प्रस्ताव, भाषिक टङ्कण, लिप्यन्तरण तथा डिजिटल प्रकाशनक प्रयोगसभक जानकारी संकलित करैत छथि। सी. के. राउत, गङ्गेश गुंजन झा, विनय झा, ओम विकास आ अंशुमान पाण्डेय सन नाम अलग-अलग सन्दर्भमे उपस्थित अछि। विभिन्न कालक्रमक दावाक तुलना करैत लेखक एकल विजेताक सरलीकृत कथासँ आगाँ बढ़बाक प्रयास करैत छथि।

एहि क्षेत्रमे ‘फॉन्ट बनेबाक’, ‘अक्षरक मानकीकृत संकेतबन्ध स्वीकार हेबाक’ आ ‘आम पाठक लेल सहज टङ्कण-साधन बनेबाक’ बीच मूल भेद अछि। कोनो निजी फॉन्टक निर्माण ऐतिहासिक उपलब्धि अछि, मुदा ओ विश्वव्यापी संकेतबन्धक स्वीकृति नहि थिक। युनिकोडक मानकीकरण सामुदायिक सामग्री, तकनीकी प्रस्ताव, अक्षर-अध्ययन आ संस्थागत निर्णयक दीर्घ प्रक्रियासँ सम्पन्न होइत अछि। लेखकक सामग्री एहि प्रक्रियाक कतेको अलग चरणक महत्त्व देखबैत अछि।

लेखक भाषाक व्याकरण आ लिपिक आकारकें अलग नहि मानैत छथि; तिरहुता-लेखनमे मैथिली विभक्ति तथा पद-विन्यासक विशिष्टता पर जोर दैत छथि। एहि दृष्टिकेँ केवल लिपिरक्षाक आग्रह नहि बुझबाक चाही। ई भाषा-स्वायत्तता, लोकवाङ्मयक रूप आ सङ्गणकीय प्रस्तुतिक सम्बन्धक प्रश्न थिक। मुदा ऐतिहासिक व्यवहारमे भिन्न लिपि, विभक्तिक विविध लिखावट आ अलग पाठकीय परम्पराक अस्तित्वकें सेहो नकारल नहि जा सकैत अछि। मानकीकरण आ जीवित भाषिक बहुलता बीच सन्तुलन अनिवार्य अछि।

ब्रेल, बहुलिपिक प्रकाशन आ पहुँच-अधिकार

विदेहक तिरहुता, ब्रेल, कैथी, देवनागरी, आइपीए तथा आन लिपि-सन्दर्भक प्रयोग पर पोथी विशेष ध्यान दैत अछि। बहुलिपिक प्रकाशनकें मात्र लिपिक प्रदर्शन मानब अनुचित

होयत; ई अलग पाठकीय समुदाय धरि मैथिली साहित्य पहुँचेनिहार संभावित मार्ग अछि। विशेष रूपसँ ब्रेल-सन्दर्भ साहित्यिक इतिहासमे पाठकीय पहुँचक प्रश्नकेँ केन्द्रमे आनैत अछि।

तथापि बहुलिपिक फाइलक उपलब्धता आ वास्तविक सुगम पाठकीय अनुभव भिन्न वस्तु अछि। ब्रेल-प्रस्तुतिक मानकीकृत रूप, उपकरणसंग अनुकूलता, शुद्ध पाठ, फॉन्टक स्थिरता आ खोजयोग्य लेखन सभ पहुँच-अधिकारक हिस्सा अछि। कृतिक ऐतिहासिक विवरण ई चर्चा शुरू करैत अछि; भविष्यक आलोचना ओकर व्यावहारिक परिणामक परीक्षणक दिशामे आगाँ बढ़ि सकैत अछि।

सामाजिक माध्यम : स्त्री, दलित स्वर आ जनतान्त्रिक भागीदारी

सामाजिक माध्यमक चर्चामे पोथी जन-अभिव्यक्तिक नव अवसर देखबैत अछि। फेसबुकक माध्यमे स्त्रीक निज स्वर, दलित रचनाकारक उपस्थिति, लोकगीतक साझा प्रस्तुति, प्रवासी समुदायक स्मृति आ क्षेत्रीय संवाद बढ़ल—ई लेखकक प्रमुख अवलोकन अछि। एहि बिन्दुपर इतिहास केवल तकनीकी प्रगतिक विवरण नहि रहैत; ई सामाजिक प्रतिनिधित्वक प्रश्न बनैत अछि।

स्त्री आ दलित स्वरक विस्तृत सम्भावनाक उल्लेख कृतिक प्रगतिशील पक्ष अछि। परम्परागत पत्रिका-केंद्रित प्रवेशद्वारसँ बाहर एकटा पाठकीय मञ्च उपलब्ध भेल जतए रचनाकार स्वयं प्रकाशक आ प्रत्युत्तरकर्ता बनि सकैत छथि। मुदा ‘उपस्थिति’ आ ‘समता’ एक नहि। ऑनलाइन उत्पीड़न, भाषिक उपहास, जातीय पूर्वाग्रह, सामग्रीक दृश्यता नियंत्रित करनिहार व्यवस्था आ उपकरणक असमान पहुँच मुक्त अभिव्यक्तिक सीमासभ बनबैत अछि। लेखकक उत्साहकेँ एहि संरचनात्मक प्रश्नक संग पढ़नाइ आवश्यक अछि।

सामाजिक माध्यमसँ जनतान्त्रिकता स्वतः सुनिश्चित नहि होइत; ओहि मंचपर कतिपय स्वर अधिक सुनाइ दैत अछि, अन्य दबि सकैत अछि। कृतिमे एहि तनावक संकेत अछि,

किन्तु स्त्री-लेखनक स्वतन्त्र साहित्यिक पाठ, दलित लेखकक कृतित्व आ समुदायगत अनुभवक तुलनात्मक अध्ययन आगेक शोधक अपेक्षा करैत अछि।

फेसबुकक पहुँच, प्रतिक्रिया आ लोकप्रियताक भ्रम

पोथी ‘लाइक’, पहुँच, प्रचार आ सशुल्क प्रसार सम्बन्धी भ्रमक आलोचना करैत अछि। ई निरीक्षण महत्वपूर्ण अछि कारण डिजिटल सामग्रीक दृश्यता ओकर साहित्यिक मूल्यक प्रमाण नहि होइत अछि। समाचारक सार्वजनिक हित, कविताक सौन्दर्य, लेखकीय श्रम अथवा ऐतिहासिक तथ्यक विश्वसनीयता दर्शक-प्रतिक्रियाक सङ्ख्यासँ सिद्ध नहि कएल जा सकैत अछि।

मुदा डिजिटल मंचक आन्तरिक नियम समयानुसार बदलैत रहैत अछि। कोनो एक समयक पहुँच-विधान, समूहक व्यवहार वा प्रचारक संरचनाकेँ स्थायी नियम मानब अनुपयुक्त अछि। एहि कारणेँ पुस्तकक एहि अंशकेँ विशिष्ट समयक डिजिटल अनुभवक साक्ष्य मानब उचित अछि, सार्वकालिक तकनीकी सूत्र नहि। ई भेद कृतिक ऐतिहासिक उपयोगिता घटबैत नहि, ओकरा उचित सन्दर्भ दैत अछि।

मोबाइल अनुप्रयोग आ भाषाक रोजमर्रा उपयोग

अनुप्रयोग सम्बन्धी सामग्रीमे शब्दकोश, गीत, पञ्चाङ्ग, विवाह, समाचार, धार्मिक पाठ, स्वास्थ्य आ अन्य क्षेत्रक आरम्भिक उपक्रम सूचीबद्ध अछि। एहन सूची डिजिटल भाषिक इतिहास लेल उपयोगी अछि, कारण जालस्थलसँ मोबाइलपर संक्रमणक संकेत ओतए भेटैत अछि। लोकक हाथमे उपलब्ध भाषिक साधन शिक्षा, सूचना आ सांस्कृतिक पहचानक नव सम्बन्ध बनबैत अछि।

मुदा अनुप्रयोगक आरम्भ-तिथि आ ओकर दीर्घकालीन प्रयोगशीलता भिन्न। कोनो अनुप्रयोग जारी भेल, मुदा आगाँ अद्यतन नहि भेल, भाषिक सामग्री घटल वा तकनीकी रूपसँ निष्क्रिय भऽ गेल—एहि अन्तरकेँ ध्यानमे रखब अनिवार्य अछि। इतिहासक जीवित

उपक्रमक समीक्षा लेल प्रकाशनकालक सङ्गे उपयोग, रखरखाव, सुरक्षा आ जनपहुँचक साक्ष्य आवश्यक अछि।

यूट्यूब : चैनलक निर्माण आ मैथिली सामग्रीक प्रथम प्रकाशन

यूट्यूबक खण्डमे लेखक चैनल बनबाक तिथि आ ओहि चैनलपर मैथिली सामग्री प्रथम बेर आबबाक तिथिक भेद प्रस्तुत करैत छथि। ‘vijay7701’, गजेन्द्र ठाकुरक चैनल, रजनी पल्लवीक प्रस्तुति आ पछिला अनेक चैनलक उल्लेख एहि आधारपर उपयोगी अछि। चैनलक निर्माण-तिथि मात्रसँ मैथिली साहित्य वा संगीतक प्रकाशन-इतिहास तय नहि होइत—ई कृतिक एक महत्त्वपूर्ण पद्धतिगत संकेत अछि।

यूट्यूब मैथिलीमे गायनक नूतन अर्थव्यवस्था, कैमरा-सामने प्रदर्शन, लोकगीतक नव प्रस्तुति आ भाषिक बोलीक सहज अभिव्यक्तिक अवसर खोललक। लेखक ठेठ भाषाक उभरैत प्रयोगपर ध्यान दैत छथि। एहि अवलोकनकें साहित्यिक इतिहासमे आगाँ बढेबाक लेल उच्चारण, उपशीर्षक, दर्शक-समुदाय, लिंग-प्रतिनिधित्व, रचनाधिकार आ दृश्य-भाषाक विश्लेषण आवश्यक होयत।

उपलब्ध पुरान सामग्री हटि जाइत अछि, चैनलक नाम बदलि जाइत अछि आ छवि-ध्वनि फेर अपलोड भऽ सकैत अछि। तँ कालक्रम परखबाक निकष एतहु बहुस्तरीय हेबाक चाही। लेखकक खोजसँ इतिहासक प्रारम्भिक नक्सा भेटैत अछि, अन्तिम निर्णायक रजिस्टर नहि।

मैथिली विकिपीडिया : सामुदायिक श्रमक इतिहास

मैथिली विकिपीडियाक आरम्भिक प्रयाससँ २०१४क स्वीकृति धरि लेखक अनेक व्यक्तिक भूमिकाक चर्चा करैत छथि। गजेन्द्र ठाकुर, उमेश मण्डल, राजेश रंजन, बिप्लव आनन्द तथा अन्य योगदानकर्ताक उल्लेखसँ ई प्रक्रिया एक व्यक्तिक काज नहि, अनुरोध,

अनुवाद, सम्पादन, तकनीकी संवाद आ सामुदायिक सहभागिताक संयुक्त परिणामक रूपमे उभरैत अछि।

एहि इतिहासमे श्रेय-विवादक समाधान 'के सभसँ पहिने कहलक' मात्रसँ नहि सम्भव। प्रस्ताव राखब, आवश्यक सामग्री तैयार करब, परीक्षणकालक गतिविधि, स्वीकृतिकेँ सम्भव बनबैत संवाद, आरम्भिक प्रशासकीय जिम्मेवारी आ निरन्तर लेखन—सभ अलग प्रकारक योगदान थिक। लेखक कतिपय स्तर चिन्हैत छथि; मुदा इतिहासक निष्पक्ष विवेचन एहि सभकेँ बराबरर अवधारणात्मक स्पष्टतासँ क्रमित करबाक अपेक्षा करैत अछि।

विकिपीडिया-सन्दर्भ एहि पोथीक एक गम्भीर सैद्धान्तिक सम्भावना खोलैत अछि : भाषा कोनो एक संस्थाक उपलब्धि मात्र नहि, सार्वजनिक ज्ञाननिर्माणक सामूहिक अभ्यास अछि। डिजिटल स्वयंसेवा आ औपचारिक संस्थागत परियोजनाक बीच अन्तर परखबाक लेखकक आग्रह सेहो उल्लेखनीय अछि। तथापि पारिश्रमिकक उपस्थिति वा अनुपस्थिति अपनहि आप काजक गुण वा इतिहासक प्रामाणिकता तय नहि करैत अछि।

परिशिष्टक अभिलेखीय अर्थ : स्वागतसन्देशसँ सांस्कृतिक स्मृति

अन्तिम भागमे विदेहक प्रारम्भिक प्रकाशनपर प्राप्त शुभकामना, प्रतिक्रिया आ समकालीन उल्लेखसभ संकलित अछि। एहन सामग्रीकेँ महज प्रशंसापत्र कहि खारिज नहि कएल जा सकैत अछि। एहि सन्देशसभसँ समयविशेषमे मैथिली ई-पत्रिकाक प्रति अपेक्षा, नूतन माध्यमक उत्साह, भाषाप्रेम आ पाठक-लेखकक सम्बन्धक बोध भेटैत अछि।

मुदा स्वागतसन्देश आलोचनात्मक प्रमाणक एक विशिष्ट जाति थिक। ओकरा सँ समकालीन स्वीकृति वा धारणा बुझल जा सकैत अछि; कृतिक सभ उपलब्धिक स्वतन्त्र पुष्टि नहि होइत। ककरो समर्पित साधनाक प्रशंसा स्वतः 'पहिल' हेबाक निर्णायक ऐतिहासिक साक्ष्य नहि थिक। पोथीक परिशिष्टकेँ एहि सीमाबोधक संग पढ़ला पर ओकर वास्तविक दस्तावेजी उपयोग अधिक स्पष्ट होइत अछि।

कथन-शैली : प्रथम पुरुष, प्रतिवाद आ गद्यक ऊर्जस्विता

एहि पुस्तकक भाषा शोधसंवाद आ सार्वजनिक बहसक बीच अवस्थित अछि। लेखक अपन 'हम'कें लुकबैत नहि छथि; ओ सीधे पाठकसँ गप्प करैत, आपत्ति अनुमानित करैत, शङ्का परखैत आ प्रतिद्वन्द्वी दावाक प्रत्युत्तर दैत छथि। एहि गद्यसँ पुस्तकमे घटनाक ऊर्जा आ लेखकक खोजक श्रम उपस्थित होइत अछि। ई अकादमिक निष्प्राणतासँ भिन्न जीवन्त रूप अछि।

एहि शैलीक साहित्यिक शक्ति ओकर संवादशीलता, कथात्मक मोड़ आ वैचारिक तत्परतामे अछि। आरम्भिक वेबसाइटक खोज एक प्रकारक अन्वेषण-कथा बनि जाइत अछि। नाम, तिथि, विरोधी वक्तव्य आ अभिलेखीय चिन्ह क्रमशः प्रस्तुत होइत अछि; पाठक इतिहासक निर्णायक क्षणमे सहभागी बनैत छथि। कृतिक गद्यक एहि नाटकीयताकें साहित्यिक मूल्य मानबाक चाही।

तथापि शोधपरक अनुशासन लेल अनुमान, संस्मरण, व्याख्या आ प्रमाणित तथ्यक भाषा भिन्न-भिन्न होयबाक चाही। जतय आलोचना व्यक्तिगत कटाक्षमे बदलैत अछि, ओतए तथ्यक शक्ति दबि सकैत अछि। एहि पोथीक भावी संशोधित रूपमे तीव्र प्रश्नक धार सुरक्षित राखि कऽ व्यक्तिकेन्द्रित निर्णयकें न्यून केनाइ ओकर विश्वसनीयता बढ़ाओत।

साहित्येतिहासक तुलनात्मक परिप्रेक्ष्य : मुद्रित पत्रकारितासँ डिजिटल पत्रिका

मैथिली पत्रकारिताक पूर्ववर्ती धारा साहित्यिक पत्र-पत्रिका, सम्पादकीय आन्दोलन, सामाजिक चेतना आ सार्वजनिक भाषिक आग्रहसँ बनल अछि। चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर'क पत्रकारिता-इतिहासक उल्लेख लेखक स्वयं करैत छथि; विदेहक उपलब्ध पोथी-सूचीमे डॉ. योगानन्द झाक 'मैथिली पत्रकारिता के सौ वर्ष' सेहो सूचीबद्ध अछि। एहि ऐतिहासिक परम्परामे 'मैथिल हित साधन' आ 'मिथिला मिहिर' सन पुरान पत्रिकाक नाम महत्त्वपूर्ण सांस्कृतिक सन्दर्भक रूपमे उपस्थित अछि।

मुद्रित पत्रकारितामे प्रकाशनक समय अपेक्षाकृत स्थिर अंकक द्वारा चिन्हल जाइत अछि; डिजिटल माध्यममे सामग्री संशोधित, हटाओल, स्थानान्तरित आ पुनःप्रकाशित भऽ सकैत अछि। मुद्रित पत्रिकामे सम्पादकक अधिकार केंद्रीकृत होइत अछि; जालवृत्त आ सामाजिक सञ्जाल लेखककें प्रत्यक्ष पाठकसँ जोड़ैत अछि। पुरान पत्रिकाक अभिलेख कागतक संरक्षणपर निर्भर छल; डिजिटल अभिलेखक रक्षा सर्वर, कोड, संकेतबन्ध, स्वामित्व आ नियमित स्थानान्तरणपर निर्भर अछि।

एहि तुलना सँ स्पष्ट होइत अछि जे आधुनिक पत्रकारिताक इतिहास लिखबाक पद्धति बदलि गेल अछि। मुदा डिजिटल माध्यमक आगमनसँ पुरान सम्पादनशास्त्र अप्रासङ्गिक नहि भऽ जाइत अछि। तथ्य-जाँच, भाषा-सम्पादन, विविध विचारक स्थान, संस्थागत उत्तरदायित्व आ पाठकीय विश्वास आजुओ मूल पत्रकारितागत मूल्य अछि। पोथी पुरान आ नव दुनू परम्पराक मिलन-स्थलपर ठाढ़ अछि।

मैथिली साहित्यक समानान्तर इतिहास आ डिजिटल सार्वजनिक क्षेत्र

डिजिटल मैथिलीक एक विशेषता ई अछि जे प्रतिष्ठित प्रकाशन-संस्था, नगरे-केंद्रित सम्पादन आ पुरस्कार-आधारित मान्यतासँ बाहर सेहो रचनाकार अपन लेखन पाठक धरि पहुँचा सकैत छथि। ‘विदेह’ आ आन जालवृत्तसभक विस्तार एहि सम्भावनाक ऐतिहासिक उदाहरण बनैत अछि। परम्परागत साहित्येतिहासमे अपेक्षाकृत उपेक्षित लेखक, लोकस्वर, लघुविधा आ प्रयोगशील साहित्यकें डिजिटल स्थान नव दृश्यता दैत अछि।

एहि सन्दर्भमे ‘समानान्तर’ शब्दक अर्थ केवल स्थापित संस्था-विरोध नहि, इतिहासक सामग्रीक आधार बढेनाइ थिक। जँ नव स्रोत पुरान निष्कर्ष संशोधित करैत अछि तँ ओकर मूल्य ऐतिहासिक। मुदा मात्र मुख्यधाराक विपरीत दावा करब सेहो अपने-आप प्रमाण नहि। समानान्तर इतिहासक विश्वसनीयता ओतहि बढैत अछि जतए ओ अपन प्रिय मंच, लेखक आ समूहक आलोचनात्मक परीक्षण सेहो कऽ सकैत अछि।

विदेहक शोध-सूचीमे उपलब्ध पूर्वप्रकाशित प्रौद्योगिकीविषयक आलेख, २०१७क प्रारम्भिक जाल-इतिहासविषयक विवाद, २०१९ आ २०२१क लेख, तथा २०२३क पुस्तक-समीक्षा ई देखबैत अछि जे विषयक अध्ययन एक लगातार विकसित होइत विमर्श थिक। अतः एक कृतिकेँ अन्तिम इतिहास मानबाक अपेक्षा एकर माध्यमे व्यवस्थित स्रोत-परम्परा बनबैत आगाँ बढ़ब अधिक उपयुक्त अछि।

पोथीक प्रमुख उपलब्धि

एहि कृतिक पहिल उपलब्धि अछि—एक उपेक्षित ऐतिहासिक विषयक स्वतंत्र रूपमे सूत्रीकरण। दोसर उपलब्धि—आरम्भिक मंचसभक नाम, तिथि, भूमिका आ उपलब्ध प्रमाणक व्यापक संकलन। तेसर उपलब्धि—साहित्यिक आ समाचारप्रधान माध्यमकेँ एक साझा डिजिटल सार्वजनिकता भीतर देखब। चारिम उपलब्धि—मिथिलाक्षर, युनिकोड आ भाषिक पहुँचक प्रश्नकेँ पत्रकारिताक इतिहाससँ जोड़ब। पाँचम उपलब्धि—स्त्री, दलित, प्रवासी आ नव पीढ़ीक सहभागिताकेँ भाषिक इतिहासक विषय बनायब।

एकर अतिरिक्त लेखकक प्रश्नोन्मुख स्वभाव विशेष उल्लेखनीय अछि। स्थापित दावाकेँ केवल प्रतिष्ठाक आधारपर स्वीकार नहि करबाक आग्रह अनुसन्धानक लेल आवश्यक अछि। कतेको ठाम पुस्तक निर्णायक उत्तर देबाक अपेक्षा नव प्रश्न जन्मबैत अछि; विद्वत्ताक दृष्टिसँ ई स्वयं एक महत्त्वपूर्ण योगदान थिक।

सीमासभ आ संशोधनक सम्भावना

कृतिक पहिल सीमा ‘पहिल’ सम्बन्धी अनेक दावाक वर्गीकरणक अपर्याप्त स्पष्टता अछि। दोसर, सूचनाक प्रचुरताक बाबजूद उपयोगकर्ता-वर्ग, पाठकीय प्रभाव, सम्पादकीय नीति आ साहित्यिक गुणवत्ताक सुसङ्गत तुलनात्मक मापदण्ड कम विकसित अछि। तेसर, अनेक जालस्थलक चर्चा वर्तमान उपलब्धतापर आधारित अछि; अनुपलब्ध अभिलेखक कारणेँ मौनकेँ अनुपस्थितिक प्रमाण नहि मानल जा सकैत।

चारिम सीमा लेखकक स्वतन्त्र साक्षी आ सहभागी हेबाक सम्मिश्र स्थिति अछि। पाँचम, विभिन्न समयमे जोड़ल सामग्रीक कारणें अतीतकाल, तत्कालीन वर्तमान आ संशोधित वर्तमानक भाषिक मिश्रण भेल अछि। इतिहासक प्रत्येक दावाकें ओकर सूचना-संग्रहक कालखण्डक संग स्थिर करब शोधक विश्वसनीयता बढ़ाओत। छठम, प्रौद्योगिकी सम्बन्धी शब्दसभमे कखनो माध्यम, प्लेटफॉर्म, फॉन्ट, संकेतबन्ध आ अनुप्रयोगक स्तर एक-दोसरासँ मिलि जाइत अछि।

एहि आलोचनासभक उद्देश्य कृतिक श्रमकें कम करब नहि; ओकर उपयोगिताकें अधिक दीर्घजीवी बनायब अछि। तिथि, स्रोतक स्वरूप, मूल दावाक प्रमाण, विपरीत दावाक आधार आ निष्कर्षक विश्वास-स्तर स्पष्ट कएल गेलासँ ई पोथी विषयगत अध्ययनक स्थायी आधारग्रन्थ बनबाक क्षमता रखैत अछि।

निष्कर्ष : सङ्ग्रहसँ इतिहास, इतिहाससँ आलोचना

‘मैथिली वेब पत्रकारिताक इतिहास’ आधुनिक मैथिली गद्यक एक उल्लेखनीय अभिलेखमुखी कृति अछि। एकर केन्द्रमे केवल पत्रकारिताक विस्तार नहि, भाषाक नव सार्वजनिक जीवनक जन्मक कथा अछि। ‘भालसरिक गाछ’ आ आरम्भिक जालवृत्तसँ विदेहक पाक्षिक ई-पत्रिका धरि, मिथिलाक्षरक सङ्गणकीय प्रयोगसँ विकिपीडियाक सामुदायिक ज्ञाननिर्माण धरि, लोकगीतक डिजिटल स्वरूपसँ सामाजिक माध्यमक प्रतिरोधी स्वर धरि—लेखक एक विस्तृत सांस्कृतिक गतिशीलता दर्ज करैत छथि।

एहि कृतिक सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण सन्देश ई अछि जे इतिहास उपलब्ध साक्ष्यकें क्रम देबाक कला मात्र नहि, श्रेय, उपस्थिति, मौन, स्मृति आ विवादक न्यायपूर्ण परीक्षण सेहो थिक। पुस्तक जे ‘पहिलपन’क प्रश्न उठबैत अछि, ओ प्रश्न एकर अपन पद्धतिक लेल सेहो लागू होइत अछि। ठीक एहिठाम कृतिक आलोचनात्मक सम्भावना सर्वाधिक समृद्ध अछि। लेखकक तर्कशील आवेग आ दस्तावेज-सङ्ग्रहक परिश्रम ओकरा विशिष्ट बनबैत अछि;

अधिक स्पष्ट साक्ष्य-श्रेणी, तुलनात्मक निकष आ संवादशील भाषा ओकरा आर प्रामाणिक बना सकैत अछि।

आखिरमे ई पोथी एक समाप्त कथा नहि, मैथिली डिजिटल इतिहासक आरम्भिक आधार-रचना मानल जाएबाक योग्य अछि। भविष्यक अनुसन्धान जखन रचना-सामग्री, सम्पादकीय इतिहास, तकनीकी अभिलेख, जनपहुँच आ साहित्यिक प्रभावकें एक संग परखत, तखन एहि कृतिक वास्तविक ऐतिहासिक योगदान आरो स्पष्ट होयत।

पाठाधार आ उद्धरणक मर्यादा

प्रस्तुत अनुशीलनमे मूल कृतिक उपलब्ध पाठक घटनाक्रम, शीर्षक, नाम आ विषयगत विवरणकें आधार बनाएल गेल अछि। जिनका कथनक अक्षरशः रूप निर्विवाद रूपसँ स्थापित नहि भऽ सकल, हुनका नामपर शब्दशः कथन प्रस्तुत करबाक स्थानपर आशयक आलोचनात्मक विवेचन कएल गेल अछि। पुस्तकक आत्मवर्णन, स्वयं घोषित प्राथमिकता आ अन्य मंचक विरुद्ध प्रस्तुत दावाकें लेखकक इतिहास-दृष्टिक अङ्ग मानल गेल अछि; स्वतंत्र रूपसँ अन्तिम सिद्ध तथ्य नहि। एहि सीमाबोधसँ कृतिक वास्तविक उपलब्धि आ ओकर आलोचनाक क्षेत्र दूनू सुरक्षित रहैत अछि।

सन्दर्भसूची

नीचाँ उद्धृत बाह्य सामग्री मात्र विदेहक पत्रिका, शोध-सूची आ पोथी-संग्रहसँ चयनित अछि।

उपलब्ध सूचीमे उल्लिखित कृतिक नामकें स्वतंत्र पाठालोचनाक विकल्प नहि मानल गेल अछि।

- आशीष अनचिन्हार। मैथिली वेब पत्रकारिताक इतिहास। मूल समीक्ष्य कृति; विदेहक पोथी-सूचीमे उपलब्ध। विदेह स्रोत
- आशीष अनचिन्हार। ‘कतेक रास बात’ इंटरनेटपर मैथिलीक पहिल उपस्थिति नै अछि। विदेह, अङ्क २३०, १५ जुलाई २०१७। विदेह स्रोत
- आशीष अनचिन्हार। ‘मैथिली वेब पत्रकारिताक इतिहास’। विदेह, अङ्क २७२, १५ अप्रैल २०१९। विदेह स्रोत

- आशीष अनचिन्हार। 'मैथिलीमे इंटरनेट'। विदेह, अङ्क ३०५, १ सितम्बर २०२०। विदेह स्रोत
- आशीष अनचिन्हार। 'सोशल मीडिया आ मैथिली'। विदेह, अङ्क ३०२, १५ जुलाई २०२०। विदेह स्रोत
- आशीष अनचिन्हार। 'यूट्यूब आ मैथिली'। विदेह, अङ्क ३०३, १ अगस्त २०२०। विदेह स्रोत
- आशीष अनचिन्हार। 'मैथिली वेब-पत्रकारिताक इतिहास'। विदेह, अङ्क ३१३, १ जनवरी २०२१। विदेह स्रोत
- उमेश मण्डल। 'मैथिलीमे ई-पत्रकारिता'। विदेह, अङ्क ३१३, १ जनवरी २०२१। विदेह स्रोत
- गजेन्द्र ठाकुर। 'भाषा आ प्रौद्योगिकी : अन्तर्जालपर मैथिली लेखन आ ई-प्रकाशन'। विदेह, अङ्क ३४, १५ मई २००९। विदेह स्रोत
- गजेन्द्र ठाकुर। 'भाषा आ प्रौद्योगिकी (संगणक, छायांकन, कुँजी पटल/टंकणक तकनीक)'। विदेह, अङ्क ३१३, १ जनवरी २०२१। विदेह स्रोत
- गजेन्द्र ठाकुर। 'मैथिली विकीपीडिया, यूनिकोड तिरहुता आ कैथी, गूगल ट्रांसलेटमे मैथिली, ट्विटरमे मैथिली, अमेजन अलेक्सामे मैथिली'। विदेह, अङ्क ३५१, १ अगस्त २०२२। विदेह स्रोत
- प्रणव झा। 'पुस्तक समीक्षा : मैथिली वेब पत्रकारिताक इतिहास (लेखक : आशीष अनचिन्हार)'। विदेह, अङ्क ३८४, १५ दिसम्बर २०२३। विदेह स्रोत
- डॉ. योगानन्द झा। मैथिली पत्रकारिता के सौ वर्ष। विदेह पोथी-संग्रहक सूचीमे उपलब्ध कृति। विदेह स्रोत
- विदेह। शोध-सूची : मैथिली साहित्य, आलोचना, भाषा-प्रौद्योगिकी आ पत्रकारिताक अभिलेख। विदेह स्रोत
- विदेह। पोथी-संग्रह : साहित्य, इतिहास, लिपि आ पत्रकारितासँ सम्बन्धित उपलब्ध कृतिक अनुक्रम। विदेह स्रोत

विषय-अनुक्रमणिका

प्रमुख सम्बद्ध समीक्षा क्रमाङ्क

अनचिन्हार आखर . ७, ८, ९, १०, ११, १२, १३	पत्रिका . १, २, ४, ५, ६, ११, १४
अनुवाद . १, ४, ५, ६, १०, १३, १४	प्रमाण . ३, ४, ६, ११, १२, १३, १४
अभिलेख . १, ४, ५, ९, ११, १२, १४	प्रीति कारण सेतु बान्हल . ५, ६
अरविन्द ठाकुर . २, ५, १२	प्रीति ठाकुर . ५, ६
अस्मिता . ३, ११, १३	बहर . ७, ८, ९, १०, ११, १२, १३
आन्दोलन . १, २, ७, ८, ११, १४	बालसाहित्य . ५, ६, १४
आलोचना . २, ४, ५, १०, ११, १२, १३	भाषा . १, ४, ५, ६, ११, १३, १४
उच्चारण . ४, ७, ९, १०, ११, १२, १३	भाषिक अधिकार . १, २
कथा . १, २, ३, ४, ५, ६, १४	मतला . ७, ८, ९, १०, ११, १२
कथा-त्रिधारा . ३, ४	मिथिला . १, २, ३, ४, ५, ६, १४
कथा-शतत्रयी . ३, ४	मिथिलाक्षर . १४
काफिया . ७, ८, ९, १०, ११, १२, १३	मीडिया . ६, ८, १४
कुमारि इच्छा . ७, ८, ९, ११	युनिकोड . ६, १४
कृपानन्द ठाकुर . ५	रङ्गमञ्च . १
कृषक . २	रदीफ . ७, ८, ९, १०, ११, १२, १३
कोलकाता . १	रुक्म . ९, १०, ११
गजल . ७, ८, ९, १०, ११, १२, १३	रुबाई . ७, ८, ९, ११, १२
गजेन्द्र ठाकुर . २, ३, ४, ५, ६, ७, १४	लिपि . ३, ५, ६, १०, ११, १२, १४
चित्रकथा . ५, ६	लोकगीत . ३, ४, ५, ६, ८, ९, १४
छन्द . ७, ८, ९, १०, ११, १२, १३	लोकभाषा . २, ३, ४, ६, ८, ९, १३

जंघाजोड़ी • ७, ८, ९, ११	लोकस्मृति • १, ४
जनपक्षधरता • ६, १३	विदेह • २, ४, ७, ९, १२, १३, १४
जाति • २, ३, ४, ५, ६, ७, १४	विभक्ति • ७, १०, ११, १३, १४
जालस्थल • १४	वेब पत्रकारिता • ५, ६, १४
डिजिटल • ४, ५, ६, ११, १२, १३, १४	शब्द-अर्थ-शक्ति • ८, ९, १०, ११, १२, १३
तखल्लुस • २, ७, ९, १०, ११, १२	सन्दर्भ सहित • ७, १०, १२, १३
दलित • १, ४, ६, १४	सम्पादन • १, २, ५, ६, १२, १३, १४
दस्तावेज • १, २, ४, ५, ६, १३, १४	सांस्कृतिक संस्था • १
दहेज • १	साक्षात्कार • १, २, ५
नबोनारायण मिश्र • १	सामाजिक न्याय • ३, ५, ६, ९
नाटक • १, ३, ४, ५, ६, ८, १४	साहित्येतिहास • १, ४, ५, ६, १०, ११, १३
नारी • २, ४	सेतुषाम • ६
न्याय • १, २, ३, ४, ६, ९, १२	स्मृति • १, २, ३, ४, ५, ७, १४
पञ्जी • ३, ४, ५, ६	स्वतंत्रचेता • २
पत्रकारिता • १, ५, ६, १४	

विदेह • मैथिली साहित्य

नित नवल • आशीष अनचिन्हार



चौदह पोथीक समेकित साहित्यिक आलोचना

- १ खण्ड १ • सम्पादन, साहित्यिक स्मृति आ बहुविध इतिहास
- २ खण्ड २ • गजल-सृजन : शिल्प, समाज आ काव्यभाषा
- ३ खण्ड ३ • गजलशास्त्र : व्याकरण, विमर्श आ समालोचना
- ४ खण्ड ४ • डिजिटल अभिलेख आ मैथिली सार्वजनिकता



विदेह वेबसाइट

<https://www.videha.co.in/>



विदेह ई-जर्नल

<https://videha-ejournal.github.io/videha/>



© गजेन्द्र ठाकुर / प्रीति ठाकुर, २०२६

प्रकाशक : विदेह — www.videha.co.in